। । सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् । ।

Uttar Pradesh Rajarshi Tandon
Open University

MAED-107

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड

1

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और विषय क्षेत्र

इकाई- 1 5

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रारूप एवं आवश्यकता

इकाई- 2 29

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

इकाई- 3 47

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का नियोजन

इकाई- 4 61

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का कारक

परामर्श-समिति

प्रो0 नागेश्वर राव	**कुलपति - अध्यक्ष**
डॉ0 हरीशचन्द्र जायसवाल	वरिष्ठ परामर्शदाता - कार्यक्रम संयोजक
श्री एम0 एल0 कनौजिया	कुलसचिव - सचिव

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 एस0पी0 गुप्ता	निदेशक, शिक्षा विद्या शाखा, उ0प्र0रा0ट0मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 राम शकल पाण्डेय	पूर्व आचार्य,शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 हरिकेश सिंह	आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

परिमापक

प्रो0 पी0 के0 साहू	विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक

डॉ0 धनंजय यादव	वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 सुषमा पाण्डेय	वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय गोरखपुर

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की ओर से विनय कुमार, कुलसचिव द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित वर्ष -2024.

मुद्रक - के0 सी0 प्रिंटिंग एण्ड एलाइड वर्क्स, पंचवटी, मथुरा - 281003.

MAED - 107 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड 1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और विषय क्षेत्र

इकाई 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रारूप एवं आवश्यकता

इकाई 2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

इकाई 3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का नियोजन

इकाई 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख कारक

खण्ड 2. छात्र सहायता सेवायें

इकाई 5 स्व अधिगम सामग्री

इकाई 6 अधिन्यास

इकाई 7 परामर्श सत्र

इकाई 8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

खण्ड 3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संगठनात्मक स्वरूप

इकाई 9 दूरस्थ शिक्षा परिषद

इकाई 10 एन0आई0ओ0एस0

इकाई 11 मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई 12 दूर अध्येता

खण्ड 4. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन

इकाई 13 दूर शिक्षक के समक्ष चुनौतियां

इकाई 14 दूर शिक्षा की समस्यायें

इकाई 15 दूर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया

इकाई 16 दूर शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान

खण्ड-परिचय- 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और विषय क्षेत्र

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। आज के भूमण्डलीकरण के दौर में वैज्ञानिक चिन्तन ने लोगों पर प्रभाव डाला है। इसी चिन्तन ने शिक्षा में एक नयी धारणा एवं प्रयोग जिसे 'दूरस्थ शिक्षा' कहते हैं के विचार को जन्म दिया इसकी लोक प्रियता इस सीमा तक है कि अब यह अधिकांश देशों की मुख्य शिक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। इकाई-1 में दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा प्रारूप एवं सम्प्रत्यय के विषय में जानकारी दी गई है। यह शिक्षा में एक नवाचार है इसमें उच्च कोटि की अधिगम सामग्री के निर्माण, उत्पादन तथा सम्प्रेषण में तकनीक एवं संचार माध्यमों का समुचित रूप से व्यापक उपयोग किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा एक ऐसी प्रणाली है जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण से सुसम्बद्ध है। इस शिक्षा ने सम्प्रेषण की नई विधियों को जन्म दिया है। दूरस्थ शिक्षा जन शिक्षा के रूप में प्रचलित व्यापक शैक्षिक प्रणाली है इसका सम्प्रेषण क्षेत्र व्यापकता है यह विस्तृत अध्ययन परिस्थितियों के अन्तर्गत कार्य करती है। यह संरचना एवं संगठन की दृष्टि से व्यापक शिक्षा प्रणाली है।

इकाई-2 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का उदभव सामाजिक, आर्थिक,शैक्षिक बाध्यताओं एवं परिवर्तन की गतिशीलता, भूमण्डलीकरण एवं बहुत अधिक औद्योगीकरण के कारण हुआ। यह 21वीं सदी में अपने स्वतन्त्र एवं महत्वपूर्ण अनुशासनात्मक रूप में अपना इतिहास रच रही है। पत्राचार शिक्षा के रूप में दूरस्थ शिक्षा का इतिहास 1840 से माना जाता है। भारत में साठ के दशक में भारत सरकार की नीतियाँ दूरस्थ शिक्षा की ओर उन्मुख हुई। मई 1991 में इग्नू के अन्तर्गत दूरस्थ शिक्षा परिशद की स्थापना हुई।

इकाई-3 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नियोजन के विषय में चर्चा की गई है। नियोजन की संकल्पना, प्रकृति एवं आवश्यकता को जानने के साथ नियोजन की विशेषताओं पर भी चर्चा की गई है। दूरस्थ शिक्षा के पूरक के रूप में बेहतर विकल्प है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा राष्ट्रीय विकास के संदर्भ में उच्च स्तर पर एक सश्रम एवं मितव्ययी शिक्षा है।

इकाई-4 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख कारकों के बारे में बताया गया है। शिक्षा तकनीकी के विकास ने नयी शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया। इसी प्रकार शिक्षा इसनयी विधा को जन्म देने वाले अनेक कारक है। जो इस शिक्षा के उदभव एवं विकास को निरन्तर प्रभावित करते रहे हैं।

इकाई–1 मुक्त व दूरस्थ शिक्षा का प्रारूप एवं आवश्यकता

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा

1.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति

1.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के समकालिक प्रत्यय

1.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा और परम्परागत शिक्षा में अन्तर

1.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता

1.8 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक अनुशासन के रूप में

1.9 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धान्त

1.10 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के आधारभूत तत्व

1.11 सारांश

1.12 चर्चा के बिन्दु

1.13 अभ्यास कार्य

1.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। इसका प्रारम्भ जन्म से होता है और जीवन भर व्यक्ति किसी न किसी रूप में सीखता रहता है। सीखने के माध्यम बदल अवश्य जाते है पर उसकी निरन्तरता बाधित नहीं होती **है।** आज के भूण्डलीकरण के दौर में वैज्ञानिक चिन्तन ने लोगों पर प्रभाव डाला है, **और** सुलभ–सरल लचीली एवं सस्ती व आवश्यकतानुरूप शिक्षा ने लोगों को प्रभावित **किया,** इसी चिन्तन ने शिक्षा में एक नयी धारणा एवं प्रयोग 'दूरस्थ शिक्षा' के विचार को जन्म दिया। इसका प्रयोग विश्व के कई देशों में हो रहा है और विश्व में इसकी लोकप्रियता इस सीमा तक है कि अब यह अधिकांश देशों की मुख्य शिक्षा व्यवस्थ का एक महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है, और

इसने आसानी से एक–दूसरे देशों को जोड़ दिया है। हम इस इकाई में दूरस्थ शिक्षा के प्रारूप एवं सम्प्रत्यय के विषय में ज्ञान प्राप्त करेंगे।

1.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगे कि

- दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं प्रकृति को स्पष्ट कर सकेगें।
- दूरस्थ शिक्षा से सम्बन्धित सम्प्रत्ययों के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा एवं परम्रागत शिक्षा के मध्य अन्तर कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता की विवेचना कर सकेगें।
- दूरस्थ शिक्षा के सिद्धान्तों की विवेचना कर सकेगें।

1.3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा

दूरस्थ शिक्षा शब्द से ही स्पष्ट है कि दूर से ही स्थान पर प्रदत्त शिक्षा। दूरस्थ शिक्षा से तात्पर्य ऐसे गैर प्रचलित और अपरम्परागत शिक्षा के मानकों पर एक प्रश्न चिन्ह लगाते हुये इनसे अलग विशेषताओं को धारण करने वाली शिक्षा से है। दूरस्थ शिक्षा विविध शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले तथा विविध भौगोलिक क्षेत्रों में बिखरे अधिगमकर्ताओं की एक बड़ी संख्या को उनकी रूचि और सुविधा के अनुकूल ज्ञान, कौशल व अभिवृत्ति प्रदान करने का एक माध्यम है। यह शिक्षा में एक नवाचार है। इस उपागम परम्परागत शिक्षा की मौखिक अनुदेशन की विधियों का प्रयोग कदाचित किया जाता है। इसमें उच्च कोटि की अधिगम सामग्री के निर्माण, उत्पादन तथा सम्प्रेषण तकनीकि एवं संचार माध्यमों का समुचित रूप से व्यापक उपयोग किया जाता है दूरस्थ शिक्षा में मुद्रित एवं अमुद्रित बहुमाध्यमों का प्रयोग शिक्षक एवं छात्र के बीच संचार माध्यम के रूप में किया जाता है।

दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा की ऐसी प्रणाली है, जो सामाजिक एवं सांस्कृतियों पर्यावरण से सुसम्बद्ध है। इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों का विकास इस दिशा में सव ाक महत्वपूर्ण विकास है। इस शिक्षा ने सम्प्रेषण की नई विधियों को जन्म दिया। दूरस्थ शिक्षा को अनेक शिक्षाशास्त्रियों ने अपने ढंग से पारिभाषित किया है। कुछ प्रश्न विचारकों ने दूरस्थ शिक्षा की विशेषताओं को उजागर करते हुये नीचे कुछ परिभाषित प्रस्तुत की गयी है–

- **बेडमीयर**– वेडमीयर ने सन् 1977 में दूरस्थ शिक्षा को मुक्त अधिगम, स्वत

अधिगम व दूरवर्ती अध्ययन (शिक्षा) के रूप में प्रयोग किया है। स्वतंत्रत अध्ययन को अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाते हुये उन्होने लिखा है–

"स्वतंत्र अध्ययन विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम व्यवस्थाओं का समुच्चय है, जिससे शिक्षक एवं शिक्षार्थी एक दूसरे से दूर होते हुये भी अपने कार्यों एवं दायित्वों का निर्वहन करते हैं, एवं विभिन्न सम्प्रेषण प्रक्रियाओं का प्रयोग करते हैं। दूरस्थ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षण हेतु कक्षा के अनुपयुक्त स्थानों तथा प्रारूपों से मुक्त रखना, विद्यालय से बाहर के शिक्षार्थियों को उनके अपने वातावरण में अध्ययन हेतु अवसर प्रदान करना एवं स्वतः निर्देशित अधिगम की क्षमता विकसित करना।"

- **मूरे**– मूरे (1972–73) ने दूरस्थ शिक्षा को एक व्यवस्थित स्व अधिगम की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया कि–*"दूरस्थ शिक्षण को अनुदेशन विधियों के परिवार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसमें शिक्षण व्यवहार अधिगम व्यवहार (प्रक्रिया) से अलग अर्थात् कहीं दूर पर सम्पन्न किये जाते हैं। इनके अन्तर्गत छात्र की उपस्थिति में सम्पन्न होने वाली क्रियायें भी सम्मिलित होती है। अतः शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य सम्प्रेषण को मुद्रित सामग्री, इलेक्ट्रानिक, यांत्रिक एवं अन्य साधानों से सुगम बनाया जा सकता है।"*

कुछ तथ्य जो उभरे–

- इस परिभाषा में भी वेडमीयर की ही तरह स्व–अधिगम की बात स्पष्ट हुई।
- शिक्षण व्यवहार अधिगम व्यवहार से अलग है।
- इलेक्ट्रानिक एवं अन्य संचार माध्यमों के प्रयोग की बात स्पष्ट की गयी है।

डोहमेन – डोहमेन ने 1977 में दूरस्थ शिक्षा को एक स्वअध्ययन हेतु विधिवत संगठित रूप में पारिभाषित किया *'जिसमें छात्र परामर्श, अधिगम सामग्री का प्रस्तुतीकरण तथा छात्रों की सफलता का सुनिश्चितीकरण एवं निरीक्षण शिक्षकों के एक समूह द्वारा किया जाता है, तथा प्रत्येक शिक्षक का अपना दायित्व है। संचार माध्यमों के द्वारा बहुत दूर रहने वाले शिक्षार्थियों के लिये इसे सम्मत बनाया जाता है।'*

इससे निम्न तथ्य उभरे कि–

- दूरस्थ शिक्षण में स्व–अधिगम पर बल।
- संचार माध्यमों का शैक्षिक सम्प्रेषण में प्रयोग।

पीटर्स– पीटर्स (1973) ने दूरस्थ शिक्षा को *"ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति प्रदान करने*

की एक विधि के रूप में परिभाषित किया, जिसे तकनीकी संचार माध्यमों के व्यापक प्रयोग के साथ–साथ श्रम विभाजन तथा संगठनात्मक सिद्धान्तों के प्रयोग द्वारा तर्क संगत बनाया जाता है। इसमें विशेष रूप से उच्च स्तरीय शिक्षण अधिगम सामग्री के पुननिर्माण का उद्देश्य निहित होता है, जिससे छात्रों की बहुल संख्या को एक ही समय में अनुदेशन प्रदान करना सम्भव होता है, यह शिक्षण अधिगम का एक औद्योगिक रूप है।"

होमबर्ग– होमबर्ग (1981) ने शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा का वह प्रकार बताया है *"जिसमें शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अध्ययन के विभिन्न प्रकार, उन विद्यार्थियों के लिये जो शिक्षकों के निरन्तर एवं तुरन्त निरीक्षण में कक्षाओं में नहीं होते हैं, प्रयुक्त किये जाते हैं, किन्तु जो किसी भी प्रकार के शैक्षणिक संस्थाओं से नियोजन निर्देशन एवं शिक्षण से कम लाभ नहीं प्रदान करते हैं।"*

इस परिभाषा से यह तथ्य उभरा–

- दूरस्थ शिक्षा अध्ययन के विभिन्न स्तरों को व्यवस्थित करती है, और सुगम बनाती है।

मालकोन एडिसेशिया – दूरस्थ शिक्षा से अभिप्राय– *"सीखने और सिखाने की वह प्रक्रिया जिसमें स्थान और समय के आयाम सीखने और सिखाने के मध्य दखलदाजी करते हैं।"*

कीगन (1986) – कीगन ने 1986 में एक सम्पूर्ण व्यावहारिक एवं व्यापक परिभाषा प्रस्तुत की और जिसमें दूरस्थ शिक्षा शिक्षा का वह माध्यम है–

- अधिगम के सम्पूर्ण काल तथा शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य अर्ध स्थायी अलगाव बना रहता है, यही दूरस्थ शिक्षा को परम्परागत शिक्षा से अलग करती है।
- यह शिक्षण संस्थाओं को अधिगम सामग्री तैयार करने हेतु नियोजन करने के लिये प्रेरित करती है, यह उसे स्व शिक्षण एवं व्यक्तिगत अध्ययन से अलग करती है।
- शिक्षक एवं शिक्षार्थी को मिलाने हेतु प्रौद्योगिकी माध्यम मुद्रण, श्रव्य, विडियो या कम्प्यूटर का प्रयोग। पाठ्यवस्तु के सम्प्रेषण का आधार देती है।
- अधिगम के सम्पूर्ण काल तक अधिगम समूह की पूर्ण उपस्थिति के अभाव मे व्यक्तिगत शिक्षण का रूप ले लेता है और विशेष अवसरों पर सामाजीकरण व परामर्श हेतु मिलाप होता है। कीगन की परिभाषा ने दूरस्थ शिक्षा के विषय मे जो महत्वपूर्ण भ्रम थे उन्हें भी दूर किये। जिससे दूरस्थ शिक्षा को परम्परागत

विश्वविद्यालयों से अलग करना जिसमें कि बिना दीवार, अनुभव आधारित अधिगम वाह्य परिसर शिक्षा, मुक्त अधिगम एवं परिसर प्रसार जैसे तथ्य सम्मिलित हुये।

विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं से दूरस्थ शिक्षा के विषय में सरलता से समझा जा सकता है।

बोध प्रश्न–

fV Ii k—क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. दूरस्थ शिक्षा की किन विशेषताओं को कीगन ने अपनी परिभाषा में इंगित किया है।

....

....

1.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति

विभिन्न विद्वानों की परिभाषाओं से दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति के कुछ तथ्य उभर कर आये–

- दूरस्थ शिक्षा एक नवाचार है, जो कि परम्परागत शिक्षा प्रणाली से तुलना में अत्यन्त उदार है।
- दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण व्यवहार व अधिगम व्यवहार में सीधा सम्पर्क नहीं होता है। इसमें छात्र की उपस्थिति से सम्बंधित क्रियायें यदा कदा सम्मिलित हैं।
- इस विधा में श्रम विभाजन एवं संगठनात्मक सिद्धान्तों का प्रयोग करके इसे तर्कसंगत बनाया जाता है।
- इसमें उच्च स्तरीय स्व अधिगम सामग्री के निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है।
- दूरस्थ शिक्षा का नियोजन किसी शैक्षिक संस्था एवं संगठन द्वारा किया जाता है। इस प्रकार यह व्यक्गित अध्ययन से भिन्न है। इस प्रणाली में शिक्षक कक्षा तथा विद्यालय की आवश्यकता नहीं पड़ती है।
- इसमें आयु एवं समय की आबद्धता नहीं है, यह आवश्यकता आधारित है।

- इसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों एक–दूसरे से अलग होते हैं, और आपस में सीधा सम्पर्क व प्रत्यक्ष संवाद नहीं या न्यूनतम रहता है। दोनो दूर रहकर अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं।
- दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थियों को स्व–निर्मित वातावरण में स्व–निर्देशित स्व अधिगम का अवसर दिया जाता है।
- शिक्षार्थियों को अधिगम सामग्री के सम्प्रेषण के लिये मुद्रित, तकनीकी, संचार माध्यमों का प्रयोग किया जाता है, जैसे– रेडियो, दूरदर्शन, वीडियो, कैसेट्स, तथा कम्प्यूटर सहायिका अधिगम, प्रिन्टेड पत्र पत्रिकायें प्रयुक्त होते हैं।
- इस प्रणाली में शिक्षक एवं शिक्षार्थियों के माध्यम द्विपक्षीय सम्पर्क बना रहता है। शिक्षक की सामग्री के प्रस्तुतीकरण को समाकलित एवं सम्पोषित करता रहता है।
- यह प्रणाली शिक्षार्थियों का आवश्यकता एवं व्यवसायनुरूप उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि करने तथा उसमें परिमार्जन लाने के लिये शिक्षण, पुनः शिक्षण का अवसर प्रदान करने में सक्षम है।
- विद्यार्थियों का अपने ही समूह के सदस्यों से अलगाव रहता है।
- यह शिक्षण व अधिगम का एक औद्योगीकृत रूप है।
- यह शैक्षिक प्रक्रिया का वैयक्तीकरण को बढ़ावा देता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

2. दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति क्या है ?

....

....

1.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के समकालिक प्रत्यय

दूरस्थ शिक्षा के सम्प्रत्यय को स्पष्ट समझने की आवश्यकता है, क्योंकि कई **समकालिक, शब्दों जैसे** गैर परम्परागत शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, मुक्त शिक्षा, प्रत्राचार शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा आदि मिलते–जुलते है, इससे यह स्पष्ट है कि दूरस्थ शिक्षा शब्द

को लेकर भ्रांतियां है, वैसे तो उपरोक्त सभी प्रकार की शिक्षाप्रणाली में कुछ समानतायें, समान उद्देश्य व समान दर्शन के तथ्य उभर कर आते हैं, कुछ विशेषतायें एक जैसी होने के बाद भी ये सभी शब्द समानार्थी नहीं है, और अधिगम में मुक्तता की भावना की मात्रा सभी में अलग है। हमें दूरस्थ शिक्षा को समझने के लिये पत्राचार शिक्षा, मुक्त शिक्षा, दूरवर्ती शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा के सम्प्रत्यय को समझना आवश्यक है।

मुक्त शिक्षा – इस शिक्षा प्रणाली में यह परम्परागत नियमों के तहत सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था संचालित नहीं होती है। यह मुक्ति का सम्प्रत्यय है, जिसमे नियमों परिनियमों के बन्धन अधिक न हो अर्थात् प्रवेश नियम, उपस्थिति की बाध्यता, परीक्षा सम्बंधी नियम, पाठ्यक्रम प्रकार व समय के सम्बंधित प्रतिबंध, शिक्षणात्मक कार्यों से सम्बंधित नियम इत्यादि। इनकी अधिक से अधिक कमी ही मुक्तता की मात्रा को बढ़ायेगा। सभी पत्राचार शिक्षा व दूरवर्ती शिक्षा मुक्त हो और परम्परागत शिक्षा से अपने व्यवस्था एवं नियमों परिनियमों में लचीलापन अपनाकर मुक्त शिक्षा प्रदान करने वाला हो सकता है।

पत्राचार षिक्षा– पत्राचार शिक्षा एक ऐसी प्रकार की शिक्षा है, जिसमें अध्येता को मुद्रित अथवा साइक्लोस्टाइल्ड सामग्री विद्यार्थियों को डाक द्वारा भेजी जाती है तथा ये मुद्रित सामग्री शिक्षकों द्वारां कक्षा शिक्षण के प्रस्तुतीकरण के रूप में होती है, और एक पक्षीय सम्प्रेषण के रूप में सम्बंध स्थापन हो जाता है, परन्तु इनमें प्रवेश परम्परागत पाठ्यक्रमों के समान ही होता है, इस विधा में कक्षा शिक्षण या प्रत्यक्ष सम्बंध एवं सम्प्रेषण नहीं होता और शिक्षकों के व्याख्यान रूप में शैक्षणिक सामग्री को वितरित करने का कार्य किया जाता है।

दूरवर्ती / दूरस्थ शिक्षा – यह पत्राचार शिक्षा का ही विशुद्ध रूप हैं या यह कहा जा सकता है कि पत्राचार शिक्षा पर ही दूरवर्ती शिक्षा का उद्भव हुआ। दरअसल दूरवर्ती शिक्षा का उद्भव पहले हुआ और कनाडा में सन् 1982 में आयोजित पत्राचार शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद् के बारहवें विश्व सम्मेलन में "पत्राचार शिक्षा" को ही "दूरवर्ती शिक्षा" के नाम में बदल दिया गया, और अपने परिषद् का नाम भी "दूरवर्ती शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय परिषद्" रखा। दूसरी ओर ब्रिटिश ओपन यूनिवर्सिटी की स्थापना से पत्राचार शिक्षा के नाम पर बहस हो रही थी और 1982 में दूरस्थ शिक्षा नाम पर सर्वसम्मति बन सकी। दूरवर्ती एवं दूरस्थ शिक्षा एक ही शब्द के लिये प्रयुक्त होने वाले शब्द है। इसमें प्रत्यक्ष सम्प्रेषण नहीं होता है एवं मौखिक सम्प्रेषण द्वारा प्रदान की जाने वाली स्वाभाविक गतिशीलता का अभाव होता है। इसमें शिक्षक की उपस्थिति से उत्पन्न होने वाली शैक्षिक जीवन्तता की कमी के दोष से युक्त होती है पर शैक्षिक अधिगम

सामग्री को प्रत्यक्ष सम्प्रेषण प्रणाली के तत्वों में वृद्धि करके छात्रों के अधिगम अनुभवों के परिवेश के अनुरूप निर्मित करके पूर्ण करने का प्रयास करती है।

अनौपचारिक शिक्षा– शिक्षा की वह विधा जिसमें 6 से 14 वय वर्ष वर्ग के बच्चों को आधारभूत साक्षरता प्रदान करने व कुशलताओं को विकसित करने का प्रयास किया जाता है। विशेषकर स्कूल न जाने वाले बच्चों के लिये जिन्होनें पढ़ाई छोड़ दी। यह शिक्षा परम्परागत, रूढ़िवादिता एवं जटिलताओं से मुक्त होती है। यह औपचारिक शिक्षा का विस्तृत एवं लचीला रूप है। इसमें समय, स्थान, सत्र एवं प्रवेश, नियमन सरल एवं लचीले तथा व्यापक होते है। यह सामाजिक मांग व सुविधा के अनुसार ही दी जाती है। शिक्षार्थी अपने खाली समय में इस शिक्षा को प्राप्त करते हैं। अनौपचारिक शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा प्रक्रिया से है, जो व्यक्ति को प्रत्येक स्थान, समय व परिस्थिति में औपचारिकेतर रूप से नागरिकों को कुशलतापूर्वक जीवन जीने की योग्यता प्रदान करती है। यह औपचारिक शिक्षा की विरोधी नहीं वरन् उसकी सहायक है। औपचारिक शिक्षा की सीमा जहां समाप्त होती है, वहां से औपचारिकेतर शिक्षा की सीमा प्रारम्भ होती है, और जो अनवरत् चलती रहती है।

उपरोक्त विवेचनाओं से यह स्पष्ट है कि दूरवर्ती शिक्षा के प्रयोग से शिक्षा प्रणाली में खुलापन आता है अतः मुक्त विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का ही प्रयोग करते हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त अधिगम के स्थान पर 'दूरस्थ शिक्षा' शब्द का प्रचलन अधिक है और कुछ अन्य छोटे शब्द भी बोले जाती है, जिनमें भ्रम न हो अतः उनकी चर्चा नीचे की जा रही है।

- **स्वतंत्र अध्ययन** – वेडेमीयर ने स्वतंत्र अधिगम/अध्यन शब्द का प्रयोग सर्वाधिक किया है। इसीलिये अमेरिका में इस शब्द का प्रचलन बढ़ा है।
- **बाह्य परिसर अध्ययन**– विद्यालय के अन्दर प्रदान किये जाने वाली परम्परागत शिक्षा से अलग हटकर दी जाने वाली शिक्षा ही बाह्य परिसर अध्ययन कही जा सकती है। इस शिक्षा की मुख्य विशेषता परिसर के अन्दर के बन्धनों से मुक्ति है। इस शब्द का मुख्य रूप से प्रयोग आस्ट्रेलिया एवं दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में होता है।
- **बाह्य प्रणाली / अध्ययन** – लन्दन में बाह्य प्रणाली शब्द अत्याधक प्रचलित था इस प्रणाली में विद्यार्थी बिना शिक्षण के मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं से परीक्षा उत्तीर्ण करने का अवसर दिया जाता है। इस शिक्षा में भी शिक्षार्थियों को कक्षा शिक्षण हेतु उपस्थिति की अनिवार्यता नहीं होती। इस प्रत्यय में भी

मुक्त अधिगम के सभी गुण परिलक्षित नहीं होते हैं, न ही यह दूरस्थ शिक्षा के जितना स्पष्ट है। यह शब्द आस्ट्रेलिया में प्रयुक्त होता है।

- **गृह अध्ययन–** इसका सीधा अभिप्राय है विद्यार्थियों को बन्धनों से उन्मुक्त मुक्त वातावरण में स्वयं अध्ययन करने हेतु अवसर प्रदान करना। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग "स्वीडिस स्कूल आफ करेस्पान्डेन्स कोर्सेज" के द्वारा किया गया। अब यह शब्द यूरोप में ही प्रयोग में लाया जाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

3. दूरस्थ शिक्षा को मुक्त शिक्षा क्यों कहा जाता है ?

....

4. पत्राचार शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा में क्या अन्तर है?

....

5. बाह्य परिसर अध्ययन और स्वतंत्र अध्ययन क्या है?

....

1.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा और परम्परागत शिक्षा में अन्तर

दूरस्थ शिक्षा के सम्प्रत्यय को समझने के लिये यह आवश्यक है कि इससे परम्परागत शिक्षा के अलगाव को समझा जाये। हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को इस प्रकार से परम्परागत शिक्षा से अलग इन बिन्दुओं पर देख सकते है–

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा	परम्परागत शिक्षा
• इस व्यवस्था में शैक्षिक तकनीकी का बहुत अधिक प्रयोग है।	• इस व्यवस्था में सम्प्रेषण का आधार शैक्षिक, विधियां है एव प्रत्यक्ष सम्प्रेषण है।
• इस विधा में प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षा का प्रावधान नहीं है।	• इसमें प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण ही शिक्षा की मुख्य प्रक्रिया है।
• दूरस्थ शिक्षा में आयु, प्रवेश, पाठयक्रम में उपलब्धि सम्बंधित नियम, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को	• इसमें आयु, प्रवेश एवं पूर्व उपलब्धि से सम्बंधित कठोर नियम होते हैं।

छोड़कर अधिकांशतः में नही के बराबर है।	
• इसमें शिक्षक एवं छात्र के बीच प्रत्यक्ष कक्षागत व्यवहार नहीं होता है।	• यह शिक्षक एवं छात्र के बीच प्रत्यक्ष कक्षागत परिस्थितियों में सम्पन्न होने वाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया है।
• यह विद्यार्थियों को मुद्रित सामग्री प्रदान करती है।	• यह विद्यार्थियों को मुद्रित सामग्री नही देती है। इसमें मौखिक अभिव्यक्ति का मुख्य स्थान है।
• यह विधा विद्यालयी बन्धनों से उन्मुक्त है।	• यह शिक्षा विद्यालयी बन्धनों से युक्त है।
• यह विद्यार्थियों को प्रथम स्थान देकर स्वतंत्र अध्ययन व स्वगति से बढ़ने हेतु प्रेरित करता है।	• इसमें विद्यार्थियों का प्रथम स्थान होता हुए भी गौण रहता है और अध्ययन पाठ्यक्रम एवं उपलब्ध समय के आधार पर संचालित होता है।
• यह विद्यार्थियों की रूचि एवं आवश्यकता पर आधारित है।	• यह विद्यार्थियों की रूचि एवं आवश्यकता से पूर्णतया सम्बंध नहीं रख पाती है।
• इसमें विद्यार्थी स्वप्रेरित व स्वनिर्देशित होता है।	• इसमें विद्यार्थी शिक्षक प्रेरित एवं शिक्षक निर्देशित होता है।
• यह अत्यधिक लचीली है और अध्येता के समय आवश्यकता एवं स्थान के सापेक्ष ढल जा रही है।	• यह लचीली नहीं है।
• इसमें अध्यापक परामर्शदाता कहलाता है, और यही कार्य भी	• इस प्रणाली में शिक्षण करने वाला करता है। शिक्षक/शिक्षिका कहलाते है।
• इस व्यवस्था में अधिगम करने वाले दूर– अध्येता कहलाते हैं	• इसमें अधिगम करने वाला शिक्षार्थी कहलाता है।
• दूरस्थ शिक्षा का प्रारूप स्पष्ट एवं पहचान में आ सकने वाला नहीं होता है।	• परम्परागत शिक्षा का प्रारूप स्पष्ट एव पहचान में आ सकने वाला होता है।
• यह वास्तविक जीवन से जुड़ी हुई शिक्षा है।	• इसमें जीवन से वास्तविक सम्बंध का अभाव पाया जाता है।
• शिक्षक–छात्र के प्रत्यक्ष सम्पर्क न होने के कारण यह कम जीवन्त मानी जाती है।	• शिक्षक–छात्र के प्रत्यक्ष सम्पर्क होने के कारण यह अधिक जीवन्त रहती है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

6– दूरस्थ शिक्षा में जीवन्तता की कमी क्यो पायी जाती है?

....

7– दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा से लचीली क्यो मानी जाती है?

....

1.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता

दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था वर्तमान शिक्षा व्यवस्था का पर्याय बन चुकी है। दीर्घकाल में इसकी आवश्यकता और बढ़ेगी। 21वीं सदी में दूरस्थ शिक्षा अपने स्वतंत्र एवं महत्वपूर्ण अनुशासनात्मक अस्तित्व के साथ शिक्षा जगत में नया इतिहास रच रही है। दूरस्थ शिक्षा मुक्त शिक्षा के रूप में अपने अभिनव स्वरूप के साथ उर्ध्वगामी यात्रा कर रही है। दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा में नवाचार न मानकर मुक्त शिक्षा को दूरस्थ शिक्षा में नवाचार के रूप में मानना चाहिये।

- परम्परागत शिक्षा व्यवस्था अपनी अपरिवर्तनशील कठोर नियमों में आबद्धता के कारण आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी युग की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम नहीं है और दूरस्थ शिक्षा इन आवश्यकताओं को पूरा करने का प्रयास कर रही है।
- यह विधा लागत प्रभावी ही नहीं लागत कुशल भी है। यह नम्य व नवाचारात्मक शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देती है।
- यह प्रणाली सामाजिक शैक्षिक एवं आर्थिक स्थितियों के कारण उत्पन्न पृथकता को दूर करने में सहायता प्रदान करती है।
- यह प्रणाली लोकतंत्र समाज की सभी आवश्यकताओं को पूरा करते हुये भारतीय संविधान में सभी के लिये शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने में सक्षम है।
- यह प्रणाली कम खर्चीली है इसमें अध्येताओं को परम्परागत शिक्षा की अपेक्षा कर्म खर्च करना पड़ रहा है।

- दूरस्थ शिक्षा प्रणाली देश के 75 प्रतिशत गांवो में बस रही जनसंख्या को भी शिक्षा प्रदान करने में सक्षम हैं।
- यह शिक्षा प्रणाली व्यवस्था विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत लोगों को भी आगे पढ़ने के सुअवसर प्रदान करती है।
- यह प्रणाली घर--घर शिक्षा उपलब्ध कराने में असमर्थ परम्परागत शिक्षा प्रणाली के पूरक के रूप में कार्य कर रही है।
- यह प्रणाली सामाजिक व आर्थिक रूप में पिछड़े लोगों को समाज के उपयोगी नागरिक बनने में सहायता करती है।
- विभिन्न व्यवसायों से सम्बंधित पाठ्यक्रमों को संचालित कर यह घर बैठे लोगों को व्यवसाय विशेष में प्रशिक्षित कर आत्म निर्भर बनाने में विशेष योगदान निभा रही है।
- दूरस्थ शिक्षा सभी शैक्षिक उपलब्धि वाले विद्यार्थियों को आगे की शिक्षा प्राप्त करने व निरन्तरता रखने का आधार प्रदान करती है।
- दूरस्थ शिक्षा प्रणाली हमारी शिक्षा व्यवस्था को भूण्मण्डीकरण के चुनौतियों के अनुरूप तैयार करने में समर्थ है क्योंकि इसका प्रचार–प्रसार का क्षेत्र व्यापक है, और यह आन लाइन शिक्षण एवं मूल्यांकन की व्यवस्था देती है, और तकनीकी साधनों, प्रिन्ट, दृश्य श्रव्य, एवं कम्प्यूटर का प्रयोग करके इस प्रणाली को अधिक आधुनिक बना दिया गया है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

8. "दूरस्थ शिक्षा परम्परागत शिक्षा की पूरक है।" समझाइयें।

....

....

1.8 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक अनुशासन के रूप में

दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा आधुनिक समाज एवं व्यक्तियों को नवीन अकांक्षाओं की पूर्ति हेतु उत्पन्न हुई। यह अकांक्षायें ज्ञान विस्फोट, जनसंख्या विस्फोट एवं आवश्यकताओं की बढ़ती मॉग के कारण उत्पन्न हुयी है। यह शिक्षा प्रणाली

आवश्यकताओं परिस्थितियों तथा वातावरण सम्बंधी समस्याओं को समझने तथा उनके समाधान का प्रयास करती है। यह एक वैकल्पिक शिक्षा प्रणाली है। जिसका उद्देश्य औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से वंचित व्यक्तियों तक पहुँचकर शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराना है। ज्ञान के विस्फोट ने दूरस्थ शिक्षा को अत्यन्त लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया है। ज्ञान एवं तकनीकी ने परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से अधिक दूरस्थ शिक्षा पर प्रभाव डाला है, और इस रूप में यह परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से अलग खड़ी हो गयी है और अपना स्वयं का अस्तित्व स्थापित कर एक अनुशासन का रूप ले लिया है। इसमें अनुशासन के रूप में प्रस्थापित होने के सभी गुण निहित हैं। इसकी चर्चा हम आगे कर रहे हैं।

1– **स्वयं सिद्ध उद्देश्य**– अन्य अनुशासनों की भांति दूरस्थ शिक्षा के अपने पृथक एवं स्वयं सिद्ध उद्देश्य है– जैसे कि–

- शिक्षा को सर्वसुलभ बनाना।
- शिक्षा के समान अवसर प्रदान करते हुये प्रचार–प्रसार करना।
- शिक्षा को घर–घर तक पहुँचाना।
- शिक्षा को आवश्यकतानुसार, क्षमतानुसार एवं रूचि के अनुसार प्रदान करना।
- दूरस्थ शिक्षा अपने इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर ही संचालित होती है।

2– **व्यवस्थित पाठ्यक्रम** – दूरस्थ शिक्षा की अपनी स्वयं का व्यवस्थित पाठ्यक्रम है। इसके अन्तर्गत दूरस्थ शिक्षा का इतिहास, सिद्धान्त, मुद्रित एवं अमुद्रित माध्यमों का प्रयोग इसमें सम्प्रेषण की प्रविधियों अनुदेशन की प्रणाली एवं स्रोत केन्द्र, विभिन्न प्रकार के परीक्षण एवं मूल्यांकन प्रविधि इसके प्रशासनिक तंत्र है। इसके अतिरिक्त इसमें आर्थिक व्यवस्था, दूरस्थ शिक्षा से शिक्षक शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा में शोध कार्य एवं अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रम आदि सम्मिलित है। इसमें विभिन्न प्रकार के सैद्धान्तिक पाठ्यक्रमों के अतिरिक्त व्यावसायिक पाठ्यक्रम भी संचालित किये जा रहे हैं। सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में उद्देश्यों एवं उपयोगिता के साथ नवीनता को विशेष रूप से समाहित किया जाता है। इसकी पाठ्यवस्तु, प्रभावी सम्प्रेषण, व्यूह रचनाओं एवं शिक्षा के बहुआयामी उपगामों की जानकारी प्रदान करती है।

3–**विविध शिक्षण विधियों का समावेश** – दूरस्थ शिक्षा में प्रत्यक्ष कक्षा शिक्षण का अभाव अवश्य पाया जाता है, पर यह इस कमी को पूरा करने हेतु अपनी स्वयं की शिक्षण विधियों को व्यवस्थित किया है, पाठ्यवस्तु के सम्प्रेषण हेतु विविध माध्यमों को प्रयोग में लाया जाता है। इसमें सम्प्रेषण अवश्य ही एक मार्गीय होता है, और

शिक्षक–छात्र का सम्बंध स्थापित नहीं हो पाता है तो इसमें पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण पर बल अधिक दिया जाता है। उसके अतिरिक्त सहायक प्रणाली के रूप में अध्ययन केन्द्रों में परामर्श सत्रों एवं कार्यशालाओं को आयोजित कर प्रत्यक्ष सम्पर्क की कमी को पूरा करने का प्रयास किया जाता है। यह अनुदेशन प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने की एक विधि के रूप में कार्य करते हैं।

4– **सामाजिक एवं व्यावसायिक क्रिया से सम्बंधित**– दूरस्थ शिक्षा का समाज से प्रत्यक्ष सम्बंध है यह समाज को सुयोग्य प्राणी प्रदान करने के लिये कटिबद्ध है, इसके लिये यह शिक्षा व्यवस्था को अधिक लचीली और सुगम्य बना रही है, इसके अतिरिक्त सामाजिक हितों से सम्बंधित अनेक पाठ्यक्रम चला रहे हैं, इसके अतिरिक्त इस व्यवस्था से व्यावसायिक कुशलता विकसित करने हेतु भी अनेक व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित हो रहे हैं।

5– **अपना चिन्तन क्षेत्र** – दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के चिन्तन का क्षेत्र "सभी के लिये" शिक्षा और सुगम्य एवं लचीली शिक्षा है। इसके कारण ही यह परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से अधिक प्रकार के पाठ्यक्रमों को नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप संचालित कर रहा है। शिक्षा व्यवस्था में स्वतंत्रता इसके चिन्तन के मूल में सम्मिलित है और आवश्यकता का समावेश कर यह नित नवीन परिवर्तन की ओर अग्रसर है।

6–**स्वयं व्यवस्थित शोध क्षेत्र**– अन्य अनुशासनों की भांति दूरस्थ शिक्षा का भी अपना व्यवस्थित शोध क्षेत्र है। शोध के पाध्यम से ही यह नित अपने पाठ्यक्रमों, विषयवस्तु, शिक्षण विधियों, सुविधाओं एवं प्रशासन व्यवस्था में नित नये परिवर्तन कर प्रसार की ओर अग्रसर है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से माध्यमों एवं सम्प्रेषण प्रणाली पर अध्येता दृष्टिकोण, पाठ्यवस्तु विश्लेषण, उपयोगिता, दूर शिक्षा दर्शन एवं सिद्धान्त, इतिहास, पाठ्यक्रम विकास, मुद्रित सामग्री, व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम, परीक्षा प्रणाली, संस्थागत नियोजन एवं व्यवस्था, सम्प्रेषण विधियों अनुदेशन प्रणाली, अध्यापक शिक्षा, सम्भावित दूर शिक्षा प्रारूप विभिन्न व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की उपयोगिता आदि पक्षों को शोध कार्यों के लिये नवीन क्षेत्र के रूप में चयनित किया है।

7– **व्यवस्थित शोध विधियॉ** – दूरस्थ शिक्षा ने अपनी शोध प्रविधियां विकसित की है। शोध सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार के होते हैं। अतः शोध कार्य हेतु प्रयोगात्मक, क्रियात्मक, ऐतिहासिक एवं सर्वेक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। अधिकांशतः शोध कार्य इसमें प्रभावशीलता, उपयोगिता एवं कमियों को इंगित करने

हेतु किये जाते हैं। शोध निष्कर्षों के आधार पर नवीन तथ्यों एवं कारणों के ज्ञान के साथ–साथ नवीन सिद्धान्तों एवं नियमों का प्रतिपादन भी सम्भव हो पाता है।

8– **पृथक प्रशासनिक एवं शिक्षण तन्त्र**– अन्य अनुशासनों की ही भाँति दूरस्थ शिक्षा के अपने प्रशासनिक तंत्र एवं शैक्षिक ढांचा है। इसके अपने मुक्त विद्यालय, पत्राचार शिक्षा निदेशालय, मुक्त विश्वविद्यालय है। इस माध्यम से इसके सम्पूर्ण तंत्र की देख–रेख व प्रचार–प्रसार का कार्य किया जाता है। इसका प्रशासनिक तंत्र विकेन्द्रीकृत किया गया है और क्षेंत्रों एवं जनपदों में विभाजित है और सभी एक केन्द्र से संचालित होते है।उपरोक्त सभी विशिष्टतायें दूरस्थ शिक्षा को एक शैक्षिक अनुशासन के रूप में प्रस्थापित करती है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क–नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

9. दूरस्थ शिक्षा को एक अनुशासन क्यों कहा जा सकता है?

....

1.9 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धान्त

दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की अपनी विशिष्ट प्रकृति है और यही प्रकृति विभिन्न सिद्धान्तों के रूप में परिलक्षित होती है। प्रमुख विचारकों ने दूरस्थ शिक्षा के भिन्न सिद्धान्त बताये हैं। यह सिद्धान्त है–

1. चार्ल्स बेडेमियर का स्वतंत्र अध्ययन का सिद्धान्त।
2. माइकेन मुरे के स्वतंत्र अध्ययन का पुनरावलोकित सिद्धान्त।
3. आटोपीटर्स का शिक्षण अधिगम का औद्योगिकृत रूप का सिद्धान्त।
4. बोजी होमबर्ग का निर्देशित शैक्षिक वार्तालाप का सिद्धान्त।
5. जॉन बाथ का द्विमार्गी डाक संम्प्रेषण का सिद्धान्त।
6. डेविड स्पार्ट का शिक्षण अधिगम के औद्योगिकृत रूप में मानवीय तत्व का सिद्धान्त।

उपरोक्त सभी सिद्धान्त सम्पूर्ण दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की विवेचना करते हैं, इनको विस्तृत रूप में हम आगे पढ़ेंगे।

1– चार्ल्स बेडेमियर का स्वतंत्रत अध्ययन का सिद्धान्त–

अमेरिका के विस्कान्सिल विश्वविद्यालय में शिक्षा के प्रोफेसर रह चुके बेडेमियर 1960 से 1970 तक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से जुड़े रहे। बेडेमियर ने दूरस्थ शिक्षा व परम्परागत शिक्षा व्यवस्था को आमने–सामने रखकर उनके मध्य अन्तर का विश्लेषण किया जो कि दूरस्थ शिक्षा की पहचान के रूप में उभरे हैं।

शिक्षार्थी की स्वतंत्रता– बेडेमियर के सभी लेखों में स्वतंत्र अध्ययन, मुक्त अधिगम व दूरस्थ शिक्षा का उल्लेख मिला। संयुक्त राज्य अमेरिका में उच्च स्तर के पत्राचार पाठ्यक्रम "स्वतंत्र अध्ययन" शब्द के रूप में पुकारा जाता है। मुक्त अधिगम शब्द ने ही मुक्त विश्वविद्यालय शब्द की उत्पत्ति की, और दूरस्थ शिक्षा ने "पत्राचार शिक्षा" शब्द का स्थान लिया। बेडेमियर ने शिक्षार्थी स्वतंत्रता को मुख्य रूप से मुक्त शिक्षा का आधार बताया है, उनके अनुसार– *"स्वतंत्रत अध्ययन के अन्तर्गत वे शिक्षण संस्थाये आती है, जिनमें शिक्षक व शिक्षार्थी एक–दूसरे से अलग रहते हुये अपने कार्यों एव उत्तरादायित्वों का निर्वहन करते हैं। इसका उद्देश्य विद्यालयी आबद्व नियमों से शिक्षार्थियों को उन्मुक्त रखते हुये स्वतंत्र वातावरण में अध्ययन हेतु अवसर प्रदान करना तथा स्वगति से स्वनिर्देशित होकर आगे बढ़ने की क्षमता का विकास करना है।"*

इस परिभाषा में उदारवादी दृष्टिकोण का आभास मिलता है। उनके अनुसार बालक की आयु सामाजिक, आर्थिक, व्यावसायिक, स्वास्थ्य सम्बंधी कोई भी समस्या शिक्षा प्राप्त करने के मध्य नहीं, आ सकती है। ऐसी शिक्षा व्यवस्था ही "स्वतंत्र अध्ययन" कहला सकती है।

- स्वतंत्रत अध्ययन के अन्तर्गत शिक्षार्थी को स्वतंत्रता होगी अपने ढंग, अपने गति से सीखने का।
- अपने शैक्षिक लक्ष्यों को अपने तरीके से चयन करने की स्वतंत्रता होगी।
- अपने अध्ययन में उपलब्ध माध्यमों एवं संसाधनों का अधिकतम उपयोग कर सकेगा। अपने अध्ययन का उत्तरदायित्व एवं मूल्यांकन कर सकेगा।

अ)–शिक्षक शिक्षार्थी की दूरी– छात्र स्वतंत्रता का सबसे बडा आधार शिक्षक से दूरी होगी। बेडेमियर ने इसको स्पष्ट किया कि कक्षा–कक्ष के शिक्षण में शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम व सम्प्रेषण होता है।

परन्तु दूरस्थ शिक्षा में कक्षा–कक्ष में निहित गतिविधि को लिखित एंव मुद्रित सामग्री के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और यह मुद्रित सामग्री शिक्षक द्वारा दिये गये व्याख्यान एवं मध्य में किये मूल्यांकन (बोध प्रश्नों) एवं स्पष्टीकरण को समेटे रहती है। शिक्षक

और छात्र के मध्य दूरी से यह स्पष्ट होता है कि–

- शिक्षार्थी अपनी अधिगम क्रियाओं को प्रारम्भ करने, गति प्रदान करने तथा समाप्त करने के लिये स्वतंत्रत होता है और असफलता के लिये जिम्मेदार होता है।
- शिक्षार्थी को अपने परिवेश में अपने ढंग से अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है।
- शिक्षक एवं छात्र दोनों के लाभ के लिये अन्य सम्भव माध्यम जैसे मुद्रित सामग्री, श्रव्य दृश्य साधन आदि का उपयोग किया जाता है।
- अधिगम को अधिक प्रांसगिक बनाने का प्रयास किया जाता है।

ब)–संरचनात्मक व्यवस्था– दूरस्थ शिक्षा शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को आवश्यक सांस्कृतिक परिवर्तन करने के लिये बाध्य करती है। दोनों की भूमिका में परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से अधिक अन्तर है, इसमें शिक्षार्थी को अपेक्षाकृत अधिक उत्तरदायित्व निर्वहन करना पड़ता है।

- शिक्षार्थी को पाठ्यवस्तु व अध्ययन विधि चयन की स्वतंत्रता है।
- शिक्षार्थी व्यक्तिगत भिन्नताओं के आधार पर ही अधिगम कर पाते हैं, और अपनी गति के आधार पर पाठ्यक्रम को पूर्ण करने की स्वतंत्रता होती है।
- विद्यार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन स्वतंत्र ढंग से किया जाता है।
- शिक्षा पाठ्यवस्तु की व्यवस्थापक के रूप में कार्य करता है, तथा प्रशासनिक कार्यों से मुक्त रहता है।
- शिक्षक कक्षा–कक्ष में परामर्शदाता के रूप में कार्य करता है।
- सम्पूर्ण सहायक प्रणाली को शिक्षार्थी के परिस्थिति के अनुरूप ही संचालित करना पड़ता है।

बेडेमियर के अनुसार शिक्षा की जिस प्रणार्ल में यह गुण होते हैं वही स्वतंत्रत अध्ययन होती है।

2. **माइकल मूरे– स्वतंत्र अध्ययन की पुनरावलोकित सिद्धान्त–** माइकेल मूरे ने भी संयुक्त राज्य **अ**मेरिका की **नोवा** स्कोटिया एवं विसकान्सिन विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग व ब्रिटिश **मुक्त** विश्वविद्यालय के वरिष्ठ काउन्सलर के अनुभवों के आधार पर दूरस्थ **शिक्षा** के सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया है। इन्होनें स्वतंत्र सिद्धान्त प्रस्तुत करने के बजाय बेडेमियर के विचारों की ही अन्तर्दृष्टि एवं विश्लेषणात्मक प्रतिमान **प्रस्तुत** किया है।

स्वतंत्रत अध्ययन के सम्बंध में मूरे का विचार– मूरे परम्परागत शिक्षा प्रणाली में विद्यालय वातावरण को प्रमुख मानते हैं, क्योंकि कक्षा–कक्ष के क्रियाकलाप शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है। दूरस्थ शिक्षण में दूरी एवं स्वतंत्रता दोनों निहित होते हैं। संवाद एवं संरचना विहिनता ही दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था को अन्य शिक्षा व्यवस्था से अलग करता है।

- Ø **दूरस्थ शिक्षा में कक्षा**–कक्ष के संवाद को टेलीफोन, पत्राचार, दूरदर्शन, मुद्रित पाठ्यसमाग्री एवं अभिक्रमित अनुदेशन एवं कम्प्यूटर आधारित अनुदेशन के माध्यम से किया जाता है परन्तु टेलीफोन व पत्राचार से द्विपक्षीय संवाद भी स्थापित होता है।
- Ø परम्परागत शिक्षा व्यवस्था में शैक्षिक कार्यक्रमों की एक निश्चित संरचना एवं स्वरूप होता है।

इसका तात्पर्य यह है कि औपचारिक शिक्षा में उद्देश्य, अध्ययन विधियां, पाठ्य सामग्री एवं मूल्यांकन विधियां आदि पहले से ही निश्चित होते हैं तथा निर्धारण में शिक्षार्थियों की समस्याओं की अनदेखी हो जाती है। इसके विपरित एसे शैक्षिक कार्यक्रम का जिसमें शिक्षार्थियों की विशेषताओं की विविधता के अनुरूप पर्याप्त लचीलापन हो, कोई निश्चित स्वरूप नहीं हो सकता क्योंकि इसमें संरचना का अभाव होता है, और यही अभाव अधिगम के वैयक्तिकरण को सम्भव बनाता है, क्योंकि इसमें शिक्षार्थियों को ध्यान में रखकर उद्देश्य, विधियां, पाठ्यसामग्री एवं मूल्यांकन प्रणाली को निर्धारित किया जाता है।

शिक्षार्थी स्वतंत्रता– परम्परागत शिक्षा व्यवस्था शिक्षक निर्धारित होती है पर जब शिक्षण के उद्देश्य, विधियां एवं शिक्षण सामग्री विद्यार्थी को देखकर निर्धारित किये जाते हैं, तब उसे हम शिक्षार्थी निर्धारित कार्यक्रम कहेंगे। किसी कार्यक्रम में प्रदान की गयी शिक्षार्थी स्वतंत्रता की मात्रा के आधार पर उसे शिक्षार्थी निर्मित अर्थात् स्वतंत्र की संज्ञा दी जा सकती है।

3. ऑटो पीटर्स की शिक्षण अधिगम के औद्योगीकृत रूप का सिद्धान्त–

जर्मनी के दूरस्थ शिक्षा संस्थान में कार्य **करते हुये** आटो पीटर्स ने इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। सन् 1975 ई0 में उन्होनें जर्मनी के मुक्त विश्वविद्यालय के प्रथम वाइस चान्सलर के रूप में कार्य करते हुये यह **अनुभव किया कि** उच्च विकसित समाज में वर्तमान की आवश्यकता के अनुसार शिक्षा की आवश्यकता है जो कि परम्परागत शिक्षा से सम्भव नहीं है, इन्होनें अपने विचार 1960 के दशक में अपनी पुस्तक "दि

डिडेक्टिव स्ट्रकचर ऑफ डिस्टैन्स टिचींग इन्वेस्टीगेसन्स टुवर्डस एन इन्डस्ट्रिलाइज्ड फार्म आफ टीचिंग एण्ड लर्निंग'' में लिखा। इन्होनें यह स्पष्ट किया कि दूरस्थ शिक्षा की विषयवस्तु संक्षिप्त, स्पष्ट एवं बोधगम्य होती है, और शिक्षा विधियां परम्परागत शिक्षा विधियों से बहुत अधिक भिन्न है। इनके अनुसार दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के प्रमुख औद्योगिक विशेषतायें है–

- श्रम का विभाजन अर्थात् प्रत्येक स्तर पर विषय विशेषज्ञ, कोर्स लेखक, अनुदेशन सामग्री सम्पादक, मुद्रक, प्रेषक आदि होता है। यह सम्पूर्ण शैक्षणिक प्रक्रिया पर भी लागू होता है।
- दूरस्थ शिक्षा में उद्योगो की भांति व्यापक स्तर पर बढ़ती मांग के अनुरूप शिक्षण सामग्री का उत्पादन किया जाता है।
- कार्य प्रणाली को सुव्यवस्थित किया जाता है, जिसमें नियोजन, प्रक्रिया का [illegible]ण उत्पादन का मानकीकरण, समूची प्रक्रिया का व्यवस्थीकरण, मशीनीकरण जैसे सभी पक्ष सम्मिलित किये जाते हैं।
- पीटर्स के अनुसार मुक्त विश्वविद्यालय के परिसर का प्रारूप परम्परागत विश्वविद्यालयों के प्रारूप से भिन्न होता है। यह काफी हद तक औद्योगिक क्षेत्रों के प्रारूपों जैसे होते है।
- पीटर्स के अनुसार शैक्षिक सम्प्रेषण बनावटी होता है।
- दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक की भूमिका प्रबंधक जैसी है। इस व्यवस्था में शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों की भूमिकाओं एवं प्रकृति में परिवर्तन आ जाता है।

4. बोर्जी होमबर्ग का निर्देशित शैक्षिक वार्तालाप का सिद्धान्त – बोर्जी होमबर्ग ने एक प्राध्यापक के रूप में 1956 में **स्वीडन** के हार्मोडस पत्राचार शिक्षा संस्थान में कार्य करते हुये दूरस्थ शिक्षा की ओर **प्रवृत्त हुये थे। ये** आगे चलकर पश्चिमी जर्मनी ने फर्न यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुये। इनके अनुसार शिक्षा का सार ''व्यक्तिगत शिक्षार्थी द्वारा सीखना'' **होता है। व्यक्तित्व** अध्ययन हेतु दूरस्थ माध्यम सर्वोत्तम है, क्योंकि यह अध्येता को पूर्ण स्वतंत्रता **देत** है, इसमें अध्येता को रेडियो, दूरदर्शन, श्रव्य दृश्य कैसेट, टेलीफोन, कम्प्यूटर व सम्पर्क **कार्यक्रम** के द्वारा शिक्षण आदि को चुनने तथा उनसे लाभ उठाने की स्वतंत्रता होती **है।** सीखने व शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने का दायित्व अध्येता का होता है। इनके **अनुसार** शैक्षिक वार्तालाप दो प्रकार के होते हैं–

- Ø वास्तविक अथवा प्रत्यक्ष **वार्तालाप।**
- Ø अप्रत्यक्ष **अथवा नाटकीय वार्तालाप।**

वास्तविक व प्रत्यक्ष वार्तालाप– यह द्विमार्गी होता है। यह दो व्यक्तियों या समूह के आमने–सामने होने पर होता है, पर यह वास्तविक अन्तः क्रिया को जन्म देता है

नाटकीय वार्तालाप– इसमें अध्ययन सामग्री का प्रस्तुतीकरण एक तरफ से होता है इसमें सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में अध्येता अकेला रहता है। इसमें पाठ्य सामग्री एक विशिष्ट ढंग से प्रस्तुत होती है। आप दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थी होने के कारण यह समझ गये होंगे कि अप्रत्यक्ष वार्तालाप की स्थिति उत्पन्न करने हेतु प्रस्तुत विषय सामग्री की एक विशिष्ट ढंग से प्रस्तुत करना होता है। होमवर्ग ने इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हुये कहा कि *'निर्देशित शैक्षणिक वार्तालाप की विधि के रूप में मेरा दूरस्थ शिक्षा का सिद्धान्त यह बतलाता है कि अच्छे दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति अधिगमोन्मुख निर्देशित वार्तालाप से मेल खाती है तथा इस प्रकार के वार्तालाप के विशिष्ट तत्वों की उस्थिति अधिगम में सहायक होती है।'* होमवर्ग के अनुसार शैक्षणिक वार्तालाप की विशेषतायें होनी चाहिये–

- अध्ययन सामग्री के बोधगम्यता, प्रस्तुतीकरण, स्पष्ट एवं शैक्षणिक भाषा पठनीय लिखावट।
- विद्यार्थियों के लिये सहयोग एवं सुझाव विचारों के आदान–प्रदान हेतु सुझाव, निर्णय लेने की क्षमता व अध्येता को भावात्मक रूप से जोड़ने का प्रयास एव सम्बोधन के व्यक्तिगत ढंग से होना चाहिये।

5. जॉन बाथ का द्विमार्गी डाक सम्प्रेषण का सिद्धान्त– पूर्व में आप होमबर्ग के सिद्धान्त को पढ़ चुके हैं। जॉन बाथ के विचार उनसे अलग नहीं है। स्वीडन के मूल निवासी जान बाथ का हारमाडस पत्राचार शिक्षा संस्थान से नाम जुड़ा। वाथ का मानना है कि, शिक्षा को औद्योगीकृत रूप प्रदान कर दूरस्थ शिक्षा ने जन शिक्षा का रूप लिया यह वास्तव में स्वतंत्र अध्ययन है।

वाथ के अनुसार पत्राचार शिक्षा प्रणाली मे अध्येता शिक्षकों को कुछ प्रश्नों के उत्तर लिखकर मूल्यांकन हेतु संस्थान भेजना होता है और ये कार्य सत्रीय कार्य कहलाते हैं। संस्थान दूर शिक्षक से यह कार्य मूल्यांकन करवाता है, जिसमें सुधार हेतु शिक्षक टिप्पणी देता है। ये टिप्पणी विद्यार्थी को प्रतिपुष्टि प्रदान कर प्रेरित करती है। परन्तु शिक्षा के औद्योगीकृत रूप में शिक्षक टिप्पणी के महत्व को नकार दिया है। द्विमार्गी सम्प्रेषण ने शिक्षण टिप्पणी एक कडी का काम करती है। वाथ के अनुसार प्रदत्त कार्यों पर शिक्षक की टिप्पणी का विशेष शैक्षणिक महत्व होने पर भी द्विमार्गी डाक सम्प्रेषण के प्रयोग में कमी की प्रवृत्ति दखेने को मिलती है। यह प्रवृत्ति समाप्त होनी चाहिये।

शिक्षण अधिगम में सुधार हेतु द्विमार्गी सम्प्रेषण आवश्यक है।

6. डेविड स्वॉट का शिक्षण अधिगम के औद्योगीकृत रूप में मानवीय तत्व का सिद्धान्त– डेविड स्वॉट ने 1973 में ब्रिटेन के मुक्त विश्वविद्यालय में दूरवर्ती शिक्षा के प्राप्त अनुभव के आधार पर कहा कि दूरस्थ शिक्षा में टयूटोरियल सेवाओं का बहुत अधिक महत्व है। स्वॉट का मानना है कि दूरस्थ शिक्षा वास्तव में जनशिक्षा की संस्थाये हैं। इसमें विशाल समूह को अध्ययन पैकेज दी जाती हैं, परन्तु इनमें शिक्षक के कार्यों का अभाव पाया जाता है। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा में त्वरितपोषण का अभाव एवं अपने समूह के साथियों से अन्तः क्रिया का अभाव पाया जाता है। स्वॉट दूरस्थ शिक्षा में भी मानवीय सम्बधों पर विशेष बल देते हैं। स्वॉट के अनुसार दूरस्थ शिक्षा में भी शिक्षार्थियों की विविध समस्याओं का समाधान होना चाहिये और त्वरित पोषण तत्व प्राप्त होना चहिये तथा शिक्षार्थियों को स्वयं के समूह में प्रतिपुष्टि का अवसर मिलना चाहिये।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क–नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

10. चार्ल्स वेडेमियर के सिद्धान्त के विशेष बिन्दु क्या है?

....

11. मूरे के सिद्धान्त को वेडेमियर के सिद्धान्त का संशोधित रूप क्यों कहा गया है?

....

12. पीटर्स के सिद्धान्त को शिक्षण अधिगम के औद्योगिकृत रूप का सिद्धान्त क्यों कहा गया है?

....

13. निदेशित शैक्षणिक वार्तालाप का क्या अर्थ है?

....

1.10 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के आधारभूत तत्व

दूरस्थ शिक्षा जन शिक्षा के रूप में प्रचलित व्यापक शैक्षिक प्रणाली है इसका सम्प्रेषण क्षेत्र व्यापक है, यह विस्तृत अध्ययन परिस्थितियों के अन्तर्गत कार्य **करती** है। यह संरचना एवं संगठन के दृष्टि से व्यापक शिक्षा प्रणाली है। इस की संरचना के आभारभूत तत्व है–

- **मुद्रित सामग्री–** इसके अन्तर्गत पुस्तकें, स्वयं पठनीय मुद्रित मार्गदिर्शिकायें आदि सम्मिलित है। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है।
- **श्रव्य दृश्य सहायक सामग्री–** प्रत्यक्ष सम्प्रेषण का अभाव होने के कारण इन माध्यमों को अधिक लोकप्रिय बनाया गया है। इनके अन्तर्गत फिल्म, रेडियो, स्लाइड व दृश्य–श्रव्य कैसेट होते हैं।
- **रेडियों एवं दूरदर्शन–** जनसंचार के माध्यम एक मार्गीय सम्प्रेषण को प्रभावशाली बनाने का कारगर उपाय है, इनसे सम्प्रेषण सुगमता पूर्वक एवं व्यापक स्तर पर हो जाता है। समस्या समाधान हेतु द्विमार्गी वार्तालाप हेतु फोन – इन कार्यकम शिक्षक तथा शिक्षार्थी के बीच एक मजबूत कड़ी का कार्य करते हैं।
- **कम्प्यूटर आधारित शिक्षण अधिगम–** दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं सम्प्रेषण का मुख्य आधार कम्प्यूटर है, यह एक मार्गीय सम्प्रेषण का प्रभावी साधन है।
- **दत्त कार्य–** यह दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक व छात्र को जोड़ने का एकमात्र साधन है, क्योंकि अध्येता कुछ प्रश्नों के उत्तर लिखकर जमा करते हैं। इनका मूल्यांकन कर सुझाव दिया जाता है। इससे शिक्षक छात्र का सम्पर्क द्विमार्गी हो जाता है।
- **परामर्श कक्षायें–** दूरस्थ शिक्षा ने दूर अध्येताओं की समस्याओं को सुलझाने के लिये परामर्श कक्षाओं का आयोजन किया जाता है तथा दूर शिक्षक इसमें विद्यार्थियों को परामर्श देते है। इसं कार्यक्रम के माध्यम से ही अध्येता एवं अध यापक का अल्प सम्पर्क प्रत्यक्ष हो पाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख–इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

14. परामर्श कक्षा क्यों उपयोगी है?

....

15. दूरस्थ शिक्षा मे मुद्रित सामग्री का क्या महत्व है?

....

1.11 सारांश

दूरस्थ शिक्षा एक नवीन प्रत्यय है और आज शिक्षा की जिस प्रणाली की मांग हो रही है, जो सबके पहुँच में हो तथा प्रभावी हो, आकांक्षाओं व आवश्यकताओं की पूर्ति करे, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली हैं। यह प्रणाली अपने लचीलेपन व संरचना के कारण लोकप्रिय हो रही है और व्यापक स्तर पर इसने एक बहुत बड़े समूह को अपने अध्येता के रूप में सम्मिलित किया है। दूरस्थ शिक्षा पूर्ण स्वतंत्र अध्ययन एवं पूर्ण स्वनिर्देशन पर बल देती है। इसने अपने आपको जन अपेक्षा के अनुरूप संगठित किया है। इसके विभिन्न पक्षों एवं विकास को हम आगे पढ़ेगे।

1.12 चर्चा के बिन्दु

1– दूरस्थ शिक्षा के विभिन्न सिद्धान्त इसके स्वरूप की ही व्याख्या करते है। चर्चा कीजिये।

1.13 अभ्यास कार्य

1. दूरस्थ शिक्षा क्या है? इसकी परिभाषा देते हुये विशेषताओं का वर्णन कीजिये।
2. "दूरस्थ शिक्षा एक व्यवस्थित अनुशासन है" इस कथन की विवेचना कीजिये।

1.14 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. शिक्षक शिक्षार्थी अलगाव, व्यक्तिगत अध्ययन, प्रौद्योगिकी, सम्प्रेषण, अधिगम समूह की दूरी।
2. लचीली, आवश्कतानुसार, सीधे सम्पर्क का अभाव,, उच्च स्तरीय अधिगम सामग्री, शिक्षक कक्षा, विद्यालय की आवश्यकता नही, रूचि एवं सुविधा के अनंकूल, शिक्षा में नवाचार
3. यह विद्यालय के नियमो से मुक्त, परत्परागत शिक्षा के विपरीत प्रारूपों से मुक्त
4. पत्राचार शिक्षा में मुद्रित सामग्री का पत्र व्यवहार से आवागमन पर मुक्त शिक्षा में तकनीकि सम्प्रेषण व परामर्श कक्षा का आयोजन होता है।
5. बिना शिक्षण के परीक्षा की अनुमति बाह्य प्रणाली अध्ययन है तथा बिना विद्यालय बन्धन के अध्ययन स्वतन्त्र अध्ययन कहलाता है।
6. शिक्षक शिक्षार्थी की दूरी से प्रत्यक्ष सम्प्रेषण व कक्षा शिक्षण का अभाव होता है।
7. इसमें नियमों व पाबन्धियों की कमी है।

8. दूरस्थ शिक्षा परत्परागत शिक्षा द्वारा पूरी न कर पाने वाले लक्ष्य को पूरा कर रही है।

9. अनुशासन के रूप में व्यवस्थित पाठ्यक्रम, निश्चित उद्देश्य,अपना चिन्तन क्षेत्र, अपना शोध क्षेत्र, व्यवस्थित शोध क्षेत्र।

10. शिक्षार्थी की स्वतन्त्रता।

11. वेडिमियर के सिद्धान्त को और व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत किया।

12. दूरस्थ शिक्षा में ट्यूटोरियल शिक्षा का अत्यधिक महत्व है और तकनीकी साधनों का प्रयोग कर व्यापक स्तर पर अध्ययन पैकेज दिया जाता।

13. निर्देशित शैक्षणिक वर्तालाप का अर्थ सम्पूर्ण शिक्षण सामग्री को इस रूप में तैयार करना जिसमें की कक्षा कक्ष की समस्त अन्तः क्रिया सम्मिलित हो।

14. दूरस्थ अध्येता की शिक्षण सम्बन्धी समस्याओं को दूर करने तथा कक्षा कक्ष की वास्तविक परिस्थितियों को उत्तपन्न करने और शिक्षक छात्र दूरी को कम करने हेतु महत्व।

15. मुद्रित सामग्री एक प्रकार का निर्देशित शैक्षणिक वार्तालाप है जिसमे कक्षा कक्ष के सम्पूर्ण व्यवहार सम्मिलित होते है और अध्येता को अधिगम हेतु दिशा निर्देश देते है।

1.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें–

Keegan, D. (1990) : Foundations of Distance Education, Landon: Routledge.

गुप्ता एस0पी0 (2007) : दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

Goel A. and Goel S.L.(2000) : Distance Education in 21st century, New Delhi, Deep & Deep Publication Pvt. Ltd.

Kegan, J. (1983): On defining distance education in sewart keegan and Holmberg Distance Education International Perspective Croom Helm, London.

AIU & IGNOU (1988): Studies in Distance Education, AIU, New Delhi.

यादव एस0 (2001) : दूरवर्ती शिक्षा, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर।

इकाई–2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्‌देश्य

2.3 दूरस्थ शिक्षा का उद्‌भव

2.4 यूरोपीय देशों में दूरस्थ शिक्षा

2.5 अफ्रीकी देशो में दूरस्थ शिक्षा

2.6 एशियाई देशो में दूरस्थ शिक्षा

2.7 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु भरत में नितिगत प्रयास

2.8 सारांश

2.9 चर्चा के बिन्दु

2.10 अभ्यास कार्य

2.11 बोध प्रश्न

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.1 प्रस्तावना

विश्व के सभी देंशों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का उद्‌भव सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक बाध्यताओं एवं परिवर्तन की गतिशीलता, भूण्डलीकरण एवं बहुत अधिक औद्योगीकरण के कारण हुआ। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक नवीन प्रवृत्ति है, और 21वीं सदी ने अपने स्वतंत्र एवं महत्वपूर्ण अनुशासनात्मक रूप में अपना इतिहास रच रही है। वास्तव में दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा में नवाचार न मानकर मुक्त शिक्षा को दूरस्थ शिक्षा में नवाचार मानना औचित्यपूर्ण है। पत्राचार के रूप में दूरस्थ शिक्षा का इतिहास इस इकाई में हम अध्ययन करेंगे।

2.2 उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि

- दूरस्थ शिक्षा के उद्‌भव को विश्व के सन्दर्भ में वर्णित कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा के विकास को भारत के सन्दर्भ में बता सकेंगे।

- पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा के विकास के चरणों को क्रमबद्ध रख सकेंगे।

2.3 दूरस्थ शिक्षा का उद्‌भव

पत्राचार के रूप में दूरस्थ शिक्षा का इतिहास 1840 से मानी जाती है। आधुनिक नवीन प्रणाली का प्रारम्भिक रूप ''ओल्ड टैसटामन'' के अनुदेशनात्मक लेखों से मिलता है, इसके अतिरिक्त आम धारणा के अनुसार इसका प्रारम्भ 1840 ई0 में आइजक पिटमैन द्वारा शार्ट हैण्ड पाठ्यक्रम पेनी डॉक से भेजने से हुआ है। 1856 में लैगनशीट एवं टॉसैन्ट ने एक आधुनिक भाषाओं के स्कूल की स्थापना करके विदेशी भाषाओं का शिक्षण पत्राचार से प्रारम्भ किया। संयुक्त राज्य अमेरिका के औपचारिक माध्यमिक विद्यालयों में पत्राचार शिक्षा की भूमिका 1873 में प्रारम्भ हो गयी पर विश्वविद्यालय में यह पाठ्यक्रम 1890 ई0 में प्रारम्भ हुआ पर यह अत्यल्प थी।

यूरोप देशों में सन् 1890 में जर्मनी व स्वीडन में पत्राचार शिक्षा संस्थानों की स्थापना हुयी। परन्तु बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ तक पत्राचार अनुदेशन विद्यालयों की स्थापना बहुत अधिक हो चुकी थी।

दूरस्थ शब्द की उत्पत्ति –

दूरस्थ शिक्षा पहले डाक शिक्षण, पत्राचार पाठ्यक्रम, स्वतंत्र अध्ययन, गृह अध्ययन जैसे शब्दों से जानी जाती थी। परन्तु अनेक नामों के बीच पत्राचार शिक्षा ही सर्वाधिक लोकप्रिय हुयी। वैसे सभी नामों में समानता है और सभी में गैर परम्परागत और सभी में मुद्रित सामग्री, संचार माध्यमों के माध्यम से शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य सम्बंध स्थापना का कार्य किया जाता है और फिर इसे मुक्त विश्वविद्यालय, दूर विश्वविद्यालय आदि नाम प्रदान किये गये।

फिर कुछ समय बाद ''पत्राचार शिक्षा'' नाम के प्रति लोगों में भ्रम उत्पन्न हुआ और यह माना गया कि यह नाम शिक्षा की प्रकृति के अनुरूप नहीं है। अतः इस संदेह को समाप्त करने का अवसर मिल गया जब 1982 में बैकाउर में प्रो0 बख्सीष सिंह की अध्यक्षता में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार शिक्षा परिषद् के बारहवें विश्व सम्मेलन में इण्टरनेशनल काउन्सिल फार करस्पाण्डेन्स को बदलकर इण्टरनेशनल काउन्सिल फॉर डिस्टैन्स एजुकेशन कर दिया गया। नाम बदलने का कारण मुख्य रूप से प्रकृति ही थी क्योंकि पत्राचार शिक्षा में मूलतः मुद्रित सामग्री दी जाती थी, जिसमें स्व अनुदेशन जैसे तथ्य नहीं थे और दूरस्थ शिक्षा सूचना प्रसारण के बहु–माध्यम उपागम की ओर संकेत करता है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर दूरस्थ शिक्षा–

दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता एवं लोकप्रियता ने इससे जुडे लोगों को

प्रोत्साहन दिया इसके ही फलस्वरूप 1938 में अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार शिक्षा परिषद् (आई0सी0सी0ई) की स्थापना की गयी इसके संस्थापक अध्यक्ष जे0डब्लू0 गिबसन रहे। सन् 1938 को इसका प्रथम सम्मेलन आयोजित किया गया और आर0सी0हाइट को प्रथम अध्यक्ष चुना गया तथा द्वितीय सम्मेलन सन् 1948 में आयोजित हुआ जिसमें नेबरास्का विश्वविद्यालय के एक्सटेंसन डिवीजन के निदेशक डा0 ब्रौडी अध्यक्ष बने। सन् 1967 में यूनेस्को के अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार शिक्षा परिषद् को अशासकीय संस्था के रूप में मान्यता मिली।

इसी बीच यूनाइटेड किंगडम में 1969 में श्रम प्रधान मंत्री हारनोल्ड विलसन के प्रयासों से मिल्टन कीन्स में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय खुला। यह दूरस्थ शिक्षा के लिये स्वर्णिम अवसर था। सन् 1972 में नौवे अन्तर्राष्ट्रीय पत्राचार शिक्षा परिषद् के सम्मेलन से पूर्व ही डॉ0 चार्ल्स ए0 वेडेमियर ने इस पर एक समाचार–पत्र निकालकर जागरूकता उत्पन्न करना प्रारम्भ किया। 1978 में आई0सी0सी0ई0 का विश्व सम्मेलन आयोजित करने वाला भारत प्रथम विकासशील देश था। 1982 तक इस संस्था के सदस्य देशों की संस्था बढ़कर 60 हो गयी थी।

आस्ट्रेलिया दूरस्थ शिक्षा में अत्यधिक आगे है, क्योंकि यह कई द्वीपों मे बांटा हुआ है और सम्पूर्ण जनसंख्या बिखरी है। इस स्थिति में औपचारिक शिक्षा बहुत सफल नही हो पा रही है। आस्ट्रेलिया प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर पत्राचार शिक्षा प्रदान करने का अनुभव रखता है। क्वीन्सलैण्ड नामक विश्वविद्यालय सन् 1911 से ही पत्राचार शिक्षा की सुविधा प्रदान कर रहा है। आस्ट्रेलिया में पत्राचार शिक्षा व्यवस्था बहुत अच्छी चल रही है, क्योंकि विश्वविद्यालय शिक्षक परिसर में ही नियमित छात्रों का शिक्षण कर बाद में पत्राचार पाठ्यक्रमों का भी शिक्षण परिसर में ही करते हैं।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1– आस्ट्रेलिया के लिये दूरस्थ शिक्षा अधिक लाभप्रद क्यो है?

....

2– प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय खोलने का श्रेय किसे जाता है?

....

3– विश्व स्तर पर पहला पत्राचार शिक्षा संस्थान की स्थापना कब और किसने की?

....

4– आई0सी0सी0ई0 का विश्वस्तरीय सम्मेलन आयोजित करने वाला प्रथम विकासशील देश कौन था ?

....

2.4 यूरोपीय देशो में दूरस्थ शिक्षा

यूरोपीय देशों ईंग्लैण्ड, पश्चिमी–पूर्वी जर्मनी, नार्वे, नीदरलैण्ड, स्पेन आदि में बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दूरस्थ शिक्षा का तीव्रतम विकास हुआ। यहां पर उन्नत शैक्षिक तकनीकी प्रचार–प्रसार का मुख्य कारण रही। सर्व प्रथम 1968ई0 में यूरोपीयन होम स्टडी काउन्सिल की स्थापना की गयी, इसने इस प्रणाली पर शोध कार्य करना प्रारम्भ किया तथा प्रबंध के विकास कार्यक्रम पर ध्यान देते हुये "इपिस्टोलोडिडेकटिका" का प्रकाशन प्रारम्भ किया। बाद में यूरोपीय पत्राचार विद्यालय संघ की स्थापना हुई जिसमें 17 यूरोपीय देशों के लोग सदस्य बने। 1978 में सूचना एवं संसाधन इकाई की स्थापना की गयी। यह इकाई अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग एवं सेवा हेतु मुक्त विश्वविद्यालय केन्द्र को सहायता प्रदान करती है, और अब यह इकाई यूनाइटेड नेशन्स "यूनीवर्सिटी इण्टरनेशनल डाक्यूमेन्टेशन सेन्टर ऑन डिस्टेन्स एजुकेशन" के रूप में प्रस्थापित हुयी।

ईग्लैण्ड में मिल्टर कीन्स द्वारा 1969 में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना से दूरस्थ शिक्षा के विकास का कार्य प्रारम्भ हुआ। इस विश्वविद्यालय में साठ हजार से अधिक शिक्षार्थी नामांकित है, इसने अनेक देशों को दूरस्थ शिक्षा केन्द्र के स्थापना हेतु विशेषज्ञ प्रदान किये हैं। ईग्लैण्ड के मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम ने अनेक देशों को प्रेरित किया है। केम्ब्रिज का इन्टरनेशनल एक्सटेशन कालेज भी दूरस्थ शिक्षा प्रदान करने की प्रमुख संस्था है। ईग्लैंण्ड में पत्राचार संस्थान के व्यक्तिगत प्रयास भी सराहनीय है।

पश्चिमी जर्मनी– पश्चिमी जर्मनी में भी पत्राचार विद्यालय बहुत ही लोकप्रिय है। सर्वप्रथम आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये 1965 ई0 में टयूबिन्गन में जर्मन दूरस्थ शिक्षा संस्था की स्थापना हुई। यह संस्थान राष्ट्र स्तर का है, और यह उच्च शिक्षा एव भावी अधिगम की संस्थाओं को मुद्रित एवं श्रव्य दृश्य अध्ययन सामग्री प्रदान कर रही है। बाद में 1974 ई0 में हेगन में एक दूरस्थ शिक्षण विश्वविद्यालय की स्थापना हुई पश्चिमी जर्मनी अफ्रीकी देशों में दूरस्थ शिक्षा का प्रचार–प्रसार कर रहा है।

पूर्व जर्मनी– पूर्व जर्मनी में 1976 ई0 से सामाजिक विकास का प्रारम्भ हुआ दूसरे देशों की भांति कार्यरत व्यक्ति दूरस्थ शिक्षा एवं सायंकालीन कालेजों के माध्यम से तकनीकी शिक्षा की डिग्रियां प्राप्त करने की ओर प्रवृत्त हुये। अनेक क्षेत्रो में दूरस्थ शिक्षा के कोर्स प्रारम्भ हुय। उच्च शिक्षा मंत्रालय के अन्तर्गत "विश्वविद्यालय दूरवर्ती शिक्षा का केन्द्रीय कार्यालय के द्वारा दूरस्थ शिक्षा का उत्तरदायित्व भी संभाला जाता है।

फ्रांस– फ्रांस में दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु शिक्षकों के लिये दूरस्थ विश्वविद्यालय शिक्षण की व्यवस्था किया गया। बाद में इसका क्षेत्र विस्तृत हो गया और 18 विश्वविद्यालयों को 'रेडियो विश्वविद्यालय' का नाम दिया गया। इनके द्वारा 3 एवं 4 वर्ष की अवधि के विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं। फ्रांस में दूरस्थ शिक्षा ने अपने पाठ्यक्रम इतने विकसित किये कि अनेक देश उससे पाठ्यसामग्री आदान–प्रदान करते हैं। 1907 ई0 से इकोल विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा के अनेक पाठ्यक्रम संचालित करता है।

नीदरलैण्ड– डच सरकार ने भी दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता को स्वीकार किया और 1971 ई0 में डच सरकार में इसे लचीली बनाने पर जोर दिया। 1984 ई0 में नीदरलैण्ड मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जिसमें आधिकारिक विधि, सांस्कृतिक विज्ञान, प्राकृतिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, विपणन, साख्यिकी एवं प्रण्''ली प्रबंधन आदि सम्बंधित पाठ्यक्रम संचालित है। डच भाषी लोगों के लिये भी इसका एक केन्द्र वेल्जियम में प्रस्थापित है।

इटली– इस देश में दूरस्थ शिक्षा का विश्वविद्यालय "कानसोरजिओ पर ल यूनिवर्सिटी ए डिटैन्जा" स्थापित किया गया है।

नार्वे– इस देश में 1948 ई0 में नार्वे सरकार ने पूरे देश में पत्राचार शिक्षा के प्रचार हेतु कानून पारित किया गया। सरकार को दूरस्थ शिक्षा पर परामर्श देने के लिये एक सरकारी संस्था– "पत्राचार शिक्षा परिषद्" की स्थापना भी की गयी है। नार्वेइयन पत्राचार विद्यालय संघ की स्थापना की गयी और उन्होनें 1965ई0 में नाम बदलकर नार्वेइयन दूरस्थ शिक्षा संघ कर दिया।

स्पेन– इस देश ने 1973 ई0 "राष्ट्रीय दूरस्थ शिक्षा विद्यालय की स्थापना कर दूरस्थ शिक्षा को अति लोकप्रिय बनाया। इस विश्वविद्यालय में व्यापक स्तर पर दूरस्थ शिक्षा से सम्बंधित विभिन्न पाठ्यक्रम चलाये जाते हैं।

स्वीडन– स्वीडन में सबसे पहला पत्राचार विद्यालय 1898 में हरमॉड्स ने प्रारम्भ किया। इसके पश्चात् अनेक पत्राचार विद्यालय खुले। स्वीडिस सेना के लोगों की शिक्षा के लिये एक पत्राचार विद्यालय खोला गया। 1966 मे एक अन्य विद्यालय खुला, यह 'लिबर हारमॉडस' के नाम से प्रसिद्ध संस्था है। सन् 1968 ई0 में स्वीडिस विश्वविद्यालयों नें सांध्यकालीन कक्षाओं एवं स्थानीय बाह्य पाठ्यक्रम जैसे पूरक अध्ययन पाठ्यक्रमों को दूरवर्ती शिक्षा के द्वारा आरम्भ किया। यहॉ पर भी तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रमों के प्रति विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा की ओर अधिक आकृष्ट होते हैं।

सोवियत संघ– रूस में 1920 ई तक एक बहुत बड़ी संख्या मे लोग अशिक्षित थे। रूस में शिक्षकों को विशेष रूप से प्रशिक्षित करने के लिये पत्राचार पाठ्यक्रमों का

सहारा लिया और विशेष अभियान मे रूस ने दो दशकों में ही पूर्ण साक्षरता प्राप्त कर ली। इसमें सबसे अधिक प्रौढ़ शिक्षा का विकास महत्वपूर्ण रहा। रूस ने आगे चलकर औपचारिक शिक्षा के तीन रूप पूर्णकालिक, सांध्य या अल्प कालिक तथा पत्राचार पाठ्यक्रम अपनाया। यहां पर पत्राचार शिक्षा की पाठ्यवस्तु एवं पाठ्यक्रम को केन्द्रिय स्तर पर संगठित किया गया। विभिन्न गणतंत्र देश इसे अपनी आवश्यकता के अनुरूप ही अनुवाद कर पूरक सामग्री के रूप में प्रयोग में ला रहे हैं।

सोवियत संघ में इस समय 500 से अधिक पत्राचार संकाय विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध हैं, और औपचारिक शिक्षा के लगभग बराबर संख्या ही इस पत्राचार माध्यम के विद्यार्थियों का भी हैं यहां पर औपचारिक शिक्षा के समकक्ष दूरस्थ शिक्षा को महत्व दिया जाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

5– सोवियत संघ में पत्राचार शिक्षा अधिक लोकप्रिय क्यों हुई?

....

6– नीदरलैण्ड विश्वविद्यालय की स्थापना कब हुयी?

....

7– हैगन में कब और कौन से विश्वविद्यालय की स्थापना हुई?

....

8– स्वीडन में पत्राचार विद्यालय किसने प्रारम्भ किया?

....

9– कहां के मुक्त विश्वविद्यालय को रेडियो विश्वविद्यालय का नाम दिया गया?

....

2.5 अफ्रीकी देशों में दूरस्थ शिक्षा

भारत की ही तरह अफ्रीकी देश भी लम्बे समय तक उपनिवेशावाद से प्रभावित रहे और साक्षरता दर वहां भी न्यूनतम थी। स्वतंत्रता के पश्चात् सभी ने शिक्षा की ओर ध्यान दिया और इसके साथ ही प्रशिक्षित अध्यापकों की कमी सामने आ गयी तथा कार्यरत अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का सहारा लिया और अनेक

देश घाना, नाइजिरिया, तनजानिया, केन्या, बोटस्वान., लिसार्थो, स्वाजीलैण्ड, गुयाना, इथोपिया आदि ने दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रमों को आयोजित किया। सर्वप्रथम प्रारम्भ मुद्रित सामग्री से हुआ बाद में जनसंचार के माध्यमों ने इसे अधिक लोकप्रिय बनाया।

अफ्रीका में 1962 में पहला पत्राचार विद्यालय ब्राजाविले में स्थापित हुआ। इसके अतिरिक्त पत्राचार शिक्षा में बोत्सवाना, लिसार्थो एवं स्वीजीलैण्ड ने आपस में मिलकर काम करना प्रारम्भ किया है।

इसके अतिरिक्त, साउथ वेस्ट अफ्रीकॉज़ पिपुल आरगनाइजेशन अंगोला व जाम्बिया के शरणार्थियों की शिक्षा के लिये उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

अफ्रीका दूरस्थ शिक्षा में गुणवत्ता हेतु भी प्रयासरत है, इसके लिये अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार, सम्मेलन एवं कार्यशालाओं के आयोजन हेतु संयुक्त राष्ट्र संघ से मदद भी लेता है। संयुक्त राष्ट्र आर्थिक इकाई अफ्रीका ने आदिस अबाबा में एक दूरस्थ शिक्षा की इकाई खोली है।

अफ्रीकी देशो में साक्षरता दर में वृद्धि हेतु औपचारिक शिक्षा माध्यम के अतिरिक्त दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को भी प्रचुर महत्व दिया है। सन् 1983 मे नाईजिरिया में एक मुक्त विश्वविद्यालय खुला। अफ्रीकी देश पत्राचार शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा को शिक्षा प्रदान करने का आधार बना रहे हैं।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

10. नाइजीरियां में मुक्त विश्वविद्यालय कब खुला ?

....

11. अफ्रीका में पहला पत्राचार विश्वविद्यालय कब खुला ?

....

12. अंगोला व जाम्बिया के शरणार्थियों की शिक्षा के लिये कौन सा संगठन कार्य कर रहा है?

....

2.6 एशिया में दूरस्थ शिक्षा का प्रसार–

उपनिवेशवाद के प्रभाव में एशिया के कई देश रहे और स्वतंतत्रता के पश्चात् सभी के सामने शिक्षा में पिछड़ापन और प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता ही सबसे बड़ा चुनौती थी, अतः एशियाई देशों में दूरस्थ शिक्षा की आशातीत प्रगति हो रही है, और इसे हम अलग–अलग देशो को पृथक रूप में देखेंगे।

चीन— यह विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है, और इसने बीसवीं सदी में ही अपनी जनसंख्या को शिक्षित करने हेतु दूरस्थ शिक्षा को अपना लिया था, पर इसका अध्याधिक प्रचार–प्रसार, साठ के दशक में हुआ। इसी समय बीजिंग, शंधाई, शियांग में टी0वी0 विश्वविद्यालय स्थापित हुये। इन विश्वविद्यालयों ने प्रौढ़ शिक्षा को सुधारना प्रारम्भ किया। 1979 ई0 में बीजिंग में सेन्ट्रल रेडियो तथा टेलीविजन यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई यह दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु बहुत बड़ी संख्या में दूर शिक्षण कर रहा है। इस विश्वविद्यालय में प्रवेश परीक्षा के आधार पर प्रवेश तथा अनुदेशन का मुख्य आधार टेलीविजन तथा लिखित मुद्रित सामग्री तथा सम्पर्क कार्यक्रमों के द्वारा इसे सशक्त बनाया जाता है। इस समय देश भर में करीब 30 से अधिक क्षेत्रीय टी0वी0 विश्वविद्यालयों द्वारा प्रतिवर्ष लाखों विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदान की जाती हैं।

जापान— यह एक विकसित देश है, जिसमें लम्बे समय के परतंत्रता के पश्चात् विश्व में अपने आपको सिद्ध किया। यहां पर पत्राचार शिक्षा नियमित विश्वविद्यालय द्वारा नियमित छात्रों के लिये बनाये गये पाठ्यक्रम से ही प्रदान की जाती है। यह मूल संकल्प का ही एक भाग होती है। स्कूलों में भी पत्राचार पाठ्यक्रमों को दिया गया है। उच्च माध्यमिक विद्यालयों ने भी पत्राचार शिक्षा में अपना संगठन बना रखा है। विश्वविद्यालय स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा होती हैं। जापान ने ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन के रेडियो एवं दूरदर्शन पर प्रचारित "विश्वविद्यालय पत्राचार व्याख्यान" का प्रयोग करने हेतु सुविधा दी है। 1980 ई0 के पश्चात् पत्राचार शिक्षा महिलाओं के शैक्षिक स्तर को ऊँचा उठाने हेतु बहुत लोकप्रिय हुआ। 1985 ई0 के बीच जापान में एक हवाई विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।

पाकिस्तान— पाकिस्तान में 1974 में अल्लामा इकबाल मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। यह विश्वविद्यालय सभी स्तर की शिक्षा प्रदान करने हेतु प्रयासरत है, यह देश भर में साक्षरता कार्यक्रम से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट तक के अनेक कार्यक्रम संचालित करता है। इस विश्वविद्यालय ने एकीकृत कार्यात्मक शिक्षा कार्यक्रम नामक प्रभावी कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों के लिये चलाया है।

इण्डोनेशिया— इण्डोनेशिया में सर्वप्रथम मुक्त विश्वविद्यालय 1984 ई0 खुला। इसने उच्च शिक्षा एवं व्यावसायिक शिक्षा के लिये कार्य करना प्रारम्भ किया। इसने अनुदेशसनात्मक सामग्री को प्रसारित करने हेतु जनसंचार माध्यमों का सहारा लिया।

कोरिया— कोरिया में 1980 ई0 में गैर मान्यता प्राप्त एवं डिग्री रहित पाठ्यक्रमों के रूप में पत्राचार शिक्षा की शुरूआत हुई। सन् 1972 ई0 में सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी ने अपने यहां पत्राचार शिक्षा विभाग स्थापित किया। 1982 ई0 में यह मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में कोरिया एअर एवं कारेस्पोन्डेन्स यूनीवर्सिटी के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसमें कई शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित है।

फिलिपिन्स— फिलिपिन्स मे भी कई देशों की तरह 1976 ई0 में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिये दूरस्थ शिक्षा का प्रारम्भ किया गया। फिलिपिन्स में पाठ्य सामग्री के निर्माण पर विशेष जोर दिया जाता है, इसे जन उपयोगी बनाने हेतु पूरा प्रयास किया जाता है। पाठ्यक्रम को आवश्यकता के अनुसार परिवर्तित किया जाता है। इसमें समाजोपयोगी गृह उद्योग, पर्यावरण, नियोजन, घरेलू पशुपालन, घरेलू खेती से सम्बंधित पाठ्यक्रम सम्मिलित है। इसे स्वतः प्रगति प्रणाली उन्मुख बनाया गया है।

थाईलैण्ड— थाईलैण्ड में बैंकाक में सन् 1978 ई0 में सुखोथाई थम्मियिरत विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। नामांकन संख्या की दृष्टि से यह विश्व का सबसे बड़ा मुक्त विश्वविद्यालय है। यह स्नातक, अल्पकालिक व्यवसायिक दक्षता सम्बर्धन पाठ्यक्रम तथा आधारभूत ग्रामीण विकास पाठ्यक्रम संचालित करता है। इसने अपनी अनुदेशनात्मक सामग्री को जन–जन तक पहुँचाने हेतु 75 प्रान्तों मे सार्वजनिक पुस्तकालयों में अपनी पृथक पुस्तकालय व्यवस्थित की है। यह विभिन्न व्यवसायों को प्रशिक्षित कार्मिक वर्ग प्रदान कर रहा है।

मलेशिया— मलेशिया के पिनॉग शहर में युनिवर्सिटी सैन्स मलेशिया खोला गया है। यह शिक्षा के सार्वजनिकरण हेतु अनेक पाठ्यक्रम संचालित कर रहा है, मलेशिया में व्यक्तिगत पत्राचार संस्थायें भी कार्यरत है, यह स्कूल स्तर पर वाणिज्यिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम संचालित कर रहे हैं।

श्रीलंका— श्रीलंका ने एक्सटरनल सर्विस एजेन्सी श्रमिक शिक्षा संस्थान तथा श्रीलंका दूरस्थ शिक्षा संस्थान संचालित किया है। इनके प्रयास से सन् 1980ई में भी लंका में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

बोध प्रश्न—

टिप्पणी—क— नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख— इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

13. बीजिंग में सेन्ट्रल रेडियो तथा टेलीविजन यूनिवर्सिटी की स्थापना कब हुई ?

....

14. जापान में हवाई विश्वविद्यालय की स्थापना कब की गयी ?

....

15. पाकिस्तान में पहला मुक्त विश्वविद्यालय कब और किस नाम से खुला ?

....

16. कोरिया में पत्राचार पाठ्यक्रम कब प्रारम्भ हुआ ?

....

17. बैंकाक में सन् 1978 ई0 में कौन सा विश्वविद्यालय स्थापित हुआ ?

....

2.7 दूरस्थ शिक्षा हेतु भारत में नीतिगत प्रयास –

भारत में साठ के दशक मे भारत सरकार की नीतियां दूरस्थ शिक्षा की ओर उन्मुख हुई। उच्च शिक्षा के विस्तार एवं प्रसार के आवश्यकता ने योजना अयोग को इस ओर सोचने के लिये विवश किया। 1960 में एक सामान्य अध्यादेश में यह निकाला गया कि उच्च शिक्षा की सुविधा को बढ़ाने के दिशा में सांध्यकालीन कालेज, पत्राचार पाठ्यक्रम बाह्य उपाधि मान्यता दिये जाने के उपक्रम है।

भारत में पत्राचार शिक्षा के सूत्रपात करने का श्रेय तत्कालीन शिक्षामंत्री डा0के0ए0श्रीमाली को है। उन्होनें उच्च शिक्षा की बढ़ती मांग को एवं प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों को प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता को अनुभव किया तब वे विदेशों में सफल पत्राचार पाठ्यक्रमों की ओर आकर्षित हुए।

केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद् ने इस पर विस्तार से अध्ययन का निर्देश दिया। अतः शिक्षा मंत्रालय ने एक विशेषज्ञ समिति का गठन डा0 डी0एस0 कोठारी की अध्यक्षता में कर दी जिसने पत्राचार शिक्षा की प्रकृति लक्ष्य एवं संगठन के माध्यम से अपने विचार दिये। यादव एव पण्डा (1996) के अनुसार इस समिति के मुख्य सुझाव इस प्रकार थे–

- पत्राचार शिक्षा से सम्बंधित उपाधि के मानक व प्रशासन विश्वविद्यालयों से हो।
- पत्राचार पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय की प्रथम उपाधि के लिये स्वीकृत किया जाये।
- शिक्षक एवं छात्र के मध्य सम्पर्क स्थापन हेतु सम्पर्क कक्षाओं का आयोजन किया जाये।
- शैक्षिक मानक ऊँचा रखने के लिये पाठ्यक्रम उच्च स्तर के विषय विशेषज्ञों का सहयोग से निर्मित हो।
- पत्राचार माध्यम से कला और विज्ञान दोनों पाठ्यक्रम संचालित किये जाये। सर्वप्रथम कला एवं वाणिज्य संकाय संचालन में ही संगठनात्मक समस्यायें आयेगी पर बाद में विज्ञान पाठ्यक्रम को भी सम्मिलित किया जाये।
- प्रथम डिग्री कोर्स नियमित कोर्स में लगने वाले अवधि से अधिक अर्थात् 3 वर्ष के बजाय 4 वर्ष हो। अत्यधिक मेधावी छात्रों के लिये अवधि तीन वर्ष की हो।
- प्रथम वर्ष की शुल्क नामांकन हेतु अधिक व द्वितीय तथा तृतीय स्तर पर क्रमशः घटती जाना चाहिये।

सन् 1970 के दशक में दूरस्थ शिक्षा ने अच्छा विकास किया। इस दशक में कई संस्थानों ने स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भी प्रारम्भ किया। इस दशक में 1971 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, 1972 में आध्रं एवं वेकटेश्वर विश्वविद्यालय, 1973 में आग्ल व

विदेशी संस्थान हैदराबाद, 1974 में पटना विश्वविद्यालय, 1975 में बाम्बे उत्कल विश्वविद्यालय, 1976 में जम्मू–कश्मीर व राजस्थान विश्वविद्यालय, 1977 में उस्मानिया व केरल विश्वविद्यालय, 1978 में इलाहाबाद एवं एस0एन0डी0टी0 महिला महाविद्यालय बम्बई तथा 1979 में अन्ना मलाई व उदयपुर विश्वविद्यालयों ने पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया। इस दशक के साथ ही स्नात्कोत्तर पाठ्यक्रम भी संचालित करना प्रारम्भ हुआ। 1980 तक दूरस्थ शिक्षा परम्परागत विश्वविद्यालय से ही सम्बद्ध रही। किन्तु आध्र प्रदेश सरकार के निर्णय के फलस्वरूप दूरस्थ शिक्षा का नया रूप देते हुये सन् 1982 मे प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय आंध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय हैदराबाद की स्थापना कर दी । इसने सभी राज्यों को मुक्त विश्वविद्यालय खोलने के लिये प्रेरित किया।

शिक्षा आयोग (1964–66) की संस्तुति– दिल्ली विश्वविद्यालय ने सन् 1962 में विश्वविद्यालय स्तर पर पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया। 1964–64 में गठित कोठारी कमीशन ने दूरस्थ एवं पत्राचार पाठ्यक्रम पर स्पष्ट तरीके से टिप्पणी की–

"शिक्षा की कोई ऐसी विधि उन लाखों लोगों के लिये होनी चाहिये जो स्वयं के प्रयास पर निर्भर करते है। हमें लगता है कि पत्राचार या गृह अध्ययन ही इस प्रश्न का उत्तर है। यह अच्छी प्रकार से जॉची परखी तकनीकी है। विभिन्न देश यू0एस0ए0, स्वीडन, यू0एस0एस0आर0, जापान, आस्ट्रेलिया जहां यह लम्बे समय से प्रयोग में लायी जा रही है, इसके अतिरिक्त अपने छोटे से अनुभव के साथ दिल्ली विश्वविद्यालय भी इसका उदाहरण प्रस्तुत किया और यह हमें वृहद स्तर पर प्रयास करने हेतु प्ररित कर रहा है, और पत्राचार पाठ्यक्रम नियमित पाठ्यक्रमों से किसी भी मायने में कम है यह सिद्ध करने का कोई आधार नहीं है। वाह्य अनुभव एवं भारतीय प्रयोग यह परिणाम दे रहे हैं कि पत्राचार पाठ्यक्रम को मजबूती दिया जाना चाहिये।"

पत्राचार शिक्षा समिति की संस्तुति के फलस्वरूप भारत में सर्वप्रथम दिल्ली विश्वविद्यालय ने आकस्मिक योजना के रूप में जुलाई 1962 में बी0ए0 डिग्री हेतु पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया। इस प्रयोग से अनेक विश्वविद्यालयों ने प्रेरित होकर दूरस्थ शिक्षा तकनीकी को अपनाने पर विचार किया। सन् 1967 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पुनः पत्राचार पाठ्यक्रमों के प्रचार–प्रसार हेतु एक समिति का गठन किया। इसके परिणाम स्वरूप 1968 में पंजाबी विश्वविद्यालय तथा 1969 में मेरठ विश्वविद्यालय द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रमों का प्रारम्भ हुआ। सन् 1985 तक लगभग 31 विश्वविद्यालयों द्वारा यह दूरस्थ शिक्षा माध्यम अपना लिया गया था।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) – राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने कोठारी कमीशन के सुझावों को ही बल प्रदान करते हुये कहा कि–

"मध्यावधि शिक्षा एवं पत्राचार शिक्षा का प्रचार–प्रसार विश्वविद्यालय स्तर पर व्यापक स्तर पर किया जाना चाहिये। माध्यमिक स्तर पर भी यह सुविधा विकसित की जानी चाहिये। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी, शिक्षक एवं उद्योग तथा कर्मचारियों को देने के लिये इसको प्रचारित किया जाये। इस शिक्षा को पूर्ण अवधि शिक्षा के बराबर का दर्जा

दिया जाये। ये सुविधायें विद्यालय से कार्यों की ओर स्थानान्तरण करेगी और उन लोगो के लिये भी लाभकर होगी जो अपने आपको शिक्षित तो करना चाहते हैं पर ऐसा कर नही पाते।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने मुक्त अधिगम तन्त्र के लिये कुछ सुझाव दिये–

अनुच्छेद 3:11 – शिक्षा प्रक्रिया का आवश्यक लक्ष्य जीवन पर्यन्त शिक्षा है, यह सार्वजनिक साक्षरता का पूर्वानुमान है। गृहणियों, कृषि एवं उद्योग कार्मिक एवं व्यावसायिकों को यह सुविधा दी जायेगी कि वह अपने मनपसंद शिक्षा को प्राप्त कर सके।

अनुच्छेद 4:13– प्रौढ़ एवं सतत् शिक्षा को प्रदान करने हेतु वृहद स्तर पर कार्यक्रम चलाया जायेगा। जिसमें मुक्त अधिगम भी समाहित हो।

अनुच्छेद 5:35– मुक्त विश्वविद्यालय तन्त्र ने उच्च शिक्षा की सुविधायें प्रदान करने के साथ लोकतंत्रीकरण हेतु शिक्षा का लोकतंत्रीकरण किया है।

अनुच्छेद 5:36– 1985 में स्थापित इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय इन उद्देश्यों को पूरा करने हेतु दृढ़ की जायेगी।

अनुच्छेद 5:37– इस मजबूत तंत्र को बडी सावधानी के साथ विकसित किया जाना चाहिये।

अनुच्छेद 6:6– औपचारिक शिक्षा की कठोर नियमों के कारण से वचित लाखों लोगों को तकनीकि एवं प्रबंधकीय शिक्षा के लिये मुक्त अधिगम तंत्र से जोड़ा जाये। इन सभी के साथ पालिटेक्निक शिक्षा को भी जोड़ते हुये क्रियात्मकता को बढ़ाने हेतु ये क्रेडिट विधि का उपयोग कर निर्देशन व परामर्श की सशक्त सेवा प्रदान की जायेगी।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देश– 1974 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने पत्राचार और मुक्त शिक्षा के निम्न निर्देश दिया–

"पत्राचार शिक्षा का उद्देश्य एक बहुत बड़ा उद्देश्य ऐसी वैकल्पिक शिक्षा को प्रदान करना है जिससे कि एक बहुत बड़ी संख्या में लोग आगे का ज्ञान और व्यावसायिक दक्षता हासिल कर सके। पत्राचार पाठ्यक्रम वास्तव उन लोगों के लिये वरदान है जो बच्चे किन्हीं कारणवश औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से वंचित रहे है। जो कि दुर्गम स्थानों के रहने वाले हैं, जो प्रेरणा और अभिवृत्ति के अभाव में आगे नहीं पढ़ सके पर अब पढ़ने के लिये अभिप्रेरित है और जो उच्च शिक्षा हेतु योग्यता रखते हुये भी, औपचारिक शिक्षा संस्थानों में जगह नहीं पाये हैं, और जो जीवन को जीवन भर चलने वाली प्रतिक्रिया मानते है।"

इग्नू की स्थापना – इसे सन् 1985 में संसद के एक अधिनियम के तहत स्थापित किया है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं गुणात्मक सुधार के लिये किया गया। सबसे अधिक इस बात पर बल दिया कि विश्वविद्यालय को

ऐसे कदम उठाने चाहिये कि मुक्त विश्वविद्यालय के शिक्षण, मूल्यांकन एवं शोध जैसे कार्यों में भी गुणवत्ता आ सके।

दूर शिक्षा परिषद् (डी0ई0सी0) की स्थापना– मई 1991 में इग्नू के प्रबंध बोर्ड ने एक परिनियम के तहत दूर शिक्षा परिषद् की स्थापना की इसके स्थापना के पीछे मुख्य उद्देश्य या दूर एवं मुक्त विश्वविद्यालयों के उन्नति, समन्वयन एवं मानक तथा गुणवत्ता को स्थापित करने हेतु कार्य करना था। विस्तर से इसके बारे में हम खण्ड तीन में पढ़ेगे। पर इसके कार्यों की संक्षिप्त चर्चा यहां हम कर रहे हैं–

- दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त शिक्षा तन्त्र के प्रसार, समन्वय एवं गुणात्मक स्तर को बढ़ाना।
- मुक्त विश्वविद्यालय एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के एक तंत्र (जाल) की प्रतिस्थापना करना।
- दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम के संचालन हेतु प्राथमिकता के तौर पर आवश्यक क्षेत्रों का ध्यान करना एवं संचालन में सहयोग देना।
- अध्येता समूह की पहचान कर उनके लिये आवश्यक कार्यक्रमों का संचालन करवाना।
- दूरस्थ शिक्षा के लिये कार्मिक वर्ग का प्रशिक्षण देना।
- मुक्त विश्वविद्यालयों एवं मुक्त शिक्षण संस्थानों को आवश्यक वित्तीय सहायता प्रदान करना जिससे कि ये विकास करें एवं आवश्यक प्रोजेक्ट्स करवाना।

1992 की पुर्नरीक्षित राष्ट्रीय शिक्षा नीति– 1992 में भारत सरकार ने 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का पुर्नरीक्षण करवाया। कुछ नये सुझाव इस प्रकार के निकले–

- **अनुच्छेद 4:13**– साक्षरता प्राप्त कर चुके एवं प्राथमिक शिक्षा प्राप्त लोगों एवं प्रौढ़ों के लिये एक सतत् एवं समन्वित कार्यक्रम संचालित करना जिससे कि लोग अपनी साक्षरता कौशल एवं जीवन तथा कार्यक्षेत्र में विकास कर सके। इनमें दूरस्थ शिक्षा को सम्मिलित करने का संकेत दिया गया।
- **अनुच्छेद 5:35**– मुक्त अधिगम प्रणाली ने उच्च शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा ाओं में विस्तार किया है, और शिक्षा का लोकतंत्रीकरण कर इसे जीवन पर्यन्त प्रक्रिया बनाया है। मुक्त अधिगम प्रणाली की लचीलेपन व नवाचार ने हमारे देश के लोगों की दिग्भ्रमित आवश्यकताओं को भी पूरा करने का प्रयास किया, खासकर जो व्यवसाय में लगे हुये हैं।
- **अनुच्छेद 5:36**– 1985 में स्थापित इग्नू को उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सुदृढ़ करना।
- **अनुच्छेद 5:37**– राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को देश के सभी भागों में माध्यमिक शिक्षा को प्रदान करने हेतु सुदृढ़ किया जाये।

दूरस्थ शिक्षा पर केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार परिषद कमेटी– सन् 1995 में दूरस्थ शिक्षा पर एक कमेटी गठित हुई जिसने प्रत्येक प्रदेश में एक मुक्त विश्वविद्यालय खोलने की सिफारिश की। इसके साथ ही मुक्त विश्वविद्यालयों को जाल के रूप में कार्य करने के लिये कहा जिससे कि संसाधनों का अपसी उपभोग, समान मानकों एवं स्तर का निर्धारण, विद्यार्थियों की गतिशीलता एवं प्रभावकारी छात्र सहयोग सेवायें विकसित हो उन्होनें इन मुक्त विश्वविद्यालय तंत्र के लिये निम्न मानक निर्धारित किये।

- कार्यक्रमों के बनाने एवं उत्पादित करने में विभिन्न संस्थाओं में नकल नहीं होना चाहिये।
- किसी संस्था द्वारा तैयार किया अच्छा पाठ्यक्रम सभी मुक्त विश्वविद्यालय में उपलब्ध रहेगा।
- जो संस्थान अपने ऊँचें स्तर के कार्यक्रम नहीं चला पा रहे हैं, वे इस नेटवर्क के संसाधनों एवं सम्वेत पाठ्यक्रमों का हिस्सा बन सकते हैं।
- एक साथ कई संस्थानों के जुड़ने से तैयार तंत्र में विद्यार्थी सहायता सेवायें अधिक ाक प्रभावी ढंग से सम्पादित हो सकती हैं। इससे अलग से तंत्र स्थापित करने में होने वाले व्यय में कमी आयेगी।
- मुक्त शिक्षा संस्थानों के नेटवर्क में औपचारिक शिक्षा संस्थानों को भी सम्मिलित कर पाठ्यक्रमों के निर्माण एवं नेटवर्क में प्रतिभाग हेतु सम्मिलित किया जा सकता है। यह नेटवर्क एक बड़े पैमाने में फैले अध्येताओं की विभिन्न कार्यक्रमों, अनुदेशन के माध्यम एवं भौतिक विभाजन की विशेषताओं के आधार पर सहयोग कर सकता है।

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय– प्रदेश वृहद आकार एवं जनसंख्या के कारण विभिन्न स्तर की शिक्षा की मांग को पूरा करना हमेशा से ही दुरूह कार्य होता है। औपचारिक उच्च शिक्षा संस्थान उच्च शिक्षा की मांग को पूरा करने में असमर्थ हो रहे थे, कुछ विश्वविद्यालयों ने सांध्यकालीन व पत्राचार पाठ्यक्रम संचालित कर आवश्यकता को पूरा करने का प्रयास किया। इसके साथ ही व्यक्तिगत पाठ्यक्रम भी प्रस्तावित व संचालित किये, परन्तु अत्यधिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर सन् 1999 में इलाहाबाद में राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति प्रदान की गयी। इसने 15 अगस्त 1999 से कार्य करना प्रारम्भ किया। इसमें शैक्षिक एवं व्यावसायिक दोनों प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। इसका प्रमुख लक्ष्य प्रदेश के ग्रामीण एवं दूर–दराज के इलाकों के अध्येताओं एवं बालिकाओं, आर्थिक रूप से विपन्न तथा व्यावसायिकों को अच्छे जीवन व उत्थान हेतु उच्च शिक्षा की सुविधा प्रदान करना है।

भारत में पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की राज्यवार स्थिति का चार्ट–

क्षेत्र/राज्य		स्थापना वर्ष
दिल्ली		
1.	दिल्ली विश्वविद्यालय	1962
2	जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय	1971
3.	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	1985
हरियाणा		
	कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र	1976
हिमाचल प्रदेश		
	हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला	1971
जम्मू एवं कश्मीर		
	जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू	1976
	कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर	1976
पंजाब		
	पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला	1968
	पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़	1971
राजस्थान		
	राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर	1976
	मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर	1979
	मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा	1987
उत्तर प्रदेश		
	मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ	1969
	इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	1978
	राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	1999
मध्य क्षेत्र		
	मध्य प्रदेश	
	भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल	1975
पश्चिमी क्षेत्र		
	महाराष्ट्र	
	बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई (मुम्बई)	1978
	एस0एन0डी0टी0महिला विश्वविद्यालय, बम्बई (मुम्बई)	1979
	पुणे विश्वविद्यालय, पुणे	1983
	यशवंत राव चव्हाण मुक्त विश्वविद्यालय	1989

पूर्वी क्षेत्र

आसाम	
गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी	1996
नार्थ ईस्टर्न हिल युनिवर्सिटी	1996
बिहार	
नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय	1996
पटना विश्वविद्यालय, पटना	1974
रॉची विश्वविद्यालय, रॉची	1985
उड़ीसा	
उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	1975

दक्षिण क्षेत्र

आन्ध्र प्रदेश	
आन्ध्र विश्वविद्यालय, विशाखापट्नम	1972
श्री वेंकेटश्वर विश्वविद्यालय, तिरूपति	1972
सेन्ट्रल इस्टीट्यूट ऑफ इंग्लिस एण्ड फारेन लैग्वजेज, हैदराबाद	1973
उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद	1977
आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद	1982
कर्नाटक	
मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर	1969
बंगलौर विश्वविद्यालय, मैसूर	1979
केरल	
केरल विश्वविद्यालय, त्रिवेन्द्रम	1977
कोचीन विश्वविद्यालय, कोचीन	1996
कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट	1977
तमिलनाडु	
मदुरई कामराज विश्वविद्यालय, मदुरई	1971
अन्नामलाई विश्वविद्यालय	1979
मद्रास विश्वविद्यालय, मद्रास	1980

भारत में पत्राचार एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों की विषय में विस्तार से खण्ड तीन में पढ़ेगे।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

18– भारत में पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का श्रेय किसको जाता है?

....

19– सबसे अधिक किस दशक में विश्वविद्यालयों में पत्राचार पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया?

....

20– प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय कहां और कब खुला?

....

21– इग्नू की स्थापना कब हुई?

....

22– 1995 में गठित कमेटी ने महत्वपूर्ण सुझाव क्या दिये?

....

2.8 सारांश

शिक्षा विकास एवं आधुनिकीकरण का एक प्रमुख एवं अनिवार्य साधन है। समानता एवं सामाजिक न्याय पर आधारित समाजों के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। विश्व के सभी देश एवं समाज के लिये इस आवश्यकता को अनुभव किया है और अपनी बाध्यताओं, परिवर्तन की लालसा तथा नवीन संस्कृति के दबाव के फलस्वरूप दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था को अपनाना अवश्यमभावी हो गया। यह शिक्षा के क्षेत्र में लोकतंत्रीय तत्वों के समावेश का संकेत देती हुई शिक्षा प्रणाली है, और एक स्वस्थ उद्विकास का संकेत है।

व्यापक अर्थ में यह औपचारिक शिक्षा के नियम एवं बंधनों के विपरीत एक क्रांति भी है, जिसमें सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को क्रांति दी है और नव प्रवर्तनकारी बहुमाध्यम शिक्षण अधिगम प्रणाली के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ है। यह इकाई आपको आगे के इकाईयों के अध्ययन हेतु मार्ग प्रशस्त करेगी।

2.9 चर्चा के बिन्दु

दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था भूमण्डलीकरण के दौर में सबसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध होगी और अपने स्वरूप में समय के साथ और निखार ला पायेगी। चर्चा कीजिये।

2.10 अभ्यास कार्य

1– दूरस्थ शिक्षा से सम्बंधित किन अन्तर्राष्ट्रीय मंचों की सर्वप्रथम स्थापना हुई और उन्होनें इसके प्रचार–प्रसार के लिये क्या किया?

2– यूरोपीय देश में दूरस्थ शिक्षा की स्थिति पर प्रकाश डालिये।

3– भारत में दूरस्थ शिक्षा के विकास हेतु कौन से नीतिगत प्रयास किये गये और उनसे इसके विकास पर क्या प्रभाव पड़ा। वर्णन कीजिये।

2.11 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. सम्पूर्ण जनंसख्या का बड़े भू–भाग में फैलाव से औपचारिक शिक्षा असफल।
2. हारनोल्ड विल्सन को मिल्टन कीन्स में प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय ।
3. जे0 डब्लू गित्सन ने 1938 मे।
4. भारत ने।
5. बहुत बड़े जनसंख्या के भाग को साक्षर बनाने में मदद ली।
6. 1971ई0 मे।
7. 1984 ई0 में नीदरलैण्ड मुक्त विश्वविद्यालय।
8. हरमाफडस ने 1898 मे।
9. फ्रांस के।
10. 1983 में
11. 1962 में
12. साउथ वेस्ट अफ्रीकॉज़ पिपुल आरगनाइजेशन
13. 1979
14. 1985
15. सन् 1974 में अल्लामा इकबाल मुक्त विश्वविद्यालय
16. गैर मान्यता प्राप्त डिग्री रहित, 1980 ई0 में
17. सुखोथाई थम्मियिरत विश्वविद्यालय की स्थापना
18. डा0के0ए0 श्रीमाली।
19. 1970 से 80 के दशक में।
20. 1982 में आंध्र प्रदेश में आंध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय आंध्र प्रदेश।
21. 1985 में
22. सभी दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को एक नेटवर्क तैयार कर समन्वित होकर कार्य करने का।

2.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें–

Keegan D. (1990) : Foundations of Distance Education, Landon: Routledge.

Goel A. and Goel S.L.(2000) : Distance Education in 21st century, New Delhi, Deep & Deep Publication Pvt. Ltd.

Kegan, J. (1983): On defining distance education in sewart keegan and Holmberg Distance Education International Perspeclive London: Croom Helm,

AIU & IGNOU (1988): Studies in Distance Education AIU, New Delhi.

गुप्ता एस0पी0 (2007) : दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

यादव एस0 (2001) : दूरवर्ती शिक्षा, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर

इकाई–3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का नियोजन

संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 शिक्षा में नियोजन की अवधारणा

3.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन

3.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन की मुख्य विशेषतायें

3.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन के उपागम

3.7 सारांश

3.8 चर्चा के बिन्दु

3.9 अभ्यास कार्य

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

पूर्व के अध्यायों में आप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की संकल्पना विशेषताओं, आवश्यकता तथा विकास के चरण के विषय में जानकारी प्राप्त कर चुके हैं। इस इकाई में हम मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नियोजन के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे। नियोजन से किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में प्रभावशाली विनिश्चयीकरण तथा संतोषजनक परिणामों की सुनिश्चितता बढ़ जाती है। क्योंकि वह शिक्षा में गुणात्मक एवं मात्रात्मक सुधार के कार्यक्रमों को आधार प्रदान करती है। नियोजन की संकल्पना, प्रकृति एवं आवश्यकता को जानने के साथ इस इकाई में हम यह भी जानेंगे कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन किस पक्ष पर किया गया और नियोजन की क्या विशेषतायें होती है।

3.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

- नियोजन के अर्थ एवं आवश्यकता की विवेचना कर सकेंगे।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के विविध पक्षों में नियोजन की विवेचना कर सकेंगे।

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में नियोजन हेतु अपनाये गये उपागमों का वर्णन कर सकेंगे।

3.3 शिक्षा में नियोजन की अवधारणा

मुक्त दूरस्थ अधिगम की सार्थकता एवं प्रचार–प्रसार को बनाये रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। इस ओर कई लेखकों एवं नियोजकों का ध्यान गया कि नियोजन कैसे किया जाये और प्रभावशाली नियोजन कैसे हो पायेगा। वास्तव में नियोजन एवं प्रक्रिया है जो कि किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व की जाती है और जिससे कि हम निर्धारित लक्ष्य तक समय सीमा के अन्दर ही सार्थकता पूर्वक पहुँच जाये।

बेवस्टर ने अन्तर्राष्ट्रीय शब्दकोष में नियोजन को बनाने, क्रियान्वयन के कार्य तथा प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है। इसे किसी योजना को एक उद्देश्य की पूर्ति से सम्बंधित पूर्व निर्धारित युक्ति, कार्य की विस्तृत कार्यक्रम के रूप में समझा जा सकता है। इसमे किसी न किसी प्रकार का मानसिक कार्य सन्निहित होता है, यह किन्ही फोकस की प्राप्ति के क्या, क्यों और कैसे पर फोकस करता है। शैक्षिक योजना ऐसे प्रयासों की ओर संकेत करती है जो शैक्षिक तन्त्र में कुछ उपयुक्त उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये नियोजित तथा सप्रयास परिवर्तन लाने हेतु किये जाते हैं। इन सभी परिवर्तनों को उद्देश्यों के सन्दर्भ में देखा जाता है।

नियोजन का अर्थ कार्य प्रारूप को पहले से ही निश्चित करने की प्रक्रिया से है ताकि राष्ट्रीय नीति के द्वारा निर्धारित सम्पूर्ण परिवर्तन को लाया जा सके।

इसका अभिप्राय है कि नियोजन भविष्य में किये जाने वाले कार्य के लिये निर्णयों को तैयार करने की प्रक्रिया है, ताकि अधिकतम सम्भावित साधनों के कुछ विशिष्ट लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके। अतः नियोजन का अर्थ है अधिकतम कार्यकारी विकल्पों का मूल्यांकन तथा उसके बाद कार्य को करने के लिये सर्वोत्तम विकल्प का चयन करना।

नियोजन में विकल्पों का चयन किया जाता है और कार्य करने के पहले उसके सम्भावित परिणामों के बारे में विचार किया जाता है।

विश्व के अनेक देशों में सामान्य रूप में नियोजन और विशेषतः शैक्षिक नियोजन स्वतंत्र सरकारों का एक प्राथमिक उपकरण बना। एक ओर संसाधनों का अभाव और दूसरी ओर अनुदानदाता तथा अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के दबाव में विकसित देशों में किसी न किसी रूप में नियोजन को इतना महत्वपूर्ण बना दिया कि इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। शैक्षिक नियोजन के सम्बधं में यूनेस्कों एवं विश्व बैंक, बाह्य मदद के लिये आवश्यक शर्त के रूप में क्रियाशील नियोजन मैकेनिज्म को आगे बढ़ाने वालों में से थे। तथापि नियोजन की अवधारण को भारत के धर्मशास्त्रों में देखा जा सकता है। आधुनिक रूप में यह सोवियत यूनियन में देखा गया फिर यह सम्पूर्ण विश्व

भर में प्रचारित हुआ। समय के साथ हमारे सिद्धान्तों उपागमों एवं विधियों का जन्म हुआ। शैक्षिक विकास और नियोजन के सिद्धान्त तथा विधियां सर्वप्रथम सोवयित यूनियन में विकसित हुई, द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् केन्द्रीय यूरोप में समाजवादी राज्यों के द्वारा ग्रहण किये गये।

शिक्षा के क्षेत्रो के नावाचरों मे शैक्षिक नियोजन एक आवश्यक रूप में है। आधुनिक तकनिकी समाज की जटिलताओं ने शिक्षा व्यवस्था में नियोजन की आवश्यकता को जन्म दिया। बढ़ती जनसंख्या, मानवशक्ति की आवश्यकता, बढ़ती शिक्षा की आवश्यकता, संसाधनों की कमी जैसी समस्याओं के समाधान के लिये शिक्षा व्यवस्था पर दबाव बढ़ रहा है, और शिक्षा संस्थाओं को इन समस्याओं के समाधान हेतु नियोजन की आवश्यकता होती है, और नियोजन की दक्षता अनिवार्य हो जाती है (अगहार्ट एवं टूल 1973) ।

शिक्षा में नियोजन को अनेक रूपों में देखा जाता है नेजविक (1984) के अनुसार–

- शिक्षा में नियोजन, संस्था के लिये तात्कालिक एवं भावी लक्ष्यों तथा उद्देश्यों को निर्धारित करने के साधन के रूप में लिया जाता है।
- यह निष्पादन में सुधार के रूप में लिया जाता है।
- यह एक प्रकार का प्रासंगिक पूर्वाभास या समस्या विरोध के रूप में देखा जाता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में नियोजन को परिवर्तन के प्रबंध या संगठनात्मक नवीनीकरण के अंग के रूप में भी लिया जा सकता है।
- उदेदश्य केन्द्रित प्रबंध, कार्यक्रम एवं मूल्यांकन पुनरीक्षण तकनीकी तथा अन्य अनेक पूर्वकथन करने वाली तकनीकी को शैक्षिक नियोजन की प्रक्रिया के अंग के रूप में माना जाता है।
- शिक्षा में नियोजन समय में कुछ भावी घटनाओं, दशाओं तथा आवश्यकताओं को वर्णित करना, परिभाषित करना या निर्धारित करना है।

डोर के अनुसार–

"शिक्षा में नियोजन को जटिलता का समाधान, समन्वयन तथा नियंत्रण की प्रक्रिया के रूप में समझा जाता है।"

नेजविक 1984 के अनुसार–

"नियोजन औपचारिक एवं विवेकपूर्ण क्रियाओं का एक समुच्चय है, जिसके द्वारा भविष्य में आने वाली स्थितियों, दशाओं और चुनौतियों का पूर्वाभास करने का प्रयास किया जाता है।"

नियोजन की आवश्यकता – मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में भी नियोजन की

आवश्यकता है। साधारण रूप में देखा जाये तो भटनागर एवं अग्रवाल (2007)के अनुसार शिक्षा व्यवस्था में नियोजन इसलिये आवश्यक है–

- नियोजन, प्रयास एवं कार्य की सफलता को सुनिश्चित करने के लिये आवश्यक है, इसमें कारकों, विषयों तथा शिक्षा सम्बंधी स्थितियों को ध्यान में रखा जाता है।
- दक्ष एवं प्रभावशाली नियोजन के द्वारा समय, प्रयास एवं धन की बचत होती है। स्पष्ट सूझ होने से वांछित उद्देश्यों की दक्ष प्राप्ति की शक्ति बढ़ जाती है। यह सफल प्रशासकीय क्रिया का आधारभूत अंग है।
- नियोजन, समस्या समाधान की उत्तम विधि है। नियोजन से समस्या समाधान की त्रुटि प्रयास विधि के प्रयोग की सम्भावना कम हो जाती है, और अप्रत्यय एवं असफल की सम्भावना कम रहती है।
- नियोजन का पहला कारण यह है कि शिक्षा एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा समाज अपने भावी मान्यता तंत्र तथा जीवन शैली ज्ञान कौशल अर्थात् अपनी संस्कृति का संरक्षण एवं सुधार करती है। दूसरा यह है कि शैक्षिक तंत्र की प्रक्रिया देश के शिक्षित, गुणी व्यक्तियों तथा जन व्यय के अधिकांश भाग में प्रयोग करती है।
- नियोजन समय के साथ चलने के लिये मार्ग प्रशस्त करती है। अर्थव्यवस्था, उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा प्रणाली एवं शिक्षण सिद्धान्त एवं व्यवहार, सामाजिक, संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों में तीव्र गति से परिवर्तन हो रहे है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. नियोजन का क्या अर्थ है?

   ....

2. शिक्षा के क्षेत्र में नियोजन की आवश्यकता क्यों उत्पन्न हुई?

   ....

3. नियोजन के क्या लाभ है?

   ....

3.4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन–

क्रीगर (2001) ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रभावशाली नियोजन के आवश्यकता को इंगित करते हुये स्पष्ट किया कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का व्यूहिक नियोजन होना चाहिये, जिससे कि मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रभावशाली बने और अनावश्यक व्यय एवं समय के दुरूपयोग से बचा जा सके। क्यूट, थामसन एवं हनकॉक (1999) के अनुसार एक प्रभावशाली मुक्त दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम को केवल कम्प्यूटर एवं तकनीकी तंत्र पर ही ध्यान नहीं केन्द्रीत करना चाहिये वरन उसे छह विभिन्न एवं विशेषीकृत क्षेत्रों पर लक्ष्य केन्द्रित करना चाहिये, जो कि सम्पूर्ण शिक्षा तन्त्र के भाग हैं। ये छह ध्यान देने योग्य क्षेत्र होंगे–

1– **दूरस्थ शिक्षा हेतु उपयुक्त संकल्पना–** ओकी, पोगरोवेस्की (1998), हचे (2000), मिलर (1994), रिचर्ड (2002), सबा (2000) ने यह स्पष्ट किया कि जब मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम का संचालन का कार्यक्रम का लक्ष्य निर्धारित होता है, तो महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक, कर्मचारी एवं प्रशासन को सर्वप्रथम मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रणाली की संकल्पना को स्पष्ट करते हैं जिससे कि परिसर में पूर्व से ही संचालित पाठ्यक्रमों से अलग अपनी संगठनात्मक संस्कृति बन सके। इसके अतिरिक्त प्रशासनिक सहयोग तंत्र, विद्यार्थी सहायता सेवायें, तकनीकि सहयोग एवं कार्मिक वर्ग का प्रशिक्षण एवं सहायता सेवायें ऐसे क्षेत्र है, जिसको विश्लेषण करके ही हम मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम तंत्र को क्रियान्वित कर सकते हैं। ब्लूमफील्ड (1993) ने यह स्पष्ट किया कि स्पष्ट अन्तदृष्टि से धीरे–धीरे संसाधन भी स्थानान्तरित हो जाते हैं। बरज एवं मोरजोवस्की (2001), केयर एवं स्कालन (2001) रोबिन्सन (2000) वरडुइन एवं क्लार्क (1999), वाल्टन (2001) विल्स (2000) ने स्पष्ट किया कि मुक्त दूरस्थ शिक्षा में नियोजन अत्यन्त आवश्यक है। इन्होनें यह स्पष्ट किया कि पूर्व नियोजन एवं नीति निर्धारण एवं विकास मुक्त दूरस्थ अधिगम तंत्र के प्रभावशाली संचालन के लिये एक कुंजी है।

नियोजन इस शिक्षा तन्त्र में अच्छे सुविधाओं को जन्म देगा इसके साथ ही उपस्थित संसाधनों के बेहतर उपयोग का मार्ग प्रशस्त करेगा। हचे (2000) ने यह अध्ययन किया जो मुक्त दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था अधिक प्रभावशाली थी उसकी व्यूहिक नियोजन किया गया था।

फ्रांसिस एवं केप लॉन (1999) केम्प (2000) ने यह स्पष्ट किया कि नियोजन का क्रमिक उपागम अपनाया जाता ह जिससे कि इस तंत्र से शिक्षा प्राप्त कर रहे अध्येताओं को गुणात्मक शिक्षा मिले।

2– **लक्ष्य निर्धारण** – ड्रूकर हचे (2000), मोरो (1999), ओहलर एवं वारलिक

(2001) ने यह स्पष्ट किया कि जिन दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने अपने लक्ष्य निर्धारण नहीं किया वे कभी भी उन्नति नहीं कर सकते इससे यह स्पष्ट है कि मुक्त अधिगम तंत्र की संकल्पना को स्पष्ट करने के पश्चात् लक्ष्य निर्धारण का कार्यक्रम होता है। नियोजन के दूसरे चरण में कार्मिक वर्ग स्टाफ एवं अध्येता समूह तथा प्रशासनिक वर्ग की सहभागिता तथा सहमति के आधार पर लक्ष्य निर्धारण का कार्य किया जाता है। लक्ष्य निर्धारण के समय यह आवश्यक होता है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता को समझा जाये–

- इसकी प्रकृति एवं सिद्धान्तों के प्रति स्पष्ट ज्ञान हो।
- इसके महत्व का स्पष्ट ज्ञान हो।
- यह स्पष्ट किया जाता है कि यह अध्येता के किस समूह को आच्छादित करेगा।

इसके लिये केयर एवं स्कालन (2001) एवं मिल्स तथा पॉल (1993) ने यह स्पष्ट किया कि लक्ष्यों के निर्धारण हेतु शैक्षिक प्रशासन को निर्देशन एवं नेतृत्व प्रदान किया जाना चाहिये। इसके साथ ही लक्ष्य निर्धारण में व्यूहिक नियोजन के अन्तर्गत प्रशासनिक तंत्र का भी निर्धारण किया जाये। शिफ्टर (2000), क्रीगर (2001), मायर्स एवं ओसटास (2001) राकवेल स्काउवर, फिस्ट एवं मार्क्स (2000) ने स्पष्ट किया कि लक्ष्यों के निर्धारण में कार्मिक वर्ग का नेतृत्व के बगैर असम्भव है और कार्मिक वर्ग का उन्नतिशील दृष्टिकोण सम्पूर्ण व्यवस्था में आमूल परिवर्तन ला सकता है।

3– **नीतियों प्रक्रियाओं एवं रणनीतियों का निर्धारण** – मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम में व्यूहिक नियोजन का तीसरा चरण नीतियों प्रक्रियाओं एवं रणनीतियों का निर्धारण किया जाता है। लक्ष्यों के निर्धारण करने के पश्चात् अपनी कार्यशैली एवं प्रक्रिया संचालन हेतु विभिन्न नीतियों एवं आदेशों परिनियमों का सृजन किया जाता है। इन सभी कार्यों को इस दिशा में लगे हुये प्रशासनिक तंत्र एवं समूह करता है, जबकि हसमन एवं मिलर (2001) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश प्रशासन यह चाहता है कि कार्यक्रम को कार्मिक वर्ग के सहयोग मिले और वह उपभोक्ता केन्द्रित हो। परन्तु अधिकांश प्रशासनिक मुक्त दूरस्थ अधिगम को प्रभावी बनाने हेतु अपनी भूमिका अहम होती है, परन्तु गैरिसन (1989) एवं वेनजेल (1999) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश प्रशासनिक नई प्रत्यय, नई तकनीकी एवं परामर्शदाता विद्यार्थियों से सम्बंधित अनेक तथ्यों को समझने में समय नहीं देंते है।

4– **पाठ्यक्रम सम्बंधी नियोजन**– मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का सम्पूर्ण महत्व इसके लचीले, उपयोगी एवं विविध पाठ्यक्रमों के संचालन में है अतः इसके निर्धारण की

प्रक्रिया भी सोच समझ कर की जाती है, यह ध्यान रखा जाता है कि–

- पाठ्यक्रम कौन–कौन से चलाये जाये?
- इनकी क्या उपयोगिता होगी?
- ये पाठ्यक्रम जनसंख्या के किस वर्ग के लिये उपयोगी होंगे?
- इस पाठ्यक्रम के संचालन की क्या उपयोगिता है?
- इस पाठयक्रम के संचालन हेतु किन संसाधनों की आवश्यकता होगी?
- पाठ्यक्रम निर्माण एवं विकास कैसे होगा?
- पाठ्यक्रम का भविष्य में क्या उपयोग होगा?
- प्रभावी पाठ्यक्रम के संचालन हेतु कौन से उपाय करने होगे?
- पाठ्यक्रम कितना उपभोक्ता केन्द्रित होगा?
- पाठ्यक्रम हेतु किस क्षेत्र एवं प्रकार की पाठ्यवस्तु का निर्माण करना होगा।

उपरोक्त सभी तथ्य को ध्यान में रखकर ही पाठ्यक्रम को संचालित करने का निर्णय लिया जाता है।

इसके अतिरिक्त इस ओर भी विचार किया जाता है कि इस पाठ्यक्रम के लिये सम्प्रेषण हेतु मुद्रित सामग्री, संचार माध्यम, इन्टरनेट और किस तकनीकी माध्यम का, और कितना प्रयोग किया जायेगा। ट्रीनडाडे एवं बीडार (2000) ने अपने अध्ययन में पाया कि ज्ञान के नवीन एवं तेज उद्भव ने पाठ्यक्रम में नवाचार को आवश्यकता को जन्म दिया और अध्यापकों को चाहिये कि वे अधिक नम्य एवं लचीलेपन के सिद्धान्त को शिक्षण ने अपनाये।

5– कार्मिक वर्ग प्रशिक्षण एवं सहयोग हेतु नियोजन– मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की सम्पूर्ण प्रणाली में अहम तथ्य यह होता है कि यह परम्परागत शिक्षा से एकदम अलग एवं अप्रत्यक्ष प्रक्रिया के रूप में होती है। इसमें परम्परागत शिक्षा से अलग प्रकार के क्रिया कलाप दृष्टिकोण एवं सम्भावित भूमिका निर्वहन करना पड़ता है। अतः नियोजन को इस प्रकार पर भी देखना पड़ता है कि कार्मिक वर्ग का प्रशिक्षण कैसे हो और प्रशिक्षंण के मुख्य उद्देश्य होते हैं–

- कार्मिक वर्ग की दृष्टिकोण, अभिवृत्ति एवं मुक्त दूरस्थ शिक्षा के प्रति समझ विकसित करना।
- कार्मिक वर्ग को पाठ्यक्रम विशेष को संचालित करने हेतु विशेष रूप से प्रशिक्षित करना।

- इस व्यवस्था से जुड़े लोगों का मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में कार्यरत रहने व आगे विकास हेतु निर्देशन प्रदान करना।
- पाठ्यक्रमों विशेष मे संचालन हेतु भूमिका से अवगत कराना।
- कार्मिक वर्ग में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना। कार्मिक वर्ग/ परामर्शदाताओं/ प्रशासकों के प्रशिक्षण को कई स्तर पर नियोजित किया जाता है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान/विश्वविद्यालय/विद्यालय

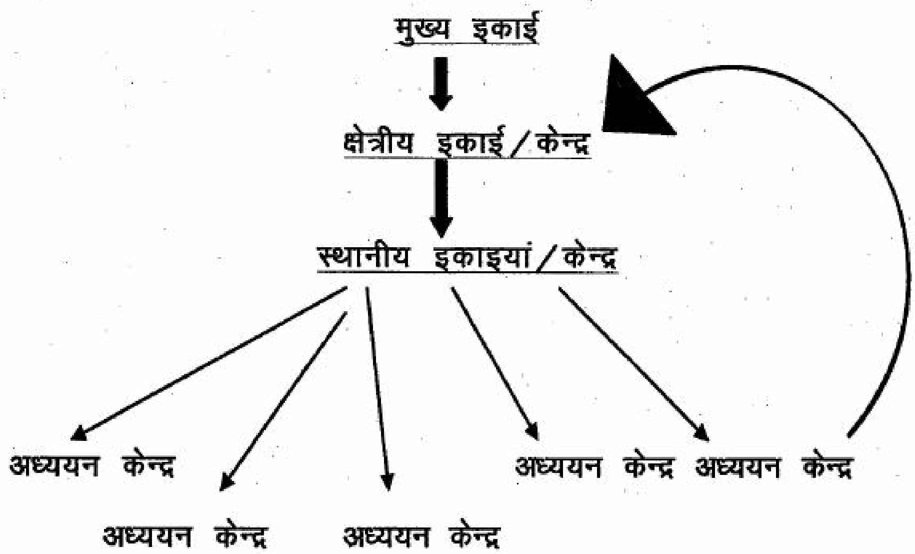

क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र विभिन्न जिला अध्ययन केन्द्रों के प्रशासकों/ परमर्शदाताओं/ कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करता है। क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र में यह कार्यशाला/सम्मेलन के रूप में आयोजित होते हैं और क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्र पर प्रशिक्षण प्रदान करने हेतु प्रशिक्षक मुख्य इकाई से आते हैं।

कमपेकर (2001) रॉकवेल फरमेसन एवं मार्क्स (2000) के अनुसार बदलते परिवेश एवं चुनौतियों के कारण प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण अनिवार्य हो गया है।

6. **अध्येता सहयोग सेवाओं हेतु नियोजन** – मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था पूर्णतया अध्येता केन्द्रित होती है, अतः यह आवश्यक होता है कि सभी कार्यक्रमों के केन्द्र बिन्दु अध्येता की आवश्यकता एवं सुविधा होती है। बोथेल (2001) मोरो (1999) ने अपने अध्ययन में बताया है कि अध्येता सहयोग सेवाओं को अधिक प्रभावशाली बनाये जाने की अभी आवश्यकता है। क्योंकि स्कालन (2001) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि प्रशासनिक व कार्मिक वर्ग अध्येता सहयोग सेवाओं के लिये अत्यधिक सजग नहीं है। अनेक अध्ययनों से यह बात स्पष्ट हुई है कि शिक्षकों/ उपबोधकों का

प्रशिक्षण क्षेत्र में कार्मिक वर्ग एवं अध्यापकों को बहुत सहयोगी रहते है। अध्येयताओं को सूचना प्रदान करने हेतु संकायों द्वारा संचार माध्यमों का बहुतायत में प्रयोग करने का मार्ग अपनाया जाता है। दूरस्थ शिक्षा माध्यम में अध्येता समूह के बिखराव के कारण उन तक सूचना एवं सहयोग पहुँचाने के लिये सशक्त नियोजन किया जाता है। सम्पूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था को विकेन्द्रीकृत कर दिया जाता है और दायित्वों को मुख्य केन्द्र से राज्यों के विभिन्न क्षेत्रीय सम्पर्क केन्द्रों में विभक्त कर दिया जाता है और इसमें मुख्य इकाई के रूप में आधार स्तर पर सहयोग पहुँचाने के लिये अध्ययन केन्द्रों को भी दायित्व दिये जाते हैं। सेवरॉक (2001) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि पाठ्यक्रम एवं प्रौद्योगिकी को छोड़कर यह अध्येता सहयोग सेवा तीसरा संवेदनशील क्षेत्र है जो कि मुक्त दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम की प्रभावकारिता तय करता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिय।

4– मुक्त एवं दूर अधिगम व्यवस्था में अध्येता सहयोग हेतु सेवाओं हेतु नियोजन पर विशेष बल क्यो होता है ?

....

5– मुक्त एवं दूर अधिगम कार्यक्रम में पाठ्यक्रम नियोजन को सेवरॉक ने संवेदनशील क्षेत्र क्यों कहा है।

....

3.5 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन की सामान्य विशेषतायें–

हम पूर्व में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के विभिन्न तत्वों के लिये नियोजन के विषय में संक्षेप में जान चुके हैं। अब यह जाना जाये कि मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम हेतु नियोजन में किन विशेषताओं पर ध्यान रखा जाता है। वास्तव में शिक्षा के क्षेत्र में नियोजन ने एक व्यवस्थित रूप ले लिया है, और इसकी बढ़ती मांग ने नियोजन के महत्व को और बढ़ाया है। वर्तमान नियोजन की इन विशेषताओं ने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में प्रवेश किया है।

- मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम में नियोजन तार्किक व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक होता है और यह प्रत्येक स्तर पर पुरानी व्यवस्था से इतर नवीन आवश्यकताओं के अनुरूप किया जाता है। यह सुनियोजित एवं लक्ष्य प्रधान होता है। इसमें चिन्तन के पश्चात् निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु उनमें से सर्वोत्तम के चयन

व क्रियान्वयन किया जाता है।

- मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम में नियोजन इस बात पर बल देता है, कि प्रशासक ही नहीं वरन इस से सम्बंधित सभी व्यक्तियों एवं अध्येताओं का उत्तरादायित्व समझा जाना चाहिये।
- मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम तंत्र में नियोजन का लक्ष्य सामाजिक एवं आर्थिक होता है, तथा इस का सम्बंध अध्येता के कल्याण एवं उसकी प्रगति से सम्बंधित होता है।
- नियोजन प्रक्रिया में सम्बंधित क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञ एवं प्रतिनिधियों को सम्मिलित किया जाता है।
- इसमें भविष्य में होने वाले सम्भावित विकासों एवं आवश्यक परिवर्तनों के बारे में पूर्वानुमान लगाया जाता है।
- नियोजन हेतु सावधानीपूर्वक तथ्य एंव आंकड़े संग्रहित किये जाते हैं, जिसमें वर्तमान एवं भावी आवश्यकता स्पष्ट हो सकती है।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में किये गये नियोजन का आधार शोध के परिणाम होते हैं, इसीलिये इसमें क्रियात्मक अनुसंधान एवं अन्य अनुसंधानों, संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों का आयोजन कर आकड़े व अनुभव एकत्र किये जाते है।
- नियोजन वास्तविक एवं व्यावहारिक होता है।
- नियोजन में निरन्तर मूल्यांकन किया जाता है, जिससे आवश्यक परिवर्तन का विकल्प बना रहे।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में भी नियोजन व्यापक स्तर पर किया जाता है।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा माध्यम से संचालित विविध पाठ्यक्रमों की संरचनाओं, विधियों एवं सहयोग सेवाओं तथा उसके परिमाणात्मक पक्षों को ध्यान में रखा जाता है।
- नियोजन में आर्थिक विश्लेषण (व्यय से सम्बंधित अध्ययन) तथा आवश्यक संसाधनों के दक्ष प्रयोग सुनिश्चित किया जाता है।
- शैक्षिक सुविधाओं को जनसंख्या तथा आर्थिक इकाइयों के क्षेत्रीय विभाजीकरण के अनुरूप प्रसार पर ध्यान दिया जाता है।
- स्थानीय, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर नियोजन का विभेदीकरण एवं उसकी आवश्यकतानुसार मांग के अनुरूप किया जाता है।

- नियोजन से पूर्व लक्ष्यों का निर्धारण किया जाता है, इनकों स्पष्ट परिभाषित किया जाता है, जिसके लिये नियोजन किया गया हो।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

6– मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन का आधार क्या होता है?

....

7– नियोजन में निरन्तर मूल्यांकन क्यों किया जाता है?

....

8– नियोजन की प्रक्रिया में कौन–कौन सम्मिलित होता है?

....

9– मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नियोजन हेतु आंकड़े व तथ्या क्यों एकत्र किये जाते हैं?

....

3.6 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन के उपागम

नियोजन किसी भी व्यवस्था को लक्ष्य तक पहुँचाने का युक्ति निर्माण है। इसमें लक्ष्यों का निर्धारण, धारणायें बनाना, विकल्पों की खोज तथा अन्त में वरीयता पर आधारित एक व्यापक योजना होती है। किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में ये निर्णय एवं विकल्प अनेक दृष्टिकोणों के आधार पर लिये जाते हैं, और सभी प्रकार के शिक्षा नियोजन को हम इन उपागमों के अन्दर देख सकते हैं।

जनांकिकीय प्रक्षेपण मॉडल– यह उपागम सभी प्रकार के उपागमों में निहित रहता है, क्योंकि इसमें उस जनसंख्या का अनुमान किया जाता है जिसके लिये भविष्य में मुक्त शैक्षिक तंत्र को स्वरूप देना है। यहां पर विकल्पों के पुराने प्रतिमान एक अनुमान तथा विस्तार के लिये आधार प्रदान करते हैं। यहां पर अनुमानित जनसंख्या की आवश्यकता को आंका जाता है।

मानव शक्ति उपागम– इस उपागम को मानव संसाधन विकास उपागम के नाम से जाना जाता है। शिक्षा में नवाचार एवं औपचारिक शिक्षा के पूरक के रूप मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में भी इस बात पर बल दिया जाता है कि उसका नियोजन भी इस प्रकार से हो कि उससे तैयार मानव शक्ति समाज के लिये उपयोगी है, उससे ऐसे पाठ्यक्रम तैयार किये जाये जो कि समाज एवं राष्ट्र के आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के लिये उपयोगी मानव संसाधन तैयार करे। यह प्रभावशाली नियोजन के द्वारा ही सम्भव है और यह

किसी भी शिक्षा व्यवस्था के विकास को भी जन्म देती है, और यही सभी प्रकार की शिक्षा को राष्ट्र के आर्थिक विकास का एक कारक बना देता है।

सामाजिक मांग उपागम– मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का उद्भव ही औपचारिक शिक्षा के द्वारा शिक्षा की मांग को पूरा न कर पाने के कारण लचीलेपन के साथ हुआ था अतः यह उपागम में सभी अन्य शिक्षा व्यवस्था के अनुसार ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा भी उपयोग करता है। इसके अन्तर्गत यह ध्यान रखा जाता है कि जो भी जिस शिक्षा या डिग्री या कोर्स के लायक है उन्हें मिले और उन्हें प्रवेश की सुविधा मिले। यह उपागम इस बात पर बल देता है कि शैक्षिक सुविधायें व्यक्तियों की मांग के अनुपात में ही दी जानी चाहिये।

प्राप्ति दर उपागम– इस उपागम को लागत प्रभावशीलता उपागम के नाम से ही जाना जाता है। यह उपागम इस बात पर बल देता है कि शिक्षा व्यवस्था पर जो लागत लगे वह निवेश है और उसे लाभ या प्राप्ति की कसौटी पर परखा जाता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के नियोजन में इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि कि व्यय राष्ट्रीय निवेश व्यय के रूप में होता है और इससे वह उत्पादक मानव संसाधन तैयार किये जाना चाहिये। इस तरह से मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम में भी देश व समाज के आर्थिक विकास से जुड़ जाते हैं। इस उपागम को अपनाकर मुक्त व दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम अपने द्वारा संचालित विविध कार्यक्रमों में निवेश व्यय को आंककर उसे व्यक्ति एवं राष्ट्र दोनों के लिये उपयोगिता को निर्धारित कर पाता है।

सामाजिक न्याय उपागम– इस उपागम को अपनाते हुये मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था समाज के सभी वंचित वर्ग को शैक्षिक सुविधाओं एवं समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करती है। ऐसे पाठ्यक्रमों का संचालन किया जाता है तथा ऐसे नियम एवं सुविधायें प्रदान करने का प्रयास दूरस्थ अधिगम माध्यम से दी जाती है, जो समाज के बड़े वर्ग को मिल सके । सम्पूर्ण समाज के संतुलित विकास हेतु इस क्षेत्र में कार्यक्रमों की योजना बनाते समय विशिष्ट प्रावधान किये जाते है।

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नियोजन में अधिकांशतः सभी उपागम प्रयोग में लाये जाते है। इसके अतिरिक्त और भी उपागम प्रयोग में लाये जाते हैं।

नियोजन की प्रक्रिया एवं तकनीकी – मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन की प्रक्रिया शोध परिणामों पर निर्भर करती है। यह व्यापक एवं वैज्ञानिक होती है। यह पूर्ण सावधानी के साथ तैयार की जाती है। इसमें अत्यधिक चिन्तन, आंकड़ों के संकलन, विश्लेषण विचार–विमर्श एवं मंथन किया जाता है। इस प्रकार की शिक्षा में औपचारिक शिक्षा माध्यम के विपरीत अलग तरह से नियोजन करना पड़ता है। इसमें कई पक्ष अदृश्य होते है और सभी भविष्य की योजना का सुधार एवं उसकी गुणवत्ता, उस प्रक्रिया की गुणवत्ता पर निर्भर करती है जो उसे तैयार करती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में भी नियोजन उसमें विविध प्रक्रियाओं की गुणवत्ता, व्याख्याओं की गहरायी, भाग लेने वाले व्यक्तियों की विद्धता पर निर्भर करती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था औद्योगीकृत है अतः प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी प्रयोग हेतु नियोजन में सशक्त रणनीति

बनायी जाती है। नियोजन में वरीयताओं को निर्धारित करना आवश्यक माना जाता है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन के समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि अधिक शैक्षिक सुविधायें ही नहीं सेवायें भी प्रदान की जाती है। सम्पूर्ण नियोजन प्रक्रिया में शैक्षिक अवसरों की असमानता पर मुख्य ध्यान दिया जाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

10. मानव शक्ति उपागम से आप क्या समझते है?

....

11. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन किस बात पर निर्भर करती है?

....

3.7 सारांश

दूरस्थ शिक्षा गरीब देशों के लिये अत्यधिक उपयोगी है। यह जनसंख्या बाहुल्य देशों के लिये भी औपचारिक शिक्षा के पूरक के रूप में बेंहतर विकल्प है। जहां पर सभी को संसाधनों की सीमितता के कारण शिक्षा सुविधा प्रदान करना दुरूह कार्य है ऐसे में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा राष्ट्रीय विकास के सन्दर्भ में उच्च स्तर पर एक सक्षम एवं मितव्ययी शिक्षा है, परन्तु इसके स्वरूप को सही एवं अध्येता केन्द्रित बनाने हेतु इसका सही नियोजन आवश्यक है। इसको नियोजन एवं संगठन के कई कसौटियों से कसा जाता है, जिसे हमने इस इकाई में पढ़ा है। आशा है यइ इकाई आपके दूर शिक्षा हेतु ज्ञानात्मक स्तर के अनुरूप उसे और आगे दिशा देने का कार्य करेगी।

3.8 चर्चा के बिन्दु

1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन कई पक्षों पर सावधनी पूर्वक करना पड़ता है, परन्तु उचित अन्तदृष्टि का होना इसके लिये अति आवश्यक है, चर्चा कीजिये कि औपचारिक शिक्षा के विपरीत इस शिक्षा व्यवस्था में अतिरिक्त नियोजन कहां–कहां करना पड़ता है।

3.9 अभ्यास कार्य

1– नियोजन की अवधारणा को स्पष्ट कीजिये। शैक्षिक नियोजन की आवश्यकता एवं विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

2— मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में नियोजन की क्या भूमिका है और नियोजन में क्या विशेषतायें निहित होती है।

3.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. योजना बनाने, कार्यान्वियन करना व प्रक्रिया के रूप में।
2. शिक्षा की बढती मॉग, महत्व तथा मानव विकास की प्रक्रिया बन जाने के कारण।
3. समय, श्रम, संसाधन की बचत, असफलता में कमी, लक्ष्यों की समय पर प्राप्ती सम्भव।
4. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का अध्येता— उपभोक्ता केन्द्रित होना।
5. पाठ्यक्रम ही मुक्त शिक्षा की लोक प्रियता का आधार है।
6. शोध के निष्कर्ष।
7. निरन्तर सुधार एवं परिवर्तन हेतु।
8. सम्बन्धित प्रशासक विषय विशेषज्ञ एवं प्रतिनिधि।
9. नियोजनद तार्किक व विश्वसनीय तथा भविष्य का अनुमान करने हेतु।
10. इस उपागम को अपना कर शिक्षा द्वारा मानव शक्ति का विकास राष्ट्र के लिए किया जा सकता है।
11. विविध प्रक्रियाओं की गुणवत्ता, व्याख्याओं की गहराई व भग लेने वाले व्यक्ति की विद्वता।

3.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें—

Keegan D. (1990) : Foundations of Distance Education, Landon: Routledge.

Sahoo, P.K. (1994) Open Learning System, New Delhi : Upal PUblishing House.

गुप्ता एस0पी0 (2007) : दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

Goel A. and Goel S.L. (2000) : Distance Education in 21st century, New Delhi: Deep & Deep Publication Pvt. Ltd.

Kegan, J. (1983): On defining distance education in sewart keegan and Holmberg Distance Education International Perspeclive, London: Croom Helm,

AIU & IGNOU (1988): Studies in Distance Education AIU, New Delhi.

इकाई 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख कारक

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्‌देश्य

4.3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को प्रभावित करने वाली नवीन नामांकन प्रवृति

4.4 शैक्षिक कारक

4.5 तकनीकी कारक

4.6 आर्थिक कारक

4.7 दूर अधिगम की प्रवृति

4.8 सारांश

4.9 चर्चा के बिन्दु

4.10 अभ्यास कार्य

4.11 बोध प्रश्नों का उत्तर

4.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

औद्योगिक समाज के विकास के परिणामस्वरूप हमारी सामाजिक एवं वैयक्तिक आवश्यकताओं में वृद्धि हुई तथा उनमें अनेक नवीन परिवर्तन की आवश्यकताओं का भी अनुभव हुआ। इन नवीन आवश्यकताओं का स्वरूप इतना जटिल होता है, और अनेक नवीन अनुशासनों का जन्म हुआ। इसी के अन्तर्गत शिक्षा तकनीकी के नये अध्ययन क्षेत्र का विकास हुआ। शिक्षा तकनीकी के विकास ने नयी शिक्षा प्रणाली दूरवर्ती शिक्षा प्रणाली को जन्म दिया। इसी प्रकार शिक्षा में इस नयी विधा को जन्म देने वाले अनेक कारक है जो कि इस शिक्षा के उद्‌भव एवं विकास को निरन्तर प्रभावित करते रहे है। इस इकाई में हम इसी के विषय में अध्ययन करेंगे।

4.2 उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा को प्रभावित करने वाले विविध कारकों को जान सकेंगे।

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को प्रभावित करने वाले विविध कारकों नामांकन, प्रवृति, आर्थिक, सामाजिक एवं तकनीकी कारकों की विवेचना कर सकेगें।

4.3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को प्रभावित करने वाली नवीन नामांकन प्रवृति

दूरस्थ शिक्षा, शिक्ष व्यवस्था में एक नवाचार के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है यह कुछ निश्चित ऐतिहासिक, सामाजिक एवं तकनीकी शक्तियों के प्रभाव का परिणाम है, तथा शिक्षा की ऐसी व्यवस्था है जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्यावरण से सुसम्बद्ध है। दूरस्थ शिक्षा अपने शाब्दिक नाम एवं अर्थ दोनों दृष्टियों से एक व्यापक शैक्षिक प्रणाली है यह पाठ्यक्रम शिक्षण एवं मूल्यांकन तीनों पक्षों के सम्मिलित होने के बाद भी परम्परागत शिक्षण व्यवस्था से भिन्न है। परन्तु सर्वदा विदित है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है और दूरस्थ शिक्षा के उद्भव एवं विकास के भी कुछ कारक हैं, जिन्होनें इस शिक्षा प्रणाली को लोकप्रिय बनाया और इनका अध्ययन हम अब करेंगे।

Ø अध्येता नामांकन प्रवृत्ति–

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की सीमित संसाधनों द्वारा उच्च शिक्षा एवं विद्यालयी शिक्षा प्राप्त करने हेतु आयु वर्ग के विद्यार्थियों की नामांकन की असमर्थता से दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता में वृद्धि– जोन्स (2003) ने अपने एक अध्ययन में स्पष्ट किया कि यूनाइटेड स्टेट्स में आने वाले वर्षों में 16प्रतिशत नामांकन दर उच्च शिक्षा हेतु एक चुनौती होगी और यह जनसंख्या उच्च शिक्षा की मांग को बढ़ायेगी। ओबलिंगर बारोन एवं हॉकिन्स (2001) ने भी इस बात की पुष्टि की, कि संसाधन सीमित होंगे पर विद्यार्थियों के नामांकन का भार बढ़ेगा और इसक विकल्प मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा ही होगी।

Ø विद्यार्थियों में अपने समय एवं परिस्थिति के अनुसार पाठ्यक्रम चयन के प्रति रूचि–

1998 में एक अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया कि अधिकांश अध्येता अपने कर्तव्यों, पूर्णकालिक व्यवसायों एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण पाठ्यक्रम संरचना में लचीलापन चाहते हैं। अध्येता ऐसे पाठ्यक्रम खरीदते हैं जो उनके इच्छाओं एवं समस्याओं के अनुकूल हो। विद्यार्थियों की इस इच्छा का सम्मान करना ही होगा। डी0 अल्वा (2000) ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया कि गवर्नरों ने संकेत दिया था कि 21वीं सदी के विश्वविद्यालयों में किसी भी समय और कहीं पर भी शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था होगी। कार (1999) ने स्पष्ट कि परिस्थतियां यहां तक भी आयेगी कि पाठ्यक्रम का विकास करने वाले क्रेडिट अवार्ड भी कर देंगे और हो सकता है कि

भविष्य में शैक्षिक दलाल भी उत्पन्न हो जाये कि मध्यस्थता का कार्य करे। डी0 आल्वा ने यह स्पष्ट किया कि किसी भी संस्थागत विकास के लिये यह आवश्यक होगा कि वह कामयाब बाजारीकरण करे, ठोस गुणात्मक सहयोग एवं शिक्षा दे तथीा नये संचार एवं प्रौद्यागिकी का प्रभावशाली शिक्षण में उपयोग करें। यही दूरस्थ शिक्षा भविष्य की शिक्षा कहलायेगी है।

ø प्रौढ़, महिला, अल्पसंख्यक एवं अपवंचित वर्ग की अध्येताओ की वृद्धि–

प्रौढ़, महिला, अल्पसंख्यक एवं अन्य अपवंचित वर्ग के अध्येताओं के संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। असलानियन (2001) ने अपने अध्ययन मे स्पष्ट किया कि 42 प्रतिशत से अधिक अध्येता जो निजी एवं सार्वजनिक संस्थानों में अध्ययरत हैं वे 25 वर्ष या अधिक आयु के है। उच्च शिक्षा हेतु इनकी संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। 18 से 24 वर्ष के आयु के विद्यार्थियों की संख्या 1970 से 2000 के मध्य 41 प्रतिशत से अधिक बढ़ी है। इसकी वजह सतत शिक्षा, जीवनपर्यन्त शिक्षा एवं आर्थिक आवश्यकता हो सकती है। 2002 में हुये एक अध्ययन में स्पष्ट हुआ कि पुरूषों की अपेक्षा अर्थात् कुल संख्या की 57 प्रतिशत जनसंख्या महिलाओं की उच्च शिक्षा हेतु नामांकित है। अल्पसंख्यकों में भी महिलाओं अनुपात अधिक है। सीट्रान (2003) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया है कि 60 प्रतिशत हिस्पैनिक और अफ्रीका एवं अमरीकी कालेजो के दे‌ा तिहाई नामांकन महिलाओं का है। यूनाइटेड स्टेट्स में हिस्पैनिक जनसख्या 63 प्रतिशत तक 2020 में बढ़ जायेगी निश्चय ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा ही बेहतर विकल्प है।

ø उच्च शिक्षा में ऑन लाइन अध्येता एवं प्रौढ़ अध्येताओं की वृद्धि से स्वरूप में परिवर्तन

उच्च शिक्षा में आन लाइन अध्येताओं की जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है, ये उम्र में अधि‍क है और इन्होनें औपचारिक उच्च शिक्षा संस्थानों के अध्येताओं से अधिक डिग्री हासिल कर रखी है, यह अन्य अध्येताओं आकर्षित करता है। बेट्स (2005) के अनुसार वर्तमान समय में उच्च शिक्षा अध्यनरत विद्यार्थी पुरातनयुगीन विद्यार्थियों से अलग है ये छोटे प्रारूप कई भागों में विभक्त पाठ्यक्रम चाहते हैं जो कि वे अपने घर के दायरे में रहकर पूरी कर सकें। ओबलिंगर (2001) जोन्स एवं प्रिटचार्ड (2000) ने यह स्पष्ट किया कि संचार के इस युग में अध्येता स्वयं करके सीखने, त्रुटि एवं प्रयास द्वारा जानने, लेखन के स्थान पर टाइपराटिंग करना चाहते हैं।

ø आन लाइन पाठ्यक्रमों में अधिक ठहराव–

अनेक अध्ययनों से यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि आन लाइन एवं दूरस्थ शिक्षा के

पाठ्यक्रमों में ठहराव अधिक पाया गया इसकी वजह इसका नयापन हो सकता है। 2002 में रोच ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि परम्परागत कक्षाओं की अपेक्षा इन पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों का ठहराव अधिक है। ब्राडी (2001) ने भी अपेन अध्ययन से इस तथ्य की पुष्टि की पाठ्यक्रमों का नयापन विद्यार्थियों को आकर्षित करते है। अनेक विद्वानों ने अपने शोध अध्ययनों से इस बात की पुष्टि की दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों में 87 प्रतिशत अध्येता शिक्षण पूरा करते हैं। क्योंकि यह शिक्षण उनकी सुविधा के अनुरूप होता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. जोल्स के अनुसार आने वाले समय में उच्च शिक्षा में नामांकन दर कितना हो जायेगा ?

....

2. विद्यार्थी भविष्य में किस प्रकार के पाठ्यक्रमों को चयनित करेगे ?

....

3. उच्च शिक्षा में किस वय वर्ग के अध्येता नामांकित हो रहे है ?

....

4.4 शैक्षिक कारक–

Ø ज्ञान एवं संचार के माध्यमों का तीव्र विस्फोट–

ज्ञान एवं संचार के माध्यमों का तीव्र वृद्धि ने समस्त विश्व को चकाचौंध किया है। कोई भी इससे अछूता नहीं रहना चाहता। असलानियन (2001) ने अपने अध्ययन में यह स्पष्ट किया कि पहले ज़ानकारी 10 वर्ष में दुगनी होती है, और अब यह दो वर्ष में दुगनी हो जाती है। इससे उच्च शिक्षा में ज्ञान प्रबंध का दबाव बढ़ा है, और उच्च शिक्षा में दूरस्थ शिक्षा बेहतर विकल्प बन रही है क्योकिं मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सतत् शिक्षा का विकल्प देती है।

Ø उच्च शिक्षा के परम्परागत शिक्षण परिसरों की अप्रभावशीलता–

गैलेधर (2003) के अनुसार शिक्षा सबसे अधिक आमदनी की वस्तु बन चुकी है। लोग इसमें पूँजी लगाकर लाभ कमा रहे हैं, और अब स्थिति यह बन चुकी है, कि कुल उच्च

शिक्षा हेतु जनसंख्या के 5 प्रतिशत लोग इन संस्थानों में नामाकित है और 33 प्रतिशत विद्यार्थी दूरस्थ शिक्षा माध्यम से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। परम्परागत शिक्षण संस्थानों की परिसर की अपेक्षा ये अधिक उपयोगी पाठ्यक्रम सहजता से प्रदान कर पा रहे हैं। डन (2000) ने यहां तक कह दिया है कि 2025 तक परम्परागत परिसरों की समाप्ति हो जायेगी और उच्च शिक्षा व्यवस्था में एक अभूतपूर्व परिवर्तन आयेगा।

Ø संस्थागत संरचना का विकेन्द्रीकरण की ओर झुकाव–

अधिकांश शिक्षा व्यवस्था के सफलता की वजह उसका सशक्त नियोजन ही है। भारत में भी स्वतंत्रता के पश्चात् विभिन्न स्तर की शिक्षा व्यवस्था में विकेन्द्रीकरण एक प्रकार से नवीन प्रयोग 80 के दशक में प्रारम्भ हुआ, और यह दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में बेहतर प्रयोग में लायी जा रही है। डोनाल्डसन (2003) ने स्पष्ट किया कि सतत् शिक्षा से सम्बंधित शिक्षण संस्थाये अधिकांशतः विकेन्द्रीकृत प्रशासन एवं शैक्षणिक व्यवस्था अपनाती है, क्योंकि यह लोकतांत्रिक व्यवस्था है।

Ø जीवन पर्यन्त शिक्षा की ओर आकर्षण–

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है और व्यक्ति जीवन पर्यन्त अपने अनुभवों को इकठ्ठा करते हुये सीखता रहता है अतः एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की ओर ध्यानाकर्षण हुआ जिसमे कि किसी भी उम्र, परिस्थिति व कम समय लगाकर पढ़ते रहने की सुविध ा मिल सके और मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक बेहतर विकल्प के रूप में उपस्थित हुई। यह एक लचीली शिक्षा व्यवस्था है।

Ø सार्वभौमिक शिक्षा का राष्ट्रीय लक्ष्यों के रूप में घोषणा–

भारत जैसे अनेक देशों ने लोकतांत्रिक दृष्टिकोण अपनाते हुये जन शिक्षा की व्यवस्था करने का बीड़ा उठाया। समाज के अपवंचित वर्ग की शिक्षा के साथ शैक्षिक सुविधाओं के समान विस्तार की मांग बढ़ी जिसमे लोकतांत्रिक देशों ने इस सिद्धान्त को स्वीकार किया और देश के प्रत्येक हिस्से में शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति को अपनाया और देश के शैक्षिक प्रशासन मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के नियोजन हेतु प्रवृत्त हुआ।

Ø शैक्षिक अवसरो की समानता का राष्ट्रीय व सामाजिक उद्देश्यों के रूप में प्रतिष्ठित होना–

दूरस्थ शिक्षा को उदभव प्रचार–प्रसार में इसके लचीलेपन एवं अध्येता केन्द्रित प्रकृति होने के साथ शैक्षिक अवसरों में समानता लाने का प्रयास ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। भौतिक, आर्थिक एवं सामाजिक वैयक्तिक परिस्थितियां शिक्षा में बाधक न बने अतः मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता को जन्म दिया।

ø स्व–निर्देशित एवं अध्येता केन्द्रित अनुदेशन की ओर झुकाव–

अनुदेशनात्मक उपागम अब अत्यधिक अध्येता केन्द्रित होता जा रहा है। मकाम्बस (2000) के अनुसार अब अनुदेशन अधिक अर्थपूर्ण, स्व निर्देशित, व्यस्त रखने वाला और अध्येता की ओर अधिक झुकाव रखने वाला होता जा रहा है। एक्कर्ट (2003) के अनुसार अब पुरातन युगीन सम्भाषण विधि से पढ़ाने वाले अनुदेशक के बजाय विधिक उपगामों को प्रयोग करते हुये अनुदेशक अधिक पंसद किये जाते है। रम्बल (2001) व मिलर (2001) के अनुसार दूरस्थ शिक्षा में भी अब उत्पादक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं बहुसंज्ञानात्मक उपागम का प्रयोग होने लगा है ये सभी उपागम कम्प्यूटर आधारित सम्प्रेषण के साथ अध्येता दायित्व को अधिक प्रश्रय देता है।

ø शैक्षणिक दायित्व के निर्धारण की ओर झुकाव–

वर्तमान में शिक्षा व्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या प्रशासको एवं शिक्षको के शैक्षणिक दायित्वों का निर्धारण न हो पाना है, जिसके कारण शैक्षिक गुणात्मकता नहीं उत्पन्न हो पा रही है। डी0एल्वा (2000) ने अपने अध्ययन से यह स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय प्रशासन शिक्षक छात्र नेता में से 80 प्रतिशत ने शैक्षणिक दायित्व निर्धारित करने की मांग की है, और दूरस्थ शिक्षा के प्रसार हेतु 80 प्रतिशत प्रतिक्रिया सकारात्मक दी गयी। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में इसका विकल्प इस रूप में है कि शैक्षणिक दायित्व का निर्धारण अप्रत्यक्ष है और अध्येता के विकास पर प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं डालता है, परन्तु ये संस्थान अब दायित्व निर्वहन पर विशेष जोर दे रहे है।

ø शिक्षा का मात्र पाठ्यक्रम पूर्ण करने से अधिक दक्षता उन्मुख होना–

गैलेधर (2003) ने इस तथ्य को अपने अध्ययन में उभारा कि शिक्षा में कुशलता पर भी ध्यान दिया जाने लगा है। वर्तमान उच्च शिक्षा अब केवल डिग्री देने और प्रवेश करने भर का ही कार्य कर पा रही है। इन दोनों के बीच में शिक्षण कहीं खो गया है। इस निराशा में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा ने अनेक उपयोगी एवं व्यावहारिक पाठ्यक्रमों का सृजन का संचालित कर अध्येताओं को अनेक विकल्प दिये है।

ø उच्च शिक्षा में बाह्य आय से संसाधन वृद्धि की लालसा –

हाकिन्स 2000 ने स्पष्ट किया कि विश्वविद्यालय परम्परागत रूप से स्वतंत्र, स्व–अस्तित्व व प्रतियोगितावादी होते है, जिससे इन्हें अपने संसाधनों को पूरित करना व अस्तित्व में बने रहने के लिये संघर्ष करना पड़ता है। लेकिन दूसरी ओर रूबिन (2003) के अनुसार मुक्त विश्वविद्यातयों ने अपनी प्रकृति के अनुसार अधिक सहयोगपूर्ण एवं समायोजित है और इस प्रकृति ने इनके विकास को बढ़ावा दिया इसे देखकर परम्परागत विश्वविद्यालय भी मुक्त विश्वविद्यालयों की तरह अपनी प्रकृति को बना रहे हैं। कार्नवेल (2000) डन (2000) चीनी (2002) ने अपने अध्ययन से यह सिद्ध किया कि अब अनेक शिक्षण संस्थायें दूरस्थ शिक्षा माध्यम की तरह अपनी तकनीकी एवं पाठ्यक्रमों को मिलकर उपयोग कर रहे हैं।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4– शैक्षिक दायित्वों का निर्धारण क्यों आवश्यक है?

....

5– मुक्त विश्वविद्यालय अपनी किस प्रकृति के कारण अपने संसाधन आसानी से जुटा लेते हैं ?

....

6– अध्येता केन्द्रित तथा स्वनिर्देशित अनुदेशन से आप क्या समझते हैं?

....

4.5 तकनीकी कारक

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार के कारण तकनीकी आधार भी है जो कि इस प्रकार से समझे जा सकते हैं।

Ø तकनीकी उपकरणों की उपलबधता एवं सर्वत्र व्याप्तता–

मुक्त एवं दूरस्थ को सबसे अधिक लोकप्रिय बनने में सहायक इसका तकनीकी उपयोग है। नेटवर्क कनेक्शन, कम्प्यूटर्स के अत्यधिक उपयोग ने दूरस्थ एवं मुक्त माध्यम की शिक्षा प्राप्त करना आसान बनाया है। ओबलिगंर (2001) के अनुसार उच्च शिक्षा में नई तकनीकी का प्रयोग सन् 2020 तक अनिवार्य हो जायेगा सभी को कम्प्यूटरीकृत शिक्षण कार्यक्रम व अन्तः क्रियात्मक टी0वी0 व्याख्यानों को परम्परागत व्याख्यान के साथ अपनाना पड़ेगा।

Ø इण्टरनेट का व्यापक प्रयोग –

मुरे (2003) के अनुसार 59 प्रतिशत शिक्षित बच्चे इण्टरनेट का प्रयोग करने में सक्षम 2000 से हो गये है। सेटॉन (2003) के अनुसार विश्व भर में 500 मिलियन लोग इण्टरनेट उपयोग करते हैं, और 2005 तक यह दोगुना हो जायेगा। इस प्रवृत्ति ने दूरस्थ शिक्षा को लोकप्रिय व आसान बना दिया है। सन् 2002 तक अमेरिका 83 प्रतिशत लोगों के पास अपने कम्पयूटर थे और 78 प्रतिशत बच्चे जो घर पर रहते थे वे इण्टरनेट प्रयोग करते थे। इसका प्रभाव दूरस्थ शिक्षा को लोकप्रियता पर सकारात्मक पड़ा।

Ø डिग्री स्तर पर तकनीकी प्रवाह की अनिवार्यता –

औद्योगीकरणेत्तर युग में तकनीकी अज्ञानता एवं दूरी एक प्रकार से अशिक्षा के दायरे में मानी जाती है। अतः तकनीकी प्रवाह ने दूरस्थ शिक्षा को सर्वसुलभ बनाया और लोगों में तकनीकी ज्ञान के प्रति रूझान मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु आवश्यक आधार बना। तकनीकी प्रयोग से व्यक्तिगत विकास के अतिरिक्त व्यावसायिक विकास को भी आधार एवं मजबूती मिलती है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

7– सेट्रान के अनुसार 2005 तक कितने लोग विश्व में कम्प्यूटर प्रयोग करने लगेंगे?

....

8– इण्टरनेट के प्रयोग से मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम के प्रति रूझान क्यो बढ़ा?

....

9– औद्योगीकरण के पश्चात् किसके विकास एवं प्रयोग ने लोगों का ध्यान खींचा?

....

4.6 आर्थिक कारक

विश्व के अनेक देशों समेत भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार के पीछे अनेक कारकों समेत आर्थिक कारक भी थे, जिनकी चर्चा हम आगे कर रहे हैं।

Ø दूरस्थ शिक्षा उच्च शिक्षा में आर्थिक संसाधक के रूप में प्रश्रय–

भारत समेंत अनेक देशों में उच्च शिक्षा को सरकार एक निश्चित स्तर में ही आर्थिक सहायता दे रही है। व्हाइट (2003) ने एक अध्ययन में बताया कि वाशिंगटन बेस्ट सेन्टर जो कि बजट एवं नियोजन हेतु कार्य करता है, आंकलन किया कि सम्पूर्ण राष्ट्र 50 राज्यों समेत घाटे में चल रहे हैं और यह अगले वर्ष बढ़ने की सम्भावना है, इसने विश्वविद्यालयों के समक्ष अपने संसाधन उत्पन्न करने का विकल्प रखा हमारे देश में भी परम्परागत विश्वविद्यालयों का संचालन कठिन कार्य होता जा रहा है, और दूरस्थ मुक्त विश्वविद्यालय लाभ की ओर अग्रसर हैं, क्योंकि इनके खर्च अन्य विश्वविद्यालयों से कम

प्रसार अधिक होता है।

Ø तकनीकी व संचार माध्यमों से शिक्षा सस्ती –

भारत समेत अन्य देश इस बात को अनुभव कर रहे हैं, कि तकनीकी व संचार माध्यम से शिक्षा प्रारम्भ में मंहगी पर अधिक अध्येता तक पहुँचने पर यह सस्ती हो जाती है। कोलोरेडी विभाग ने एक अध्ययन में स्पष्ट किया कि प्रति बालक व्यय मुक्त माध्यम एवं परम्परागत शिक्षण माध्यम से एक बराबर ही आता है, और शिक्षा में सबसे बड़ा खर्च कार्मिक वर्ग (शिक्षक एवं कर्मचारियों) को नियुक्ति पर होता है, और मुक्त विश्वविद्यालयों का यह खर्च काफी हद तक बचता है।

Ø जीवन प्रयन्त शिक्षा एक अनिवार्य एवं प्रतियोगी आवश्यकता के रूप में–

सेट्रॉन (2003) के अनुसार कुछ लोग अपना व्यवसाय प्रति दस वर्ष में बदलते हैं। डी आल्वा (2000) ने बताया कि 40 प्रतिशत कार्यरत लोग प्रतिवर्ष अपना व्यवसाय बदलते हैं, इसका अभिप्राय है कि लगातार शिक्षा व व्यवसाय में दक्षता लोगों को बेहतर पाने की ओर अग्रसर करती है। इसका अभिप्राय यह है कि अब लोग सतत् शिक्षा जारी रख लम्बे अर्से तक सुविधाओं सहित जीवन–यापन चाहते हैं ऐसे लोगों के लिये मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक बेहतर विकल्प के रूप में हैं। लोग इसका उपयोग कर अपनी सुविधनुसार लम्बे समय तक शिक्षा प्राप्त करते है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

10– सभी देशों के विश्वविद्यालयों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती क्या है?

....

11– तकनीकी व संचार माध्यमों से दूरस्थ शिक्षा को क्या लाभ मिला?

....

12– लोग प्रति वर्ष अपना व्यवसाय क्यों बदल पाते हैं?

....

4.7 दूर अधिगम की प्रवृत्ति–

दूरस्थ शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के पीछे इसकी स्वयं की प्रकृति एवं सुविधायें भी है जिसने इसके प्रचार–प्रसार में आधार दिया।

Ø दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में अधिक पात्यक्रम व डिग्रियों की उपलब्धता–

करिया (2003), पोन्ट (2003) ने अपने अध्ययन में बताया कि दूरस्थ अधिगम कार्यक्रम की वार्षिक आय 4.5 बिलियन डालर है, और 2005 तक यह 11 बिलियन डालर हे जायेगी। इण्टरनेशनल डाटा कारपोरेशन ने यह दावा किया कि आगामी वर्षों में दूरस्थ शिक्षा की वृद्धि दर 33 प्रतिशत हो जायेगी। फिन्कबस्टीन (2000) विशप (2003) डन (2000) के अनुसार आधे से अधिक परम्परागत विश्वविद्यालयों के कार्यक्रम आनलाइन हो जायेंगे। उपरोक्त सभी आंकड़े यह स्पष्ट कर रहे हैं कि दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम अपने विविध पाठ्यक्रमों एवं डिग्रियों को प्रदान करने के कारण लोकप्रिय हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों में प्रौढ़, युवा तथा परम्परागत शिक्षा के परिसर के विद्यार्थी भी सम्मिलित है जो कि विविध पाठ्यक्रमों में नामांकित है।

स्थानीय शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा के मध्य अन्तर का अभाव –

डन (2000) के अनुसार अधिकांशतः अनेक स्थानीय शिक्षण संस्थान उपयोगी पाठ्यक्रम संचालित कर दूरस्थ शिक्षा के ही भांति स्वरूप को विस्तृत एवं लचीला करते हुये तकनीकी प्रयोग पर बल देते है। रम्बल (2001) के अनुसार डिजिटल युग में अध्येयताओं को स्व–अध्ययन की ओर उन्मुख किया और वे परम्परागत कक्षाओं की अपेक्षा अधिकांश समय अपने ऊपर खर्च करते हैं। आन लाइन कोर्स करने वाले विद्यार्थियों की संख्या अत्यधिक है, और परम्परागत शिक्षा परिसर के भी विद्यार्थी नामांकित है और 74 प्रतिशत दूर शिक्षा संस्थान के बाहरी विद्यार्थियों को आकर्षित कर रहे है।

Ø वेब पर प्रभावशाली पाठ्यवस्तु प्रबंधन की बढ़ती सुविधा –

बेव ने विविध क्षेत्रों से सम्बंधित पाठ्यवस्तु का कुशल प्रबंधन किया है इससे विद्यार्थियों को आवश्यक नवीन पाठ्यवस्तु खोजने में आसानी हुई और इसने दूरस्थ शिक्षा माध्यम पर साकारात्मक प्रभाव डाला है। क्राफोर्ड (2003) के अनुसार बेव सुविधा ने नये ज्ञान के विविध आयाम खोल दिये है। वेब सुविधायें ने स्वतंत्र अध्ययन को बढ़ावा दिया है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

13–दूरस्थ शिक्षा एवं नियमित शिक्षा में अन्तर क्यों गिर रहा है ?

....

14–वेब सुविधाओं ने किस के प्रचार–प्रसार पर सकारात्मक असर डाला है ?

....

4.8 सारांश

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा वर्तमान समाज के मांग के अनुरूप शिक्षा है इसने शैक्षिक सुविधाओं के विस्तार के साथ इसे उपभोक्ता केन्द्रित बना दिया। नियमित शैक्षिक संस्थाओं के समक्ष लाभ के पैमाने व तरीके रख दिये। नियमित शिक्षा भी इसकी प्रकृति की अनेक तथ्यों को अपनाकर नम्य हो रही है। ऐसे अनेक कारक है,जिन्होनें दूरस्थ शिक्षा के प्रचार–प्रसार पर सकारात्मक असर डाला है। यह इकाई आपको रोचक एवं ज्ञानप्रद लगी होगी।

4.9 चर्चा के बिन्दु–

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा भविष्य की शिक्षा है और धीर–धीरे यह विश्व समाज की पहली पसन्द बन जायेगी। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के कारकों की चर्चा इस सन्दर्भ में कीजिये।

4.10 अभ्यास कार्य

1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को सबसे अधिक किन कारकों ने प्रभावित किया है? वर्णन कीजिये।

4.11 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर–

1. 16 प्रतिशत
2. सुविधा के अनुसार छोटे खण्डों में विभक्त उपयोगी पाठ्यक्रम।
3. 25 वर्ष से अधिक।
4. शैक्षिक दायित्वों के निर्धारण के बगैर शिक्षा की दशा सुधारी नहीं जा सकती है।
5. अधिक सहयोगपूर्ण, लचीले व समायोजन क्षमता के कारण।
6. जिसमें अध्येता को मुख्य केन्द्रित कर स्व निर्देशन से अधिगम का अवसर दिया जाये।
7. 1000 मिलियन लोग
8. इण्टरनेट से विषयवस्तु को प्राप्त करना आसान हो गया।
9. तकनीकी विकास एवं प्रयोग ने।
10. अपने आर्थिक संसाधन उत्पन्न करने की।

11. विषय वस्तु के सम्प्रेषण व शिक्षण को आसान बनाया तथा सूचना भेजना सरल।
12. लगातार व्यावसायिक एवं शैक्षिक उत्थान करने के कारण।
13. नियमित शिक्षा द्वारा अनेक पाठ्यक्रमों का संचालन व तकनीकी के अधिक प्रयोग पर बल देने के कारण।
14. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पर।

4.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें–

Keegan D. (1990) : Foundations of Distance Education, London : Routledge..

Bates, T. (1995) : Tecnology, Open Learning and Distance Education London: Routledge.

Dutt, R. (1985) : Distance Educationin India, New Delhi : Open School

गुप्ता एस0पी0 (2007) : दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

Goel A. and Goel S.L. (2000) : Distance Education in 21st century: New Delhi, Deep & Deep Publication Pvt. Ltd.

Kegan, J. (1983): On defining distance education in Sewart Keegan and Holmberg Distance Education International Perspeclive, London: Croom Helm, 1983

AIU & IGNOU (1988): Studies in Distance Education AIU, New Delhi.

MAED-107

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

॥ सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् ॥

Uttar Pradesh Rajarshi Tandon Open University

खण्ड

2

छात्र सहायता सेवायें

इकाई- 5	77
स्व अधिगम सामग्री	
इकाई- 6	96
परामर्श सत्र	
इकाई- 7	113
अधिन्यास	
इकाई- 8	126
सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी	

परामर्श-समिति

प्रो0 नागेश्वर राव	**कुलपति - अध्यक्ष**
डॉ0 हरीशचन्द्र जायसवाल	वरिष्ठ परामर्शदाता - कार्यक्रम संयोजक
श्री एम0 एल0 कनौजिया	कुलसचिव - सचिव

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 एस0पी0 गुप्ता	निदेशक, शिक्षा विद्या शाखा, उ0प्र0रा0ट0मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 राम शकल पाण्डेय	पूर्व आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 हरिकेश सिंह	आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

परिमापक

प्रो0 पी0 के0 साहू	विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक

डॉ0 धनंजय यादव	वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 सुषमा पाण्डेय	**वरिष्ठ** प्रवक्ता, शिक्षाशास्त्र विभाग दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय **गोरखपुर**

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की ओर से विनय कुमार, कुलसचिव द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित वर्ष - 2023.

मुद्रक - के0 सी0 प्रिंटिंग एण्ड एलाइड वर्क्स, पंचवटी, मथुरा - 281003.

MAED - 107

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड 1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और विषय क्षेत्र

इकाई 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रारूप एवं आवश्यकता

इकाई 2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

इकाई 3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का नियोजन

इकाई 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख कारक

खण्ड 2. छात्र सहायता सेवायें

इकाई 5 स्व अधिगम सामग्री

इकाई 6 अधिन्यास

इकाई 7 परामर्श सत्र

इकाई 8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

खण्ड 3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संगठनात्मक स्वरूप

इकाई 9 दूरस्थ शिक्षा परिषद

इकाई 10 एन0आई0ओ0एस0

इकाई 11 मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई 12 दूर अध्येता

खण्ड 4. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन

इकाई 13 दूर शिक्षक के समक्ष चुनौतियां

इकाई 14 दूर शिक्षा की समस्यायें

इकाई 15 दूर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया

इकाई 16 दूर शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान

दूरस्थ शिक्षा की एक नवीन एवं वैकल्पिक प्रणाली है। दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों एक-दूसरे से दूर होते हैं तथा शिक्षण अधिगम क्रियायें द्विमार्गी स्मप्रेषण प्रक्रिया के द्वारा सम्पन्न होती है। दूर अध्यापन हेतु विस्तृत रूप में अधिगम सामग्री को तैयार कियाय जाता है स्वअधिगम सामग्री को परिसर तथा परिसर बाह्य दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के लिये अभिकथित किया जाता है। इकाई-5 में स्व अध्ययन सामग्री जो अच्छी अन्तःक्रिया का अवसर प्रदान करती है उसे मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के लिये आवश्यक बताया गया है। इकाई-6 में परामर्श सत्र पर चर्चा की गई है। दूरस्थ शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता अध्यापक अध्येता के मध्य दूरी है और यह दूरी परम्परागत शिक्षा में नहीं होती और यह उसकी बड़ी मजबूती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में इस दूरी को कम करने का पूरा प्रयास किया जाता है और इसके लिये कुछ परामर्श सत्र के रूप में सहायता कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं।

इकाई-7 में अधिन्यास की अवधारणा, महत्व उददेश्य एवं उसके परिवीक्षण के विषय में चर्चा की है। इसके अतिरिक्त अध्यापक द्वारा दी जाने वाली टिप्पणियों के विषय में भी चर्चा की गई है। अध्यापक को टिप्पणी कैसे देनी चाहिए इसके बारे में भी बताया गया है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के कई जीवन्त पक्षों में से एक अधिन्यास है। अधिन्यास का महत्व एवं उपयोगिता परामर्श सत्र की ही भाँति है। यह दूर शिक्षा में शिक्षक तथा छात्र को मध्य शैक्षिक संवाद तथा सम्प्रेषण को जन्म देता है। अधिन्यास दूर शिक्षा का व्यवहारिक पक्ष है और इसे अंग्रेजी में असाइन्मेन्ट कहते हैं यह द्विमार्गी सम्प्रेषण का आधार है। यह दूर अध्येताओं के अधिगम को सरल बनाता है। अधिन्यास पर लिखी गयी टिप्पणियों के माध्यम से शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिये अध्येता को टिप्पणी को पढ़ने हेतु अभिप्रेरित करना चाहिए।

इकाई-8 संचार माध्यम तथा प्रौद्योगिकी की दूरस्थ शिक्षा में भूमिका से सम्बन्धित है। वास्तव में इन माध्यमों एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग के बिना दूर शिक्षा प्राप्त करना अति कठिन है।कम्प्यूटर को शिक्षा तकनीकी प्रथम या हार्डवेयर आयाम में सम्मिलित किया जाता है यह स्वतः अनुदेशनात्मक पद्धति का एक उपकरण है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत अनुदेशन के लिए किया जाता है मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा सशक्त छात्र सहायता सेवाओं से प्रभावशाली हो जाती है।

इकाई–5 स्व–अधिगम सामग्री

संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्‌देश्य

5.3 स्वअधिगम सामग्री की संकल्पना

5.4 स्व अधिगम सामग्री का स्वरूप

5.5 दूरस्थ शिक्षा हेतु स्व–अधिगम सामग्री विकास के आवश्यक तत्व

5.6 स्व अधिगम सामग्री की आवश्यकता

5.7 स्व अधिगम सामग्री का अभिकल्पन

5.8 स्व अधिगम सामग्री के अभिकल्पन की प्रक्रिया

5.9 अधिगम एवं सम्प्रेषण सिद्धान्तों का पाठ्‌यक्रम प्रारुपण में प्रयोग

5.10 सारांश

5.11 अभ्यास कार्य

5.12 चर्चा के बिन्दु

5.13 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

दूरस्थ शिक्षा की एक नवीन एवं वैकल्पिक प्रणाली है। इस प्रणाली की सफलता तथा प्रभाविता व्यापक रूप से मुद्रित तथा अमुद्रित माध्यमों में अधिगम सामग्री की गुणता पर आधारित होती है। दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों एक–दूसरे से दूर होते हैं, तथा शिक्षण अधिगम क्रियायें द्विमार्गी सम्प्रेषण प्रक्रिया के द्वारा सम्पन्न होती है। दूरस्थ शिक्षण में मुद्रित एवं इलेक्ट्रानिक माध्यमों से ही सम्पूर्ण सम्प्रेषण प्रक्रिया सम्पन्न होती है। दूर अध्यापन हेतु विस्तृत रूप में अधिगम सामग्री को तैयार किया जाता है, यह स्वअध्ययन सामग्री कहलाती है। स्वअधिगम सामग्री को परिसर तथा परिसर वाह्य दोनों प्रकार के विद्यार्थियों के लिये अभिकल्पित किया जाता है। इस इकाई में हम स्वअधिगम सामग्री के विषय में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

5.2 उद्‌देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- स्व–अधिगम सामग्री की विशेषतायें और प्रकृति का वर्णन कर सकेंगे।
- स्व–अधिगम सामग्री की आवश्यकता की व्याख्या कर सकेंगे।
- स्व–अधिगम सामग्री के लेखन की सोपानों का विवेचन कर सकेंगे।

5.3 स्व–अधिगम सामग्री की संकल्पना

स्व–अधिगम साग्रमी दूरस्थ शिक्षा की मूलाधार है। इसे स्व–अनुदेशनात्मक, स्व–अध्ययन सामग्री एवं स्व–शिक्षण सामग्री के रूप में पुकारा जाता है। सभी नामों के मूल में एक ही तथ्य है अपने आप पढ़ने–सीखने वाली सामग्री अर्थात् ऐसी पाठ्यवस्तु सामग्री जिसे अध्येता स्वतंत्रत रूप से अध्ययन करके अपनी गति अपनी रूचि से सीखता है, और स्वयं अपना शिक्षण करता है। यह विशेष रूप से अभिकल्पित मुद्रित पाठ्यवस्तु दूर शिक्षा में एक लोकप्रिय कार्यनीति है। मुद्रित पाठ्यों को स्वशिक्षण सामग्री के अभिकल्पन के सिद्धान्तों के आधार पर विकसित किया जाता है। इसका मुख्य उद्‌देश्य उन विद्यार्थियों को सहायता करना होता है जो अपनी परिस्थितियों में स्वंत्रत रूप से सीखते हैं। दूरस्थ शिक्षा माध्यम में यह शिक्षण सामग्री के रूप में हैं, इसका उत्पादन व्यापक स्तर पर होता है। प्रभावी स्व–अधिगम सामग्री अध्येताओं में अधिगम के प्रति रूचि जागृत करती है, और बनाये रखती है। किसी लेख तथा पुस्तक के विपरीत स्व–अधिगम सामग्री का उद्‌देश्य विवेकपूर्ण प्रस्तुतीकरण नहीं होता। इस प्रकार स्व–अधिगम सामग्री पहचाने गये लक्ष्य वर्गों को ज्ञानात्मक अभिवृत्तियों और कौशलों के अर्जन के योग्य बनाने के प्रयोजन से विशेष रूप से अभिकल्पित की जाती है। दूर शिक्षा के अध्येता अधिकत दूर से ही सीखते हैं, वे अपने घर अथवा कार्यस्थल से अध्यापक एवं अपने सहपाठियों से बराबर अन्योन्यक्रिया नहीं कर पाते है। अतः दूर शिक्षा में स्व–अधिगम सामग्री में अध्यापक अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षण करता है और अध्येता के साथ अप्रत्यक्ष वार्तालाप करते हुये अधिगम की परिस्थितियां उत्पन्न करता है। दूरस्थ अध्ययन में स्व–अधिगम सामग्री को प्रदान करने के निम्न उद्‌देश्यों को हम उल्लेखित कर सकते हैं।

- दूर अध्येताओं को पाठ्यक्रम विशेष की जिसमें वे नामांकित है, उसकी रूपरेखा बताना ।
- दूर अध्येताओं को आवश्यक पाठ्यक्रम के स्वरूप से परिचित कराते हुये अधि ागम हेतु रूचि जागृत करना।

- दूर अध्येताओं को पाठ्यवस्तु के आकार से परिचित कराना।
- दूर अध्येताओं की पाठ्यक्रम विशेष में आवश्यक पाठ्यवस्तु एकत्र करने हेतु मार्गदर्शन प्रदान करना।
- पूर्व अध्ययन कर परामर्श कक्षाओं में अपनी समस्याओं को समाधान हेतु उठाने में दूर अध्येयताओं को अधार प्रदान करना।
- अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक एवं शिक्षार्थी की अन्तःक्रिया को प्रत्यक्ष करने का प्रयास करना।
- अध्येता को, स्व–अध्ययन हेतु अभिप्रेरित करना और ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न करना जिसमें वह अपनी गति से सीख सके।
- दूर–अध्येताओं को अध्ययन केन्द्रों से जोड़ना अर्थात् समस्याओं को सुलझाने व परामर्श कक्षाओं में उपस्थिति का आधार स्व–अधिगम सामग्री बनती है।
- दूर अध्येताओं को दत्त कार्य एवं प्रोजेक्ट तथा अन्य व्यावहारिक क्रियाकलापों हेतु आधार प्रदान करना।
- स्व अध्ययन हेतु आवश्यक दिशा निर्देश व अभिप्रेरण प्रदान करना।
- दूर अध्येताओं में पाठ्यक्रम विशेष से सम्बंधित अन्तर्दृष्टि एवं अवबोध उत्पन्न करना।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

1. मुक्त एवं दूरस्थ अध्ययन में प्रदत्त सामग्री को स्व–अधिगम सामग्री क्यों कहा जाता है?

....

2. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में स्व–अधिगम सामग्री को मूलाधार क्यों माना जाता है?

....

5.4 स्व–अधिगम सामग्री का स्वरूप

स्व–अधिगम सामग्री को प्रदान किये जाने हेतु निर्धारित उद्देश्यों के विषय में आप विस्तार से पढ़ चुके है, अब यह आवश्यक है कि स्व–अधिगम सामग्री का स्वरूप एवं प्रकृति की चर्चा की जाये। इसका स्वरूष एवं विशेषतायें निम्न है–

• स्वतः अधिगम सामग्री का आधार सम्प्रेषण सिद्धान्त–

सम्पूर्ण विश्व में दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा प्रणाली एक नवीन सामाजिक, राजनैतिक चेतना के परिणाम स्वरूप किया गया है। यह स्वतंत्र प्रेस एवं सामाजिक दायित्व के सिद्धान्त प्रयोग द्वारा इन उद्‌देश्यों को पूर्ण करने वाली एक सशक्त प्रणाली सिद्ध हो सकती है। अधिगम सामग्री में कुशल सम्प्रेषण प्रक्रिया का प्रयोग करते हुये सूचनाओं की प्रासंगिकता उपयुक्त चयन, सम्प्रेषण हेतु उपयुक्त संकेतों का निर्माण एवं उनकी अर्थापन क्षमता तथा संग्राहक से प्राप्त पृष्ठ पोषण को ध्यान में रखा जाता है।

• स्व–अधिगम सामग्री के निर्माण का आधार अधिगम के सिद्धान्त–

दूरस्थ शिक्षा में शिक्षक–शिक्षार्थी के मध्य अन्तः क्रिया मुद्रित पाठ्य सामग्री एवं इलेक्ट्रानिक उपकरणों के माध्यम से सम्पन्न होता है। इसमे थार्नाडाइक द्वारा प्रतिपादित प्रभाव का नियम, तत्प२ता का नियम एवं अभ्यास के नियम सम्मिलित है। अधिगम के व्यवहारवादी दृष्टिकोण का प्रयोग कर तीन चीजों पर ध्यान देने का प्रयास किया जाता है।

- परिणाम का ज्ञान अथवा पुष्टि तथा सकारात्मक पुनर्बलन का प्रयोग।
- पुनर्बल प्रदान करने में कम से कम विलम्ब।
- जटिल व्यवहारों की व्याख्या हेतु छोटे–छोटे घटक/उपघटक के रूप में अधिगम विभाजन।

व्यवहारवादी उपागम के पुनर्बलन सिद्धान्त पर आधारित स्व–अधिगम सामग्री के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्किनर के अनुसार पुनर्बलन अधिगम को आगे बढ़ाने में सहायक होता है।

• वास्तविक कक्षा शिक्षण हेतु परिस्थितियों का निर्माण–

सम्पूर्ण स्व–अधिगम सामग्री इस रूप में प्रस्तुत की जाती है जैसे कि वास्तविक कक्षा शिक्षण में परिस्थितियां उत्पन्न होती हे। वास्तविक कक्षा शिक्षण में अध्यापक एवं अध्येता के मध्य की सम्पूर्ण प्रतिक्रियायें अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न की जाती है। सभी इकाइयां अपने आप में परिपूर्ण होती है। प्रस्तावना के साथ प्रारम्भ कर अध्येता को सीखने के लिये प्रेरित कर वास्तविक विषय वस्तु का प्रारम्भ अवधारणा या संकल्पना से की जाती है। विषय को छोटे खण्डो में प्रस्तुत कर बोध प्रश्नों को रखकर प्राप्त ज्ञान को मापा जाता है, और फिर अध्येता को आगे बढ़ने हेतु अभिप्रेरित किया जाता है। सम्पूर्ण विषय सामग्री में अध्यापक अप्रत्यक्ष रूप से अध्येता से अन्तःक्रिया करता रहता है।

रोचक एवं लचीला

स्व–आधेगम सामग्री को रोचक एवं अध्येता की मनोवैज्ञानिक आवश्यकता के अनुसार संग्रहित एवं रचित होती है। स्व–अधिगम सामग्री में सभी तथ्यों को व्यवस्थित करके रखते हुये सम्पूर्ण विषय वस्तु को सरलतम तरीके से रखा जाता है। इस बात पर विशेष ध्यान रखा जाता है, कि विषय सामग्री को सरल से कठिन की ओर प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष की ओर एवं ज्ञात से अज्ञात की ओर प्रस्तुत किया जाता है। अध्येता को पारिभाषिक शब्दावली, अनुभाग शीर्षक एवं उनके उपशीर्षक, रेखाचित्र, उदाहरण एवं व्याख्या कर विषय वस्तु को ग्रहण करने में सहायक होते है।

व्यावहारिकता

स्व–अधिगम सामग्री का स्वरूप व्यावहारिक होता है क्योंकि इसमें उसके लिये बोध प्रश्न एवं अभ्यास कार्य दिये जाते हैं, सम्पूर्ण विषय वस्तु अब तक जुड़ा रहता है। स्व–अधिगम सामग्री में नवीन एवं आवश्यक तथ्यों को विषय सामग्री में जोड़ा जाता है, जिससे कि अध्येता हेतु वह उपयोगी हो और वह निर्धारित स्तर तक अधिगम कर सके।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

3– स्व अधिगम सामग्री को व्यावहारिक कैसे बनाया जाता है ?

....

4– स्व–अधिगम सामग्री के सिद्धान्त क्या क्या हैं?

....

5– स्व–अधिगम सामग्री अध्ययन द्वारा अध्येता को सक्रिय कैसे रखा जाता है?

....

6– स्व–अधिगम सामग्री में कक्षा शिक्षण की वास्तविक परिस्थितियाँ कैसे उत्पन्न की जाती है?

....

2.3 दूरस्थ शिक्षा हेतु स्व–अधिगम सामग्री विकास के आवश्यक तत्व

शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है तथा पाठ्यक्रम इन उद्देश्यों की पूर्ति का सबसे महत्वपूर्ण साधन है। दूरस्थ शिक्षा में भी उद्देश्यों की प्राप्ति का प्रमुख साधन/आधार पाठ्यक्रम ही होता है। दूरस्थ शिक्षा में पाठ्यक्रम का अर्थ अधिक व्यापक होता है तथा

इसके अन्तर्गत शिक्षण अधिगम के साथ–साथ अध्ययन के अन्य सभी तत्वों को भी सम्मिलित किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा में स्व–अधिगम सामग्री का प्रारूपण एक जटिल एवं लम्बी प्रक्रिया हे। अतः पाठ्यक्रम विकास ने परम्परागत शिक्षा के सभी प्रमुख बिन्दुओं को समाहित करने के साथ दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकतओं एवं लक्ष्यों को भी ध्यान में रखना होता है। इसी प्रकार दूस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रम में अग्रलिखित तत्वों को सम्मिलित किया जाता है–

अधिगम के उद्देश्य का प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या

हम पूर्व में अध्यायों में जान चुके हैं कि अधिगम के तीन प्रमुख पक्षों– ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक होते है। पाठ्यवस्तु में व्यापकता के कारण तीनों पक्षों को समाहित करने का प्रयास किया जाता है। इसमें अधिगम के उद्देश्यों का प्रस्तुतीकरण करते हुये व्याख्या करने का प्रयास किया जाता है।

अध्ययन सामग्री के माध्यम से संवाद

परम्परागत शिक्षा में वास्तविक कक्षा शिक्षण के दौरान अध्यापक एवं अध्येता के मध्य सक्रिय सम्प्रेषण हो जाता है, जबकि दूरस्थ शिक्षा में संवादशीलता भी स्व–अधिगम सामग्री के माध्यम से ही स्थापित की जाती है। इसके लिये पाठ्य सामग्री में अन्तः क्रियात्मकता की प्रवृत्ति एवं लय से युक्त होती है। अथार्त् सामग्री प्रस्तुतीकरण में वार्तालाप शैली का पुट होना चाहिये। पाठ्यलेखक को प्रश्नों एवं क्रियाओं को समाविष्ट करना होता है। इसके अतिरिक्त गृहकार्य पर शिक्षण टिप्पणियां श्रव्य–दृश्य माध्यमों से शिक्षक की आवाज एवं प्रदर्शन भी अध्यापक–अध्येता की अन्तः क्रिया को सम्भव बनाते हैं।

व्यक्तिगत जुड़ाव को महत्व

सम्पूर्ण स्व–अधिगम सामग्री तुम या आपके द्वारा अध्येता को सम्बोधित किये जाते हैं, इससे अध्येता अध्यापक से जुड़ाव का अनुभव करता है, और इसे वह अपना महत्व भी समझाता है। इससे अध्येता का व्यक्तिगत विकास होता है।

प्रत्यक्ष अन्तः क्रिया हेतु प्रावधान

दूरस्थ शिक्षा में भी एक निश्चित अवधि अथवा सुविधाजनक समय पर आमने–सामने की अन्तःक्रिया हेतु अध्यापक एवं अध्येता को अवसर दिया जाता है। विज्ञान एवं अन्य प्रयोगात्मक विषय इसके अतिरिक्त व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में भी सम्पर्क कार्यक्रमों के आयोजन में प्रत्यक्ष सम्पर्क पर अत्यधिक बल दिया जाता है।

अध्ययन कौशलों के विकास पर केन्द्र बिन्दु

दूरस्थ शिक्षा में पाठ्यक्रम पूर्णतया स्व–अध्ययन पर आधारित होता है, अतः अध्येताओं को इसके लिये तैयार करने का कार्य भी अनुदेशनात्मक सामग्री के माध्यम से करना

पड़ता है, और स्व–अध्ययन के विविध कौशलों की उत्पत्ति एवं विकास हेतु आवश्यक संकेत एवं निर्देशन दिये जाने की आवश्यकता होती है, और पाठ्यक्रम प्रारूपण में इसका ध्यान रखा जाता है।

अध्येता की प्रकृति एवं आवश्यकता

दूरस्थ शिक्षा अध्येता उन्मुक्त होती है अतः पाठ्यक्रम निर्धारण में भी अध्येता की प्रकृति एवं आवश्यकता को केन्द्र बिन्दु बनाकर किया जाता है, उसकी आयु योग्यता, अनुभव एवं आकांक्षा स्तर में पर्याप्त भिन्नता हो सकती है। इसके अतिरिक्त दूर अध्येता विभिन्न क्षेत्रों व विविध शिक्षण संस्थाओं के पूर्व विद्यार्थी होते हैं, और उनके अधिगम की आदतों के अतिरिक्त प्रकृति एवं उपलब्धि में भी र्प्याप्त अन्तर होता है, इस हेतु दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में लगातार शोध निष्कार्षों का सहारा लिया जाता है।

राष्ट्रीय एवं सामाजिक लक्ष्यों का समाहित किया जाना

सभी स्तर की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य, व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास होता है और शिक्षा के द्वारा समाज व्यक्ति व राष्ट्र की उन्नति की संकल्पना को पूरा करना है। ठीक इसी प्रकार से मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में भी पाठ्यक्रम विकास में इन तथ्यों को समाहित किया जाता है, और इस रूप में तैयार किया जाता है कि वह समाजोपयोगी एवं राष्ट्रोपयोगी मानव संसाधन तैयार करे।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

7– स्व–अधिगम सामग्री के विकास में अध्ययन कौशलों के विकास को मुख्य केन्द्र क्यों माना जाता है?

....

8– स्व–अधिगम सामग्री में वार्तालाप शैली क्यों उत्पन्न की जाती है?

....

5.6 स्व–अधिगम सामग्री की आवश्यकता

दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का मुख्य स्वरूप दूर अध्येता का दूर शिक्षा संस्थान से दूरी है। इससे अध्येता पाठ्यक्रम के स्वरूप से लेकर शिक्षण तक निराश्रित रहता है। उसे न तो अध्यापक का निर्देशन प्राप्त होता है न ही सहपाठियों का मार्गदर्शन। इसीलिये स्व–अधिगम सामग्री इस कमी को ध्यान में रखकर ऐसे संकल्पित की जाती

है, कि वह स्वयं में पूर्ण पर्याप्त, शैक्षणिक, स्पष्ट, निर्देशित, आंकलन करने योग्य तथा सहपाठी की भांति होती है। दूर अध्येता को सहारा देने के साथ अधिगम व अध्ययन हेतु मार्गदर्शन देती है। इसके साथ ही दूर अध्येता के अधिगम को सुलभ बना देती है, और बाह्य सहायता को कम कर देती है।

स्व–अधिगम सामग्री दूर अध्येता को पाठ्यक्रम विशेष में क्या और कितना पढ़ना है, और कहां तक जानना आवश्यक है यह स्पष्ट करती है। यह दूर अध्येताओं के समक्ष अधिगम की परिस्थितयां उत्पन्न कर देती है, जिसमें विद्यार्थी सीखने के लिये विवश हो जाता है। इनका स्वरूप इस प्रकार से निर्मित किया जाता है कि वह ऐसा प्रतीत होता है कि अध्यापक को अप्रत्यक्ष रूप से उपस्थित कर देता है, और अध्येता को ऐसा प्रतीत होता है जैसे कि अप्रत्यक्ष रूप से कोई उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर रहा हो, उन्हें निर्देश दे रहा है।

स्व–अधिगम सामग्री में अध्येता को अपनी गति से अधिगम की सुविधा के साथ–साथ अपने अधिगम के आंकलन की भी सुविधा दी जाती है, इसके अतिरिक्त सम्पूर्ण शिक्षण सामग्री अध्यापक अध्येता की अप्रत्यक्ष वार्तालाप को प्रकट करती है। स्व–अधिगम सामग्री पूर्णतया अध्येता उन्मुख होती है, इसीलिये यह मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर अभिकल्पित किया जाता है।

स्व–अधिगम सामग्री का अभिकल्पन

स्व–अधिगम सामग्री की अभिकल्पना करने तथा उसका विकास करने के लिये उसकी मुख्य विशेषताओं का बोध अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त स्व–अधिगम सामग्री के लेखकों एवं अभिकल्पकों की पूर्वाप्रेक्षाओं का ज्ञान भी आवश्यक है। आइये हम इन पर नीचे चर्चा करें।

स्व–अधिगम सामग्री की मुख्य विशेषतायें–

स्व–अधिगम सामग्री के कुछ विशेष अभिलक्षण होते हैं। यद्यपि स्व–अधिगम सामग्री की ये विशेषतायें, उद्देश्यों, प्रयोजन और प्रस्तुतीकरण की शैली के आधार पर थोड़ा बहुत भिन्न हो सकती है, तथापि स्व–अधिगम सामग्री की कुछ स्थायी विशेषतायें हैं। आइये हम नीचे इन विशेषताओं पर विचार करें।

स्व–अधिगम सामग्री को यद्यपि यह नाम दिया जाता है, तथापि उनका ध्यान केन्द्र अध्यापन अथवा शिक्षण की अपेक्षा अधिगम पर अधिक होता है। ये अलग–अलग शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं पर आधारित है, न कि अध्यापक तथा मुक्त अधिगम संस्थाओं की रूचियों पर। ये विद्यार्थियों को अपने अधिगम पर यथासंभव अधिक से अधि

ाक नियंत्रण प्रदान करती है। इसीलिये आजकल स्व–अधिगम सामग्री को स्व–अधिगम सामग्री कहा जाता है। स्व–अधिगम सामग्री के कुछ निश्चित अभिलक्षण हैं। इनमें से महत्वपूर्ण निम्नलिखित है–

स्व–व्याख्यात्मक–

स्व–अधिगम सामग्री इस अर्थ में स्व–व्याख्यात्मक होती है कि विद्यार्थी अधिगम सामग्री के द्वारा अध्ययन कर सकते हैं, और विषयवस्तु को बिना किसी प्रकार की अधिक बाह्य सहायता/समर्थन के आसानी से समझ सकते हैं। इसलिये, ये सामग्री विषयवस्तु, प्रस्तुतीकरण और भाषा की दृष्टि से किसी भी अस्पष्टता से मुक्त होनी चाहिये। विषयवस्तु तर्कसंगत रूप से व्यवस्थित होनी चाहिये, और प्रस्तुतीकरण सरल और प्रभावी होना चाहिये। प्रत्येक वस्तु इस प्रकार स्पष्ट होनी चाहिये कि अध्येता को सीखने और ज्ञान की वृद्धि करने में सहायक हो।

स्व–पूर्ण

स्व–अधिगम सामग्री स्वयं में पूर्ण अथवा स्वयं में पर्याप्त होनी चाहिये। विद्यार्थी के लिये पाठ्यक्रम उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये अपेक्षित समस्त आवश्यक विषयवस्तु स्व–अधिगम सामग्री में सम्मिलित करनी चाहिये। विद्यार्थी को अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये अतिरिक्त अध्ययन सामग्री की आवश्यकता नहीं होनी चाहिये, क्योंकि अतिरिक्त सामग्री प्राप्त करने में समस्यायें आती हैं। साथ ही स्व–अधिगम सामग्री अत्यधिक विषयवस्तु अथवा अधिगम कार्य से अतिभारित नहीं होनी चाहिये कि अध्येता उससे डर ही जाय।

स्व–निर्देशित–

एक प्रभावी अध्यापक के महत्वपूर्ण प्रकार्यों में से एक विद्यार्थियों को आवश्यक ज्ञान, कौशल तथा अभिवृत्तियों को स्वयं अर्जन के लिये विद्यार्थियों को निर्देश दे। इसी प्रकार शिक्षार्थियों को स्व–अधिगम प्रक्रिया की प्रत्येक अवस्था पर आवश्यक मार्गदर्शन, संकेत और सुझाव प्रदान करके स्व–अधिगम शिक्षा एक प्रभावी अध्यापक का कार्य सम्पादित करती है। विषयवस्तु को तर्कसंगत अनुक्रम में प्रस्तुत करके, विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार अधिगम संकल्पनाओं की व्याख्या करके उचित स्व–अधिगम कार्यकलाप प्रदान करके और विषयवस्तु को समझने में सरल बनाने के लिये चित्रोदाहरण प्रस्तुत करके अधिगम को दिशा दी जाती है।

स्व–अभिप्रेरक

अभिप्रेरण प्रभावी अधिगम की पूर्व आवश्यकता है। स्व–अधिगम सामग्री में विद्यार्थियों में

रूचि और अभिप्रेरणा उत्पन्न करने और बनाये रखने की क्षमता होनी चाहिये। विषयवस्तु को जिज्ञासात्मक होना चाहिये, समस्यायें उठानी चाहिये और ज्ञान का सम्बंध विद्यार्थियों की परिचित परिस्थितियों से स्थापित करना चाहिये ताकि विद्यार्थी अभिप्रेरित अनुभव करे और उनका ज्ञान दृढ़ हो जाये। इस प्रकार का अभिप्रेरण और प्रबलीकरण अधिगम की प्रत्येक अवस्था पर देना चाहिये।

स्व–अधिगम

स्व–अधिगम सामग्री कार्यक्रमबद्ध शिक्षण के सिद्धान्तों पर आधारित होती है। कार्यक्रम शिक्षण के अभिलक्षण जैसे कि उद्‌देश्यों का विनिर्देशन, विषयवस्तु को छोटे (परन्तु प्रबंधनीय) चरणों में बांटना, अधिगम अनुभवों का अनुक्रमण करना, प्रतिपुष्टि प्रदान करना आदि को स्व–अधिगम सामग्री में सम्मिलित किया जाता है। इस प्रकार स्व–अधि ागम सामग्री की ये विशेषतायें विद्यार्थियों को स्वंतत्र रूप से सिखाती है। विद्यार्थी अपनी स्वयं की अधिगम कार्यनीतियों को बना लेते हैं, और अपने आप ही सीखते हैं।

स्व–मूल्यांकन

स्व–अधिगम सामग्री विद्यार्थियों को इष्टतम अधिगम को सुनिश्चित करने के लिये, उचित प्रतिपुष्टि प्रदान करते हैं। वे विद्यार्थियों को यह भी जानकारी देते हैं कि क्या वे ठीक दिशा में प्रगति कर रहे हैं अथवा नहीं। स्व–जॉच अभ्यास, मूल पाठ में प्रश्न, कार्यकलाप और अभ्यास के दूसरे प्रकार अध्येताओं को उनकी प्रगति के विषय में बहुअपेक्षित प्रतिपुष्टि देते हैं। यहां यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रगति से सम्बंधित प्रतिपुष्टि विद्यार्थियों को एक अधिगम बिन्दु से दूसरे अधिगम बिन्दु तक सीखने और आगे बढ़ने के लिये प्रबलित और अभिप्रेरित करता है। दूसरे शब्दों में, परिणाम का ज्ञान अध्येताओं को आगे सीखने के लिये सकारात्मक प्रबलन प्रदान करता है।

उपर्युक्त विशेषताओं के साथ स्व–अधिगम सामग्री के विकास के लिये इस बात की भी आवश्यकता है कि विशिष्ट ज्ञान, कौशलो और सक्षमताओं वाले लोगों को सम्मिलित किया जाये। इसका यह तात्पर्य है कि दूरस्थ शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि उनमें प्रभावी स्व–अधिगम सामग्री के विकास के लिये कुछ निश्चित विशेषताएं हों।

पाठ्‌यक्रम लेखकों अपेक्षाऍं

दूरस्थ अध्येताओं के लिये अधिगम सामग्री का विकास करने के काम में लगे हुये अध्यापकों में विशिष्ट ज्ञान, कौशलों और सक्षमताओं की अपेक्षा की जाती है। दूरस्थ शिक्षा अध्येताओं के लिये स्व–अधिगम सामग्री तैयार करने वाले पाठ्‌यक्रम लेखकों में निम्नांकित मुख्य पूर्वापेक्षाये होनी चाहिये।

प्रणाली की सुविज्ञता

पाठ्यक्रम लेखकों को सम्बंधित दूर शिक्षा संस्था की शिक्षण प्रणाली से पूरी तरह परिचित होना चाहिये। उन्हें पद्धति के विद्यार्थियों की रूपरेखा और अनुसरण किये जा रहे माध्यम उपागम से भी परिचित होना चाहिये।

लक्ष्य वर्ग की सुविज्ञता

दूर शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी विभिन्न पृष्ठभूमियों, शैक्षिक योग्यताओं, अनुभव, सामाजिक आर्थिक स्तरों और आयु आदि से आते हैं। वे दूर शिक्षा पाठ्यक्रम में विभिन्न भाषात्मक योग्यताओं, सीखने की सामर्थ्य, अध्ययन आदतों, पूर्व आवश्यक ज्ञान ग्राम–शहरों आदि से आकर भाग लेते हैं। अधिगम सामग्रियों के विकास में लगे पाठ्यक्रम लेखकों को दूर शिक्षा के माध्यम से शिक्षा लेने वाले विद्यार्थियों के विभिन्न वर्गों की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और सीखने की आदतों से परिचित होना चाहिये। अधिगम सामग्री विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर के अनुसार तैयार करनी चाहिये। अर्थपूर्ण, प्रभावी अधिगम सामग्री को विकसित करने के लिये पाठयक्रम लेखक को पाठ्य विवरण का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये। इसलिये यह दावा करने के लिये कि दूरस्थ शिक्षण सामग्री स्व–पूरित और स्व–अधिगम है तो पाठ्यक्रम लेखक को सबसे पहले अधिगम अनुभव/कार्यों की दृष्टि से पाठ्य विवरण का पूरी तरह विश्लेषण करना चाहिये। अपने परस्पर संबंधों पर आधारित, अधिगम कार्यों को उचित क्रम से व्यवस्थित करना चाहिये। पाठ्यक्रम विशेष में विद्यार्थियों को उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता देने की दृष्टि से लेखक को उसकी विषयवस्तु की व्याप्ति का ज्ञान होना चाहिये।

अधिगम के सिद्धान्तों से परिचय

कक्षा–आधारित अध्येताओं के विपरीत, दूर शिक्षा अध्येता अपने घरों तथा कार्यस्थलों पर स्वतंत्र रूप से पढ़ते हैं। पाठ्यक्रम लेखक के लिये विविध अध्यापन कार्यनीतियों के प्रयोग की आवश्यकता होती है, ताकि विद्यार्थी अपनी आवश्यकताओं के अनुसार अधिगम रणनीति का चयन कर सके। पाठ्यक्रम लेखकों में अधिगम और संचार के सिद्धान्तों का पर्याप्त ज्ञान ऐसी स्व–शिक्षण सामग्री की सर्जनात्मक अभिकल्पना में उनकी सहायता करता है जो अलग–अलग विद्यार्थियों के अनुकूल होते हैं। स्व–अधिगम सामग्री का आधार अधिगम सिद्धान्तों और शिक्षण मापदण्डों की ठोस नींव पर होना चाहिये ताकि विद्यार्थियों में इष्टतम अधिगम सुनिश्चित हो सके। यहां इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि स्व–अधिगम सामग्री के लेखन/विकास के सिद्धान्त अध्यापन और अधिगम के सिद्धान्तों से उत्पन्न किये जाते हैं। इसलिये पाठ्यक्रम लेखकों को शिक्षण और अधिगम सिद्धान्तों की सम्यक जानकारी होनी चाहिये।

इसके अतिरिक्त दूर अध्येयताओं के लिये स्व–अधिगम सामग्री विकसित करने के कार्य में लगे हुये व्यक्तियों में प्रभावी संचार के पूर्णज्ञान का होना भी एक पूर्वापेक्षा है। विषयवस्तु, व्याख्या, भाषा, प्रस्तुतीकरण आदि की स्पष्टता प्रभावी संचार और विद्यार्थियों द्वारा अर्थपूर्ण अधिगम का सुनिश्चित करने में बहुत सहायक होगी। यह कहने की जरूरत नहीं है कि दूर शिक्षा, या यों कहिये कि किसी प्रकार का अध्यापन परस्पर सहमत उद्देश्यों (प्रेषक और प्रापक द्वारा) सूचना, अनुभव, विचारों आदि के आदान–प्रदान की एक प्रक्रिया है। अनुभव और विचारों का बॉटना, सूचना और संदेशों के प्रेषक और प्राप्तकर्ता के मध्य प्रभावी संचार पर निर्भर करता है। विशेषकर संचार तब प्रभावी होता है, जब वह उस भाषा में होता है जिसको प्राप्तकर्ता पूरी तरह से समझता है जिससे प्राप्तकर्ता की आवश्यकता की पूर्ति होती है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

9. स्व अधिगम सामग्री के महत्वपूर्ण लक्षण बताइये ?

....

5.8 स्व–अधिगम सामग्री के निर्माण की प्रक्रिया

स्व–अधिगम सामग्री की निर्माण करना उसकी रूपरेखा तैयार करने की तरह है जो कुल मिलाकर दूर शिक्षा संस्था के पाठ्यक्रम/कार्यक्रम की अभिकल्पना बनाती है।

अधिगम एवं सम्प्रेषण सिद्धान्तों का पाठ्यक्रम निर्माण में प्रयोग

दूर शिक्षक को भी लगभग वे सभी क्रियायें (प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप में) सम्पन्न करनी होती है। जिन्हें एक औपचारिक एवं परम्परागत प्रशिक्षित कक्षा–शिक्षक करता है। किन्तु दोनों में प्रमुख अन्तर यह है कि परम्परागत शिक्षक जिन क्रियाओं को पाठ्य–वस्तु के माध्यम से प्रत्यक्ष रूप में छात्रों के सम्मुख करता है, दूर शिक्षक को वहीं क्रियायें दूर शिक्षार्थी को भेजी जानी वाली स्वि–अधिगम सामग्री के अन्दर अप्रत्यक्ष रूप में करनी होती है। दूसरे शब्दों में दूर शिक्षक को पाठयक्रम के प्रारूपण एवं निर्माण में ही एक प्रशिक्षित शिक्षक की भूमिका निभानी होती है। इसके साथ ही दूर शिक्षक को पाठ्यक्रम प्रारूपण में इसका भी विशेष ध्यान रखना होता है कि पाठ्य–सामग्री का

शिक्षक को इनक कार्यों को सम्पन्न करने में दिशा निर्देश प्रदान करते हैं।

स्वतः अनुदेशनात्मक सामग्री का प्रारूप तैयार करने में दूर शिक्षक को निम्नलिखित क्रियायें करनी होती है–

- पाठ्य सामग्री का प्रस्तुतीकरण।
- उद्देश्यों की पहचान करना।
- शिक्षार्थियों को अभिप्रेरित करना।
- शिक्षार्थियों के अनुभवों का अधिकतम उपयोग करना।
- अधिगम क्रियाओं हेतु परिस्थितियां प्रदान करना।
- धारण शक्ति में वृद्धि हेतु प्रावधान करना।
- अधिगम–स्थानान्तरण को प्रोत्साहित करना।
- पृष्ठपोषण हेतु अवसर प्रदान करना।
- निर्देशन प्रदान करना।

पाठ्य सामग्री का प्रस्तुतीकरण

स्वतः अधिगम सामग्री का प्रस्तुतीकरण पाठ्यक्रम के स्वरूप पर निर्भर करता है। चूँकि दूर शिक्षा के पाठ्यक्रमों हेतु पूर्व निर्धारित पाठ्य–पुस्तकें नहीं होती है तथा पाठ्य–सामग्री को शिक्षार्थी के स्वतः अधिगम को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत करना होता है। अतः सामग्री प्रस्तुतीकरण निम्नलिखित विशिष्टताओं से युक्त होना चाहिये–

बौद्धिक स्पष्टता

विषय–वस्तु का सही एवं स्पष्ट ज्ञान होन पर ही लेखक उसे तार्किक एवं क्रमबद्ध ढंग से से विश्लेषित एवं प्रस्तुत की गयी सामग्री ही स्वतः अधिगम को प्रोत्साहित करने में सक्षम होती है।

भाषा की सरलता

पाठ्य सामग्री में जटिल भाषा एवं शब्दों को प्रयोग स्वतः अधिगम में बाधक होता है। अतः स्व अधिगम सामग्री सरल भाषा में प्रस्तुत की जानी चाहिये। इसके लिये सामान्य शब्दों, छोटे एवं सरल वाक्यों, विचारों एवं सम्प्रत्ययों की स्पष्ट अभिव्यक्ति, व्यक्तिगत सम्बंधों को विकसित करने वाली शैली तथा यथासम्भव मनोरंजनात्मक प्रसंगों आदि का प्रयोग किया जाना चाहिये।

सम्प्रत्ययों की मूर्तता

शिक्षार्थियों के लिये अमूर्त सम्प्रत्ययों को मूर्त वस्तुओं के माध्यम से समझना सरल होता है। अतः कठिन सम्प्रत्ययों को चित्रों, रेखाचित्रों, शाब्दिक चित्रावली, उदाहरणों आदि के द्वारा स्पष्ट किया जाना चाहिये।

उपयुक्त माध्यम

यद्यपि शोध निष्कर्षों एवं **अनुभवों से** यही पता चलता है कि शिक्षार्थी सभी माध्यमों (मुद्रित, श्रव्य एवं दृश्य) से समान रूप में सफलतापूर्वक सीखते हैं, अथवा सीख सकते हैं। इसके अतिरिक्त माध्यमों के चयन में लागत–दक्षता सिद्धान्त का अनुपालन भी आवश्यक होता है।

उद्देश्यों की पहचान करना

उद्देश्यों की स्पष्टता स्वतः अधिगम को प्रोत्साहित करने में बहुत अधिक सहायक होती है। अतः स्व अधिगम सामग्री के प्रारम्भ में ही उस पाठ इकाई के उद्देश्यों की सूची प्रस्तुत करनी आवश्यकत होती है। यदि ये उद्देश्य अलग–अलग क्षेत्रों (ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक) से सम्बंध रखते हो। उन्हें अलग–अलग सूचियों में प्रस्तुत करना चाहिये।

अधिकांश विषयों में उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने की आवश्यकता होती है क्योंकि इससे शिक्षार्थी को उन्हें समझने एवं प्राप्त करने में सरलता होती है। उद्देश्यों को व्यावहारिक रूप में लिखने हेतु ब्लूम के प्रतिमान का अनुसरण दूर शिक्षक के लिये बहुत उपयोगी हो सकता है।

शिक्षार्थी को अभिप्रेरित करना

शिक्षक की ही भांति अधिगम सामग्री को अभिप्रेरित कर सकती है। अभिप्रेरणा का (स्तर उच्च, सामान्य, निम्न) सामग्री के बाह्य एवं आन्तरिक स्वरूप पर निर्भर करता है।

सामग्री के बाह्य स्वरूप से तात्पर्य उसकी बाहरी साज–सज्जा से है जो शिक्षार्थी को प्रथम दृष्टि में आकर्षित करते है। उदाहरणाथ– अनुदेशनात्मक सामग्री जिस पुस्तिका के रूप में प्रस्तुत की जाती है, उसका आचरण, कागज, छपाई, चित्र, रंग, आकार तथा कभी–कभी पैंकिंग तक भी शिक्षार्थी को उसके प्रति आकर्षित होने के बाध्य करते हैं। अतः ये सब बाह्य अभिप्रेरक के रूप में कार्य करते हैं।

स्व अधिगम सामग्री का आन्तरिक स्वरूप अर्थात् पस्तुत की गयी समिति की गुणवत्ता ही सही अर्थों में शिक्षार्थी को अभिप्रेरित करती है। सामग्री के आन्तरिक स्वरूप को गुणवत्ता युक्त तभी कहा जा सकता है जब कि वह–

- शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूर्ण करने वाली हो।
- शिक्षार्थियों के अनुभवों के भरपूर प्रयोग से युक्त हो।
- पर्याप्त पृष्ठपोषण प्रदान करने वाली हो।
- सूचनाओं को व्यक्तिगत सम्बंध विकसित करने वाली शैली में प्रस्तुत किया गया हो।
- मनोरंजनात्मक एवं रूचिकर अभ्यासों से युक्त हो।
- अध्ययन इकाइयों को उपयुक्त आकार एवं लम्बाई में प्रस्तुत किया गया हो।
- आवश्यक सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु उसमें निहित हो।
- दूर अध्येता की विशेषताओं को धन में रखकर लिखी गयी हों।
- गृहकार्यों को कठिनाई स्तर के क्रम में प्रस्तुत किया गया हो।

उपर्युक्त गुणों से युक्त स्व अधिगम सामग्री सामग्री शिक्षार्थियों को उच्च स्तरीय अभिप्रेरणा प्रदान कर सकती है।

शिक्षार्थी के अनुभवों का भरपूर उपयोग करना

शिक्षार्थियें को अभिप्रेरित करने का एक अच्छा तरीका उनके अनुभवों का अधिक से अधिक उपयोग करना भी है। स्वतः अनुदेशानात्मक सामग्री के निर्माण में भी इस विधि से लाभ उठाया जा सकता है। यह उपागम शिक्षार्थियें को अभिप्रेरणा प्रदान करने के साथ–साथ पाठ लेखकों को इस रूप में भी सहायता प्रदान करता है कि पाठ को शिक्षार्थियों के पूर्व ज्ञान से जोड़ते हुये प्रारम्भ किया जाये, तथा उसके आधार पर नवीन ज्ञान प्रस्तुत किया जाये। पाठ सामग्री की भाषा व्यक्तिगत सम्बंध विकसित करने वाली शैली में होने पर अधिकांश शिक्षार्थी इसे अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर सरलता से ग्रहण कर लेते हैं, जबकि कठिन भाषा में वे पाठ्य–पुस्तक से विरक्त हो सकते हैं। अतः पाठ लेखक को शिक्षार्थी के अनुभवों से युक्त भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिये।

पाठ इकाई के प्रारम्भ में दिये गये अध्ययन सम्बंधी कुछ आवश्यक निर्देश भी शिक्षार्थी के लिये बहुत लाभदायक होते हैं। इससे शिक्षार्थी प्रस्तुत की गयी नवीन सामग्री को अपने पूर्वज्ञान से सम्बंधित कर सकने में समर्थ हो जाता है।

पाठ लेखक शिक्षार्थियों के अनुभवों को आवश्यकतानुसार विभिन्न स्रोतों (इतिहास, भूगोल, जीवविज्ञान, समाजशास्त्र,अर्थशास्त्र,वाणिज्य, दैनिक जीवन की क्रियाओ, साहित्य, लोक कथाओं, जन संचार आदि) से चयनित कर सकता है। शिक्षक के आसपास भी इस तरह के अनेक अनुभव होते हैं।

अधिगम क्रियाओं हेतु परिस्थितियां प्रदान करना

अधिगम की सबसे अच्छी विधि करके सीखना है। अतः स्व अधिगम सामग्री के अन्तर्गत भी इस तरह की परिस्थितियां प्रदान की ॱ ानी चाहिये, जिससे शिक्षार्थी को अधिक से अधिक अधिगम क्रियाओं को करने का अवसर मिल सके। इसके लिये कुछ प्रमुख अधिगम परिस्थितियां इस प्रकार की हो सकती है।

अभ्यास कार्य – दूरस्थ शिक्षार्थी को स्वयं करने के लिये प्रत्येक उप इकाई के पश्चात् अभ्यास कार्य दिये जाने चाहिये। यदि सम्भव हो तो पाठ के अन्त में उनके उत्तर या उत्तर संकेत अथवा संक्षिप्त उत्तर भी दिये जायें, जिससे शिक्षार्थी अपने उत्तरों की पुष्टि कर सके। इससे उसे पृष्ठपोषण मिलता रहता है।

गृहकार्य – दूर शिक्षार्थी के लिये सबसे महत्वपूर्ण अधिगम क्रिया गृहकार्य को पूरा करना होता है। गृहकार्य अभ्यास कार्य से भिन्न होता है। इनमें अपेक्षाकृत लम्बा उत्तर लिखना होता है। अतः गृहकार्य सम्बंधी प्रश्नों को ब्लाक (इकाई समूह) के अन्त में दिया जाना चाहिये। गृहकार्य से जहां एक तरफ शिक्षार्थी की निष्पत्ति का आंकलन हो पाता है, वहीं दूसरी ओर यह द्विमार्गी शैक्षणिक संवाद स्थापित करने में भी सहायक होता है। गृहकार्य हेतु विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को दिया जा सकता है। उदाहरणार्थ– दीर्घ उत्तरीय प्रश्न, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, प्रोजेक्ट कार्य, इकाई के बारे में सकारात्मक सुझाव एवं समालोचना आदि।

धारण शक्ति में वृद्धि करना

शिक्षा का उद्देश्य मात्र नवीन ज्ञान को प्रदान करना ही नहीं बल्कि उसे शिक्षार्थी के मस्तिष्क में लम्बे समय तक धारण करवाना भी है, जिससे वह उसका अपने जीवन में सदुपयोग भी कर सके। धारण शक्ति में वृद्धि का सबसे अच्छा एवं प्रचलित तरीका सीखी गयी क्रियाओं को थोड़े–थोड़े अन्तराल पर दुहराते रहना है। स्वअधिगम सामग्री के अन्तर्गत भी सारांश प्रस्तुतीकरा, पुनर्बोधात्मक प्रश्नों तथा गृहकार्य प्रश्नों के माध्य से पाठ को कई बार दुहराने के अवसर प्रदान किये जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त अधिक से अधिक उदाहरणो, उपयुक्त व्याख्याओं एवं टिप्पणियों को प्रस्तुत करके भी शिक्षार्थी को यह अवबोध बार–बार कराया जा सकता है।

अधिगम स्थानान्तरण को प्रोत्साहित करना

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के अन्तर्गत नवीन सम्प्रत्ययों, कौशलों को सीखना तथा नवीन अभिवृत्तियों को विकसित करना ही पर्याप्त नहीं माना जाता है। अधिगम की पूर्णता तभी होती है, जब शिक्षार्थी उसे दूसरी परिस्थितियों में भी स्थानान्तरित एवं प्रयुक्त कर सके।

इस प्रकार का उच्चस्तरीय अधिगम जटिल प्रयोगों एवं समस्या समाधान वाले अभ्यास कार्यों के माध्यम से प्रदान किया जा सकता है।

पृष्ट पोषण प्रदान करना –

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशली बनाने के लिये उसमें निरन्तर सुधार की आवश्यकता होती है। अतः शिक्षक एवं शिक्षार्थी के मध्य द्विमार्गी पृष्टपोषण प्रक्रिया सम्पादित की जानी चाहिये।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

10. स्व अधिम सामग्री के आन्तरिक स्वरुप को गुणवत्तायुक्त कैसे बनाया जा सकता है?

....

11. अभ्यासकार्य का क्या महत्व है?

....

5.9 सारांश

इस इकाई में हमने मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा विद्यार्थी सहायता सेवाओं के अन्तर्गत प्रदान की जाने वाली स्व–अधिगम सामग्री की संकल्पना, आवश्यकता एवं स्वरूप के विषय में जानकारी प्राप्त की। इसके अतिरिक्त मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा हेतु स्व–अधिगम सामग्री विकास के आवश्यक तत्वों की चर्चा भी हुई। इस इकाई में स्व–अधिगम सामग्री के सम्बंध में हुई चर्चा से ही हम जान पाये कि स्व–अधिगम सामग्री मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की लोकप्रियता में नींव के पत्थर के समान है, और यह दूर अध्येता के लिये दूर शिक्षण संस्थान द्वारा प्रदान किये जाने वाली पूर्ण सहयोग है। इसकी संरचना पूर्णतया मनोवैज्ञानिक एवं सम्प्रेषण सिद्धान्तों पर निभर करती है।

5.10 चर्चा के बिन्दु

स्व–अधिगम सामग्री का अभिकल्पन ही इसकी गुणवत्ता का आधार होता है। स्व–अधिगम सामग्री के किन तत्वों एवं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुये अभिकल्पन किया जाता है। और कैसे? चर्चा कीजिये।

5.11 अभ्यास कार्य

1. स्व–अधिगम सामग्री के अवधारण को स्पष्ट करते हुये इसके स्वरूप का वर्णन कीजिये।
2. स्व–अधिगम सामग्री की विशेषताओं की विवेचना कीजिये।

5.12 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. ऐसी पाठ्यवस्तु सामग्री जिसे अध्येता स्वतंत्रत रूप से अध्ययन करके अपनी गति अपनी रूचि से सीखता है, और स्वयं अपना शिक्षण करता है।
2. स्व अधिगम सामग्री दूर अध्येता को दूर शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश लेने, बने रहने एवं सफलता पूर्वक ज्ञान प्राप्त करने का आधार बनते है।
3. बोध प्रश्न एवं अभ्यासकार्य सम्मिलित करके।
4. मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं अधिगम के सिद्धान्तों पर आधारित होती है।
5. अध्यापक एवं अध्येता के मध्य सम्वाद के रुप में प्रस्तुतिकरण।
6. व्याख्या, बोध प्रश्न तथा संवाद शैली में स्व–अधिगम सामग्री का अभिकल्पना करके।
7. स्व–अधिगम सामग्री को अध्येता को स्व–पढ़ने एवं सीखने में कुशल बनाने हेतु।
8. रोचक, वास्तविक एवं वास्तविक कक्षा शिक्षण की परिस्थितियां उत्पन्न करने हेतु।
9. स्व निर्देशित, स्व पूर्ण स्व अभिप्रेरक एवं स्वं मूल्यांकन।
10. आवश्यकतानुरुप पृष्ठपोषण युक्त, रुचिकर एवं उद्देश्यपूर्ण पाठ्यवस्तु।
11. पृष्ठपोषण एवं सीखे ज्ञान को दोहराने हेतु।

5.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Dutt R. (1985) : Distance education in India, Its development & significance workshop on Distance education, New Delhi: Open School.

Holmberg, Borje(1986): Growth and staracture of Distance Education London: Croom Helm.

Sujatha, K. (2002), Distance Education at Secondary level in India,

UNESCO: IIEP Publication.

Sahoo P.K. (1994) : Open Learning System, New Delhi : Uppal Publishing House.

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

शर्मा आर0 ए0 (1996) : दूरवर्ती शिक्षा, मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन

इकाई–6 परामर्श सत्र

संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 परामर्श की अवधारणा

6.4 परामर्श की प्रक्रिया

6.5 दूरस्थ शिक्षा में परामर्श सत्र

6.6 परामर्श की उत्पत्ति एवं आवश्यकता

6.7 दूरस्थ शिक्षा में परामर्श के प्रकार

6.8 परामर्श सत्र की व्यवस्था

6.9 सारांश

6.10 अभ्यास कार्य

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

6.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

दूरस्थ शिक्षा की सबसे बड़ी विशेषता अध्यापक– अध्येता के मध्य दूरी है और यह दूरी परम्परागत शिक्षा में नहीं होती और यह उसकी सबसे बड़ी मजबूती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में इस दूरी को कम करने का पूरा प्रयास किया जाता है, और इसके लिये कुछ सहायता कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं, और इसमें परामर्श सत्रों का आयोजन भी एक है। इस इकाई में हम परामर्श सत्रों के विषय में विस्तार से अध्ययन करेंगें।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में परामर्श की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।
- परामर्श सेवा की प्रक्रिया की व्याख्या कर सकेंगे।
- परामर्श सत्र की आवश्यकता की विवेचना कर सकेंगे।

- परामर्शदाता के गुणों एवं कार्यो को बता सकेगें

6.3 परामर्श की अवधारणा

दूरवर्ती शिक्षा में भी शिक्षार्थियों को शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं परामर्श सम्बंधी कार्यों हेतु शिक्षक से सहायता की आवश्यकता होती है। शिक्षक इसके लिये विभिन्न प्रकार से सहायता करता है। शिक्षक द्वारा प्रदान की जाने वाली सहायता को निम्नांकित तीन वर्गों एवं नौ उपवर्गों में रखा जा सकता है–

क. **शिक्षण सम्बंधी सहायता**	1.	शिक्षण
	2.	पृष्ठपोषण
	3.	ग्रेडिंग
ख. **प्रशासनिक सहायता**	4	कार्य– अध्ययन हेतु शिक्षार्थियें की सामान्य आवश्यकताओं एवं कमियों को पूरा करना।
	5.	नियमन– संस्थानिक नियमों को संदर्भित करना।
	6.	आंकलन–प्रवेश योग्यता की जॉच।
ग. **परामर्श**	7.	सूचना प्रदान करना।
	8.	सलाह देना– व्यक्तिगत समस्याओं एवं अध्ययन के ढंग आदि हेतु।
	9.	परामर्श– भावी जीवन में प्रगति हेतु

सही पाठ्यक्रम चुनने तथा उसमें अच्छी सफलता प्राप्त करने हेतु।

उपर्युक्त वर्गीकरण सामान्य शैक्षणिक अनुभवों पर आधारित है। शिक्षक इनके अतिरिक्त अन्य कुछ तरीकों से भी शिक्षार्थी की सहायता कर सकता है। यहां हमारा उद्देश्य परामर्श सम्बंधी सहायता को महत्व प्रदान करना है।

परामर्श का शाब्दिक अर्थ विचार–विमर्श, पूछ–ताछ, सलाह, तर्क–वितर्क तथा विचारों का पारस्परिक विनिमय करना है। किन्तु शाब्दिक अर्थ के अतिरिक्त परामर्श के कुछ अन्य पक्ष भी है। अनेक विद्वानों द्वारा इन्हीं पक्षों पर प्रकाश डालते हुये परामर्श के अर्थ का स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अतः परामर्श के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिये कुछ विद्वानों द्वारा प्रस्तुत इसकी परिभाषाओं को उद्धृत करना अधिक

उपयुक्त होगा।

गिलबर्ट रेन के अनुसार— *"सर्वप्रथम परामर्श वैयक्तिक होता है। इसे समूह के साथ सम्पादित नहीं किया जा सकता है। सामूहिक परामर्श एक असंगत पद है। इन दोनों शब्दो में सामंजस्य नहीं है। व्यक्तिगत परामर्श एक ही बात को दो शब्दों में कहने जैसा है क्योंकि परामर्श सदैव वैयक्तिक या व्यक्तिगत होता है।"*

जार्ज ई0 मायर्स ने परामर्श को इस प्रकार परिभाषित किया है — *"परामर्श का कार्य तब सम्पन्न होता है जब यह व्यक्ति को अपने आप निर्णय लेने तक पहुँचने में बुद्धिमतापूर्ण प्रक्रिया को अपनाने में सहायता प्रदान करता है। परामर्श स्वयं उसके लिये निर्णय नहीं लेता है। परामर्श प्रक्रिया में सेवार्थी हेतु परामर्शदाता द्वारा निर्णय लेना* ***उतना*** *ही असंगत होता है, जितना कि बीजगणित के शिक्षण में शिक्षक द्वारा शिक्षार्थी के लिये समस्या का समाधान स्वयं कर देना।"*

राबिन्सन ने परामर्श को अधिक स्पष्ट करने का प्रयास किया है। उसके अनुसार— *"परामर्श के अन्तर्गत वे समस्त परिस्थितियां सम्मिलित कर ली जाती है, जिनके आध ार पर प्रार्थी या सेवार्थी को अपने वातावरण से समायोजन स्थापित करने में सहायता मिलती है। परामर्श का सम्बंध दो व्यक्तियों से होता है— परामर्शदाता एवं परामर्श प्रार्थी। कोई भी परामर्शप्रार्थी अपनी समस्याओं का समाधान बिना किसी सुझाव के स्वयं ही करने में सक्षम नहीं हो पाता है। इसके लिये वैज्ञानिक सुझावों की आवश्यकता होती है। यह वैज्ञानिक सुझाव ही परामर्श कहलाता है।"*

रोलो मे द्वारा *परामर्शदाता की भूमिका को अधिक महत्व करते हुये परामर्श को इन शब्दों में प्रस्तुत किया गया है— "उसका (परामर्शदाता का)कार्य परामर्शप्रार्थी को उसके सामाजिक दायित्वों को सहर्ष स्वीकार करने में सहायता करना, उसे हीन भावना के दबावों से मुक्त करने हेतु साहस प्रदान करना तथा सामाजिक—रचनात्मक लक्ष्यों की ओर प्रवृत्त करने में उसे सहायता प्रदान करना है।"*

रूथ स्ट्रांग ने परामर्श को संयुक्त प्रयास एवं परामर्शप्रार्थी के आत्मबोध को महत्व प्रदान करते हुए इस प्रकार परिभाषित किया है— *"परामर्श प्रक्रिया एक संयुक्त प्रयास है। विद्यार्थी का दायित्व स्वयं को समझने का प्रयास करना, उस दिशा को समझना जिसमें उसे जाना चाहिये तथा समस्याओं के उत्पन्न होने पर उनके समाधान हेतु आत्म विश्वास जागृत करना होता है। इस प्रक्रिया में परामर्शदाता का उत्तरदायित्व विद्यार्थी की आवश्यकतानुसार उसे सहायता प्रदान करने हेतु तत्पर रहना होता है।"*

उपर्युक्त परिभाषाओं में परामर्श की विशेषताओं, उद्देश्यों एवं कार्यों का उल्लेख विद्वानों ने अपने—अपने दृष्टिकोण से किया है। इन सभी परिभाषाओं से परामर्श के **कुछ**

प्रमुख विशेषताओं एवं तत्वों का पता चलता है। ये विशेषतायें इस प्रकार है–

1. परामर्श वैयक्तिक सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है।
2. यह प्रक्रिया दो व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बंध पर आधारित होती है।
3. परामर्श के द्वारा शिक्षार्थी को अपनी समस्यायें स्वयं हल करने के योग्य बनाया जाता है।
4. इस प्रक्रिया से परामर्शप्रार्थी को स्वयं अपने को समझने तथा अपनी समस्याओं के समाधान हेतु मार्ग ढूढने में सहायता मिलती है।
5. इस प्रक्रिया में परामर्शदाता सम्पूर्ण परिस्थितियों के आधार पर परामर्शप्रार्थी को कुछ ऐसे वैज्ञानिक सुझाव देते हैं जिससे वह अपना समायोजन स्वयं कर सके।
6. परामर्श में सुझावों अथवा निर्णयों को शिक्षार्थी पर थोपा नहीं जाता है, अपितु वह स्वयं उन्हें स्वीकार करता है।
7. परामर्श प्रक्रिया में विचार–विमर्श के अनेक साधन हो सकते हैं।
8. प्रत्येक परामर्श साक्षात्कार पर आधारित होता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

1. परामर्श प्रक्रिया में असंगत व्यवहार किसे कहा गया है ?

....

2. परामर्श एक बार में कितने व्यक्तियों को दिया जा सकता है ?

....

3. परामर्श प्रक्रिया में शिक्षार्थी की समस्या कौन हल करता है ?

....

6.4 परामर्श की प्रक्रिया

परामर्श की प्रक्रिया विशिष्ट प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में तीन क्रियायें सम्मिलित होती है– सूचना प्रदान करना, सुझाव देना एवं परामर्श प्रदान करना। इन क्रियाओं का संक्षिप्त विवरण निम्नांकित है–

1. **सूचना प्रदान करना**– सूचना प्रदान करने से तात्पर्य परामर्शदाता द्वारा सेवार्थी को सही एवं उपयुक्त सूचना देने से होता है। शिक्षार्थियों विशेष रूप से दूर शिक्षार्थियों को अपने अध्ययन के सम्बंध में अनेक प्रकार की सूचनाओं की आवश्यकता होती है।

2. **सुझाव देना** – कई विकल्पों में से सेवार्थी (छात्र) के लिये उपयुक्त विकल्प का सुझाव देना। उदाहरणार्थ– शिक्षण को भावी व्यवसाय के रूप में अपनाने को इच्छुक विद्यार्थी को परामर्शदाता इस प्रकार का सुझाव दे सकता है कि बी0एड0 पाठ्यक्रम आपके लिये व्यावहारिक एवं उपयुक्त रहेगा।

3. **परामर्श देना** – शिक्षार्थियों को उनकी आवश्यकताओं, भावनाओं अथवा अभिप्रेरणाओं को स्पष्ट करने में उनकी सहायता करना जिससे वे अपने लिये उपयुक्त निर्णय ले सके।

उपर्युक्त तीनो क्रियाओं में बहुत सूक्ष्म अन्तर है। सूचना प्रदान करने में ज्ञान पर अधिक बल होता है, तथा शिक्षार्थी पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है। परामर्श शिक्षार्थी केन्द्रित होता है तथा इसमें परामर्शदाता को ज्ञान की अपेक्षा शिक्षार्थी के कौशलों को स्पष्ट करने में सहायता प्रदान करना होता है। सुझाव देना ज्ञान एवं शिक्षार्थी दोनों पर आधारित होता है तथा यह सूचना देने एवं परामर्श के बीच की स्थिति होती है।

परामर्श प्रक्रिया में शिक्षार्थी को किस प्रकार की क्रिया से सन्तुष्ट किया जाना चाहिये, यह उससे विभिन्न प्रकार के प्रश्न करके जाना जा सकता है।

परामर्श प्रक्रिया के तीन मुख्य अंग होते है–

1. परामर्श के लक्ष्य
2. परामर्शप्रार्थी या सेवार्थी का उपबोध्य
3. परामर्शी अथवा परामर्शदाता

लक्ष्यों को निर्धारित करने में सेवार्थी की रूचियों, आवश्यकताओं, भावनाओं एवं वातावरण को ध्यान में रखना होता है। परामर्श का लक्ष्य शिक्षार्थी को स्वयं कार्य कर सकने तथा अधिक परिपक्व ढंग से विचार–विमर्श करने में सहयता प्रदान करना होना चाहिये। इसके अतिरिक्त शिक्षार्थी को स्वयं अपनी योग्यताओं एवं सम्भाव्यताओं को ज्ञात करने तथा सामाजिक विकास में उनका उपयोग कर सकने के सम्बंध में उनकी सहायता करना परामर्श का लक्ष्य माना जाता है। इस प्रकार परामर्श के तीन प्रमुख उददेश्य माने जा सकते हैं।

- **आत्मज्ञान–** व्यक्ति को अपने बारे में ज्ञान करना अर्थात् उसकी योग्यता, शक्ति एवं सम्भाव्यताओं को पहचानने एवं समझने में मदद करना।
- **आत्म स्वीकृति** – व्यक्ति उसके बारे में ज्ञान कराने के साथ–साथ उसे स्वीकार करने के लिये भी उसको तैयार करना जिससे सेवार्थी को कोई भ्रम न रहे।
- **सामाजिक सामंजस्य–** व्यक्ति को अपने बारे में केवल सोचने से उपर उठाकर समाज के बारे में सोचनें हेतु प्ररित करना।

परामर्श एवं शिक्षण– **परामर्श एवं शिक्षण** दोनों मिलती–जुलती क्रियाये है, तथा एक–दूसरे से अच्छी **तरह जुड़ी हुई है** इसीलिये प्रायः इन दोनो में अन्तर कर पाना कठिन होता है। **एक अच्छा शिक्षक** अच्छा परामर्शदाता **भी** होता है। क्योंकि परामर्श शिक्षण कौशल का एक **महत्वपूर्ण** अंग हैं। किन्तु इन दोनों क्रियाओं में जो अन्तर है उसे निम्नलिखित ढंग से स्पष्ट किया जा सकता है।

शिक्षण – यह पाठ्यक्रम केन्द्रित होता है। इसमें सम्प्रेषण मूलतः शिक्षक से शिक्षार्थी की ओर होता है। **इसमें शिक्षक को ज्ञानवान** एवं अच्छा वक्ता होना एक प्राथमिक आवश्यकता होती है।

परामर्श– यह शिक्षार्थी केन्द्रित होता है। इसमें सम्प्रेषण मूलतः शिक्षार्थी से परामर्शदाता की ओर होता है। इसमें परामर्शदाता को अच्छा श्रोता होना एक प्राथमिक आवश्यकता होती है।

इस प्रकार ये दोनों क्रियायें थोड़ी भिन्न होते हुये भी एक–दूसरे की पूरक होती है। दूर शिक्षा में दोनों का समान महत्व होता है।

6.5 दूरस्थ शिक्षा में परामर्श सत्र की आवश्यकता

यद्यपि परामर्श सेवा का प्रयोग सभी प्रकार की शिक्षा प्रणालियों में किया जाता है, किन्तु दूरस्थ शिक्षा में इसका अपना विशेष महत्व है। दूरस्थ शिक्षा में परामर्श का महत्व इसकी अपनी तीन विशिष्टताओं के कारण है–

1. दूरस्थ **शिक्षार्थियों** की विशेषतायें।
2. दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं की विशेषतायें।
3. दूरस्थ अधिगम प्रक्रिया की विशेषतायें।

दूरस्थ शिक्षार्थियों की विशेषतायें

दूरस्थ शिक्षा का विद्यार्थी, स्कूली विद्यार्थियों से भिन्न होता है। उसकी कुछ **प्रमुख** विशेषतायें इस प्रकार है

- दूरस्थ शिक्षार्थी को किसी न किसी प्रकार का पूर्व शैक्षिक अनुभव होता है, जो सकारात्मक अथवा नकारात्मक हो सकता है।
- दूरस्थ शिक्षार्थी अपने सहपाठियों एवं संस्था से अलग–थलग होता है।
- दूरस्थ शिक्षार्थी को प्रायः कुछ अपनी व्यक्तिगत एवं घरेलू प्रतिबद्धतायें होती हैं।
- दूरस्थ शिक्षार्थी विभिन्न शैक्षिक, सामाजिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक पृष्ठभूमि वाले होते हैं।
- दूरस्थ शिक्षार्थी की आवश्यकता को पूर्ण करने वाले तथा उनके भावी जीवन के लिये उपयुक्त होने पर ही वे दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रमों में रूचि लेते हैं।
- दूरस्थ शिक्षार्थी अपने प्राथमिक कर्तव्यों के निर्वहन के कारण पाठ्यक्रमों हेतु कम समय दे पाते हैं।

दूरस्थ षिक्षण संस्थाओं की विषेशताए–

Ø दूर स्थित होना

Ø जटिल प्रशासनिक व्यवस्था

Ø प्रशासनिक व्यवस्था का विभिन्न स्तरों पर विकेन्द्रीकृत प्रारुप

Ø सम्पूर्ण प्रशासन संचार माध्यमों पर आश्रित

दूर अधिगम प्रक्रिया की विशेषताएं–

Ø स्व निर्देशित

Ø स्वतंत्र

Ø स्वावलम्बी

Ø स्व–मूल्यांकन

Ø स्व–गति एवं स्वरुचि

इन सभी विशेषताओं ने शिक्षार्थियों के समक्ष अनेक समस्याएं भी उत्तपन्न की है जिनके कारण परामर्श प्रक्रिया की उत्पत्ति हुयी।

परामर्श की उत्पत्ति

सन् 1984 में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा पद्धति में सर्वप्रथम परामर्श कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। दूरस्थ शिक्षा की अन्तर्राष्ट्रीय समिति और ब्रिटिश आपेन यूनिवर्सिटी ने सन् 1984 में पहला और 1987 में दूसरा संयुक्त सम्मेलन परामर्श पर किया। उसके बाद ब्रिटिश ओपन यूनिवर्सिटी ने पत्राचार वीडियो और मुखाभिमुख स्टॉक विकास सामग्री उसमें परामर्श भी सम्मिलित था विकसित की। इस प्रकार योरोपियन पत्राचार विद्यालयों के

संशोधन द्वारा आरम्भ किये गये पत्राचार शिक्षा के डिप्लोमा कोर्स में एक परामर्श मोड्यूल भी है। तब प्रश्न यह उठता है कि दूर अध्येता को परामर्श की आवश्यकता क्यों और कब होती है।

दूर–अध्येता को परामर्श की आवश्यकता– दूर अध्येता को दो अवसरों पर परामर्श की आवश्यकता होती है।

1. किसी निर्णय बिन्दु पर पहुॅचने में।

2. किसी अवरोध के उत्पन्न होने पर

निर्णय बिन्दु पर पहुॅचने में दूर अध्येता कई स्तरों पर निर्णय बिन्दुओं पर पहुॅचना चाहता है–

- कौन सा पाठ्यक्रम चयनित किया जाये?
- पाठ्यक्रम को कैसे तैयार किया जाये?
- जीवनोपयोगी पाठ्यक्रम का चयन कैसे किया जाय?
- पाठ्यक्रम से किस लक्ष्य की प्राप्ति की जाये।
- अध्ययन को कैसे प्रबंध किया जाये।
- सत्रीय कार्य कैसे पूरा हो?
- सत्रीय कार्य मे क्या लिखा जाय?

अवरोध उत्पन्न होने पर–दूर अध्येता को अपने अध्ययन में अनेक स्तरों पर अवरोध उत्पन्न होता है, तब उसे परामर्श की आवश्यकता है–

- अध्ययन से सम्बंधित प्रभावी अध्ययन का तरीका ढूढंना, सत्रीय कार्य पूरा करने, परीक्षा की तैयारी करना।
- समय से सम्बंधित घरेलू दायित्वों के साथ कार्यों को सही तरीके से करना।
- संस्थागत अवरोध– मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं प्रक्रिया को समझना, डाकप्रेषण में जटिलता।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

3. परामर्श का शाब्दिक अर्थ क्या है?

....

4. परामर्श कैसी प्रक्रिया है?

....

5. परामर्श प्रक्रिया दूरस्थ शिक्षा में कब प्रारम्भ हुई?

....

6. दूरस्थ शिक्षा में परामर्श सत्र किसकी कमी को पूरा करता है?

....

7. दूर–अध्येता को अध्ययन से सम्बंधित कौन सी कठिनाई होती है?

....

6.7 दूरस्थ शिक्षा में परामर्श के प्रकार

परामर्श अनेक प्रकार के होते हैं, परन्तु अध्येता को ध्यान में रखकर यहां पर वर्गीकृत करेंगे। इसमें हम इसे दो रूप से देख सकते हैं।

2. विकासात्मक परामर्श एवं समस्या समाधानात्मक परामर्श।

3. शैक्षिक परामर्श एवं गैर शैक्षिक परामर्श।

विकासात्मक परामर्श–

यह परामर्श अध्येता को विकास करने के लिये दिया जाता है। यह अध्येता को सही दिशा में आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करता है। इसमें अनेक मुद्दे सुलझाये जा सकते है–

प्रवेश पूर्व समस्यायें– इसमें पाठ्यक्रम सम्बंधी सूचना वैकल्पिक पाठ्यक्रमों एवं संस्था सम्बंधित जानकारी, लक्ष्य निर्धारित करते समय निर्धारित करने, प्रवेश से भी पूर्व की समस्यायें सुलझायी जाती है।

पाठ्यक्रम चयन– विभिन्न पाठ्यक्रमों की जानकारी प्राप्त कर चयन अध्ययन का प्रबंधन, कठिनाई स्तर, दूसरे पाठ्यक्रम के साथ सहसम्बंध तथा सम्भावित भावी कैरियर सम्बंधी सुझाव दिये जाते है।

भावी व्यावसाय चयन– रोजगार प्राप्त करने हेतु आवश्यक पाठ्यक्रम विशिष्ट रोजगार के लिये, आवश्यक पाठ्यक्रम को चुनने हेतु योग्यता जानना इत्यादि।

अध्ययन जारी रखने के लिये– इसमें अध्येता को अधिगम एवं अध्ययन सम्बंधी

कठिनाई को दूरकर अध्ययन जारी रखने हेतु दिया जाने वाला परामर्श आता है।

आगे बढ़ने हेतु अभिप्रेरणा— अध्ययन के लक्ष्यों का स्पष्टीकरण आगे बढ़ने हेतु अभिप्रेरण, ।

समस्या समाधानात्मक परामर्श—

इस प्रकार के परामर्श के अन्तर्गत अध्येता के प्रगति एवं अध्ययन में आने वाली समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

- **अध्ययन सम्बंधी समस्या**— अध्ययन की गति में सुधार, दूर अधिगम का अनुशीलन, निषेधात्मक अध्ययन की आदतों को दूर करना।
- **समय सम्बंधी समस्या**— इसके अन्तर्गत अध्ययन की समय सीमा तय करना, अनावश्यक कार्यों को छोड़ना आदि में सहायता प्रदान करना आता है।
- **व्यक्तिगत समस्यायें**— इसके अन्तर्गत अस्वस्थयता, कार्यों का अत्यधिक दबाव, उपलब्धि सम्बंधी समस्यायें, अधिक बेरोजगारी, अधिक उम्र आदि समस्यायें सुलझायी जाती है।
- **संस्थागत समस्यायें**— इसके अन्तर्गत संस्था द्वारा उपस्थित समस्यायें, नियमों के प्रति नामसझी, अनुदेशन सामग्री का देर से मिलना इत्यादि समस्यायें इसके अन्तर्गत आती है।

शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक परामर्श

परामर्श का यह वर्गीकरण प्रकरण आधारित होता है। शैक्षिक परामर्श परामर्शदाताओं द्वारा पाठ्यक्रम पर आधारित प्रकरण पर आधारित है, इसमें प्रकरण के अध्ययन में आने वाली अधिगम सम्बंधी बाधाओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है। इसके अन्तर्गत अध्यापक एवं अध्येता के मध्य दूरी को समाप्त करने का प्रयास किया जाता है। यह व्यवस्थित होता हैं। गैर शैक्षिक परामर्श में पाठ्यक्रम चयन सामान्य अध्ययन सम्बंधी कठिनाइयां आदि सुलझायी जाती है।

शैक्षिक परामर्श का महत्व—

दूरस्थ शिक्षा में परामर्श सत्र एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में प्रतिष्ठित है। शैक्षिक परामर्श सत्र दूर अध्येता को उनकी सुविधा के अनुसार प्रदान किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा में अध्ययन केन्द्र मुख्य दूर शिक्षण संस्थान द्वारा जिले स्तर पर संचालित किये जाते हैं। यह अध्ययन केन्द्र औपचारिक शिक्षा संस्थान में ही स्थित होते हैं और

उसमे मुख्य रूप से समन्वयक होता है, इसके अतिरिक्त कार्यक्रमों के सुचारू संचालन हेतु विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं विषयों के लिये अंशकालिक परामर्शदाताओं की नियुक्ति सभी संस्था के अध्यापकों में से की जाती है। इन परामर्शदाताओं द्वारा विभिन्न विषयों के परामर्श सत्रों का आयोजन किया जाता हैं। परामर्श सत्रों का आयोजन दूर अध्येताओं के लिये महत्वपूर्ण है क्योंकि–

- इससे अध्यापक एवं अध्येता का प्रत्यक्ष सम्प्रेषण हो पाता है।
- दूर अध्येता को नियमित विद्यार्थियों के अनुरूप ही क्रियाकलाप करने का अवसर परामर्श सत्रों में मिलता है।
- परामर्श सत्र से उन्हें विषय विशेष के अधिगम में आ रही समस्याओं को सुलझाने का अवसर मिलता है।
- दूर अध्येता को अपनी कमियों एवं व्यक्तिगत विषयगत समस्याओं को भी सुलझाने का अवसर मिलता है।
- परामर्श सत्र दूर अध्येताओं को नियमित अध्ययन कर समस्यायें प्रकट कर समाधान हेतु अभिप्रेरित करते है।
- ये सत्र दूर अध्येताओं को केन्द्रों से जोड़े रहते है, जिनमें उन्हें समय पर आवश्यक जानकारियां मिल पाती है।
- परामर्श सत्रों में उन्हें विषय विशेष के अध्ययन हेतु परामर्श एवं प्रेरणा मिलती है।
- इन सत्रों में उन्हें अपने प्रायोगिक कार्यो जैसे दत्त कार्यों, प्रोजेक्ट कार्यों को पूरा करने का दिशा निर्देश मिलता है।
- परामर्श सत्र व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अधिक उपयोगी है, क्योंकि ये उसके व्यावहारिक पक्ष को मजबूती देते हैं।
- ये दूर अध्यापक एवं दूर अध्येताओं के सम्बंध को मजबूत बनाते हैं, और वास्तविक कक्षा शिक्षण की परिस्थितियों को कुछ समय के लिये सजीव बनाते है।
- परामर्श सत्र दूर अध्येताओं को अपने समूह के अध्येताओं के साथ मिलने का अवसर प्रदान करते है।
- परामर्श सत्र दूरस्थ शिक्षा को सजीवता प्रदान करते हैं एवं दूर अध्येताओं के सहारा देते है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

8. दूर अध्येता को विकास एंव प्रगति के लिये कौन सा परामर्श दिया जाता है?

....

9. शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक परामर्श में मूलभूत अन्तर क्या है?

....

10. परामर्श सत्र दूर शिक्षा को कैसे मजबूती प्रदान करता हैं?

....

6.8 परामर्श सत्र की व्यवस्था

परामर्श सत्रों का आयोजन एक दुरूह कार्य है। इसके लिये एक सुव्यवस्थित संचार प्रणाली, प्रशिक्षित कार्यकर्ता एवं भौतिक संरचना की आवश्यकता होती है। विद्यार्थी सहायता सेवा का सबसे अधिक जीवत पक्ष उपबोधन है जो कि एक प्रशिक्षित परामर्शदाता द्वारा अध्ययन केन्द्र पर निर्दिष्ट समय पर निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार संचालित किये जाते हैं। परामर्श सत्र की प्रभावशीलता उसके संचालन प्रविधि पर निर्भर करता है। इसमे इसके सशक्त नेटवर्क की आवश्यकता होती है। परामर्श सत्रों की विशेषतायें यह होती है।

- परामश सत्र अध्येताओं की सुविधानुसार सप्ताहांत और सायंकालीन आयोजित किये जतो है।
- इसमें विषय विशेष के दूर अध्यापक परामर्शदाताओं को आमंत्रित किये जाते है।
- यह प्रत्यक्ष सम्प्रेषण को जन्म देते है।
- प्रत्येक विषयों में निर्धारित संख्या में परामर्श सत्र आयोजित होते है।
- ये अध्येतान्मुख होते है।

शैक्षिक परामर्शदाता के कार्य व दायित्व निम्नलिखित है–

- अध्ययन केन्द्रों में उपबोधन सत्र में शैक्षिक चर्चा के मध्य आगामी शैक्षिक चर्चाओं के लिये प्रोत्साहित करना।
- अध्येता की शैक्षिक सामग्री सम्बंधी प्रश्न, समस्याओं सन्देह आदि का निवारण

करना।

- दूर शिक्षा सम्बंधी दक्षताओं का अध्येता में विकास कर उसे स्व–शिक्षण में स्वतंत्र अध्येता बनाना।
- दत्त कार्यों का मूल्यांकन कर उसे श्रेणीबद्ध करना व अध्येताओं को प्रतिपुष्टि देना।
- अध्येताओं का उत्साहवर्धन करने व अधिगम सम्बंधी समस्याओं के निवारण मे निर्णय लेने में उन्हें सहयोग देना। यह बाधाये और निर्णय बिन्दु उसके अध्ययन, दत्त कार्य परीक्षा, अनुदेशन की भाषा आदि से समबंधित हो सकती है।

परामर्शदाता की विशेषतायें

सम्पूर्ण परामर्श सत्र की गुणात्मकता परामर्शदाता की कुशलता पर निर्भर करता है। रायवर ने विभिन्न विद्वानों एवं मनो विश्लेषकों द्वारा दी गयी इन विशेषताओं को इंगित किया है–

- पारस्परिक सम्बंध– दूसरों की आवश्यकताओं, भावनाओं एवं दृष्टिकोणों के प्रति सहिष्णुता, स्नेह, समर्पण, त्याग इत्यादि।
- नेतृत्व– दूसरों को प्रभावित करने की योग्यता।
- जीवनदर्शन– उत्तम आचरण, उत्तम रूचियां, रचनात्मकता, मानव प्रकृति में आस्था, मानवीय मूल्यों में आस्था एव विश्वास।
- स्वास्थ्य एवं वाह्य व्यक्तित्व– अच्छा स्वास्थ्य, मृदुभाषिता, विनम्रता, आकर्षक व्यक्तित्व।
- उत्तम शैक्षिक पृष्ठिभूमि एवं विद्धत शक्तियां।
- वैयक्तिक समायोजन।
- वृतिक लगाव, अपने कार्य के प्रति निष्ठाभाव, उत्साह एवं नैतिक लगाव।

परामर्शदाता के व्यैक्तिक गुण

रोजर्स ने एक प्रभावशाली परामर्शदाता के लिये चार व्यक्तिगत गुण बताये है।

- **समादार भाव–** इसका अभिप्राय परामर्शदाता द्वारा अध्येता के व्यक्तिगत गुणों का आदर करना चाहिये, इससे अध्येता में आत्मसम्मान उत्पन्न होगा।
- **स्वीकृति–** इस गुण के होने से अभिप्राय दूर अध्येता की भावनाओं एवं समस्याओं को स्वीकार करना तथा उन्हें उचित महत्व प्रदान करना।
- **यथार्थपरता–** अपने एवं अपने सेवार्थियों की भावनाओं एवं क्रियाओं के प्रति यथार्थपरक दृष्टिकोण रखना इसका अभिप्राय है कि परामर्शदाता की सेवार्थी

की अच्छी बातों को सराहना करना और उसे आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करें।

- **करूणा एवं सद्भाव–** परामर्शदाता दूर अध्येता की व्यथा कमजोरियों के प्रति करूणा का भाव रखना उनके साथ सहानुभूति एवं सद्भावपूर्ण व्यवहार प्रदर्शित करना।
- **स्टीफ्लेर एवं स्टीवर्ट के अनुसार–** परामर्शदाता में निम्नांकित गुण होना चाहियेः
- नैतिक व्यवहार।
- बौद्धिक योग्यता।
- संवेदनशीलता।
- बोधगम्यता।
- स्वीकृति।
- लचीलापन एवं नमनीयता।

परामर्शदाता के कार्य

परमार्शदाता को परामर्श सत्र में कुछ विशेष दायित्व निर्वहन करना पड़ता है–

- अपने विचारों को दूर अध्येता पर नहीं थोपे।
- दूर अध्येता के समस्याओं को पूरा महत्व देना चाहिये।
- परमार्शदाता को परामर्श सत्र में अपने परामर्श में विविधता लानी चाहिये प्रत्येक दूर अध्येता अलग क्षमता व समस्या से पूर्ण होता है।
- परामर्शदाता को दूर अध्येता के समक्ष सभी वैकल्पिक सभावनायें प्रस्तुत करना चाहिये।
- परामर्शदाता की सेवार्थी की समस्या पर विविध दृष्टिकोणों से विचार करना चाहिये।
- परामर्शदाता द्वारा दूरस्थ शिक्षा माध्यम से परामर्श की प्रक्रिया का निर्वहन किया जाना चाहिये।
- परामर्शदाता को दूर अध्येता को अधिकाधिक सेवाओं को प्रदान करना चाहिये।
- परामर्शदाता को विषय विशेष में पूरी तरह से ज्ञान प्राप्त करके ही परामर्श के लिये जाना चाहिये।

परामर्श सत्र पूरे मनोयोग एवं रूचि से संचालित करना चाहिये।

दूरस्थ शिक्षा मे दिये जाने वाले अन्य प्रकार के परामर्श

- समूह परामर्श जो कि एक पूरे समूह को निर्धारित स्थान पर निर्धारित समय पर

दिया जाता है।

- टेलीफोन द्वारा दिया जाने वाला परामर्श एक नवीन तकनीकी विधि है। यह कई रूपों में प्रचलित है।

1. एकल टेलीफोन विधि।
2. दूर–सम्मेलन विधि।
3. टेपयुक्त टेलीफोन विधि।

- पत्रों के द्वारा भी परामर्श दिया जाता है, किन्तु इसमें समय अधिक लगता है। इसमें द्विमार्गीय वार्तालाप सम्भव नहीं हो पाता है।
- अनेक दूरस्थ शिक्षण संस्थायें परामर्श सामग्री को हस्त पुस्तिकाओं के रूप में तैयार करती है, इसमें अध्येता को सभी सम्भावित समस्याओं के समाधान सम्बंधी सूचनायें दी जाती है।
- आडियो एवं विडियों कैसेटों के माध्यम से परामर्श हेतु इनका निर्माण किया जाता है। परामर्श हेतु आडियो कैसेट अधिक प्रयुक्त किये जाते हैं।
- दूरस्थ शिक्षा में रेडियो एवं दूरदर्शन के प्रसारण के माध्यम से भी परामर्श प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है। यद्यपि इसमें द्विमार्गी अन्तक्रिया का अभाव होता है।
- ई–मेल की सहायता से व्यक्ति परामर्श दिया जा सकता है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

11. परामर्श सत्रों के आयोजन कहां किया जाता है?

....

12. दूर शिक्षा में परामर्श सत्र किस पर केन्द्रित होती है?

....

13. परामर्शदाता को किसकी भावनाओं एवं व्यक्तित्व का आदर करना चाहिये?

....

14. परामर्शदाता को परामर्श देते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिये।

....

6.9 सारांश

इस इकाई में हमें दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था में उपबोधन/परामर्श के महत्व को समझा। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्येता हेतु सहायक सेवा के रूप में परामर्श सत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। परामर्श सत्र दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक एवं अध्येता के मध्य दूरी को कम करने के साथ इस नीरसता को समाप्त करते हैं। यह अध्येताओं के अकेलेपन एवं निराश्रित भावना को समाप्त कर अध्ययन काल में पूरा सहयोग करने का प्रयास करता है।

6.10 अभ्यास कार्य

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 300 शब्दों में लिखिये–

1. परामर्श के अर्थ एवं अवधारणा को स्पष्ट करते हुये यह सिद्ध कीजिये कि यह शिक्षण/अनु शिक्षण से किस प्रकार भिन्न है।
2. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में परामर्श सत्र की आवश्यकता को सोदाहरण सहित समझाइये।
3. परामर्शदाता के व्यक्तिगत विशेषताओं को इंगित करते इनके कर्तव्यों का उल्लेख कीजिये।

6.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. रामर्शदाता द्वारा विचारों को थोपना।
2. व्यक्तिगत तौर पर
3. स्वं शिक्षार्थी
4. विचार–विमर्श पूछ–ताछ, सलाह देने तर्क विवके तथा विचारों का परस्पर विनिमय।
5. वैयक्तिक सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है।
6. सन् 1984 में परामर्श कार्यक्रम का प्रारम्भ।
7. वास्तविक कक्षा शिक्षण की।
8. पाठ्यक्रम को समझने, तय करने, जारी रखने में समस्या।
9. विकासात्मक परामर्श।
10. शैक्षिक परामर्श शिक्षा कार्यक्रम में आ रही समस्याओं को दूर करने हेतु दिया

जाता है। गैर शैक्षिक पाठ्यवस्तु की समस्या के अतिरिक्त अन्य समस्याओं पर दी जाती है।

11. प्रत्यक्ष कक्षा सम्प्रेषण कर नियमित शिक्षण का स्वरूप।
12. अध्ययन केन्द्रो पर ।
13. अध्येता की सुविधा पर ।
14. दूर अध्येता की।
15. अपनी बात थोपे नहीं, समस्याओं को मुख्य केन्द्र बिन्दु बनाये।

6.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Dutt R. (1985) : Distance education in India, Its development & significance workshop on Distance education, New Delhi : Open School.

Holmberg B. (1986): Growth and staracture of Distance Education

London: Croom Helm.

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

इकाई 7– अधिन्यास

संरचना

7.1 प्रस्तावना

7.2 उद्देश्य

7.3 अधिन्यास की अवधारणा

7.4 अधिन्यास की उपयोगिता

7.5 अधिन्यास का सैद्धान्तिक आधार

7.6 अधिन्यास के प्रकार

7.7 अधिन्यास का मूल्यांकन

7.8 सारांश

7.9 अभ्यास कार्य

7.10 चर्चा के बिन्दु

7.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

7.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के कई जीवन्त पक्षों में से एक अधिन्यास अथवा अध्येताओं को दत्त कार्य प्रदान किया जाना है। दत्त कार्य का महत्व एवं उपयोगिता तथा उद्देश्य परामर्श सत्र की ही भांति है। यह दूर शिक्षा ने शिक्षक तथा छात्र के मध्य शैक्षिक संवाद तथा सम्प्रेषण को जन्म देता है। इसके पूर्व इकाई में आप परामर्श सत्रों के सम्बंध में विस्तार से अध्ययन कर चुके है। इस इकाई में हम अधिन्यास के विषय में विस्तार से जानकारी प्राप्त करेंगे।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि

- अधिन्यास के अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।
- अधिन्यास को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में महत्व को विवेचना कर सकेंगे।
- अधिन्यास के विशेषताओं का वर्णन कर सकेंगे।

- अधिन्यास की उपयोगिता को बता सकेंगे।

7.3 अधिन्यास की अवधारणा

अधिन्यास दूर शिक्षा का व्यावहारिक पक्ष है और यह दत्त कार्य और अंग्रेजी में **"असाइनमेन्ट"** कहलाता है। अधिन्यास दूर शिक्षा माध्यम के प्रत्येक प्रकार के साधारण एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में प्रदान किया जाता है। अधिन्यास भी दूर शिक्षा का जीवन्त पक्ष है, यह द्विमार्गी सम्प्रेषण का आधार है। इसके मुख्य विशेषताये है–

- यह विषय विशेष से सम्बंधित होते है।
- यह दूर अध्येता को स्वयं अध्ययन कर अपने क्षमतानुसार अभिव्यक्ति का अवसर देते है।

  यह मुख्य दूरस्थ शिक्षण संस्थान द्वारा सभी दूर अध्येताओं को स्व–अधिगम सामग्री के साथ प्रेषित की जाती है।
- यह व्याख्यात्मक भी होती है। इसमें अधिकांशतः स्वनिर्मित उत्तरों पर आधारित प्रश्न दिये जाते है।
- अधिन्यास का आन्तरिक मूल्यांकन किया जाता है। यह दूर अध्येताओं द्वारा स्थानीय या चयनित अध्ययन केन्द्रों पर जमा किये जाते है।
- अधिन्यास का आन्तरिक मूल्यांकन विषय विशेषज्ञ अध्यापकों द्वारा किया जाता है।
- अधिन्यास के मूल्यांकन पर उपलब्धि को ग्रेड या अंक के रूप में प्रदान किया जाता है।
- अधिन्यास को सत्रान्त परीक्षा के पूर्व जमा करना अति आवश्यक है।
- दूर अध्येता के लिये अधिन्यास का महत्व बहुत अधिक होता वरन् यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि दूर अध्येता अपना सम्पूर्ण दक्षता एवं ध्यान अधिन्यास पर ही लगाये रहते है।
- अधिन्यास के जॉचने पर अध्यापक को दूर अध्येता को लिखित रूप में प्रतिपुष्टि देना आवश्यक है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

7. अधिन्यास को दूर शिक्षा का जीवन्त पक्ष क्यों कहा जाता है ?

....

2. अधिन्यास की प्रकृति कैसी होती है?

....

3. अधिन्यास का मूल्यांकन कौन करता है ?

....

7.4 अधिन्यास की उपयोगिता

अधिन्यास का मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में बहुत उपयोगिता है, क्योंकि उससे दूर शिक्षा में शैक्षिक संवाद तथा सम्प्रेषण का माध्यम है। इसकी उपयोगिता को हम इन रूप में देख सकते हैं

- दत्त कार्य विद्यार्थी को शिक्षक सामग्री के बोध का ज्ञान देती है, कि अध्येता ने विषय सामग्री को कितना समझा है।
- यह दूर अध्येता को सतत् अध्ययन के लिये प्रेरित करते है, क्योंकि अधिन्यास को पूरा करके जमा करने के लिये वह लगातार अध्ययन करता है।
- अधिन्यास उसे किसी भी विषय सामग्री को वृहद स्तर पर समझने को व्यक्त करने का माध्यम देते हैं।

अधिन्यास को भली प्रकार से करने के लिये दूर अध्येता परामर्श सत्रों में उपस्थित होने के लिये बाध्य होते है।

अधिन्यास दूर अध्येता के अधिगम को सुदृढ़ करते है।

अधिन्यास के मूल्यांकन में दी गयी टिपण्णियों से दूर अध्येता को सही ढंग से आगे अधिगम हेतु मार्ग दर्शन मिलता है।

अधिन्यास दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक अध्येता के पृथकत्व को पूरा करता है। यह अध्येता को अध्यापक के सहयोग लेने का आधार बनता है, और अध्येता को

प्रोत्साहन मिलता है।

अधिन्यास दूरस्थ शिक्षा का सशक्त व्यावहारिक पक्ष है, इससे अध्येता को सत्रान्त परीक्षा के पूर्व हो अपने समस्याओं को जानने का अवसर मिलता है।

अधिन्यास अध्येता के स्व–अध्ययन, स्व–निर्देशन व स्व–मार्ग दर्शन का आधार देते हैं और अध्येता को अपने विचारों को सशक्त तरीके से रखने का मंच देते हैं।

अधिन्यास में दी गयी टिप्णियां विस्तृत एवं रचनात्मक हो तो वह अध्येता को उनकी उपलब्धियां एवं कमजोरी का ज्ञान सहज ही हो जाता है, और इससे उसे प्रतिपुष्टि मिलती है और अध्येता आवश्यकता पड़ने पर कार्यनीति बदल लेता है। दूर अध्येता अपने समय व अपने सुविधा के अनुसार अध्ययन करते हैं, इससे अध्ययन में अन्तराल एवं उदासीनता उत्पन्न हो जाती है, परन्तु अधिन्यास को निश्चित अवधि में जमा करने के दबाव में वे निरन्तर अध्ययन करने हेतु विवश होते है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

4– अधिन्यास को दूर शिक्षा का एक व्यावहारिक पक्ष क्यो कहा जाता है?

....

5– अधिन्यास दूर अध्येता को दूर संस्थानों से कैसे जोड़े रहता है?

....

7.5 अधिन्यास के सैद्धान्तिक आधार

अधिन्यास के महत्व एवं विशेषताओं जानने के पश्चात् यह जानने का प्रयास किया जाता है, विभिन्न पाठ्यक्रमों में अधिन्यास निर्धारण का आधार क्या है, और यह किन सिद्धान्तों पर आधारित होता है?

- **व्यापकता का सिद्धान्त** – अधिन्यास सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को समाहित करती है, और इसमें सम्पूर्ण पाठ्यक्रम समाहित रहता है, अर्थात् इसमें विषयवस्तु विशेष के सम्पूर्ण पक्षों को समेट कर दिये जाते है।
- **उपयोगिता का सिद्धान्त**– अधिन्यास उपयोगी होता है, अधिन्यास के निर्धारण में इस तथ्य का ध्यान रखा जाता है, कि अधिन्यास को लिखने

के बाद अध्येता को पाठ्यवस्तु का उपयोगी पक्ष तैयार हो जायेगा।

- **व्यावहारिकता का सिद्धान्त– अधिन्यास** का निर्धारण में इस तथ्य को ध्यान में रखा जाता है, कि वह व्यावहारिक हो, और इससे अध्यता कुछ नया सीखे और अध्येता को नये अनुभव दे एवं नया सिखाये।
- **अभिप्रेरण का सिद्धान्त** – अधिन्यास दूर अध्येता को नये पाठ्यवस्तु के अधिगम हेतु अभिप्रेरणा देते हैं। अधिन्यास के माध्यम से दूर अध्येता को अध्यापक से दी गयी टिप्पणियों एव अंको से आगे एवं सही दिशा में आग बढ़ने हेतु प्रेरणा मिलती है।
- **उद्देश्यपरकता का सिद्धान्त–** अधिन्यास को दूर अध्येताओं को निश्चित उद्देश्यों के तहत प्रदान किये जाते है, जैसे कि स्व–अधिगम का सिद्धान्त, उचित दिशा निर्देशन का उद्देश्य इत्यादि प्रमुख है।
- **वास्तविकता का सिद्धान्त–** अधिन्यास में वास्तविक भाव प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या पर बल दिये जाते हैं। अध्येताओं को इसके लिये आवश्यक तथ्यों को समझना पड़ता है। अध्येता को अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुतीकरण करना पड़ता है।
- **सतत् प्रतिपुष्टि का सिद्धान्त–** अधिन्यास प्रदान करने का एक प्रमुख उद्देश्य अध्येता को सतत् प्रतिपुष्टि देना है, जिससे किवह अपने अधिगम को सही दिशा दे सके।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए

ख– **इकाई के** अन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

5. **अधिन्यास प्रदान** करने का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

....

6. **सतत्** प्रतिपुष्टि का क्या लाभ है?

....

7.6 अधिन्यास के प्रकार–

दूर शिक्षा में अधिन्यास दो प्रकार के होते हैं–

7. शिक्षक द्वारा आकलित।

2. कम्प्यूटर द्वारा आंकलित।

कुछ कार्यक्रमों में अधिन्यास केवल शिक्षकों द्वारा आंकलन किया जाता है। कुछ में केवल कम्प्यूटर द्वारा और कुछ में दोनो ही आंकलन करते हैं। यह सतत् मूल्य निर्धारण का एक महत्वपूर्ण अंश है जो कि अन्तिम आकलन में योगदान देते हैं। यह सभी विद्यार्थियों के लिये आवश्यक होते हैं, और मुख्य परीक्षा से पहले ही इन्हें पूरा करना आवश्यक है। शिक्षक द्वारा अंकित किये जाने वाले पाठयक्रम टीक, लेखक/संकाय सदस्य बनाते है। ये प्रश्न छोटे/बड़े उत्तर निबंधात्मक, लघुउत्तरीय होते हैं। दूर अध्येता को इनके उत्तर स्वयं लिखने होते हैं। कुछ पाठ्यक्रमों में उन्हें एक परियोजना बनानी व सम्पन्न करनी पड़ती है या सम्पर्क कार्यक्रम/वर्कशाप में भाग लेना पड़ता है, और या दो या तीन अधिन्यास के समकक्ष होता है। दूर अध्येता को इन्हें पूरा कर अपने-अपने कार्यक्रम केन्द्रों में देते हैं। कार्यक्रम केन्द्र पर शैक्षिक उपबोधक उनका मूल्य निर्धारण करते है और उन पर अपनी टिप्पणियां लिख कर छात्रों को प्रतिपुष्टि प्रदान करने के लिये भेज देते हैं।

कम्प्यूटरीकृत अधिन्यास में भी अधिन्यास पाठ्यक्रम टीम संकाय द्वारा बनाये जाते हैं, इसके प्रश्न वस्तुनिष्ठ टाइप होते हैं। जिनमें दिये गये विकल्पों में से एक को चुनना होता है। एक विशेष प्रोफार्मा (ओ0एम0आर0) में अध्येता उत्तर पेन्सिल से प्रश्नों से सम्बंधित खाने में सही जगह को भर देता है। इसमें भी अध्येता को प्रति पुष्टि दी जाती है। इस तरह के प्रश्न तत्काल स्मरण व गहन अध्ययन को बढ़ावा देते है। दूर अध्यापक द्वारा जॉचे गये प्रश्न पारम्परिक दक्षतायें जैसे विषय पर चर्चा तर्को का उपयोग या किसी प्रयोग को करने को दक्षता का मूल्य निर्धारण होता है। इस प्रकार के अधिन्यास आंकलन की विद्या में एक बहुत बड़ी संख्या में छात्रों का अधिन्यास कार्य का आकलन कम समय में हो जाता है।

अधिन्यास का परिवीक्षण – अधिन्यास का परिवीक्षक एवं अनुरक्षण आदि आवश्यक है। अध्यापको द्वारा दत्त कार्यों के परिवीक्षण के निम्न उद्देश्य होते है।

- अंकन के मापदण्डों में एक सीमा तक एकरूपता स्थापित करना।
- अधिन्यास के लिखावट, विषय-सामग्री व प्रस्तुतीकरण को पर्याप्त टिप्पणियां देकर उसको गुणवत्ता सुनिश्चित करना। शिक्षकों द्वारा अंकित अधिन्यासों में से यादृच्छिक प्रक्रिया से चुने गये अधिन्यासों को मुख्यालय संकाय सदस्यों तथा इस कार्य हेतु नियुक्त पाठ्यक्रम टीम को भेजा जाता है और शिक्षक द्वारा दी गयी टिप्पणियां को आंकलन कराया जाता है। परिवीक्षण का मुख्य

उद्देश्य मूल्य निर्धारण शिक्षक को प्रतिपुष्टि देना नहीं वरन अधिन्यास तैयार करने वाले शिक्षकों को प्रतिपुष्टि देना है। परिवीक्षण की प्रक्रिया में निम्नलिखित पक्ष निहित है

प्रेषण–

- प्रेषण अनुसूची का निर्माण, समय पर अधिन्यास कार्य हेतु उयुक्त निर्देश आदि।
- उपयुक्त पाठ्यक्रम सामग्री तथा अधिन्यास का दूर अध्येताओं को प्रेषण।

प्रबंधन–

- दूर अध्येताओं द्वारा अधिन्यास का अध्ययन केन्द्रों में जमा किया जाना।
- शिक्षण केन्द्रों पर अधिन्यास का प्रबंधन।
- अंकन करने वालों को अधिन्यासों को पहुँचाना।
- मुख्यालय पर परिवीक्षण के लिये अधिन्यासी को भेजना,
- आंकलन प्रपत्रों को अध्ययन केन्द्रों से मुख्यालय पहुँचाना।
- मासिक अधिन्यासों को अध्ययन केन्द्रों में क्षेत्रीय केन्द्रों में भेजना।

शैक्षिक पहलू –

- सभी श्रेणियो को सही उत्तर पर प्रदान करना।
- दी गयी टिप्पणियों का औचित्य का निर्धारण।
- अध्यापक द्वारा प्रदत्त टिप्पणियों की उपयुक्तता
- गलतियों को इंगित करना।
- अध्यापन से सम्बंधित टिप्पणियां देना।
- अधिन्यासों पर उपबोधकों की टिप्पणियां का निर्धारण।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उत्तर लिखिए

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

8. परिवीक्षक में क्या किया जाता है?

....

9. परिवीक्षक किसको प्रतिपुष्टि देने के लिये होता है ?

....

7.7 अधिन्यास में मूल्यांकन

अधिन्यास का दूर शिक्षा में मात्र लेखन अभ्यास हेतु ही महत्व नहीं है वरन् इनका शैक्षिक महत्व भी है। शिक्षक का उद्देश्य अध्येताओ के अधिगम स्तर को बढ़ाना होता है। इसीलिये अधिन्यास में अध्यापक टिप्पणी के माध्यम से संवाद कर अध्येता का मार्गदर्शन करता है। अधिन्यास मूल्यांकन दो तरफा सम्प्रेषण दूर शिक्षा के इन उद्देश्यों की पूर्ति करता है। अध्येताओं के शैक्षिक विकास का आंकलन और स्व–मूल्यांकन हेतु अध्येताओं को एक उपकरण प्रदान करता है जिससे अध्येता अपनी शैक्षिक आवश्यकताओं स्थिति की पहचान कर सके। अधिन्यास पर लिखी गयी टिप्पणियों के माध्यम से शिक्षण को रूचिकर बनाने के लिये अध्येता को टिप्पणी को पढ़ने हेतु अभिप्रेरित करना चाहिये। अध्यापक की टिप्पणियां अध्येता के द्वारा प्रस्तुत अधिन्यास के अनुकूल ही होना चाहिये। अध्यापक टिप्पणियां मुख्यतः दो प्रकार की होती है।

इ. गैर शैक्षिक टिप्पणियां

ख. शैक्षिक टिप्पणियां

गैर शैक्षिक टिप्पणियां

ø हानिकारक टिप्पणी

इस प्रकार की टिप्पणियां अध्येताओं को हतोत्साहित करती है, और उन्हें दुख पहुॅचाती है। इनसे दूर अध्यापन–अध्ययन की प्रक्रिया को लाभ नहीं होता है। इसके कारण बहुत से विद्यार्थी अपनी शिक्षा बीच में ही छोड़ देते है। अध्येताओं को प्रोत्साहित करने के स्थान पर ये उसे हतोत्साहित करते है। ऐसी टिप्पणी असभ्यता की श्रेणी में आती है और इनसे अध्यापक व अध्येता के बीच अच्छे सम्बंध नहीं बनते। कुछ अध्येता इनका विरोध कर सकते हैं, और उनके अध्यापक के प्रति घृणा की भावना का संचार हो सकता है। इन टिप्पणियां से सम्प्रेषण के सभी मार्ग अवरूद्ध हो सकते है।

ø खोखली टिप्पणियां

इस तरह की टिप्पणिया छात्रों के लिये बेकार होती है, इनमें कोई सुझाव नहीं होते, ये शिक्षण प्रक्रिया में सहायक होते है।

ø भ्रामक टिप्पणियां

कभी–कभी अध्यापक ऐसी टिप्पणियां लिखता है जो अध्येता को भ्रमित करती है और उन्हें गलत रास्ते पर डालती है, अध्येता को ऐसे कार्य को कहा जाता है जो उस के

लिये उद्देश्य विहिन होते है। इस तरह की टिप्पणीयों का अधिगम प्रक्रिया पर प्रतिकूल असर पड़ता है। कभी–कभी स्वयं अध्यापक अज्ञानवश छात्र के सही उत्तरों को गलत बता देता है।

ø व्यर्थ / निष्फल टिप्पणियां

इस प्रकार की टिप्पणियां अध्येता के लिये कोई अर्थ नहीं रखती न ये उसको कोई लाभ पहुँचाती है यह न तो प्रश्न उठाती है, न ही किये गये कार्य को सही बताती है। कभी–कभी दत्तकार्य पढ़ते समय अध्यापक कुछ चिन्ह लगाता जाता है।

ø नकारात्मक टिप्पणी

इन टिप्पणियों का उद्देश्य छात्रों को उसकी कमजोरियां बताना होता है, उदाहरणार्थ यह उत्तर उचित नहीं है। इनमें छात्रों के लिये पूरा निर्देश नहीं होता । दूर शिक्षक को यह बताना चाहिये कि क्या जोड़ने अथवा बदलने से उत्तर पूरा सही होता है।

शैक्षिक टिप्पणियां

ø सकारात्मक

सकारात्मक टिप्पणियां हमेशा दूर अध्येता को प्रोत्साहित करती है। यह सीध ी, स्पष्ट तथा सटीक होती है। इनकों लिखने के लिये काफी स्पष्टता तथा धैर्य की जरूरत पड़ती है। इनका उपयोग छात्रों के सही उत्तर के पक्ष में किया जाता है।

ø रचनात्मक

इस तरह की टिप्पणियों में उत्तर को सुधारने के लिये रचनात्मक सुझाव होते है। उदाहरणार्थ दो तीन उदाह णों के उपयोग से तुम अपने उत्तर को सशक्त बना सकते थे।

ø पूर्ण टिप्पणियां

दत्त कार्य पर अपनी विस्तृत प्रतिक्रिया को शिक्षक एक पृथक मूल्य–निर्धारण प्रपत्र पर लिखता है। यह टिप्पणियां पूरे दत्त कार्य के विभिन्न आयामों जैसे सामग्री का औचित्य, जानकारी, विस्तार, तार्किकता, योजना, विवरण, आकार आदि पर आधारित होती है।

ø वैयक्तिक टिप्पणियां

व्यक्तिगत सम्प्रेषण का उद्देश्य दूर विद्यार्थी में अकेलेपन की भावना को कम करना होता है, और एक विस्तृत वैयक्तिक टिप्पणी लिखना जिससे कि अध्येताओं की अकेलेपन की भावना कम हो, शैक्षिक टिप्पणी लिखने से कहीं अधिक मुश्किल है। व्यक्तिगत–सम्प्रेषण के लिये शिक्षक के पास तीन गुणों का होना आवश्यक है–

क. अति उच्च स्तरीय धैर्य

ख. भाषा कुशलता

ग. टिप्पणियों को सही स्थान पर देने की सूझबूझ

अध्येता के लिये वैयक्तिक टिप्पणियां बहुत आवश्यक है, क्योंकि इससे उसका भावना पक्ष सम्बंधित है। इससे अध्यापक और अध्येता एक–दूसरे के नजदीक आ जाते हैं और उनके बीच शैक्षिक सम्बंध सुदृढ़ होते है, क्योंकि अध्येता को यह लगता है कि कोई उसकी मदद करने के लिये है। उसका अध्यापक को अपनी कठिनाइयां लिखने के लिये हौसला भी बढ़ता है और वैयक्तिक रूप से उसको अपनी समस्याओं का निदान मिलता है।

दूरस्थ अध्यापक को टिप्पणियां लिखने का अच्छा प्रशिक्षण मिलना चाहिये। गैर–शिक्षण टिप्पणियां उन्हें कभी नहीं लिखनी चाहिये।

श्रेणीयन

श्रेणीयन द्वारा मूल्याकन या मापन को दर्शाना भारत में अपेक्षाकृत हाल का एक नवाचार है। किन्तु अंकों द्वारा पारम्परिक रूप से मापन करना या श्रेणीयन नवीन प्रणाली दोनों ही परीक्षा परिणाम अथवा मूल्य निर्धारण को घोषित करते हैं और उनका विश्लेषण करते हैं। अंकों द्वारा मापन एक अरसे से चलने वाली प्रणाली है और इसकी जड़े बहुत गहरी है। आज भी अधिकतर शैक्षिक संस्थायें व शिक्षा प्रणाली इसी को अपनाती है। अंको द्वारा परीक्षा परिणाम 0–100 के पैमाने पर दर्शाये जाते है जबकि श्रेणीयन प्रणाली में परिणाम 5,7,9 अंको में दर्शाये जाते हैं, और इन्हें आमतौर ए,बी,सी,डी,ई,एफ वर्णो द्वारा अथवा 1,2,3,4,5 अंको में चिन्हित किया जाता है। प्रत्येक प्रणाली के अपने गुण–दोष है। किन्तु विभिन्न परिस्थितियों में इनके गुण व दोषों का अनुपात भिन्न हो सकता है। एक परिस्थिति में गुण अधिक हो सकते हैं, और दूसरी में दोष अधिक। इसलिये जब भी किसी वैकल्पिक प्रणाली को अपनाया जाता है, तो एक नवाचार का जन्म होता है। अंकन प्रणाली परीक्षाा परिणामों को अंकों में दर्शाती है और इसका उपयोग विद्यार्थियों को विभिन्न पाठ्यक्रमों को चयन करने में किया जाता है। परन्तु इस प्रणाली में भी बहुत दोष है।

अंकन प्रणाली के दोष

अंकन प्रणाली का मुख्य दोष है अंकन प्रक्रिया में त्रुटि का अंश। इस त्रुटि के दो मुख्य कारक है–

1. परीक्षक भिन्नता

2. विषय भिन्नता

1. परीक्षक भिन्नता

प्रश्न पत्र आमतौर पर दो प्रकार के होते हैं, वस्तुनिष्ठ और लघु दीर्घ उत्तर प्रकार। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर का अंकन चाहे कोई भी परीक्षक करे अंक वही मिलेंगे जबकि लघु/दीर्घ उत्तर प्रकार के अंकन में विभन्न परीक्षक के द्वारा अंकन करने पर अंकों में विभिन्नता आती । कभी–कभी तो एक ही परीक्षक द्वारा विभिन्न अवसरों पर किये गये अंकन में असमानता देखी जा सकती है।

2. विषय भिन्नता

अंकन की पारम्परिक प्रक्रिया में अंकों की निम्न व उच्च सीमा विषयानुसार बदलती है। जहां गणित में यह सीमा 0–100 की होती है वही साहित्य में यह सीमा 15–60 के बीच की भी होती है। ऐसी अवस्था में विभिन्न विषयों के अंकों की आपस में तुलना करना कठिन होता है। अतः गणित में 70 प्रतिशत अंक प्राप्त छात्र को साहित्य में 60 प्रतिशत अंक पाये छात्र से श्रेष्ठ नहीं माना जा सकता है।

संक्षेप में, अंकन प्रणाली की तीन मुख्य त्रुटियां निम्नलिखित है :–

1. यह छात्र क्षमता का वस्तुपरक और सूक्ष्म मापन नहीं है।
2. अतः परीक्षक भिन्नता से अंकन में अन्तर आता है।
3. विभिन्न विषयों के अंकों की परस्पर तुलना गलत है।

शिक्षकों को ग्रेड देने के उचित ज्ञान का अभाव– अधिकांशत शिक्षकों को ग्रेड देने का महत्व नहीं पता होता है, इससे वे आमतौर पर उदासीनता पूर्वक अंकन करते है।

अंकन प्रकिया के दोषों को दूर करने के लिये श्रेणीयन करने की प्रक्रिया आरम्भ की गयी। यह विषय विशेष की विभिन्नतओं से अप्रभावित रहती है। इसके मुख्य लाभ निम्नलिखित है–

1. यह प्रक्रिया अंकन प्रक्रिया से अधिक विश्वसनीय तथा सूक्ष्म मापन की प्रक्रिया है। इसमें 0–100 का मान 5/7/9 अंशमान तक सीमित है, तथा ये अध्येता क्षमता का सम्पूर्ण द्योतक है।
2. सूक्ष्म व शुद्ध माप होने के कारण इसमें परीक्षक भिन्नता से त्रुटि होने की सम्भावनायें कम है।
3. विषय भिन्नता के कारण त्रुटि होने की सम्भावनायें भी बहुत कम हैं क्योंकि श्रेणीयन की प्रक्रिया से विभन्न विषयों के अंको/श्रेणियों के मध

य अंतर का अल्पीकरण किया है।

बोध प्रश्न

टिप्पणी क– नीचे दिए गये रिक्त स्थान में अपना उतर लिखिए।

ख– इकाई के अंन्त में दिए गये उतरों से उत्तर का मिलान करें।

17. शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक टिप्पणियों की सूची बनाइयें ?

....

12. शिक्षक को कैसी टिप्पणी देनी चाहियें ?

....

7.7 सारांश

इस इकाई में हमने अधिन्यास की अवधारणा, महत्व, उद्‌देश्य एवं उसके परिवीक्षण के विषय में चर्चा की है। इसके अतिरिक्त अध्यापक द्वारा दी जाने वाली टिप्पणियों के विषय में जाना। इसके अतिरिक्त दत्त कार्यो के विभिन्न प्रकारों के साथ यह भी जाना कि अध्यापक को टिप्पणी अधिन्यास पर कैसी देनी चाहियें। इस इकाई के माध्यम से आपने अधिन्यास के बारे में काफी जानकारी प्राप्त की होगी।

7.8 चर्चा के बिन्दु

अधिन्यास को अचित प्रकार से करके उसका मुल्यांकन का उचित आधार ही दूर शिक्षा माध्यम को सशक्त अधिगम को जन्म देता है। चचर्स कीजिए।

7.9 अभ्यास कार्य

1. अधिन्यास का दुर शिक्षा में क्या महत्व एवं उपयोगिता है?
2. अधिन्यास में मूल्यांकन पद्धति की विवेचना कीजिए।

7.11 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. प्रत्यक्ष सम्प्रेषण को।
2. व्याख्यात्मक
3. विषय विशेषज्ञ
4. यह शिक्षण प्रक्रिया को प्रत्यक्ष कर कुछ कार्य करवाता है

5. परामर्श सत्र में आने और पूरा करने में होनें वाली समस्या
6. निरन्तर पढने व सीखने हेतु
7. अपने को सुधार कर नये दिशा में अध्ययन
8. कुछ अधिन्यास मूल्यांकन हेतु अध्ययन केन्द्रों से मुख्यालय भेजे
9. अधिन्यास तैयार करने वाले शिक्षकों
10. गैर शैक्षिक – अनावश्यक, फिर से करों, प्रश्न चिन्ह, वर्णन स्पष्ट नही

    शैक्षिक – प्रासंगिक है, उदाहरण देकर उत्तर सशक्त बनाओं।

7.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Dutt R. (1985) : Distance education in India, Its development & significance workshop on Distance education, Open School New Delhi.

Holmberg Barje(1986): Growth and staracture of Distance Education, London: Croom Helm.

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन ।

इकाई– 8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

संरचना–

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 दूर शिक्षा में संचार माध्यम

8.4 माध्यमों का वर्गीकरण

8.5 माध्यमों का उपयोग

8.6 प्रमुख अमुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम

8.7 शैक्षिक दूरदर्शन

8.8 शिक्षण मशीन

8.9 कम्प्यूटर की सहायता द्वारा अनुदेशन

8.10 सारांश

8.11 अभ्यास कार्य

8.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

हमने दूर शिक्षा के विकास के सम्बंध में उसकी अवधारणा, क्षेत्र आवश्यकता, विशेषता, विकास एवं संगठन पर ध्यान केन्द्रित करते चर्चा की। इसके साथ ही दूर शिक्षा द्वारा प्रदत्त विविध छात्र सहायता क्रियायें के विशेषताओं के विषय में जानकारी ली। दूर शिक्षा के अध्येता होने के कारण यह तो समझते होंगे कि दूर शिक्षा में विविध संचार माध्यमों की भूमिका अहम होती है। इन माध्यमो एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग के बिना दूर शिक्षा प्राप्त करना अति कठिन है, इनके द्वारा मूलरूप से अध्ययन एवं अध्यापन के कार्य किया जाता है। यह इकाई पूर्ण रूपेण दूर शिक्षा के अध्यापकों और अध्येताओं को उपलब्ध माध्यमों और प्रौद्योगिकी के बारे में उनकी शैक्षणिक उपयोगिता सहित चर्चा प्रस्तुत करती है।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- ❖ दूर शिक्षा में संचार माध्यमों की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।
- ❖ माध्यमों एवं प्रौद्योगिकी के सम्बंध को आख्यायित कर सकेंगे।
- ❖ माध्यमों को वर्गीकृत कर सकेंगे।
- ❖ संचार माध्यमों का दूर शिक्षा में अधिगम एवं अध्यापन पर प्रभाव का वर्णन कर सकेंगे।

8.3 दूर शिक्षा में संचार माध्यम

अनुदेशनात्मक माध्यम को शिक्षण अधिगम प्रक्रिया और शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से महत्वपूर्ण भूमिका तथा योगदान है। शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में माध्यमों का सार्थक उपयोग है। माध्यमों का उपयोग कक्षा शिक्षण तथा दूरस्थ शिक्षा दोनों में किया जाता है। यह शिक्षण विधि तथा शिक्षण माध्यम दोनों में ही समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। शिक्षण विधियों का पाठ्यवस्तु के प्रस्तुतीकरण और शिक्षण माध्यमों का पाठ्यवस्तु के सम्प्रेषण में प्रयोग किया जाता है। शिक्षण विधि का सम्बंध पाठ्यवस्तु तथा समय से होता है और माध्यम का भी सम्बंध पाठ्यवस्तु तथा समय से होता है। माध्यम के उपयोग से दूरी हेतु सुविधा प्रदान की जाती है। माध्यम से छात्रों के घर से पहुँचा जाता है। प्रत्यक्ष शिक्षण में पाठ्यवस्तु के प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण हेतु समुचित शिक्षण विधियों का प्रयोग करते हैं। माध्यम के अन्तर्गत शिक्षण विधि सम्मिलित होती है। दूरस्थ शिक्षा में माध्यम तथा विधि दोनों ही समान रूप से उपयोगी होती है, जबकि कक्षा शिक्षण में शिक्षण विधि का उपयोग अधिक होता है। साधारणतः मुख्य माध्यम का प्रयोग किया जाता है। विभिन्न माध्यमों में विभिन्न प्रकार के ज्ञान को व्यक्त करने के प्रतीकों पद्धतियों में भिन्नता होती है, सोलोमन (1979) के अनुसार तीन प्रकार की पद्धतियां है– अंकीय, सादृश्य मूलक, और अनुसंकेतक। अंकीय पद्धति मूलपाठ पर आधारित होती है, तथा तार्किक दृष्टि से पुस्तकों, कम्प्यूटरों/संगणकों से सम्बंधित होती है। सादृश्य मूलक पद्धति अधिक अभिव्यक्तिपरक होती है, ओर गत्यात्मक कार्यकलापों के सम्पादन का प्रतिनिधित्व करती है। जैसे टेलीविजन, दूरदर्शन आदि। अनुसंकेतक पद्धति चित्रों रंगों और चिन्हों पर आधारित होती है। जिनके द्वारा ज्ञान को चिन्हित किया जाता है। दूर शिक्षा में अध्येता को वही ज्ञान प्रदत्त करने के लिये जो परम्परागत प्रणाली के अध्येता को प्राप्त होता है, हम मिश्रित माध्यमों का प्रयोग करते हैं जो सभी प्रतीक पद्धतियों का प्रतिनिधित्व करते है।

दूर शिक्षा का प्रत्येक विशेषज्ञ माध्यमों को समन्वित करने का प्रयास करता है। शिक्षा नियोजन में यह निर्णय लिया जाता है कि किस प्रकार के माध्यम की व्यवस्था

की जानी चाहिये। विविध माध्यम शिक्षा के अलग कार्यों के लिये उपयोगी होते है। दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त किये जाने वाले माध्यमों को दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं।

i. मुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम।

ii. अमुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम।

1— **मुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम—** यह साधन मितव्ययी एवं सरल है। यह जीवंत शिक्षण की दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण नहीं। इसके विषय में हम पूर्व में जान चुके है।

2— **अमुद्रित माध्यम—** दूरस्थ शिक्षा में अमुद्रित माध्यम को अधिक लोकप्रिय बनाने का पूरा प्रयास किया जा रहा है। तकनीकी माध्यमों का जन साधारण के लिये महत्व अधिक हो गया है। इसकी मुख्यतः यह विशेषताये है—

इन माध्यमों का उपयोग दूरस्थ—शिक्षा में तेजी से बढ़ेगा। शिक्षा प्रणाली के अन्तर्गत शिक्षण विधियों के सम्प्रेषण माध्यमों, अनुदेशन— अधिगम प्रणाली में विकास प्रवृत्ति पाई जाती है। तकनीकी माध्यमों का जनसाधारण के लिये महत्त्व अधिक हो गया है। अमुद्रित माध्यम की प्रमुख विशेषतायें अधोलिखित है—

1. **विविध अधिगम उद्देश्यों के प्राप्ति में सहायक है—** दूरस्थ—शिक्षण में आमने—सामने शाब्दिक—सम्प्रेषण की अपेक्षा अन्य माध्यमों का उपयोग आवश्यक हो गया है, क्योंकि अधिगम उद्देश्यों में विविधता अधिक पाई जाती है। मुद्रित—माध्यम के द्वारा सभी उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं की जा सकती है।

2. **विशिष्ट—अधिगम क्रियाओं में सार्थक योगदान है—** कुछ विशिष्ट अमुद्रित माध्यम के प्रारूप दूरवर्ती—छात्रों के अधिगम हेतु अधिक प्रभावशाली होते हैं। श्रव्य टेप, कम्प्यूटर प्रयोग अभ्यास तथा कौशल विकास के लिये अधि ाक उपयोगी होती है। चल—चित्र तथा अन्य तकनीकी माध्यम भौतिक विज्ञान विषय के शिक्षण में उपयोगी है। सिद्धान्तों, नियमों में सम्बंधों को समझने में भी सहायक होते हैं, श्रव्य सामग्री द्वारा सामाजिक विषयों का शिक्षा प्रभावी ढंग से किया जाता है। छात्रों को चल—चित्रों की सहायता से अभिप्रेरित भी किया जाता है।

3. **छात्रों को मनोवैज्ञानिक अभिप्रेरणा दी जाती है—** तकनीकी माध्यमों से छात्रों को मनोवैज्ञानिक रूप में अभिप्रेरित किया जाता है जिससे अधिगम क्रिया प्रभावशाली होती है। अधिगम सम्बंधी क्रियायें —ध्यान केन्द्रित करना; अभिप्रेरित करना, तार्किक क्षमताओं के विकसित करने को बढ़ावा मिलता है। अमुद्रित

माध्यम, मुद्रित माध्यम से अधिक प्रभावशाली होता है।

4. **दूरस्थ छात्रों में अध्ययन के प्रति लगन पैदा होती है–** अनेक शोध अध्ययन में अमुद्रित माध्यमों द्वारा अध्ययन के प्रति लगन उत्पन्न होती है, उन्हें सीखने में सुगमता मिलती है। परम्परागत पुस्तकों से छात्रों में लगातार तत्परता नहीं होती है, और उन्हें कोई पुनर्बलन भी नहीं मिलता है। तकनीकी माध्यमों से छात्रों में तत्परता और अध्ययन के प्रति लगातार लगन उत्पन्न होती है। लुमसडैन (1958) ने अध्ययन द्वारा पाया कि अमुद्रित माध्यमों से प्रशिक्षण तथा कौशलों के विकास के लिये अभ्यास का अवसर अधिक मिलता है। मौखिक अनुक्रिया से सीखने में अधिक सहायता मिलती है। चल–चित्रों द्वारा तथा दृश्य कैसिट के वाद–विवाद कार्यक्रम से भी अधिगम में वृद्धि होती है।

5. **दूरस्थ–छात्रों की एकाग्रता में वृद्धि होती है–** तकनीकी अमुद्रित माध्यमों द्वारा अनुदेशन के प्रस्तुतीकरण तथा सम्प्रेषण के प्रति छात्रों की एकाग्रता में वृद्धि होती है। कक्षा–शिक्षण की अपेक्षा दूरदर्शन और अनुदेशन के प्रति एकाग्रता अधिक होती है। माध्यमों द्वारा अनुदेशन के स्वरूप के प्रस्तुतीकरण में उद्‌देश्यों को भली–भांति परिभाषित किया जाता है, अनुदेशन द्वारा समुचित वातावरण उत्पन्न किया जाता है, जिससे उद्‌देश्यों की प्राप्ति की जाती है। परम्परागत अनुदेशन सामग्री तथा पाठ्य–पुस्तकों में उद्‌देश्यों को परिभाषित किया जाता है, परन्तु समुचित वातावरण उत्पन्न नहीं किया जाता, जिससे उद्‌देश्यों की प्राप्ति की जा सके। तकनीकी माध्यमों की सहायता से समुचित वातावरण उत्पन्न किया जाता है, जिससे छात्रों की एकाग्रता में वृद्धि होती है, और उसमें वे अधिक क्रियाशील रहते हैं।

6. **व्यक्तिगत छात्रों की आवश्यकता को भी ध्यान में रखा जाता है–** अमुद्रित माध्यम अपेक्षाकृत लचीला अधिक होता है, जिसमें छात्रों की आवश्यकताओं, अभिरूचियों को भी महत्व दिया जाता है। व्यक्तिगत अनुदेशन सामग्री की भी रचना की जाने लगी है। विविध प्रकार के माध्यमों द्वारा इस प्रणाली को लचीला बनाया जाता है, और छात्रों को उनके अनुरूप सीखने का अवसर दिया जाता है। अभिक्रमित अनुदेशन सामग्री द्वारा प्रत्येक छात्र को अपने अनुसार सीखने का अवसर दिया जाता है, यह सुविधा परम्परागत पुस्तकों में तथा कक्षा–शिक्षण में नहीं होती है। व्यक्तिगत अनुदेशन सामग्री में एक समूह की विशेषताओं के अनुसार सीखने की व्याख्या की जाती है। अपंगु छात्रो हेतु विशिष्ट अनुदेशन सामग्री की रचना की जाती है। छात्रों की

विशेषताओं के अनुसार समायोजन की व्याख्या की जाती है। समुचित माध्यम तथा समुचित अनुदेशन सामग्री का चयन किया जाता है।

7. **दूरस्थ–छात्र अपनी उपलब्धियों का निरीक्षण या जॉच भी करता है–** कुछ माध्यमों में ऐसी व्यवस्था की जाती है, कि छात्र अधिगम के साथ अपने सीखने की अनुक्रियाओं की जॉच भी साथ–साथ करता है, जिससे उन्हें पुनर्बलन भी मिलता है। साथ ही उनकी गलतियों के लिये सुधारात्मक अनुदेशन सामग्री भी दी जाती है। छात्रों को अपने सीखने की गति से अवसर दिया जाता है। छात्रों को सीखने में पूरी स्वतंत्रता दी जाती है।

8. **शिक्षक की भूमिका निर्वाह का अवसर दिया जाता है–** अमुद्रित माध्यमों के शिक्षकों को भी अपनी भूमिका निर्वाह का अवसर दिया जाता है। दूरस्थ शिक्षा में सहायक प्रणाली के अन्तर्गत व्यक्ति सम्पर्क कार्यक्रमों का अयोजन किया जाता है। छात्र शिक्षकों से सम्पर्क करके अपनी कठिनाईयों का निवारण तथा स्पष्टीकरण भी करते हैं। माध्यमों की उपयोगिता में शिक्षक अधिगम परिस्थितियों की व्यवस्था करता है। शिक्षक छात्रों की कठिनाइयों का निदान करके अपनी समस्याओं हेतु परामर्श तथा निर्देशन की भी व्यवस्था करता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1– मुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम को दूर शिक्षा में मुख्यतः किस नाम से जाना जाता है?

....

2– संचार माध्यंम की मुख्यतः चार विशेषताओं के बारे में बताइये।

....

3– अनुदेशन पद्धति किस पर आधारित होता है।

....

8.4 माध्यमों का वर्गीकरण

यद्यपि माध्यमों को मूलरूप से मुद्रित तथा अमुद्रित दो वर्गों में बॉटा जा सकता है, विशेषज्ञों ने माध्यमों के वर्गीकरण प्रस्तावित किया है। इस अनुभाग में हम माध्यमों

के वर्गीकरण की चर्चा करेंगे जिससे दूर शिक्षा के अध्यापकों और अध्येताओं के लिये माध्यमों की तैयार सूची प्राप्त की जा सके। सन् 1974 में रोमिस जोवस्की ने सूचना के आदान–प्रदान के लिये प्रयुक्त ज्ञानेन्द्रियों के उपयोग के आधार पर अपने वर्गीकरण का सिद्धान्त प्रतिपादित किया। इस वर्गीकरण को बिल्कुल अपर्याप्त समझा गया क्योंकि इसमें केवल एक ही कसौटी का उपयोग किया गया था। दूरस्थ शिक्षा की शिक्षण अधि ागम प्रक्रिया में, श्रव्य का निचला आधा, दृश्य–श्रव्य, तथा दृश्य स्तम्भों का उपयोग किया जा सकता था, तथा रोमिस जोनवस्की के अनुसार माध्यमों का प्रयोग सांतत्यक रूप में स्वप्रस्तुति तक किया जा सकता था।

दूसरी ओर स्करम्भ (1973) ने माध्यमों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है, अर्थात् बड़े माध्यम तथा छोटे माध्यम जो कीमत तथा नवाचार पर आधारित है। उनके अनुसार टी.वी. ध्वनि चलचित्र तथा कम्प्यूटर बड़े माध्यम हैं तथा पारदर्शी चित्र, स्लाइड आदि छोटे माध्यमों को निरूपित करते हैं। स्पार्क (1988) ने पद्धति और माध्यम में किसी प्रकार का अन्तर किये बिना, निम्नांकित सूची प्रस्तुत की है–

1. **मुखाभिमुख–**
    - (क) व्याख्यान
    - (ख) कक्षायें (एक पाठशाला की तरह)
    - (ग) छोटे समूह में विचार–विमर्श, जो अक्सर सुधार के लिये प्रयोग में लाये जाते है।
    - (घ) अनुशिक्षकीय (तीन विद्यार्थियों के लिये एक अध्यापक)
    - (ड़) स्व–सहायता समूह (यथा बिना अध्यापक के छोटे समूह)

संवेदी वाहिकायें

श्रव्य	श्रव्य–दृश्य	श्रव्य	स्पृश्य
	बंद परिपथ टी.वी.	चाक बोर्ड	निर्देशन/ वास्तविक
		फैल्ड बोर्ड	उपस्करों या वस्तुओं पर
अध्यापक	(श्रोताओं के लिय	चुम्बकीय बोर्ड	अध्यापक चित्रण और
	विवरण प्रवर्धक	यर्थाथ वस्तुयें	/अथवाकार्यकारी
	के रूप में प्रयुक्त)	चित्र	प्रतिरूप व्यंग चित्र
भाषा प्रयोगशालाएं		आर्ट	
अध्यापक निर्मित टेप	बंद परिपथ टी.वी.	फोटो	खराबी के नमूने

श्रव्य–कार्यक्रम प्रेरण परिपथ प्रणाली	(विडियो टेप के प्रतिश्रवण के लिये प्रयुक्त) श्रव्य/ दृश्य कार्यक्रम	प्रतिरूप इश्तिहार पाठ्य–पुस्तकें फिल्म सलाइड	बनावट फिनिश इत्यादि
आफ–शैल्फ टेप अभिलेख	आफ–स्लाइड/ टेप आफ–शैल्फ ध्वनी फिल्में मुक्त वाहिका टी.वी.	पारदर्शिकाएं फिल्मस्ट्रिप 8 मि.मि.कस्टम निर्मित फिल्में	
रेडियो प्रसारण		(लघु) अवधारणा परिपथ आफ शैल्फ मुद्रित सामग्री लाइब्रेरी आफ शैल्फ ध्वनि रहित फिल्में	प्रशिक्षण युक्तियां जो कृत्रिम प्रतिपुष्टि अनुरूपक प्रदान करते हैं अनुकूली अध्यापन मशीन

(क) पाठ्य पुस्तकें

(ख) संरचित अनुशिक्षक मूल पाठ (जैसे कि मुक्त विश्वविद्यालय यू0के0 में प्रयोग में लाये जाते है)

3. चलचित्र अथवा टी0वी0 कार्यक्रम

(क) प्रसार के लिये

(ख) टी0वी0 टेप के लिये फिल्म

4. श्रव्य

(क) श्रव्य प्रसार के लिये

(ख) श्रव्य टेप

(ग) श्रव्य दर्शन (जैसे मुद्रित चित्रों द्वारा साधित श्रव्य टेप)

(घ) टेलीफोन वार्तालाप सभाये करना

1. श्रव्य आलेखिकी जैसे की साइवलोप (बोले हुये कथन तथा आलेखिकी का

श्रव्य टेप पर लेखन या अक्षरांकित साक्ष्य टी0वी0 पर दिखाने के लिये)।

2. **कम्प्यूटर साधित अधिगम–**

(क) टेली टाइप अंतकों का प्रयोग करना।

(ख) चाक्षुष प्रदर्श इकाई का प्रयोग करना (जैसे दूर–मूल. पाठ)

(ग) डाक का प्रयोग करना (दूरी शिक्षण के लिये) और कम्प्यूटर से संवाद तैयार करने के लिये शब्द संसाधित्र (प्रणाली) का प्रयोग करना।

7. **प्रयोगशाला अथवा प्रायोगिक कार्य**

(क) अन्तर्निहित शिक्षण प्रयोगशालायें।

(ख) गृह अथवा कार्य के समय प्रयोग के लिये प्रायोगिक यंत्रों पर आध ारित।

(ग) परियोजनायें

8. **दत्त कार्य**– इन्हें उपर्युक्त में से किसी के साथ मिलाया जा सकता है–

1993 में लौरिलार्ड ने माध्यमों के वर्गीकरण की एक अत्यन्त व्यापक विधि प्रस्तावित की। उनके अनुसार सभी माध्यमों को चार श्रेणियों में रखा जा सकता है। विमर्शी–अनुकूली, अन्तःक्रियात्मक तथा मननात्मक। उनका तात्पर्य माध्यमों के शिक्षण कार्य में उपयोग से था और माध्यमों का वर्गीकरण उनकी क्रियाशीलता के स्तर अधिगम प्रक्रिया में स्थान, अध्यापक तथा विद्यार्थी के वार्तालाप के प्रावधान पर आधारित किया। हम नीचे इन चारो श्रेणियों में से प्रत्येक को संक्षिप्त में स्पष्ट करेंगे–

क. विमर्शी– यह, वे माध्यम है जो अध्यापक तथा विद्यार्थी को अधिगम लक्ष्य पर सहमत होने, एक–दूसरे की अवधारणा को ग्रहण करने, और परस्पर प्रतिपुष्टि प्रदान करने योग्य बनाते है। विमर्शी माध्यमों के उदाहरण है– श्रव्य वार्तालाप, वीडियो वार्तालाप, कम्प्यूटर वार्तालाप, कम्प्यूटर साधित ई–मेल अथवा डाक–सूची द्वारा सहयोगात्मक कार्य।

ख. अनुकूली– वे माध्यम जो अध्यापकों को उनके तथा विद्यार्थियों की अवधारणा के बीच संबंध उत्पन्न होने पर वार्तालाप के केन्द्र– बिन्दु को परिवर्तित करने की सुविध ा देते हैं। अनुकूली माध्यों के उदाहरण– शैक्षणिक कार्यक्रम, शैक्षणिक अनुरूपण, बुद्धिमतापूर्ण शैक्षणिक पद्धतियां आदि है।

ग. अन्त–क्रियात्मक– वे माध्यम है जो विद्यार्थी को कार्य/लक्ष्य की प्राप्ति हेतु कार्य की सुविधा देते हैं, और अध्यापक को प्रतिपुष्टि की सुविधा देते हैं ताकि विद्यार्थी

के कार्य के परिणामस्वरूप कुछ परिवर्तन घटित हो सके। इसके उदाहरण है– अनुरूपण, माइक्रो वर्ल्डस तथा प्रतिरूपण।

घ. **मननात्मक**– वे माध्यम है जो अध्यापक को विद्यार्थियों के प्रत्येक स्तर पर विषय–लक्ष्यों के कार्यों से सम्बंधित प्रतिपुष्टि को विषय–लक्ष्यों से सम्बंधित करने में सहायता देते है। यद्यपि, मननात्मक माध्यमों के लिये लौरिलार्ड ने कोई विशेष उदारहण प्रस्तुत नहीं किये है तथापि बहुत से उलब्ध माध्यमों को मननात्मक माध्यम माना जा सकता है। किन्तु सामान्य रूप से शैक्षणिक विषय वस्तु को इसके अनुसार तैयार नहीं किया जाता जिससे वह व्यावहारिक रूप में मननात्मक बन सके।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4– लौरिल्लार्ड ने माध्यमों के कितने वर्गीकरण किये हैं।

....

5– अन्तः क्रियात्मक माध्यम किसे कहते हैं।

....

6– बड़े माध्यम एवं छोटे माध्यम में अन्तर क्या है।

....

8.5 माध्यमों का उपयोग

दूरस्थ शिक्षा का प्रत्येक विशेषज्ञ माध्यमों को समन्वित करने का प्रयास करता है। शिक्षा नियोजन में यह निर्णय लिया जाता है, कि किस प्रकार के माध्यम की व्यवस्था की जानी चाहिये। विविध माध्यम शिक्षा के अलग कार्यों के लिये उपयोगी होते हैं। दूरस्थ छात्र का शिक्षक से पारस्परिक सम्बंध नहीं हो पाता है, इसलिये दोनों प्रकार के माध्यम मुद्रित तथा अमुद्रित प्रयोग किये जाते हैं, जो व्यक्तिगत सम्पर्क की कमी को पूरा करते हैं, अतिरिक्त माध्यम का भी प्रयोग किया जाता है, जो पाठ्यवस्तु की बोधगम्यता में सहायक होता है। दूरस्थ शिक्षा व्यावहारिक रूप में स्वामित्व माध्यम पर आधारित होती है। स्वामित्व माध्यम में कई–कई माध्यमों को सम्मिलित किया जाता है। निर्देशन तथा परामर्श सेवाओं को भी प्रयुक्त किया जाता है। शिक्षण में आवश्यकताओं, उद्देश्यों, साधनों, पाठ्यवस्तु सामग्री की दृष्टि से अनेक माध्यमों को सम्मिलित किया

जाता है। मिश्रित माध्यमों की प्रमुख विशेषतायें अधोलिखित है–

1. समन्वित माध्यम आयाम से शिक्षण की विविधता की पूर्ति होती है।
2. मुद्रित तथा अमुद्रित माध्यम उद्देश्यों की दृष्टि से एक–दूसरे के पूरक होते हैं।
3. विभिन्न माध्यम एक–दूसरे के सहायक होते हैं। सहायक प्रणाली दूरस्थ–शिक्षा में महत्वपूर्ण होती है। सहायक माध्यमों को भी प्रयुक्त किया जाता है।
4. माध्यम स्वतंत्र होते हैं, किसी एक माध्यम की पृथक रूप में भी प्रयुक्त करते है। पत्राचार शिक्षा में मुद्रित माध्यम ही प्रयुक्त होता है।

इन उपरोक्त चारों आयामों का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया गया है–

1. **समन्वित माध्यमों का उपयोग–** समन्वित माध्यम उपागम के सम्बंध में निर्णय पाठ्यक्रम स्तर भी किया जाता है, इसका अर्थ यह है कि अमुद्रित माध्यम का पूर्ण रूप से स्वामित्व माध्यम से समन्वय किया जाता है। मुद्रित माध्यम को अक्सर स्वामित्व माध्यम की संज्ञा दी जाती है। यदि माध्यमों के समन्वय को गणित के शब्दों में कहना चाहें तो कह सकते हैं, कि 80 प्रतिशत मुद्रित और 20 प्रतिशत अमुद्रित माध्यम प्रयुक्त होता है। पाठ के विकास तथा शिक्षण में दोनों ही समन्वित रूप में क्रियाशील होने चाहिये। समन्वित माध्यम को छात्र पसन्द करते हैं, तथा ऐसा अनुभव करते हैं कि अमुद्रित माध्यम शिक्षण की विशिष्ट विधि है, जिसे वे गम्भीरता से लेते हैं। दूरदर्शन पाठ्यवस्तु के सम्प्रेषण का माध्यम है, वे अप्रत्यक्ष रूप से भी देखते हैं। अमुद्रित माध्यमों पर आधारित गृहकार्य तथा परीक्षा भी दी जाती है, इसके साथ दूरस्थ छात्र सरलता से समायोजन कर लेते हैं, उन्हें अलग से समय नहीं देना पड़ता है।

2. **पूरक माध्यम के रूप में उपयोग–** इस प्रकार के माध्यमों के उपयोग हेतु पाठ्यक्रम निर्माण के समय ही निर्णय लिया जाता है कि सम्पूर्ण सूचनाओं का प्रसारण मुद्रित तथा अमुद्रित माध्यमों द्वारा ही किया जायेगा। इस प्रकार पूरक माध्यमों का उपयोग विज्ञान तथा तकनीकी विषयों के शिक्षण हेतु किया जाता है, क्योंकि इसकी पाठ्यवस्तु सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक भी होती है। सैद्धान्तिक पाठ्यवस्तु मुद्रित तथा प्रयोगात्मक अमुद्रित माध्यमों द्वारा प्रसारित की जाती है।

3. **सहायक माध्यम के रूप में उपयोग–** इस आयाम का मुख्य लक्ष्य छात्रों के अनुभवों को अधिक बोधगम्य बनाना है। स्वामित्व माध्यम में शत–प्रतिशत मुद्रित माध्यम होता है, जिससे छात्रों को तथ्यों की सूचना प्रदान की जाती है, यदि इसी सूचना को अन्य माध्यमों से भी प्रसारित की जाये। प्रौढ़ शिक्षा के नियमों तथा जनसंख्या के नियमों को दूरदर्शन पर विशिष्ट उदाहरण से समझा जाता है।

4. **स्वतंत्र माध्यम के रूप में उपयोग**– इस आयाम का अर्थ यह है कि मुद्रित माध्यम का प्रयोग दूरस्थ शिक्षण से नहीं किया जाता है, अपितु शत–प्रतिशत अमुद्रित माध्यम का प्रयोग करते हैं। इसमें छात्र सुनकर, देखकर अपने नोट बनाता है। यह उपागम ऐसे समूह के लिये अधिक उपयोगी होता है जो शिक्षित कम होते हैं, अथवा अध्ययन की आदत नहीं होती है। पाठ्यवस्तु की प्रकृति में पूर्ण रूप में प्रयोगात्मक प्रशिक्षण ही दिया जाता है। दूरदर्शन पर कृषि कार्यक्रम, महिलाओं जैसे– नये–नये पकवान तथा क्राफ्ट के कार्यक्रम दिये जाते हैं, इनमें मुद्रित माध्यम का उपयोग नहीं किया जाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

7– समन्वित माध्यम क्या है।

....

8-- पूरक माध्यमों का प्रयोग कब किया जाता है।

....

9– स्वतन्त्र माध्यम के रुप में किसका प्रयोग किया जाता है।

....

8.6 प्रमुख अमुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यम

अमुद्रित अनुदेशनात्मक माध्यमों को मुख्य रूप में तीन वर्ग में रखा जा सकता है।

1. शैक्षिक रेडियो।
2. शैक्षिक दूरदर्शन।
3. अन्य आधुनिक इलेक्ट्रानिक माध्यम।

इड्रस ने (1977) दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त शिक्षण प्रौद्योगिकी को वितरण के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया है जैसे डाकपर आधारित, कम्प्यूटर पर आधारित और दूर संचार पर आधारित। इड्रस द्वारा किया गया श्रेणीकरण निम्नांकित तालिका

में दिया गया है।

दूरस्थ शिक्षा में शिक्षण प्रौद्योगिकी

दूर संचार आधारित	कम्प्यूटर आधारित	डाक आधारित
रेडियो तथा टी0वी0 इन्टरनेट	कम्प्यूटर साधित शिक्षण	मुद्रण
श्रव्य सम्मेलन	कम्प्यूटर साधित अधिगम	श्रव्य टेप
श्रव्य आलेखिकी	कम्प्यूटर आधारित अधिगम	स्लाइड
वीडियो सभा	अन्तः क्रियात्मक	चलचित्र, वीडियो टेप
संजीव अन्तः क्रियात्मक		
दूरदर्शन		
कम्प्यूटर वार्तालाप		

शैक्षिक दूरदर्शन

दूरदर्शन, सम्प्रेषण तथा प्रसारण का एक प्रमुख साधन है। यह एक बहुत शक्तिशाली माध्यम के रूप में विकसित हो रहा है। इसने एक बड़े उद्योग का स्तर तेजी से प्राप्त कर लिया है। संसार तथा जीवन में एक महत्वपूर्ण क्रांति आई है। तकनीकी की दृष्टि से यह श्रव्य एवं दृश्य दोनों से युक्त है। यह अपने साधनों में व्यक्तियों के लिये वास्तविक सम्प्रेषण का प्रभावशाली साधन है। अपने कार्यक्रमों के द्वारा यह प्रसारण एवं मनोरंजन का अधिसंख्य लोगों के लिये एक प्रभावकारी साधन है।

शिक्षा दूरदर्शन, राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा तैयार किये गये विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम को सीखने के लिये प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षा के बड़े स्तर की सभी बाध ाओं को दूर करने का यह एक प्रभावशाली साधन है।

इसके द्वारा औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार की शिक्षा का विकास सम्भव है। शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा सम्पूर्ण संसार को एक कक्षा का स्वरूप प्रदान किया जा सकता है एवं कक्षा को घर के स्वरूप में बदला जा सकता है।

शैक्षिक दूरदर्शन का विकास–

दूरदर्शन का भारतवर्ष में प्रयोग आज से पॉच दशक पहले 15 सितम्बर (1959) में हुआ। इसका श्री गणेश दिल्ली में दूरदर्शन के द्वारा हुआ और एक सप्ताह में दो बार शैक्षिक एवं विकासोन्मुखी कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू हुआ। कुछ समय तक दूरदर्शन का क्षेत्र सीमित रहा। दूसरे शब्दो में इसके विस्तार की सेवा को कम महत्व दिया गया,

लेकिन दिल्ली दूरदर्शन के प्रसार क्षेत्र एवं समय में बढ़ोत्तरी हुई। लगभग तेरह वर्षों के बाद बम्बई में दूसरा दूरदर्शन केन्द्र खोला गया। चार और दूरदर्शन केन्द्र (1972 और 1975) के मध्य श्रीनगर, (26 जनवरी 1973) कलकत्ता, (अगस्त9, 1975), मद्रास (अगस्त 15,1975) और लखनऊ (नवम्बर 27, 1975) खोले गये।

दूरदर्शन के इतिहास में भारतवर्ष में एक नया योगदान उस समय हुआ, जब 1 अगस्त (1975) को सेटेलाइट इन्सट्रक्सनल दूरदर्शन प्रयोगशाला ने अपना एक वर्षीय उपग्रह छोड़ा। एक अमेरिका के उपग्रह का प्रयोग बाहरी तौर पर ग्रामीणों के सामाजिक एवं आर्थिक विकास के लिये किया गया। लेकिन उपग्रह (एस आई टी ई) के द्वारा उत्पन्न उत्सुकता को और अधिक समय तक नहीं रोका जा सका। इसी अन्तराल में रंगीन दूरदर्शन का अविर्भाव अगस्त (1982) में हुआ।

भारतवर्ष में अधोलिखित शिक्षा दूरदर्शन की परियोजना का आरम्भ हुआ–

1. माध्यमिक स्कूल दूरदर्शन परियोजना।
2. दिल्ली कृषि दूरदर्शन परियोजना (कृषि दर्शन)।
3. सेटेलाइट इन्सट्रक्सनल दूरदर्शन प्रयोग (साइट)।
4. पोस्ट–साइट परियोजना।
5. इण्डियन नेशनल सेटेलाइट (इन्सैट)।
6. हायर एजुकेशन दूरदर्शन परियोजना (यू0जी0सी0)

शैक्षिक दूरदर्शन के लाभ–

सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से यह कह सकते हैं कि अधिगम की परिस्थितियां शैक्षिक दूरदर्शन से पर्याप्त रूप में प्रस्तुत की जा सकती हैं, जब शिक्षा–दूरदर्शन एक शक्तिशाली एवं सशक्त माध्यम के रूप में प्रचलित हो जायेगा, इसका मूल्यांकन पूर्ण रूप से विषय–वस्तु पर आधारित होगा। इसका मूल्यांकन प्रसारण की विषय वस्तु एवं दक्षता पर निर्भर करेगा।

इस अनुसंधान परियोजना का निष्कर्ष यह है कि शैक्षिक दूरदर्शन एक प्रभावशाली यंत्र हो सकता है। इसका प्रयोग शिक्षक–प्रशिक्षकों द्वारा किया जा सकता है। इसने अपनी प्रभावशीलता शिक्षण के कुछ विषयों कृषि, गणित, भूगोल आदि में सिद्ध कर दिया है, यहां पर कुछ महत्वपूर्ण शिक्षा दूरदर्शन के विषयों पर व्यक्त करेंगे।

1— **शिक्षा में सामाजिक समानता**— शिक्षा संगठन में शिक्षा दूरदर्शन सामाजिक समानता प्राप्त करने के लिये उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होता है। नगरीय क्षेत्रों में

जो लोग निम्न जीवन स्तर बिताने के लिये बाध्य हैं, उनके लिये यह एक प्रभावशाली साधन के रूप में प्रयुक्त होता है। दूरदर्शन अनुदेशनात्मक सामग्री के प्रस्तुतीकरण के लिये इसका प्रयोग किया जाता है।

2– **अनुदेशन की गुणात्मकता–** दूरदर्शन के कार्यक्रमों को सुव्यवस्थित एवं कक्षागत अनुदेशन की तुलना में समुचित ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है। इसके द्वारा शिक्षा की पारम्परिक व्यवस्था से प्रभावशाली प्रदर्शन किया जा सकता है।

3– **छात्रों की शिक्षक पर निर्भरता को कम करना–** छात्र अपने व्यक्तिगत प्रयासों से दूरदर्शन द्वारा अच्छा सीख सकता है। यदि दूरदर्शन की उपयोगिता को बढ़ा दिया जाये तो शिक्षक की आवश्यकता को कम किया जा सकता है।

4– **लचीलापन–** शिक्षा दूरदर्शन द्वारा पाठ्यक्रम एवं नवीन अनुदेशनात्मक प्राविधियों को विकसित किया जा सकता है। सामाजिक आवश्यकता एवं शिक्षा के विस्तार के पाठ्यक्रम में निरन्तर संशोधन किया जा सकता है। यह अन्य विधियों के साथ भी विकसित किया जा सकता है।

5– **प्रभावशाली शिक्षकों का उपयोग–** शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा शिक्षा की समानता एवं समान अवसर को अधिक सहयोग मिला है। नगरों में जिस प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था है उसे देश के दूरवर्ती भागों में फैले हुये छात्रों को शिक्षा दूरदर्शन द्वारा अध्ययन में प्रदान की जा सकती है। एक प्रभावशाली शिक्षक का सभी छात्रों को अध्ययन में लाभ मिल सकता है। शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा अमीर एवं गरीब के मध्यम समानता लाई जा सकतीा है। सभी को शिक्षा के समान असवर प्रदान किये जा सकते हैं।

6– **व्यय की प्रभावशीलता –** शिक्षा दूरदर्शन को लम्बे पैमाने पर लिया जाता है, तो इससे व्यय में कमी की जा सकती है। इसके द्वारा देश के प्रत्येक भाग में कम व्यय पर शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके द्वारा अध्ययन के स्तर तथा अनुदेशन की गुणवत्ता को यथावत रखा जा सकता है।

7– **सेवारत प्रशिक्षण–** शिक्षा दूरदर्शन का प्रयोग सेवारत अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिये उपयोग में लाया जा सकता है। एन0सी0आर0टी0 ने शिक्षकों को अपनी शिक्षण विधियों एवं कौशलों में विकास के लिये प्रत्येक सप्ताह में कुछ कार्यक्रमों का आयोजन करता है।

8– **तार्किक रूप से सरल है–** दूरवर्ती शिक्षा के प्रारूप को प्रभावशाली ढंग से क्रियान्वित करने के लिये शिक्षा दूरदर्शन तार्किक रूप से अधिक सरल है शिक्षा–

दूरदर्शन के शिक्षण द्वारा नियोजन की समस्या, दूरवर्ती अधिगम एवं अन्य प्रकार की कठिनाइयों को कम किया जा सकता है।

9— **श्रव्य एवं दृश्य घटकों का समायोजन**— दूरदर्शन के द्वारा दृश्य एवं श्रव्य क्रियाओं का लाभ लिया जा सकता है। इसमें रेडियो एवं अन्य साधनों से लाभकारी साध न उपलब्ध होते हैं।

10— **प्रेरणा**— शिक्षा दूरदर्शन के द्वारा शिक्षा के अन्य रूपों में गुणात्मक सुधार ला सकते है। दूरदर्शन के कार्यक्रमों में छात्र अधिक रूचि लेते है, अध्ययन हेतु प्रेरणा मिलती है।

शैक्षिक दूरदर्शन की सीमायें—

जैसा पहले ही बता चुके हैं कि शैक्षिक दूरदर्शन की उपयोगिता इस पर निर्भर करती है कि इसको किस शिक्षा के उद्‌देश्यों की पूर्ति के लिये प्रयुक्त किया जाता है।

शैक्षिक साधन के रूप में इसकी उपयोगिता के विषय में ऊपर कह चुके हैं, लेकिन इसकी कुछ सीमायें भी है।

1— **एक मार्गीय—सम्प्रेषण की समस्या**— दूरदर्शन वास्तविक रूप से एक मार्गीय—सम्प्रेषण का संचार व्यक्त करता है, इसमें अन्तः प्रक्रिया नहीं होती है। इसके द्वारा दूरवर्ती—छात्र के तात्कालिक प्रश्नो का उत्तर तथा कठिनाइयों के समाधान की व्यवस्था नहीं होती है। इसको शिक्षक—प्रशिक्षक यह कहते हैं कि इसमें शिक्षार्थी केवल सूचना संग्रहकर्ता का काम करता है। इसके द्वारा छात्र के शैक्षिक स्वरूप में सक्रियता का अभाव होता है और छात्रों की इच्छा शक्ति का दमन होता है।

2— **शिक्षार्थी को अपनी गति से सीखने का अवसर नहीं होता है**— छात्र अपनी गति से अध्ययन करके सीखता है। शिक्षा दूरदर्शन के प्रसारण के समय छात्र को पूर्ण रूप से एकाग्रचित होकर ग्रहण करना पड़ता है। दूरदर्शन का शिक्षक एक सामान्य छात्र जिस गति से सीख सकता है उसके अनुसार शिक्षक कार्य सम्पादित करता है। इसमें वैयक्तिक विभिन्नता का कोई स्थान नहीं होता है। यदि छात्र कुछ लिखना भी चाहे वह भी सम्भव नहीं होता है।

3— **अपर्याप्त चिन्तन अवस्थाये**— विद्यालयों में समुचित ढंग से कार्यक्रम की व्यवस्था नहीं होती है।

4— **महंगा कार्य**— दूरदर्शन के द्वारा शिक्षण एक अत्यन्त ही मंहगा कार्य है। कई प्रकार की मशीनरियों से युक्त दूरदर्शन कार्यक्रम अत्यन्त ही मंहगा पड़ता है।

5— **एकीकरण की कठिनाई**— शिक्षा दूरदर्शन के कार्यक्रमों को तैयार करने में

अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। मुख्य कारण ये है कि विभिन्न प्रकार की विषय वस्तुओं का प्रचलन है, विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण की विधियां है। इन सभी का किस प्रकार एकीकरण किया जाय यह एक समस्या होती है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

10. शैक्षिक दूरदर्शन किस प्रकार का सम्प्रेषण करता है।

....

11. इनसेट का पूरा नाम क्या है।

....

8.7 कम्प्यूटर की सहायता द्वारा अनुदेशन–

कम्प्यूटर को शिक्षा तकनीकी प्रथम या हार्डवेयर आयाम में हीं सम्मिलित किया जाता है। यह स्वतः अनुदेशनात्मक पद्धति का एक उपकरण है जिसका प्रयोग व्यक्तिगत अनुदेशन के लिये किया जाता है। कम्प्यूटर ने व्यापार, उद्योग तथा शासन प्रणाली को अधिक प्रभावित किया है, परन्तु इसका प्रभाव विद्यालय तथा शिक्षा प्रणाली पर भी स्पष्ट दिखायी देता है। शिक्षण के क्षेत्र में अनुदेशन पद्धति, शोध कार्यों तथा परीक्षा प्रणाली को कम्पयूटर ने अधिक प्रभावित किया है।

कम्पयूटर को विद्युत मस्तिष्क भी कहते हैं, यद्यपि अन्य शिक्षण मशीनों में पाठ्य वस्तु को छोटे पदों में क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है परन्तु इन मशीनों हेतु कोई निर्णय नहीं लेना पड़ता जबकि कम्प्यूटर को पूर्व व्यवहारों के आधार पर अनुकूल अनुदेशनों का चयन करना पड़ता है। यह निर्णय कम्पयूटर द्वारा ही किया जाता है। इसलिये इसे विद्युत मस्तिष्क की संज्ञा दी गयी है।

कम्प्यूटर के प्रमुख कार्य–

अनुदेशन के लिये कम्पयूटर निम्नलिखित कार्य करता है–

क. कार्डों पर सूचनाओं को संचित करता है, चुम्बकीय टेप तथा टेप पर भी सूचनाओं को संचित करता है।

ख. अभिक्रमित अनुदेशनों को भी संचित रखता है।

ग. संचित सूचनाओं में से अपेक्षित प्रदत्तों का चयन करता है।

घ. विद्युत टंकन मशीन की सहायता से सूचनाओं का बाह्य सम्प्रेषण करता है।

कम्प्यूटर की यह क्षमतायें प्रभावशाली अनुदेशनात्मक प्रणाली की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार कई प्रकार के अभिक्रमित अनुदेशनों कम्प्यूटर रखा जाता है और एक कम्प्यूटर से बत्तीस छात्र एक ही समय में अपनी–अपनी आवश्यकतानुसार बत्तीस भिन्न प्रकार के अनुदेशन का अध यन कर सकते है।

कम्प्यूटर तथा शिक्षण प्रक्रिया–

लारेंस स्टोलुरो तथा डेनियल डेविज (1965) ने सबसे जटिल शिक्षण प्रतिमान का विकास किया है उसमें शिक्षक के स्थान पर कम्प्यूटर का अनुदेश के प्रस्तुतीकरण के लिये प्रयोग किया गया है। स्टोलुरों तथा डेविज ने कम्प्यूटर की शिक्षण प्रक्रिया को दो पक्षों में विभाजित किया है–

पूर्व अनुवर्ग शिक्षण पक्ष

अनुवर्ग शिक्षण पक्ष ।

पहले पक्ष में कम्प्यूटर अनुदेशन के विशिष्ट उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये विशिष्ट छात्र का चयन करता है। यह चयन छात्र के पूर्व व्यवहार के आधार पर किया जाता है। दूसरे पक्ष में कम्प्यूटर अनुदेशन का प्रस्तुतीकरण करता है और अनुदेशन के बाद छात्रों की निष्पत्तियों का मापन करता है।

कम्प्यूटर की उपयोगिता–

कम्प्यूटर का उपयोग उद्योग, व्यापार, सेना तथा शिक्षा में किया जाता है। कम्प्यूटर ने मनुष्य की जटिल समस्याओं को सरल एवं सुगम बना दिया है। शिक्षा के क्षेत्र ने कम्पयूटर का प्रयोग प्रमुख रूप से चार क्षेत्रों में अधिक किया जाता है–

शिक्षण तथा अनुदेशन में, शिक्षा के शोध कार्यों में, शिक्षा निर्देशन व परामर्श में और, परीक्षा प्रणाली में किया जाता है।

1– **शिक्षण तथा अनुदेशन–** व्यक्तिगत अनुदेशन के लिये इसका प्रयोग किया जाता है। एक कम्पयूटर पर एक समय में कई प्रकार के छात्र एक पाठ्यवस्तु के कई अनुदेशनों का अध्ययन करते हैं। इस प्रकार कम्प्यूटर अनुदेशन की व्यवस्था करता है। शिक्षक अपने कक्षा–शिक्षण में अनुदेशन के समुचित रूप में चयन के लिये कम्पयूटर की सहायता ले सकता है। प्रस्तुतीकरण के साथ–साथ इसके द्वारा छात्रों की अनुक्रियाओं का भी अवलोकन किया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षण के उद्देश्यों, छात्रों के

पूर्व ज्ञान तथा प्रस्तुतीकरण के सम्बंध में निर्णय लेता है।

2– **शोध कार्य–** कम्पयूटर का प्रयोग अनुदेशन के प्रस्तुतीकरण की अपेक्षा शोध कार्यों में अधिक किया जाता है। भारतीय परिस्थितियों में भी कम्पयूटर का प्रयोग शोध कार्यों में किया जाने लगा है, परन्तु यहां पर इसका प्रयोग अनुदेशन के लिये समभव नहीं हो पाया हैं। प्रदत्तों के संकलन के पश्चात प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये कम्प्यूटर का प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा विशला प्रदत्तों को विश्लेषण छः घन्टों में हो जाता है। कम्प्यूटर द्वारा प्राप्त परिणाम शुद्ध होते हैं।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

12. कम्प्यूटर कैसा साधन है।

....

13. कम्प्यूटर का प्रयोग किन क्षेत्रों में किया जाता है।

....

8.8 सारांश

इस इकाई में हमने इस बात पर जोर दिया है कि दूर शिक्षा में तकनीकी माध्यमों का उपयोग एक आवश्यक अंग है। दूर शिक्षा का विकास स्वयं ही विभिन्न माध्यमों के कारण हुआ है। दूर शिक्षा में कुछ माध्यम अच्छी अन्तः क्रिया का अवसर प्रदान करते हैं जो प्रभावी अधिगम के लिए आवश्यक है। हमने कुछ अमुद्रित माध्यमों के विशेषताओं के विषय में विचार व्यक्त कियें। आशा है यह इकाई आपको रोचक लगी होगी।

8.9 अभ्यास कार्य

1. दूर शिक्षा में संचार माध्यमों की भूमिका पर प्रकाश डालिए।
2. कुछ सशक्त अमुद्रित माध्यमों की विशेषताओं एवं उपयोगिता का वर्णन करो।

8.10 बोध प्रश्नों का उत्तर

1. स्व शिक्षण सामग्री।
2. व्यापकता, विविधता, मनोवैज्ञानिक, रोचक।
3. गत्यात्मक क्रियाकलाप का।
4. चार, विमर्शी, अनुकूली अन्तः क्रियात्मक तथा मनात्मक।
5. जिसमें अध्येता के कार्य को प्रतिपुष्टि मिलें।
6. बड़े माध्यम अधिक कीमती अधिक आधुनिक, छोटे माध्यम कम कीमती कम तकनीकी **आधारित**।
7. जिसमें मुद्रित व अमुद्रित दोनों का समान प्रयोग हो।
8. पाठ्यक्रम निर्माण के समय।
9. शत् प्रतिशत अमुद्रित माध्यम का प्रयोग।
10. एक मार्गीय।
11. इण्यिन नेशनल सैटेलाइट।
12. श्रव्य दृश्य सामग्री।
13. शिक्षण, शोध, एवं परीक्षा प्रणाली

8.11 कुछ उपयोगी पुस्तके

Bates A.W. (1995*):Technological open learning and Distance Education, London: Routldge*

Sahoo, P.K. (1999) *: "Educational technology in Distance Education, New Delhi: Aravali Books International (P) Ltd.*

उपाध्याय, प्रतिभा (2007) : भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियॉं, इलाहाबाद : शारदा

Uttar Pradesh Rajarshi Tandon
Open University

MAED-107

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड

3

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संगठनात्मक स्वरूप

इकाई-9 149
दूरस्थ शिक्षा परिषद

इकाई-10 158
एन0आई0ओ0एस0

इकाई-11 174
मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई-12 192
दूर अध्येता

परामर्श-समिति

प्रो0 नागेश्वर राव	**कुलपति - अध्यक्ष**
डॉ0 हरीशचन्द्र जायसवाल	वरिष्ठ परामर्शदाता - कार्यक्रम संयोजक
श्री एम0 एल0 कनौजिया	कुलसचिव - सचिव

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 एस0पी0 गुप्ता	निदेशक, शिक्षा विद्या शाखा, उ0प्र0रा0ट0मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 राम शकल पाण्डेय	पूर्व आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 हरिकेश सिंह	आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

परिमापक

प्रो0 पी0 के0 साहू	विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक

डॉ0 धनंजय यादव	वरिष्ठ प्रवक्ता शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 सुषमा पाण्डेय	वरिष्ठ प्रवक्ता दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय गोरखपुर

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की ओर से विनय कुमार, कुलसचिव द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित वर्ष - 2023.

मुद्रक - के0 सी0 प्रिंटिंग एण्ड एलाइड वर्क्स, पंचवटी, मथुरा - 281003.

MAED - 107 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड 1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और विषय क्षेत्र

इकाई 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रारूप एवं आवश्यकता

इकाई 2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

इकाई 3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का नियोजन

इकाई 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख कारक

खण्ड 2. छात्र सहायता सेवायें

इकाई 5 स्व अधिगम सामग्री

इकाई 6 अधिन्यास

इकाई 7 परामर्श सत्र

इकाई 8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

खण्ड 3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संगठनात्मक स्वरूप

इकाई 9 दूरस्थ शिक्षा परिषद

इकाई 10 एन0आई0ओ0एस0

इकाई 11 मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई 12 दूर अध्येता

खण्ड 4. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन

इकाई 13 दूर शिक्षक के समक्ष चुनौतियां

इकाई 14 दूर शिक्षा की समस्यायें

इकाई 15 दूर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया

इकाई 16 दूर शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान

खण्ड-परिचय- 3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संगठनात्मक स्वरूप

इकाई-9 में दूरस्थ शिक्षा परिषद के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। दूर शिक्षा परिषद् की स्थापना दूर शिक्षा के प्रचार प्रसार के साथ गुणात्मकता को लाने के लिये की गई। दूरस्थ शिक्षा परिषद इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्थापित एक विद्यालयी संस्था है जो कि देश भर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की देख-रेख तथा प्रचार प्रसार के लिये उत्तरदायी है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा एक नवाचार है इसके अधिकार एवं कार्य वृहद हैं।

इकाई-10 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के बारे में लिखी गई है। शिक्षा के तीन प्रमुख स्तर हैं - प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च। प्राथमिक शिक्षा को राष्ट के विकास की नींव के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत में प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता को संविधान में ही स्वीकार कर लिया गया है। स्वतंत्रता के पश्चात से ही शिक्षा के सार्वजनीकरण सबके लिये शिक्षा, सम्पूर्ण साक्षरता के लक्ष्यों को बल मिला। एन.आई.ओ.एम. देश में माध्यमिक एवं बेसिक शिक्षा को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रदान करेन हेतु संसाधक के रूप में कार्य करता है। इसका कार्य क्षेत्र वृहदत्तर है। इसका अथक प्रयास माध्यमिक स्तर की औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में विकल्प के रूप में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को लोकप्रिय बना रहा है।

इकाई-11 मुक्त विश्वविद्यालयों की अवधारणा एवं शैक्षिक कार्यक्रमों से छात्रों को परिचित कराती है। मुक्त विश्वविद्यालय आज भारत की नहीं वरन् विश्व भर में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले अति लोकप्रिय माध्यमों में से एक है। इस इकाई में देश के मुख्य राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के संगठनात्मक ढाँचे, प्रवेश प्रक्रिया मूल्यांकन प्रक्रिया एवं छात्र सहायता सेवाओं के विषय में चर्चा की गई हे।

इकाई-12 दूर अध्येता के लक्षणों, समस्याओं, अपेक्षाओं पर प्रकाश डालती है। आयु लिंग, सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, शैक्षिक स्तर भौगोलिक स्थिति, आदि दूर अध्ययन को प्रमाणित करती है। दूर अध्येता के समक्ष आने वाली सामान्य समस्यायें हैं एकलता में अध्ययन, अभिप्रेरणाा में कमी, अनुपयुक्त अध्ययन कौशल आदि। इस इकाई में जिन संस्थागत प्रबन्धों के विषय में चर्चा की है वे हैं - विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना, समय पर सामग्री प्रेषण अनुशिक्षण एवं उपबोधन संत्रों का संयोजन आदि ।

इकाई 9 दूरस्थ शिक्षा परिषद्

संरचना

9.1 प्रस्तावना

9.2 उद्देश्य

9.3 दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा एवं लक्ष्य

9.4 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के कार्य

9.5 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के उद्देश्य

9.6 दूर शिक्षा परिषद का महत्व

9.7 सारांश

9.8 अभ्यास कार्य

9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

राष्ट्रीय स्तर पर दूरस्थ मुक्त शिक्षा की अवधारणा को देखते हुये इसके प्रचार प्रसार पर विशेष ध्यान देना प्रारम्भ किया गया तथा इसके अन्तर्गत समन्वयन एवं मानकों को बनाये रखने हेतु किसी उत्तरदायी संस्थान की आवश्यकता प्रतीत हुई, तब मई 1991 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रबंधक बोर्ड ने एक उत्तरादायी संस्था के स्थापन को हरी झंडी दे दी और यही परिषद् 'दूर शिक्षा परिषद' के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। दूर शिक्षा परिषद् की स्थापना दूर शिक्षा के प्रचार–प्रसार के साथ गुणात्मकता को बनाने के लिये किया गया।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे जिससे कि–

- दूर शिक्षा परिषद् की अवधारणा को वर्णित कर सकेंगे।
- दूर शिक्षा परिषद् के कार्यों एवं उद्देश्यों की विवेचना कर सकेंगे।
- दूरस्थ शिक्षा परिषद् की शक्तियों को वर्णन कर सकेंगे।

9.3 दूरस्थ शिक्षा परिषद् की अवधारणा

दूरस्थ शिक्षा परिषद् इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अन्तर्गत स्थापित एक विद्यालयी संस्था है, जो कि देश भर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की देख–रेख तथा प्रचार–प्रसार के लिये उत्तरदायी है।

विश्व भर में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा एक लोकप्रिय माध्यम के रूप में उभर रहा है। इसको नियमित शिक्षा के विकास के रूप में देखा जा रहा है। दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा एक नवाचार है इसके प्रसार के साथ अब इसको एक नयी दिशा दिये जाने की आवश्यकता है। दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं को आश्रय देने के लिये इसके निरन्तर दिशा निर्देशन हेतु दूरस्थ शिक्षा परिषद् को अधिकष्त किया गया है, इसको कुछ निश्चित शक्तियां एवं अधिकार प्रदान किये गये हैं। जिससे कि यह एक उत्तरदायी सस्था के रूप में कार्य कर सके।

दूरस्थ शिक्षा परिषद् के लक्ष्य

दूरस्थ शिक्षा परिषद् की स्थापना का मुख्य लक्ष्य है–

- राज्य सरकार एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों को मुक्त विश्वविद्यालय एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थान खोलने हेतु प्रेरित करना,
- दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षण संस्थानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना।
- नामांकन, मूल्यांकन एवं उपाधि प्रदान करने हेतु मानकों विधियों एवं निर्देशों को निश्चित करना।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को गुणात्मकता सुनिश्चित करने हेतु सतत् मूल्यांकन एवं निरीक्षण करना।
- तकनीकी विधियों को शिक्षा में प्रयोग हेतु प्रश्रय देना तथा तकनीकों को आपस में मिल–जुलकर प्रयोग करने हेतु प्रश्रय देना।
- स्व–शिक्षण सामग्री एवं बहु माध्यम शिक्षण सामग्री का विकास एवं निर्माण कर मुक्त शिक्षण संस्थानों में मिल जुलकर प्रयोग करने की सुविधा प्रदान करना।
- विभिन्न राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों एवं पत्राचार शिक्षा संस्थाओं में मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा उत्पन्न छात्र सहायता सेवाओं को मिलजुलकर प्रयोग करने हेतु सुविधा प्रदान करना।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान एवं नवाचार को अभिप्रेरित करना।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तंत्र हेतु दक्षता के लिये प्रशिक्षण प्रदान करना।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1– दूरस्थ शिक्षा परिषद् की स्थापना कब हुयी \

....

2– दूरस्थ शिक्षा परिषद् के स्थापना के क्या कारण थे?

....

3– दूरस्थ शिक्षा परिषद् किस विश्वविद्यालय में स्थित है?

....

9.4 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के कार्य

दूरस्थ शिक्षा परिषद् की स्थापना एक बष्हद संकल्पना के साथ हुई और उसे कुछ प्रशासनिक शक्तियां एवं कार्य दिये गये। दूरस्थ शिक्षा परिषद् का प्रमुख कार्य होगा–

- राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालयों के परामर्श से मुक्त विश्वविद्यालयों एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थानों का एक जाल निर्मित करना।
- दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के संचालन हेतु उपयुक्त क्षेत्रों का चयन करना एवं सहयोग प्रदान करना जिससे कि वहां दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों का संचालन हो सके।
- विशेष समूह को चिन्हित कर उनके लिये आवश्यक कार्यक्रम के संचालन हेतु मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा संस्थानों को सहयोग प्रदान करना।
- विश्वविद्यालय स्तरीय शिक्षा में नवाचार सहित, लचीले अधिगम एवं शिक्षण विधियां, विविध पाठ्यक्रमों का समन्वयक नामांकन हेतु आवश्यक योग्यता, प्रवेश, आयु, परीक्षा संचालन हेतु विविध कार्यक्रम को सहयोग देना।
- दूरस्थ शिक्षा तकनीकी में विविध पाठ्यक्रम, कार्यक्रम एवं शोध हेतु आवश्यक मानक तय करना।
- दूरस्थ शिक्षण संस्थानों को प्रदान किये जाने वाली वित्तीय अनुदान को प्रबंधक

बोर्ड को अग्रसारित करना।

- राष्ट्र में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा तंत्र के समन्वित प्रयास को प्रोत्साहित करना।
- विविध मुक्त विश्वविद्यालयों द्वारा विकसित स्व–शिक्षण सामग्री एवं छात्र सहयोग सेवाओं को समन्वित रूप से उपयोग हेतु सुविधा देना जिससे कि दुबारा कार्य करने की व्यर्थ समय व अर्थ बचे।
- मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं के विविध पाठ्यक्रमों में नामित विद्यार्थियों से ली जाने वाले शुल्क का निर्धारण करना।
- विविध मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं द्वारा संचालित कार्यक्रमों एवं पाठ्यक्रमों से सम्बंधित आवश्यक जानकारी करना।
- राज्य सरकारों एवं विश्वविद्यालयों को मुक्त शिक्षण संस्थान खोलने हेतु परामर्श देना।
- जाल के रूप में देश भर में कार्य कर रहे राष्ट्रीय मुक्त दूरस्थ शिक्षा संस्थानों के क्रियाकलापों के सतत् मूल्यांकन हेतु पुर्निरीक्षण कमेटी की नियुक्ति करना।
- विविध पाठ्यक्रमों एवं कार्यक्रमों के संचालन हेतु उनके ढांचे एवं कार्यविधि के प्रारूप का वष्हद प्रस्तुतीकरण करना।
- दूरस्थ शिक्षा माध्यम द्वारा प्रदान किये जाने वाले विविध कार्यक्रमों के गुणात्मकता के मानक तय करना।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4– दूरस्थ शिक्षा किस तरह के क्षेत्रों को इंगित करता है, और क्यों?

....

5– दूरस्थ शिक्षा परिषद् वित्तीय अनुदान हेतु आवेदन को किसे अग्रसारित करता है?

....

6– दूरस्थ शिक्षा परिषद् किस प्रकार विश्वविद्यालय एवं शिक्षा के लिये कार्य करता है?

....

9.5 दूरस्थ शिक्षा परिषद् के उद्देश्य

दूरस्थ शिक्षा परिषद एक निश्चित उद्देश्य के अन्तर्गत कार्य करता है इससे यह अपेक्षा की जाती है कि यह गुणवत्ता को बनाये रखने हेतु शैक्षिक दिशा निर्देश दे इसके साथ ही नवीन तकनीकी एवं उपागमों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहन दे। समन्वित नेटवर्किंग के तहत सभी तंत्र आपस में संसाधनों को मिलजुलकर उपयोग करें।

इस परिषद् को यह अधिकार दिये गये हैं कि यह मुक्त विश्वविद्यालय एवं मुक्त शिक्षा प्रणाली का देश के शैक्षिक व्यवस्था में जो भी विकास एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता हो, प्रदान करे।

यह परिषद् शिक्षण के मानकों को तय करने, मूल्यांकन एवं शोध कार्यों को प्रोत्साहन देने, अधिक लचीलेपन, विविधता, व्यापकता गतिशीलता एवं शिक्षा में नवाचार को सम्मिलित करने का दायित्व संभालेगा। इग्नू के अनुच्छेद 16 के तहत स्थापित दूरस्थ शिक्षा परिषद् के कार्य वृहद स्तर पर है।

दूरस्थ शिक्षा परिषद् से शैक्षणिक कार्यक्रमों का दूर शिक्षा माध्यम से संचालन हेतु अनुमति की आवश्यकता के कारण–

दूरस्थ शिक्षा परिषद् को भारत में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा माध्यम से संचालित विविध पाठ्यक्रमों के प्रचार–प्रसार एवं गुणात्मकता हेतु उत्तरदायी बनाया गया है। इसीलिये शिक्षा की गुणात्मकता को सुनिश्चित करने तथा डिग्री एवं डिप्लोमा जो कि दूरस्थ शिक्षा माध्यम से लिये जायेंगे उनके स्तर के निर्धारण हेतु दूरस्थ शिक्षा परिषद् से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

दूरस्थ शिक्षा परिषद् द्वारा गुणात्मकता को सुनिश्चित करने के उपाय–

दूरस्थ शिक्षा परिषद् द्वारा स्व शिक्षण सामग्री के मूल्यांकन का उद्देश्य– दूरस्थ शिक्षा में प्रयुक्त की जाने वाली स्व–शिक्षण सामग्री के निर्माण का आधार पुस्तकों से अलग होता है, यह व्याख्यात्मक होती है –

- स्व निर्देशित होना चाहिये।
- स्व प्रेरित हो।
- स्व मूल्यांकन की सुविधा हो।
- स्व अधिगम के योग्य हो।
- स्वपूर्ण हो।

- स्व व्याख्यायित हो।

दूरस्थ शिक्षा परिषद् स्व शिक्षण सामग्री में इन विशेष गुणों की अपेक्षा करके दूरस्थ षिक्षा में उनका उपयोग हेतु अनुमति प्रदान करता है। स्व शिक्षण सामग्री के निर्माण एवं प्रयोग के आवश्यक मानक को तय करन के साथ इनके समन्वित प्रयोग पर भी बल देता है। जिससे कि समय श्रम एवं अर्थ की बचत हो।

संस्थागत आवश्यकतायें– दूर एवं मुक्त शिक्षण संस्थाओं की भी कुछ संस्थागत आवश्यकतायें होती है, जिनके बिना इस विकेन्द्रीकृत शिक्षा व्यवस्था का संचालन कठिन होता है और दूर शिक्षा परिषद् दूर शिक्षा संस्थानों में इनकी उपलब्धि सुनिश्चित करता है।

1. **विभाग–** दूरस्थ शिक्षा संस्थानों में दो प्रकार के विभाग होते हैं, जो कि इनके विविध क्रियाकलापों का संचालन करते है।

   क–पूर्ण कालिक विभाग।

   ख– दो अंशकालिक विभाग।

क– पूर्ण कालिक नियमित आधार पर मुख्य अंतरंग विभाग है, जो कि सभी प्रमुख कार्यों के संचालन एवं समन्वयन के लिये उत्तरदायी है।

ख– अंशकालिक संविदा आधार पर विशेषीकष्त आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु नियुक्त स्टाफ।

अंशकालिक कार्मिक स्वनिर्देशित सामग्री के विकास एवं प्रेषण तथा अन्य अकादमिक क्रियाकलापों के संचालन हेतु नियुक्त किये जाते हैं।

2. **स्व–शिक्षण सामग्री–** किसी भी दूरस्थ शिक्षण संस्थानों में दूर अध्येता को कक्षा शिक्षण की कमी को दूर कर अधिगम हेतु स्वशिक्षण सामग्री प्रदान किया जाता है। स्वशिक्षण सामग्री के निर्माण एवं विकास में इन तथ्यों को ध्यान रखा जाता है कि वह वास्तविक कक्षा शिक्षण की परिस्थितियों को प्रत्यक्ष करें इसका स्वरूप व्याख्यात्मक होता है और यह सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु का संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत करती है, इसमें अधिगम हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये जाते हैं। दूर शिक्षा परिषद यह सुनिश्चित करता है कि स्वशिक्षण सामग्री अधिक गुणवत्तापूर्ण हो और स्वशिक्षण सामग्री की पूरक के रूप में संचार सम्प्रेषण माध्यमों को प्रयोग किया जाता है।

3. **भौतिक संसाधन–** दूरस्थ शिक्षण संस्थानों से यह अपेक्षा की जाती है कि यह मुख्य केन्द्रों एवं सहायक सेवा केन्द्रों में कार्मिक वर्ग तथा विद्यार्थियों के लिये आवश्यक सहायता सेवाओं के साथ यह सुनिश्चित करें कि उनमें पर्याप्त भौतिक संसाधन उपलब्ध है। दूर शिक्षा परिषद् दूर शिक्षण संस्थानों को इसकी व्यवस्था

हेतु आवश्यक अनुदान के साथ व्यवस्था करने में सहायता देता है। इसके अतिरिक्त वह इन सुविधाओं को विविध दूर शिक्षण संस्थानों को मिलजुलकर प्रयोग करने हेतु प्रेरित भी करता है।

पुस्तकालय– प्रत्येक दूरस्थ शिक्षण संस्थान में पूर्ण व्यवस्थित मुख्यालय में एक पुस्तकालय होना चाहिये जिसमें अच्छी पुस्तकों के साथ जरनल, श्रव्य–दृश्य सामग्री तथा अन्य अधिगम से सम्बंधित सहायक सामग्री होनी चाहिये। ये सभी सुविधायें दूर शिक्षा से जुड़े कार्मिक वर्ग एवं दूर अध्येताओं के आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समय–समय पर सम्बर्धित की जाती है। दूर शिक्षा परिषद् यह भी सुनिश्चित करता है कि सभी दूर शिक्षा संस्थानों में एक व्यवस्थित पुस्तकालय उपलब्ध हो।

कम्प्यूटर सुविधा– दूरस्थ शिक्षा परिषद् इस ओर भी जोर देता है कि अध्येताओं की बढ़ती भीड़ को संतुष्ट करने हेतु दूर शिक्षण संस्थाओं को कार्यक्रमों को कम्प्यूटरीकष्त कर देना चाहिये और इसके लिये सशक्त एवं सबल दूर शिक्षण संस्थानों को अन्य आवश्यकता वाले दूर शिक्षण संस्थानों को सहयोग करना चाहिये।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. दूर शिक्षण संस्थानों मे कैसे विभागों की आवश्यकता होती है?

....

2. दूर शिक्षण संस्थानों में स्वशिक्षण सामग्री का क्या महत्व है?

....

3. दूर शिक्षण संस्थानों में सहायता सेवा केन्द्र क्या है?

....

9.6 दूर शिक्षा परिषद का महत्व

दूर शिक्षा एक ऐसी संस्था है जो कि दूर शिक्षा को बढ़ती मांग के अनुरूप प्रचार–प्रसार के साथ इसकी गुणवत्ता को भी सुनिश्चित करने के लिये कटिबद्ध है। यह एक ऐसी इकाई है जो दूर शिक्षण संस्थानों के भौतिक, मानवीय एवं वित्तीय

संसाधन के मानक तय कर रही है। इसने जहां एक ओर दूर शिक्षा को प्रचारित करने का कार्य किया तो दूसरी ओर आवश्यक मानकों के साथ दूर शिक्षण को चलने के लिये भी दबाव बनाया है। सबसे बड़ी बात यह है कि इसके माध्यम से आज देश भर में फैले दूर शिक्षण संस्थानों को एक जाल का स्वरूप मिला और सभी एक दूसरों को प्रचार–प्रसार एवं गुणात्मकता को बनाये रखने हेतु आवश्यक सहयोग दे रहे हैं। इसने दूर शिक्षण संस्थानों में प्रवेश,अनुदेशन के माध्यम, परीक्षा कार्यक्रम, छात्र सहायता सेवाओं विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों के सभी मानक एवं दिशा निर्देश तय किये हैं। दूर शिक्षा परिषद देश भर में मुक्त अधिगम के प्रचार–प्रचार एवं उपयोगिता के प्रति उत्तरादायी संस्था है, इससे यह आशा की जाती है कि यह अपने वृद्धि के साथ–साथ अपनी सेवाओं में विस्तार और सुधान करने में सक्षम होगा।

9.7 सारांश

दूरस्थ शिक्षा परिषद् मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में उत्तरादायी संस्था है। इसके अधिकार एवं कार्य वष्हद हैं और यह इस प्रकार के अधिगम प्रणाली को लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

9.8 अभ्यास के प्रश्न

1– दूर शिक्षा परिषद् के अधिकारों एवं कार्यों की विवेचना कीजिये।

9.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. मई 1991 को।
2. दूर शिक्षा के प्रचार–प्रसार एवं गुणात्मकता के मानक को बनाये रखने हेतु एक उत्तरदायी संस्था की आवश्यकता थी।
3. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नयी दिल्ली में।
4. जिन क्षेत्रों में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता है और किस तरह के पाठ्यक्रम की आवश्यकता होगी।
5. प्रबंधन बोर्ड को।
6. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा से सम्बंधित विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थाओं को।
7. दो प्रकार, एक पूर्णकालिक दो अशकालिक विभाग।
8. यह दूर शिक्षण कार्यक्रमों के मूलाधार के रूप में है। यह विद्यार्थियों को

स्वअधिगम हेतु प्रदान की जाती है।

9. विकेन्द्रीकष्त व्यवस्था का एक भाग जो कि स्थानीय विद्यार्थियों को सहायता देने के लिये स्थापित होते है।

9.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गुप्ता एवं गुप्ताः मुक्त एव दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद । शारदा पुस्तक भवन।

उपाध्याय, प्रतिभा (2007) : भारतीय षिक्षा में उदीयमान प्रवषत्तिायॅा इलाहाबाद : षारदा पुस्तक भवन।

इकाई–10 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग

संरचना

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयीकरण की आवश्यकता

10.4 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालीय संस्थान की अवधारणा

10.5 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के कार्य

10.6 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के प्रकार्य के ढंग

10.7 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग में अधिगम प्रणाली

10.8 नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के प्रकार्य के तन्त्र

10.9 सारांश

10.10 अभ्यास के प्रश्न

10.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

10.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.1 प्रस्तावना

शिक्षा के तीन प्रमुख स्तर हैं, प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च स्तर। प्राथमिक शिक्षा को राष्ट्र के विकास की नींव के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। भारत में प्राथमिक शिक्षा की अनिवार्यता को संविधान में ही स्वीकार कर लिया गया है। स्वतंत्रता के पश्चात् से ही शिक्षा के सार्वजनीकरण सबके लिये शिक्षा, सम्पूर्ण साक्षरता एवं अब सर्वशिक्षा अभियान प्रमुख लक्ष्यों के रूप में रखे गये इससे प्राथमिक शिक्षा को जोर–शोर से बल मिला पर इससे माध्यमिक शिक्षा पर दबाव बढ़ा और नियमित शिक्षा माध्यम इस मांग को पूरा करने में असमर्थ रही। अतः इस स्तर की शिक्षा को अपनी सुविधा से प्राप्त करने हेतु राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयों की संकल्पना आयी और इसके विषय में हम इस इकाई में विस्तार से पढेगें।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

1 मुक्त विद्यालयों की आवश्यकता की विवेचना कर सकेंगे।

2. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।

3. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान के कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।

10.3 मुक्त विद्यालयीकरण की आवश्यकता

बीसवीं शताब्दी में शैक्षिक उत्थान के साथ ही मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का उद्‌भव हुआ। नियंत्रित शिक्षा माध्यम ही सर्वाधिक लोकप्रिय रहा, परन्तु इसकी अपनी सीमायें हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का विकास वस्तुतः विभिन्न प्रकार के शैक्षिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, तकनीकि तथा आर्थिक दबावों एवं शिक्षा की बढ़ती मांग व व्यावहारिक आवश्यकताओं की एक स्वाभाविक परिणति के रूप में हुआ है। समाज की शिक्षा की बढ़ती मांगों एवं आर्थिक एवं अन्य संरचनागत संसाधनों की कमी के कारण नई शिक्षण संस्थायें खोलने व पुरानी शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश सामर्थ्य बढ़ाने की आवश्यकता ने किसी वैकल्पिक एवं अल्प लागत पर शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता रूपी चुनौती को शिक्षा विज्ञों के समक्ष प्रस्तुत किया। तकनीकि विकास के फलस्वरूप विकसित हुई सूचना तथा सम्प्रेषण की नवीन व आधुनिक प्रविधियों ने इस चुनौतियों का समाधान करने के प्रयासों में महत्वपूर्ण सहायता की। संचार सम्प्रेषण तकनीकि के विस्तार नें मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम तंत्र को सुविधा देते हुये प्रचारित करने की सतह प्रदान की जो कि अधिक लचीली, अध्येतान्मुख, बहुआयामी उपागम एवं सृजनात्मकता से परिपूर्ण है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की अपनी विशिष्टतायें है जो कि निम्नवत है–

- कक्षा कक्ष से कही और शिक्षण।
- शिक्षक केन्द्रित के स्थान पर छात्र केन्द्रित।
- निर्देशक के स्थान पर शिक्षक सुविधा प्रदाता।
- मौखिक निर्देशन के स्थान पर तकनीकी आधारित सम्प्रेषण ।
- नियत समय से शिक्षण के स्थान पर कहीं भी अधिगम।
- जो हम दे उसे पायें के स्थान पर जो आप पढ़ना चाहें वो आप को मिले।
- शिक्षा नियत समय पर होने वाली प्रक्रिया से जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया।

उपरोक्त विशिष्टतायें एक मुक्त विद्यालय की ही होती हैं, जिनका मुख्य उद्‌देश्य सभी को शिक्षा है और इसके अन्य उद्‌देश्य हैं–

- इस प्रकार के आयु वर्ग के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना जो कि अपने आर्थिक सामाजिक परिस्थितियों के कारण परम्परागत विद्यालयों में शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके है, और उन लोगों को भी शिक्षा की सुविधा देना जो कि किन्हीं कारणवश विद्यालयी शिक्षा को पूरा करने में असमर्थ रहे हैं।

- विभिन्न क्षमताओं वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करना।
- अध्येताओं को विविध शैक्षिक कार्यक्रमों की सुविधा प्रदान करना।
- विद्यालय छोड़ चुके अध्येताओं को सुरक्षात्मक सुविधायें प्रदान करना जिससे कि वे बाकी शिक्षा को पूरी कर सकें।

भारत के भौतिक विविधताओं का प्रभाव अध्येता की आवश्यकताओं एवं दक्षताओं पर पड़ता है अतः मुक्त विद्यालय इसका एक बेहतर विकल्प है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. मुक्त विद्यालय किस स्तर की शिक्षा से सम्बंधित है?

....

2. मुक्त विद्यालय का मुख्य उद्देश्य क्या है?

....

3. मुक्त विद्यालय की मुख्य विशेषतायें बताइये?

....

10.4 राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय संस्थान की अवधारणा

नेशनल इन्सिटीट्यूट आफ ओपन स्कूलिंग एक मुक्त विद्यालय है। यह विविध आवश्यकताओं वाले अध्येताओं के समूह के लिये खोला गया, जो कि माध्यमिक स्तर की शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी हैं। यह एक परियोजना के रूप में सन् 1979 में सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सेकेण्डरी एजुकेशन के द्वारा संचालित किया गया। इसकी सफलता को देखते हुये सन् 1986 में पूरे देश भर में माध्यमिक स्तर की शिक्षा को मुक्त शिक्षा तंत्र के अन्तर्गत संचालित करने का निर्णय लिया गया। यह भी निर्णय किया गया कि राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को अपनी पाठ्यक्रम एवं परीक्षा तंत्र सहित सुदृढ़ किया जायेगा।

मावन संसाधन विकास मंत्रालय ने राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय की नवम्बर 1989 में संस्थापना कर दी। 20 अक्टूबर सन् 1990 में प्रकाशित भारतीय राजपत्र के निर्णय संख्या एफ 5–24/90 खण्ड तीन के आधार पर सेन्ट्रल बोर्ड आफ सेकेण्डरी एजुकेशन

द्वारा संचालित परियोजना राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय में समाहित कर दिया गया और इसके साथ ही राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय को नामांकन परीक्षा एवं उपाधि प्रदान करने के अधिकार भी प्रदान किया गया। जुलाई 2002 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने इस संगठन के नाम को परिवर्तित कर दिया और इसे नेशनल इन्सटीट्यूट आफ ओपन स्कूलिंग का नाम दिया जिसका उद्देश्य डिग्री पूर्व स्तर तक औपचारिक शिक्षा के विकल्प के रूप में शिक्षा का प्रचार करना था।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4– नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की स्थापना कब हुई?

....

5– पूर्व में यह संगठन किस रूप में था?

....

10.5 नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के कार्य

नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग का कार्य ऐसे अध्येताओं को सुविधा प्रदान करना है जो कि विविध पाठ्यक्रमों को मुक्त एवं दूरस्थ माध्यम से प्रदान करना चाहते हैं–

- 14 वर्ष के आयु के किशोरियों एवं किशोरों को माध्यमिक शिक्षा प्रदान करना।
- किशोरों एवं प्रौढ़ों के लिये कक्षा तीन, पांच एवं आठ के बराबर की शिक्षित करने हेतु मुक्त बेसिक शिक्षा की व्यवस्था करना।
- माध्यमिक स्तर के अध्येताओं के लिये व्यावसायिक एवं रोजगारपरक पाठ्यक्रम की व्यवस्था करना।
- अध्येताओं के लिये जीवनोपयोगी पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना।

मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम ऐसे अध्येताओं को अधिगम सतत करते रहने हेतु सुविधा देता है जो कि किन्ही कारणवश प्राथमिक शिक्षा की मुख्य धारा से नहीं जुड़े पाये हैं। नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग, ओपन बेसिक एजुकेशन कार्यक्रम को क्रियान्वित करने हेतु 341 अध्ययन केन्द्रों से सहायता ले रहा है। वह संगठन इसके

द्वारा प्रतिपादित पाठ्यक्रमों को अपनाने पाठ्य सामग्री एवं संसाधनों के अनुस्थापन पाठ्यक्रम हेतु जिला साक्षरता समितियों को सहायता देता है।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा हेतु एन0आई0ओ0एस0 विविध रोचक एवं लचीले विषयों एवं पाठ्यवस्तुओं के लचीलापन प्रदान करती हैं। यह सी0बी0एस0ई0 एवं राज्य मुक्त विश्वविद्यालय से क्रेडिट को अध्येताओं को प्रदान करने हेतु प्राप्त करते हैं। क्रेडिट अध्येताओं की आवश्यकता को ध्यान में रखकर प्राप्त की जाती है। अध्येताओं को स्वशिक्षण सामग्री, श्रव्य–दष्श्य सामग्री व्यक्तिगत सम्पर्क कार्यक्रम एवं टयूटर अंकित प्रदत्त कार्यों के माध्यम से अधिगम की सुविधा दी जाती है। छमाही पत्रिका मुक्त अधि ागम के माध्यम से भी अध्येताओं के ज्ञान को सुदष्ढ़ करने हेतु प्रदान की जाती है। अधि ागम सामग्री हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू भाषा में प्रदान की जाती है। एन0आई0ओ0एस0 26 प्रकार के पाठ्यक्रम हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू, मराठी, तेलगू, गुजराती, मलयालम, भाषा, में संचालित करता है, तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर 25 पाठ्यक्रम हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू माध्यम से प्रदान किये जाते हैं।

एन0आई0ओ0एस0 75 रोजगार परक शिक्षाप्रद पाठ्यक्रमो को विविध क्षेत्रों कषषि वाणिज्य, व्यापार, इंजीनियरिंग, तकनीकी, स्वास्थ्य, पैरामेडिकल, होम सांइस और प्रबंधन, शिक्षक प्रशिक्षण, कम्प्यूटर एवं आई0टी0 से सम्बंधित घाठ्यक्रम एवं जीवनोपयोगी कार्यक्रमों को संचालित करता है। यह संगठन इन सभी रोजगार पाठयक्रमों के व्यावहारिक पक्ष को जीवंत बनाने हेतु उद्योगों, आई0टी0 केन्द्रों एवं अस्पतालों के साथ समझौता करता है। नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2005 के संस्तुतियों के आधार पर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग अपना स्वयं की मुक्त अधिगम हेतु पाठ्यक्रम की रूपरेखा तैयार करता है। इस संगठन के यह सभी प्रयास माध्यमिक स्तर पर भी मुक्त अधिगम व्यवस्था को सुदष्ढ़ कर रहा है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग प्रथम पीढ़ी अध्येताओं शारीरिक, मानसिक, एवं दषष्टिबाधित अध्येताओं तथा किसी अन्य कारणों से शिक्षा से वंचित वर्ग की आवश्यकताओं को विशेष ध्यान देता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

6. बेसिक ओपन स्कूलिंग किस स्तर की शिक्षा देता है?

....

7. माध्यमिक स्तर पर नेशनल इन्सटीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग कितने पाठ्यक्रम संचालित करता है?

....

8. माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम किन भाषाओं में संचालित है?

....

10.6 नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के प्रकार्य के ढंग

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की अवधारणा एवं कार्यो के विषय में आप विस्तार से पढ़ चुके हैं। अब यह भी देखा जाय कि यह कार्य कैसे करता है?

यह संगठन अपने पॉच विभागों के नेटवर्क तथा 17 क्षेत्रीय केन्द्रों तथा 2945 अध्ययन केन्द्रों के सहायता से भारत व बाहर के देशों में अपना कार्यक्रम संचालित करता है। इस समय 1.5 मिलियन अध्येता माध्यमिक स्तर की शिक्षा में नामांकित है जो कि इसे मुक्त विद्यालय व्यवस्था के रूप में संसार में सर्वोपरि खड़ा करती है।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर–

कामनवेल्थ ऑफ लर्निंग (सी0ओ0एल0) एवं यूनेस्को दोनो मुक्त विद्यालयीकरण को भारत में बढ़ावा देने हेतु प्रमुख रूप से समन्वय करने वाले संगठन है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग अनेक देशों से मुक्त विश्वविद्यालयीकरण को बढ़ावा देने तथा अन्य सम्बंधित कार्यक्रमों को बढ़ावा देने हेतु अन्तक्रिया करता है। इस प्रकार के उद्देश्यों एवं प्रकार्यों के कारण विश्व में इन्टरनेशनल सेन्टर फार ट्रेनिंग इन ओपन स्कूलिंग खोलने की नींव पड़ी। यह केन्द्र विविध सर्टिफिकेट, एडवांस सर्टिफिकेट एवं डिप्लोम पाठ्यक्रमों को संचालित कर रहा है।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्तर्गत दी ओपन स्कूलिंग एसोसियेशन आफ दि कामनवेल्थ (ओसाक) ने अपने को स्थापित होने के साथ अपना सचिवालय रखा। ओसाक का कार्य सदस्य देशों के मध्य समन्वय, सहयोग, बेहतर समझ उत्पन्न करने हेतु साधक के रूप में कार्य करना है। बाह्य देशों के मध्य ओसॉक मुक्त दूरस्थ शिक्षा के सन्दर्भ में विभिन्न चर्चा हेतु एक मंच प्रदान करता है, इसके अतिरिक्त ओसॉक **"जनरल ऑफ ओपन स्कूलिंग"** को प्रकाशित करता है।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग अपने सीमित भौतिक संसाधनों के साथ देश भर के शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकता। अतः विभिन्न राज्यों के मुक्त विद्यालय शिक्षा व्यवस्था के मध्य से एक जाल की स्थापना आवश्यक है और यह संगठन दस राज्यों आंध्रप्रदेश, हरियाणा, जम्मू एवं काश्मीर, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, तमिलनाडू, पश्चिमी बंगाल के मध्य यह सम्बंध स्थापित हो गया है। इसके अतिरिक्त आठ अन्य राज्य असोम, बिहार, छत्तीसगढ़, गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड भी इस संगठन से जुड़ने के प्रक्रिया में है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग का मुख्य कार्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को एक दिशा देना है। इसका मुख्य दायित्व माध्यमिक एवं रोजगार शिक्षा को उस वर्ग के अध्येताओं को पहुँचाना है जो कि किन्हीं कारणवश औपचारिक शिक्षा नहीं ले सके हैं। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग में विभिन्न अध्ययन केन्द्र एवं क्षेत्रीय केन्द्रों के सहायता से नामांकन में प्रतिवर्ष अत्यधिक वृद्धि हुई है।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्तर्गत नामांकन दर–

सत्र	नमांकित विद्यालयों की संख्या	
	शैक्षिक पाठ्यक्रम	व्यावसायिक पाठ्यक्रम
2002–03	2,78,234	23010
2003–04	3,21,010	24233
2004–05	2,38,069	20985
2005–06	2,67,025	22879
2006–07	2,90,983	22166
कुल नामांकन	13,95,322	113273

माध्यमिक स्तर पर — 54 प्रतिशत

उच्च माध्यमिक स्तर पर — 36 प्रतिशत

व्यावसायिक स्तर पर — 10 प्रतिशत

पाठ्य सामग्री– श्रव्य–दृष्य कार्यक्रम के साथ मुद्रित स्व–शिक्षण सामग्री नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग द्वारा दूर अध्येताओं को प्रदान किया जाता है। 2006–07 में 7 मिलियन समन्वित शिक्षण सामग्री का निर्माण एवं वितरण किया गया।

अनुमोदित कार्मिक वर्ग– नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग में 2006 तक अनुमानतः 251 से अधिक लोग विभिन्न पदों पर कार्यरत है।

परीक्षा एवं प्रमाण–पत्र– नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग वर्ष में दो बार परीक्षायें सम्पन्न करवाता है। प्रथम मार्च अप्रैल एवं दूसरा अक्टूबर एवं नवम्बर माह में। विभिन्न सत्रों में 2006–07 तक निम्नांकित संख्या के अध्येता मुक्त एवं दूरस्थ विद्यालयी शिक्षा तथा रोजगारपरक पाठ्यक्रमों में प्रमाण–पत्र प्राप्त कर चुके हैं।

वर्ष	माध्यमिक कक्षा दस	उच्च माध्यमिक कक्षा इण्टर	व्यावसायिक	अन्य पाठ्यक्रम
2002–03	68962	38492	9466	16415
2003–04	122913	59784	11787	25996
2004–05	104356	54659	12474	62866
2005–06	73471	60683	13682	47466
2006–07	84543	70304	12420	12888

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

9– नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग वर्ष में कितने बार परीक्षा करवाता है।

....

10– वर्तमान में इस संस्था में कुल कितने स्टाफ कार्यरत है।

....

10.7 नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग में अधिगम प्रणाली

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग अपने अधिगम प्रणाली को इस प्रकार से संचालित करता है। यह विद्यार्थियों को मुद्रित सामग्री देने के साथ विभिन्न तकनीकी साधनों के माध्यम से भी अध्येताओं को शिक्षा देता है।

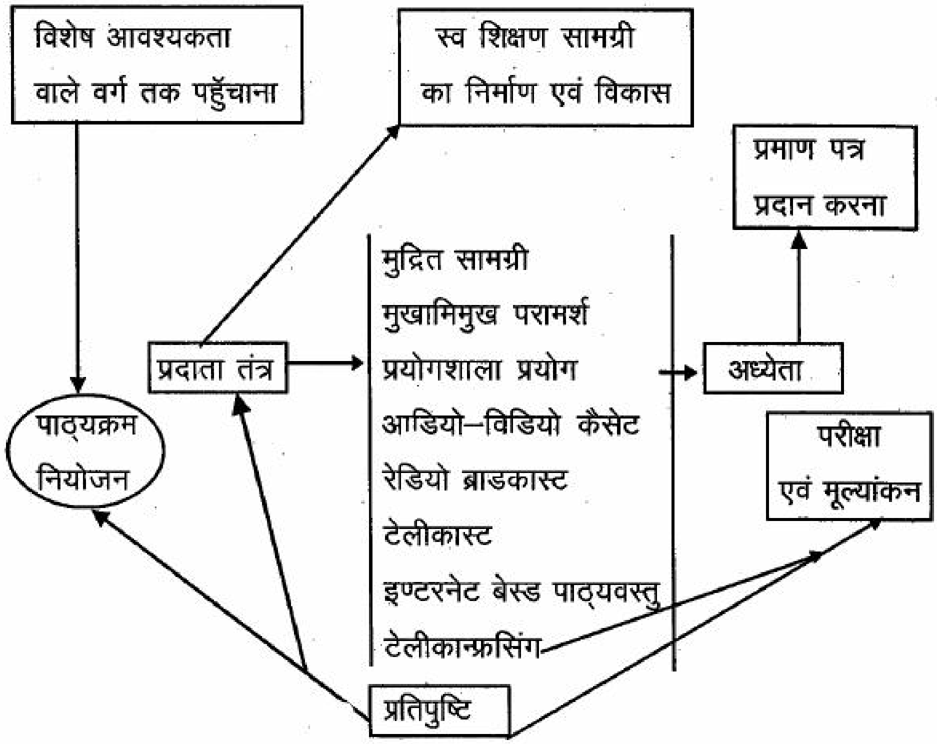

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के पास क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्रों की संख्या

क्षेत्र	एकेडमिक अध्ययन केन्द्र (प्रतिशत)	रोजगार अध्ययन केन्द्र (प्रतिशत)	ओपन बेसिक एजुकेशन (प्रतिशत)
हैदराबाद	7	5	6
कोचीन	3	16	18
इलाहाबाद	17	15	17
कलकत्ता	5	5	9
दिल्ली	11	23	6
भोपाल	4	10	5
गुवाहाटी	8	1	1
जयपुर	4	4	16
चण्डीगढ़	16	12	12
पटना	11	4	9
पूना	8	5	9
मुख्य केन्द्र	0	0	0

यह संगठन माध्यमिक शिक्षा के लोकप्रियता एवं सुगम्यता को पुनः स्थापित कर इसे प्राप्त करना आसान बनाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

11. एन0आई0ओ0एस0 किससे समन्वय चाहता है ?

....

12. इस संगठन के साथ समन्वित रूप से कार्य करने हेतु कौन से राज्य जुड़ चुके है?

....

13. मुक्त विद्यालय शिक्षा में अध्ययन हेतु अध्येताओं को क्या–क्या प्रदान किया जाता है?

....

10.8 नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ अं।पन स्कूलिंग के प्रकार्य के तन्त्र

यह संगठन जैसा कि इसके विविध पक्षों के विषय में जान चुके हैं, यह एक वृहद उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को ध्यान में रखकर खोला गया है। इसके सभी कार्यक्रमों का संचालन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के विभिन्न लक्ष्यों एवं देश के शैक्षिक आवश्यकता को ध्यान में रखकर किया जाता है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग ने एक विस्तष्त तंत्र स्थापित किया है, जिससे की विविध कार्यक्रमों का निर्माण विकास एवं संचालन हो सके।

- इसके लिये वह स्टेट ओपन स्कूलिंग कोआरडिनेशन कमेटी का सहायोग लेकर विभिन्न राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं का पहचान करता है।
- क्षेत्रीय केन्द्रों के सलाहकार कमेटी को भी इस कार्य में सम्मिलित कर सहयोग लिया जाता है।
- यह संगठन अपने विभागों के सलाहकार समितियों को भी विविध कार्यक्रमों के सगठन हेतु सहयोग लेता है।

- इसके अतिरिक्त शोध सलाहकार कमेटी और एकेडेमिक काउन्सिल भी विविध कार्यक्रमों के संचालन हेतु उपयुक्त दिशा निर्देशन देते हैं।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के लक्ष्य–

यह संगठन भविष्य के अनेक उपयोगी लक्ष्यों को निर्धारित करके कार्य कर रहा है। इसके लक्ष्य है–

- सीखते हुये समाज के निर्माण हेतु मुक्त अधिगम तंत्र को प्रोत्साहन देना जो कि गुणात्मक शिक्षा देने में सहायक हो।
- ज्ञान एवं प्रबुद्ध समाज की स्थापना एवं विकास हेतु बहुआयामी लचीला शिक्षा पद्धति प्रदान करना।
- देश में एक राष्ट्रीय संसाधन केन्द्र के रूप में कार्य करना जिससे कि विद्यालय शिक्षा स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम तंत्र एवं अध्येता केन्द्रित शिक्षा को बल मिले।
- नवीन तकनीकी के साथ व्यावसायिक सहयोग नेटवर्क का विकास करना।
- सभी के लिये जीवन पर्यन्त शिक्षा एवं कौशल विकास हेतु शिक्षा एवं प्रशिक्षण प्रदान करना।
- अध्येताओं को व्यासाय पाने के लिये कुशल बनाने के साथ आवश्यकता आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रम का संचालन कर उद्यमी बनाना।
- स्कूल स्तरीय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को सुदष्ढ़ बनाने हेतु क्रियात्मक आधारित अनुसंधान को लोकप्रिय आधार प्रदान करना।
- मूल्यांकन तंत्र, सहयोग सेवाओं, स्वअधिगम सामग्री में गुणात्मकता को बनाये रखने हेतु सतत् प्रयासरत रखना।
- देश के ऐसे समूहों को शिक्षा से जोड़ना जो कि अपवंचित है, जिनमें ग्रामीण युवा, शहरी गरीब, बालिकायें, स्त्रियां, अनुसूचित जातियां एवं अनुसूचित जन जातियां, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक तथा सेवा मुक्त लोग इनमें प्रमुख है।
- राष्ट्रीय एवं वैयक्तिक समन्वित विकास हेतु प्रयास करना।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को प्रचारित करना इसे उपयोगी बनाना।
- स्व–मूल्यांकन व स्व–विकास के प्रक्रिया को बढ़ाते हुये तंत्र का विकास करना।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के विविध पाठ्यक्रमों में 2006–07 तक अध्येताओं का नामांकन–

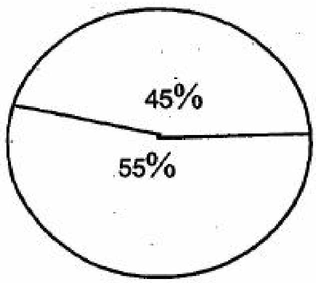

उच्च माध्यमिक स्तर

कुल नामांकन 290983

माध्यमिक स्तर

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के विविध पाठ्यक्रमों में 2006–07 नामांकित पुरूष एवं स्त्री

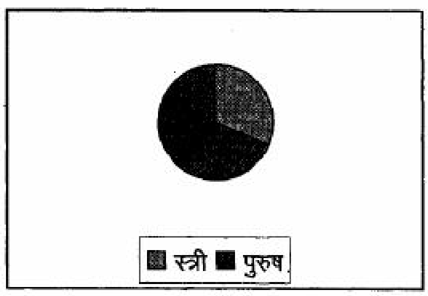

कुल नामांकन 290983

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के विविध पाठ्यक्रमों में विविध वर्गों का नामांकन

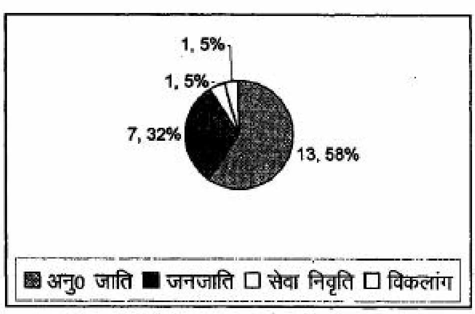

कुल नामांकन– 290983

उपरोक्त सभी आंकड़े दर्शाते है कि विविध आयु एवं लिंग तथा वर्ग के अध्येता नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के विविध पाठ्यक्रमों से जुड़े हुये हैं।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के अन्तर्गत 2006–07 विविध राज्यों में नामांकिन स्थिति–

माध्यमिक स्तर पर दिये जाने वाले विषय–

भाषायें–

हिन्दी, अंग्रेजी, बंगाली, मराठी, तेलगू, उर्दू, गुजराती, कन्नड़, संस्कष्त, पंजाबी, मलयालम, असमी, नेपाली, उड़िया, अरबी।

विषय–

गणित, सांइस एंण्ड टेक्नोलाजी, सोसल साइंस, इकोनामिक, बिजनेस स्टडी, होम सांइस, टाइपराइटिंग, वर्डप्रोसेसिंग, साइकालाजी, इण्डियन कल्चर एवं हैरिटेज, टाइपराइटिंग कोर्स हिन्दी, इंग्लिश एण्ड उर्दू माध्यम में उपलब्ध हैं।

उच्च माध्यमिक स्तर पर दिये जाने वाले विषय

भाषायें–

हिन्दी अंग्रेजी उर्दू

विषय–

मैथस फिजिक्स, कमेस्ट्री, बाइलॉजी, हिस्ट्री, जियोग्राफी, पालिटिकन साइंस, इकोनामिक, बिजनेस स्टडी, एकाउण्ट होम सांइस, टाइपराइटिंग, वर्डप्रोसेसिंग, साइकालाजी, टाइपराइटिंग कोर्स हिन्दी, इंग्लिश एण्ड उर्दू माध्यमों में उपलब्ध हैं।

वोकेसनल एजुकेशन कोर्सेज	**नम्बर ऑफ स्टूडेण्ट**
लाईफ इनरिचमेन्ट कोर्सेज	0
पैरिपूर्ण महिला	3
जन स्वास्थ्य	3378
योग	1
भारतीय कल्चर एण्ड हैरीटेज	0
इण्डियन म्यूजिक	0
लाइफ साइंस	0
सब टोटल–	**3382**

स्टैण्ड एलोन सबजेक्टस सेकेण्डरी लेवल	0
ज्यूट प्रोडक्सन	0
कारपेन्टरी	22
सोलर एनर्जी टेक्निशियन	9
बायो गैस एनर्जी टेक्निशियन	0
लान्डरी सर्विसेज	16
बेकरी एण्ड कान्फेन्सरी	251
वेल्डिंग टेक्नालाजी	326
सब टोटल–	**624**

स्टैण्ड एलान सब्जेक्टस सि0से0 लेवल	
टाइपराइटिंग हिन्दी	33
टाइपराइटिंग अंग्रेजी	125
स्टेनाग्राफी हिन्दी	60
स्टेनाग्राफी अंग्रेजी	0
सेक्रेटिकल प्रैक्टिस	1
वर्ड प्रोसेसिंग	241
कम्प्यूटर साइंस	0
स्टेनोग्राफी उर्दू	0
प्लांट प्रोटेक्सन	0
वाटर मैनेजमेण्ट फार क्राप	0
वायटर मसरूम प्रोडक्सन	0
फर्नीचर एण्ड कैबिनेट मेकिंग	0
इलेक्ट्रोप्लाटिंग	0
हाउसकीपींग	16
कैटरिंग मैनेजमेण्ट	311
फूड प्रोसेसिंग	31
प्ले सेन्टर मैनेजमेण्ट	0
होटल फ्रंट आफिस मैनेजमेण्ट 0	32
पाउल्ट्री फार्मिंग	0
सोइल एण्ड फर्टिलाइजर मैनेजमेण्ट	0
प्रीसजिवेटन आफ फूड एण्ड वेजिटेबल	10
टाइपिंग उर्दू	10
सब टोटल–	**860**
गाण्ड टोटल–	**22166**

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

14. माध्यमिक स्तर पर कितने अध्येता 2006 तक नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग में नामांकित हो चुके थे।

....

15. इस संगठन के कुल कितने अध्ययन केन्द्र है?

....

16. सामान्य वर्ग के कुल कितने अध्येता 2006 तक माध्यमिक स्तर की शिक्षा हेतु इस संगठन से नामांकित थे।

....

10.9 सारांश

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग देश में माध्यमिक एवं बेसिक शिक्षा को मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रदान करने हेतु एक संसाधक के रूप में कार्य करता है। इसका कार्यक्षेत्र वृहदत्तर है। इसका अथक प्रयास माध्यमिक स्तर की औपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में विकल्प के रूप में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को लोकप्रिय बना रहा है।

10.10 अभ्यास के प्रश्न–

1. नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की स्थापन क्यों की गयी। इसके लक्ष्यो एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालिये।
2. नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग की मुख्य स्वरूप नामांकन, अध्ययन केन्द्रों, पाठ्यक्रम आदि का विस्तार से चर्चा कीजिये।

10.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. माध्यमिक स्तर की
2. माध्यमिक स्तर की शिक्षा का प्रचार प्रसार करता है।

3. बिना कक्षा कक्ष, छात्र केन्द्रित, शिक्षक प्रदाता के रुप में, तकनीकी आधारित।

4. 1989

5. एक परियोजना के रुप में।

6. प्राथमिक स्तर की

7. 26 प्रकार के पाठ्यक्रम माध्यमिक तथा 25 प्रकार के उच्च माध्यमिक स्तर पर,

8. 3 भाषा में।

9. 2 बार, प्रथम मार्च अप्रैल, दूसरा अक्टूबर नवम्बर में।

10. विभिन्न राज्यों से।

11. 10 राज्य।

12. स्व शिक्षण सामग्री।

13. 290983 अध्येता।

14. 1943 अध्ययन केन्द्र।

15. 79%

10.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गुप्ता एवं गुप्ताः मुक्त एव दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।

उपाध्याय, प्रतिभा (2007),भारतीय षिक्षा में उदीयमान प्रवषत्तियॉं, इलाहाबाद : षारदा पुस्तक भवन।

Sujatha, K. (2002), Distance Education at Secondary Level in India, New Delhi: National Open School.

इकाई–11 मुक्त विश्वविद्यालय

संरचना–

11.1 प्रस्तावना

11.2 उद्देश्य

11.3 मुक्त विश्वविद्यालय की अवधारणा एवं विकास

11.4 राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय

11.5 राष्ट्रीय मुक्त विश्व विद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रम

11.6 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

11.7 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों का संक्षिप्त परिचय

11.8 सारांश

11.9 अभ्यास के प्रश्न

11.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

11.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.1 प्रस्तावना

प्राथमिक शिक्षा की बढ़ती मांग ने माध्यमिक स्तर की शिक्षा की मांग को बढ़ावा दिया और माध्यमिक स्तर के प्रचार–प्रसार तथा मानव संसाधन की मांग ने उच्च शिक्षा की मांग को बढ़ावा दिया। उच्च शिक्षा की बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के ध्येय को कुछ विश्वविद्यालयों में व्यक्तिगत परीक्षा प्रणाली को औपचारिक शिक्षा के साथ प्रारम्भ किया गया। मुक्त विश्वविद्यालय आज भारत ही नहीं विश्व भर में उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले अति लोकप्रिय माध्यमों में से एक है। हम इस इकाई में मुक्त विश्वविद्यालयों के विषय में आवश्यक जानकारी प्राप्त करेंगे।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि –

- मुक्त विश्वविद्यालय की अवधारणा एवं स्थापना के प्रारम्भिक प्रयास को विवेचन कर सकेंगे।
- मुक्त विश्विद्यालयों के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को स्पष्ट कर सकेंगे।

11.3 मुक्त विश्वविद्यालय की अवधारणा एवं विकास

जैसा कि आप जानते हैं कि औपचारिक शिक्षा प्रणाली की अपनी बहुत सी सीमायें, और समय स्थान आयु एवं निर्धारित योग्यता ने इसे कठोर बना दिया। समाज में ऐसा वर्ग भी रहता है जो किसी भी स्तर पर औपचारिक शिक्षा की सुविधा या तो ले नहीं पाते या वंचित रह जाते हैं। तब दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा माध्यम से जो विश्वविद्यालय प्रदान करते हैं वे मुक्त विश्वविद्यालय कहलाते हैं। भारत एवं विश्व में पत्राचार तथा मुक्त शिक्षा के क्रमिक विकास को पूर्व में ही पढ़ चुके हैं।

भारतीय समाज में शिक्षा प्राप्ति की ललक ने उच्च शिक्षा पर भी दबाब बढ़ा दिया। विश्वविद्यालयी शिक्षा में आधारभूत सूचनाओं की सीमाओं ने उच्च शिक्षा में प्रवेश के इच्छुक अनेक प्रवेशार्थियों का प्रवेश से वंचित होना एक स्वाभाविक परिस्थितियां ही थी जिसे बदलना कठिन था। अपनी अन्तर्निहित विशेषताओं तथा कम लागत पर उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दक्षता के कारण दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को औपचारिक शिक्षा प्रणाली के एक उपयुक्त विकल्प के रूप में विश्वव्यापी स्तर पर स्वीकार कर लिया है। विश्व के अधिकांश देशों में उच्च शिक्षा स्तर पर मुक्त विश्वविद्यालय कार्यरत है, और इनके द्वारा प्रदान किये जाने वाले पाठ्यक्रम अत्यधिक लोकप्रिय रूप ले रहे हैं। सन् 1969 में ब्रिटेन के मिल्टन कीन्स में स्थापित विश्व के प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता को सिद्ध करने एवं इसे परम्परागत शिक्षा व्यवस्था के समतुल्य प्रभावी विद्या के रूप में स्थापित करने कार्य में सकारात्मक योगदान दिया।

भारत में आधुनिक प्रकार की उच्च शिक्षा की आधार शिक्षा सन् 1857 में ब्रिटिश शासकों के द्वारा अपने यहां विद्यमान विश्वविद्यालय शिक्षा व्यवस्था का अनुकरण करते हुये रखी गयी थी। स्वतंत्रता के पश्चात् 20 विश्वविद्यालयों से संख्या एकाएक बढी। नये विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय खाले गये। इस विकास से प्रसन्नता नहीं होती क्योंकि आज भी औपचारिक शिक्षा संस्थानों में 90 प्रतिशत से अधिक लोग उच्च शिक्षा से वंचित है। इस कारण मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा इसका एक विकल्प के रूप में उभरा है। इसी क्रम में सन् 1962 में दिल्ली विश्वविद्यालय के द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में भारतवर्ष में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का श्री गणेश हुआ एवं तत्पश्चात् अन्य अनेक विश्वविद्यालयों के द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना प्रारम्भ किया गया।

सन् 1965 को ब्रिटेन में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना से भारतीय शिक्षा नियोजकों एवं नीति निर्धारकों को एक ऐसी ही वैकल्पिक प्रणाली अपनाने हेतु बल मिला। अतः 1970 ई० में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा देश में मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के सम्बंध में एक सेमिनार आयोजित हुआ। सूचना एवं

प्रसारण मंत्रालय एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा अनुदानित इस सेमिनार की अध्यक्षता केन्द्रीय शिक्षामंत्री प्रोफेसर वी0के0राव ने की। इसमें मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना एवं संगठन जैसे उद्देश्यों, संगठन, वित्तीय व्यवस्था एवं कार्य पद्धति आदि के लिये विस्तृत चर्चा के साथ एक कार्यदल का गठन किया जाता है।

श्री जी पार्थ सारिथी की अध्यक्षता में गठित कार्यदल ने 1975ई0 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा विश्वविद्यालय की प्रकषति संगठन एवं वित्तीय व्यवस्था के बारे में अनेक सुझाव दिये। वास्तव में यह मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु प्रथम विधेयक था। इसमें मुख्य विचार उभरे कि–

"इस पकार की स्थिति में जहां उच्च शिक्षा के नामांकन में वृद्धि भयंकर गति से हो रही है तथा जहां मानव व धन की दृष्टि से उलब्ध संसाधन सीमित हो। एक स्पष्ट समाधान यदि उपयुक्त मानकों का अनुसरण करना है तथा आबादी के विभिन्न वर्गों की उच्च शिक्षा की मांग को पूरा करना है, अंशकालिक अथवा स्वसमय आधारित उच्च शिक्षा के प्रावधान के साथ मुक्त विश्वविद्यालय प्रणाली को अपनाना है। यह समूह अन्तः संस्तुति करता है कि भारत सरकार यथा शीघ्र संसद के अधिनियम के द्वारा एक मुक्त विश्वविद्यालय स्थापिन करें। इस विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र सम्पूर्ण राष्ट्र हो जिससे जब यह पूर्ण विकसित हो जाये, प्रत्येक क्षेत्र भले ही राष्ट्र के सुदूर किनारे में हो इनके न्दिेशन व उपाधियां तक पहुॅच सकें।"

सन् 1982 ई0 में देश की शैक्षिक आवश्यकताओं की दृष्टि से केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की कार्यशैली की जॉच हेतु डॉ माधुरी आर शाह की अध्यक्षता में एक समिति गठित की गयी। इस समिति ने भी जोरदार शब्दों में राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय खोले जाने की संस्तुति दी। देश में चल रहे पत्राचार शिक्षा संस्थानों ने भी इस बात की आवश्यकता अनुभव किया कि राष्ट्र स्तर पर मुक्त विश्वविद्यालय खोले जाये।

1982 ई0 में ही आंध्रप्रदेश सरकार ने अपने राज्य में आन्ध्र प्रदेष मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की। इससे प्रेरित होकर देश में राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित करने का विचार सन् 1984 में पुनः प्रस्फुटित हुआ तथा सन् 1985 में भारत सरकार में एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय खोलने का निर्णय लिया और तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी ने अपने प्रथम राष्ट्रीय प्रसारण में इस आशय की घोषणा की संसद में इस हेतु प्रारूप अधिनियम प्रस्तुत किया गया जिसे सितम्बर 1985 में ससंद के दोनों सदनों के द्वारा विधिवत् पारित किया गया और 20 सितम्बर 1985 को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. देश में मुक्त विश्वविद्यालय खोले जाने की आवश्यकता क्यों अनुभूत हुई?

....

2. देश में मुक्त विश्वविद्यालय के संगठन एवं प्रारूप पर विचार–विमर्श कैसे हुआ?

....

3. देश में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना कहां और कब हुई?

....

11.5 राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मुक्त विश्वविद्यालय की संकल्पना के विकास के विषय में आप उपर संक्षिप्त में पढ़ चुके हैं। जानते हो इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना बहुत हो व्यापक एवं प्रशंसनीय उद्देश्यों को लेकर की गयी तथा इसका क्षेत्र अति व्यापक है। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में इग्नू ने भारत में विश्वविद्यालयीय शिक्षा के प्रसार के लिये मुक्त अधिगम तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली नामक एक प्रभावशाली तथा महत्वपूर्ण विकल्प प्रस्तुत किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कहा गया कि–

"मुक्त अधिगम प्रणाली को उच्च शिक्षा के अवसर विस्तारित करने के लिये शिक्षा के जनतांत्रीकरण के एक साधन के लिये तथा इसे जीवन भर की प्रक्रिया बनाने के लिये प्रारम्भ किया गया। मुक्त अधिगम प्रणाली का लचीलापन तथा नवचारिता हमारे देश के नागरिकों, व्यावसायिक धारा में सम्मिलित हो गये, सहित की विविधतापूर्ण मांगों के लिये विशेष रूप से उपयुक्त है। इन उद्देश्यों के लिये राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय को सुदृढ़ किया जायेगा। यह राज्यों में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना में सहायता भी प्रदान करेगा।"

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में इग्नू आज अत्याधुनिक लोकप्रिय है। इसका मुख्यालय दिल्ली के दक्षिण में मैदान गढ़ी नामक क्षेत्र में 150 एकड़ की विशाल भूमि पर स्थापित है, और सम्पूर्ण राष्ट्र एवं विश्व में इसके क्षेत्रीय केन्द्रों तथा अध्ययन केन्द्रों के एक विशाल तंत्र के माध्यम से इस विश्वविद्यालय ने हजारों लाखों लोगों के लिये उच्च शिक्षा को सुगम बना दिया। सन् 2005–06 तक 58 क्षेत्रीय केन्द्रों के 1409

अध्ययन केन्द्रों के विशाल संजाल के साथ 1433490 विद्यार्थी नामांकित थे। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोच्च निकाय के रूप में स्थापित दूरस्थ शिक्षा परिषद् के माध्यम से इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय सम्पूर्ण राष्ट्र में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के समन्वय व प्रोत्साहन के उत्तरदायित्व का निर्वहन भी करता है। इग्नू आज देश में ही नहीं विश्व में नामांकन तथा प्रायोजित पाठ्यक्रमों की दषष्टि से अग्रणी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय है। सन् 1993 में इसे सेन्टर ऑफ एक्सेलेन्स इन डिस्टैन्स एजुकेशन के सम्मान से सम्मानित किया गयां।

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के लक्ष्य

इस विश्वविद्यालय का सम्पूर्ण लक्ष्य इसके अधिनियम से ही प्रकाशित है –

- यह विश्वविद्यालय मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के लिये उपयुक्त विभिन्न साधनों के माध्यम से शिक्षा तथा ज्ञान उपलब्ध करायेगा।
- समाज के अपवंचित वर्ग को शिक्षा प्रदान करना।
- देश में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को समन्वित रूप से प्रोत्साहित एवं सहायता देना।
- देश के प्राकषतिक व मानवीय संसाधनों को मजबूत करना।

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के उद्देश्य

- विभिन्न साधनों द्वारा ज्ञान तथा अधिगम में वषद्धि करना तथा उसका प्रसार करना।
- आधुनिक सम्प्रेषण तकनीकी के प्रयोग द्वारा जनसंख्या के बड़े भाग को उच्च शिक्षा प्रदान करना।
- देश की वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था के अन्तर्गत दूरस्थ प्रणाली को प्रोत्साहित करना।
- इस प्रणाली के पूरक के रूप में अनौपचारिक शिक्षा का विकास करना।
- इस प्रणाली के कार्यक्रमों द्वारा मानवीय व्यक्तित्व के समन्वित विकास हेतु योगदान देना।

राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की विशेषतायें–

मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना, ढांचा एवं संगठन नियमित एवं परम्परागत विश्वविद्यालयों से भिन्न होती है। राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में इग्नू की

निम्नलिखित विशेषतायें है–

प्रवेश के लिये उदारता एवं लचीलापन– यह अपने पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आधिक परम्परागत नियमों को पालन नहीं करता है। इसके व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अनुभव सम्बंधी अर्हता रखी गयी है।

कार्यक्षेत्र की व्यापकता– इग्नू का कार्यक्षेत्र अत्यधिक व्यापक है। यह सम्पूर्ण राष्ट्र के अध्येताओं को अपने विविध पाठ्यक्रमों के चयन हेतु आवश्यक सुविधायें देता है।

व्यक्ति अध्ययन– इग्नू अपने अध्येताओं को स्वगति से स्वनिर्णय तथा स्वप्रेरण सहित स्वअध्ययन हेतु पेरित करता है। इसमें अध्येताओं को समय सीमा में आबद्ध नहीं किया जाता है।

पाठ्यक्रमों की विविधता एवं उपयोगिता– इग्नू के विविध पाठ्यक्रम सम्पूर्ण राष्ट्र के अध्येताओं की आवश्यकताओं को देखकर बनाये गये हैं। इसमें विविध सैद्धान्तिक व्यावहारिक तथा प्रायोगिक पाठ्यक्रम सम्मिलित किये गये हैं। पाठ्यक्रमों को अध्येताओं की सुविधाओं एवं योग्यतओं को ध्यान में रखकर प्रारूपित किया गया है।

लागत प्रभावी कार्यक्रम– इग्नू के शैक्षिक कार्यक्रम लागत प्रभावी है। आर्थिक दृष्टि से पिछड़े हुये व्यक्ति जो पारम्परिक शिक्षा का व्यय भार वहन नहीं कर सकते वे अल्प शुल्क देकर इस विश्वविद्यालय के शैक्षिक कार्यक्रमों का लाभ उठाकर अपनी उच्च्य शिक्षा जारी रख सकते हैं।

प्रशासनिक ढॉचा

इग्नू की स्थापना अन्य केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के समान संसद द्वारा पारित एक अधिनियम के द्वारा हुई है। भारत के राष्ट्रपति इस विश्वविद्यालय के विजिटर अथवा अधिष्ठाता होते हैं। इस विश्ध्वविद्यालय के प्रशासनिक तंत्र की पांच प्रमुख प्रशासकीय इकाईया अग्रांकित है–

1. प्रबंध बोर्ड
2. विद्या परिषद
3. नियोजन समिति
4. दूरस्थ शिक्षा परिशद
5. वित्त समिति
6. अध्ययन विद्यापीठ

उनके अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय के प्रमुख अधिकारी निम्नवत् है–

1. कुलपति
2. सम–कुलपतिगण
3. निदेशकगण
4. कुलसचिव
5. वित्त अधिकारी

इनके अतिरिक्त देश के लब्ध शैक्षिक तथा प्रशासनिक व्यक्तियों को इस विश्वविद्यालय के विभिन्न सभागों तथा विद्यापीठों के विविध प्रकार के क्रिया–कलापों के समुचित संचालन के लिये राष्ट्रीय स्तर पर सम्मिलित किये जाते हैं। विश्वविद्यालय के कार्य संचालन की सम्पूर्ण व्यवस्था इसके विभिन्न संवैधानिक निकायों तथा अधिकारियों के द्वारा की जाती है। इन निकायों तथा अधिकारियों के कर्तव्य व अधिकार संक्षेप में अग्रांकित प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

प्रबंध बोर्ड– इग्नू का प्रमुख कार्यकारी निकाय इसका प्रबंध बोर्ड है। इस विश्वविद्यालय के अधिनियमों / परिनियमों में इस प्रबंध बोर्ड को विश्वविद्यालय की आय–व्यय तथा सम्पत्ति के प्रबंध तथा प्रशासन एवं विश्वविद्यालय की सम्पन्न प्रशासनिक गतिविधियों के संचालन का अधिकार दिया गया। यह निकाय इस मुक्त विश्वविद्यालय के कार्य नियोजन व संचालन एवं संगठन में निर्णायक भूमिका अदा करता है।

विद्या परिषद्– इग्नू की विद्या परिषद् इस विश्वविद्यालय की सर्वोच्च शैक्षणिक निकाय के रूप में इस विश्वविद्यालय की शैक्षणिक नीतियों के निर्धारण तथा उनका अनुपालन कराने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। यह परिषद् अध्ययन सामग्री, अध्ययन विधियों, मूल्यांकन विधियों, अनुसंधान क्रियाकलाप एवं शैक्षिक मानकों के उन्नयन के सम्बंध में दिशा निर्देश प्रदान करती है। यह विद्या परिषद् विश्वविद्यालय में शोध कार्यों के निर्देशन तथा पर्यवेक्षण की व्याख्या का निर्धारण तथा सुनिश्चित भी करती है।

नियोजन समिति– इग्नू की नियोजन समिति का मुख्य दायित्व विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जाने वाले उपयुक्त कार्यक्रमों एंव शैक्षणिक क्रिया–कलापों का विन्यास करना एवं तद्नुसार कार्य योजनायें तैयार करना।

दूरस्थ शिक्षा परिषद्– इग्नू को देश में उच्च शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च निकाय के रूप में कार्य करने का उत्तरदायित्व दिया गया है। इग्नू अपने इस उत्तरदायित्व को दूरस्थ शिक्षा परिषद् के माध्यम से सम्पादित करता है। दूरस्थ षिक्षा परिशद के सन्दर्भ

में विस्तष्त विवरण इकाई 9 में प्रदत्त है।

वित्त समिति— इग्नू की वित्त समिति का प्रमुख कार्य विश्वविद्यालय के सभी वित्तीय प्रकरणों पर परामर्श देना तथा व्यय की सीमाओं का निर्धारण करना होता है। यह समिति विश्वविद्यालय की आय तथा संसाधनों को दषष्टिगत रखते हुये विश्वविद्यालय के आवर्षत्तिक तथा अन—आवर्षत्तिक व्यय की अधिकतम सीमाओं को निर्धारित करती है।

अध्ययन विद्यापीठ— इग्नू विभिन्न विषयों के अध्ययन में तालमेल बैठाने के लिये संकायों के स्थान पर अध्ययन विद्यपीठों के माध्यम से कार्य करता है। प्रत्येक विद्यापीठ एक निदेशक के अधान रहती है। इग्नू के शैक्षणिक कार्यक्रमों के निर्माण के लिये उत्तरदायी मूल शैक्षणिक इकाईयॉ वस्तुतः अध्ययन विद्यापीठ है। वर्तमान में इस विश्वविद्यालय में कुल दस अध्ययन विद्यापीठ है— कम्प्यूटर तथा सूचना विज्ञानों का विद्यापीठ, सतत् शिक्षा विद्यापीठ, स्वास्थ्य विज्ञान विद्यापीठ, शिक्षा विद्यापीठ, अभियांत्रिकी व तकनीकी विद्यापीठ, मानविकी विद्यापीठ, प्रबंध अध्ययन विद्यापीठ, विज्ञान विद्यापीठ, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, कृषि विद्यापीठ है। कृषि विद्यापीठ को दसवें विद्यापीठ के रूप में शीघ्र ही सम्मिलित किये जाने की आशा है। प्रत्येक विद्यापीठ में कुछ विषय निध ारित है जिनके सम्बंध में उस विद्यापीठ को विविध प्रकार के शैक्षिक क्रियाकलापों का नियोजन व क्रियान्वयन करना होता है। अध्ययन के प्रत्येक विद्यापीठ का अपना एक बोर्ड होता है जो उस विद्यापीठ के विकास, अनुसंधान कार्य तथा शैक्षणिक क्रियाकलापों पर नजर रखता है।

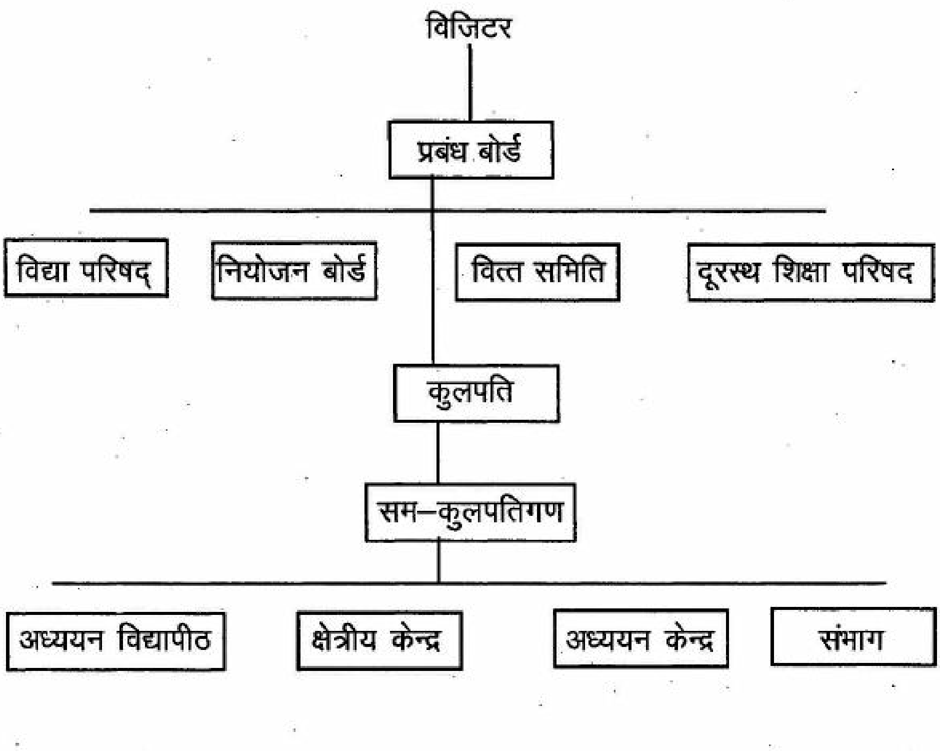

इग्नू का संगठनात्मक ढाँचा

कुलपति– इग्नू का कार्यकारी प्रमुख इसका कुलपति होता है। कुलपति विश्वविद्यालय एक पूर्णकालिक वेतनभोगी अधिकारी होता है। वह प्रबंध बोर्ड, विद्वत परिषद्, नियोजन बोर्ड, वित्त समिति तथा दूरस्थ शिक्षा परिषद् का पदेन अध्यक्ष होता है। विश्वविद्यालय के समस्त क्रियाकलापों का संचालन एवं नियंत्रण भी कुलपति ही प्रत्यक्षतः करता है एवं विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों के निर्णय का कार्यरूप देने के लिये भी कुलपति ही उत्तरादायी होता है।

सम–कुलपति– इग्नू के अध्यादेशों के अनुसार कुलपति द्वारा समय–समय पर निर्दिष्ट प्रकरणों के अनुरूप सम–कुलपति विश्वविद्यालय के कुलपति का सहयोग करेगा एवं कुलपति द्वारा सौंपे गये उन अधिकारों का प्रयोग एवं उन कर्तव्यों का निर्वहन भी करेगा जो उसे कुलपति द्वारा सौंपे गये हों।

निदेशक– प्रत्येक विद्यापीठ एक निदेशक के अधीन रहता है। निदेशकों पर अपने–अपने विद्यापीठों के कर्मचारियों तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षिक, प्रशासनिक तथा सेवा शाखाओं के साथ तालमेल बनाते हुये शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना तैयार करने, उनका पर्यवेक्षण करने तथा उन्हें विकसित और आयोजित करने का दायित्व होता है।

कुलसचिव– कुलसचिव को विश्वविद्यालय के अभिलेखों को संरक्षित रखने, विभिन्न समितियों व निकायों के निर्णयों को संसूचित करने तथा विश्वविद्यालय के विभिन्न निकायों को वांछित सूचना उपलब्ध कराने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया है।

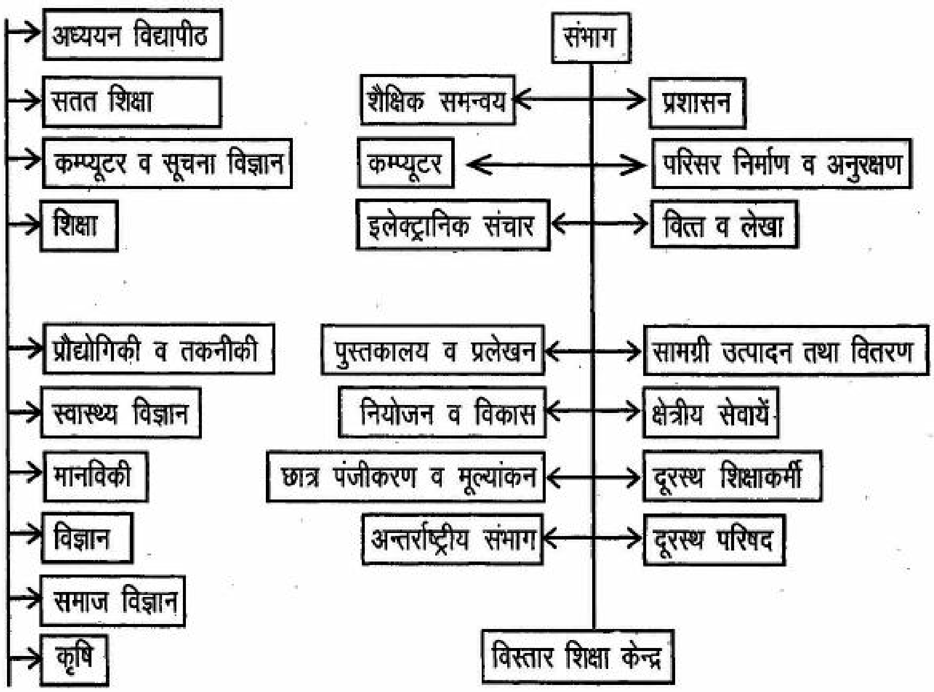

11.5 इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के शैक्षणिक कार्यक्रम

इग्नू के द्वारा अपने कार्यक्रमों के विकास में एक सुनिर्धारित पाठ्यक्रम विकास योजना को अपनाया जाता है जिससे स्व–अध्ययन सामग्री, श्रव्य–दष्श्य सामग्री तथा अन्य शैक्षणिक क्रियाकलापों की गुणवत्ता तथा प्रभाविकता सुनिश्चित की जा सके।

प्रवेश प्रक्रिया

दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त आधगम प्रणाली की परम्पराओं एवं विशेषताओं के अनुरूप ही इग्नू के विभिनन कार्यक्रमों में प्रवेश योग्यताओं, अध्ययन गति, अध्ययन समय तथा अध्ययन अवधि में पर्याप्त लचीलापन पाया जाता है। इग्नू ने भी प्रवेश की न्यूनतम अर्हताओं में इस प्रकार की शिथिलता देकर हजारों, लाखों शिक्षार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्ति के अपने स्वप्न को साकार करने के अवसर उलब्ध कराये हैं तथा आगे भी करा रहा है। इस विश्वविद्यालय के विभिन्न शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश सम्बंधी विज्ञापन देश के प्रमुख राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय समाचार पत्रों में सामान्यतः अप्रैल एवं नवम्बर माह में प्रकाशित किये जाते हैं। प्रवेशार्थियों द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों में प्रवेश हेतु प्रस्तुत किये गये प्रवेश आवेदन–पत्रों को प्रक्रमित करके प्रवेश को अंतिम रूप दिया जाता है एवं तत्पश्चात् छात्रों को उनकी नामांकन संख्या से अवगत कराते हुये अध्ययन सामग्री प्रेषित करना प्रारम्भ कर दिया जाता है। अन्य विश्वविद्यालयों के छात्र कुछ निर्धारित शर्तों के अधीन अपने नियमित पाठ्यक्रमों के साथ–साथ इग्नू के पाठ्यक्रमों में भी प्रवेश ले सकते हैं।

अनुदेशन प्रणाली

इग्नू के द्वारा शिक्षार्थियों को अनुदेशन प्रदान करने हेतु बहुसचार अधिगमन अपनाया जाता है। बहुसंचार अधिगमन के अन्तर्गत मुख्यतः स्व–अध्ययन सामग्री, मुद्रण, ध्वनि तथा दष्श्य सामग्री, रेडियो तथा दूरदर्शन प्रसार, परामर्श सत्र, आमने–सामने शिक्षण, दूरस्थ संगोष्ठी एवं अन्तःक्रियाशील रेडियो व दूरदर्शन परामर्श आदि विविध विधायें सम्मिलित रहती हैं। विज्ञान, कम्पयूटर, अभियांत्रिकी तथा तकनीकी सम्बंधी पाठ्यक्रमों में छात्रों के लिये अध्ययन केन्द्रों पर प्रयोगात्मक कक्षाओं एवं प्रोजेक्ट कार्य की व्यवस्था भी की जाती है।

स्पष्ट है कि इग्नू में परम्परागत विश्वविद्यालयों से भिन्न अध्ययन–अध्यापन तरीके अपनाये जाते हैं। इग्नू वास्तव में बहुसंचार अधिगमन उपागम का उपयोग करता है जिसमें प्रमुखतः निम्न विधायें सम्मिलित रहती है,।

1. स्व–शिक्षण मुद्रित सामग्री।
2. श्रव्य–दृश्य सामग्री।
3. परामर्श सत्र/ सम्पर्क कार्यक्रम।

4. टेलीकांफ्रेंसिंग।
5. प्रायोगिक व प्रोजेक्ट कार्य।
6. प्रयोगात्मक हैण्डबुक।
7. अन्तः क्रियात्मक रेडियो व दूरदर्शन उपबोधन के रूप में ज्ञानवाणी तथा ज्ञान दर्शन।

मूल्यांकन प्रणाली

मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा अपनायी जाने वाली परीक्षा प्रणाली का स्वरूप परम्परागत विश्वविद्यालयों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के काफी समान होता है। परन्तु दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की मूलभूत विशेषताओं के कारण उसमें कुछ अंतर आ जाते हैं। जिसके कारण प्रायः मुक्त विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन प्रणाली को परम्परागत विश्वविद्यालयों की मूल्यांकन प्रणाली से भिन्न समझा जाता है।

सतत मूल्यांकन

पाठयक्रम के दौरान समय–समय पर शिक्षार्थियों को नियत–कार्य या अधिन्यास दिये जाते हैं एवं शिक्षार्थियों के द्वारा किये गये इन नियत–कार्यों का समय–समय पर निरन्तर मूल्यांकन किया जाता है। सम्पूर्ण सत्र के दौरान किये जाने वाले इस सतत् मूल्यांकन का उद्देश्य अध्ययन के दौरान शिक्षार्थियों में वांछित सुधार लाना होता है। वस्तुतः सतत् मूल्यांकन से प्राप्त परिणाम शिक्षार्थियों के द्वारा सत्रान्त परीक्षा हेतु किये जा रहे अधिगम में सुधार के लिये प्रयुक्त किये जाते हैं, एवं इस प्रकार के मूल्यांकन को संरचनात्मक मूल्यांकन कहा जा सकता है।

इग्नू के द्वारा शिक्षार्थियों के अधिन्यास अथवा नियत कार्य तथा प्रोजेक्ट कार्य आदि के मूल्यांकन के लिये पॉच बिन्दु ग्रेड प्रणाली को भी अपनाया जाता है। इस पॉच बिन्दु ग्रेड प्रणाली के विभिन्न अक्षर ग्रेड तथा उनके सापेक्ष गुणवत्ता स्तर व बिन्दु ग्रेड सारिणी में प्रस्तुत किये गये हैं।

इग्नू द्वारा प्रयुक्त ग्रेड प्रणाली

अक्षण ग्रेड	गुणवत्ता स्तर	ग्रेड बिन्दु
ए	असाधारण	5
बी	अति उत्तम	4
सी	उत्तम	3
डी	संतोषप्रद	2
ई	असंतोषप्रद	1

इग्नू में प्रचलित मूल्यांकन प्रणाली तथा परीक्षा संस्था सम्बंधित उपरोक्त सामान्य वर्णन के अवलोकन से स्पष्ट है कि किसी शिक्षार्थी के द्वारा किसी शैक्षिक

कार्यक्रम का पूरा करना उस शिक्षार्थी के द्वारा उस कार्यक्रम के लिये विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम से सम्बंधित समस्त आवश्यक सत्रीय कार्य, सत्रान्त परीक्षा तथा प्रयोगात्मक घटक में प्राप्त सफलता पर निर्भर करता है।

छात्र सहायता सेवा–

1. विषय विशिष्ट शैक्षिक समुपदेशन।
2. श्रव्य–दृष्य कार्यक्रम सुनना व देखना।
3. पुस्तकालय सुविधायें।
4. दूरस्थ–गोष्ठियां।
5. विश्वविद्यालय के नियमों, विनियमों तथा अंतिम तिथियों संबंधी सूचना सेवायें।
6. अधिन्यास/नियत कार्य की प्रस्तुति, मूल्यांकन तथा प्रतिपुष्टि।
7. सत्रान्त परीक्षायें।
8. कम्प्यूटर सुविधा।
9. प्रायोगात्मक तथा प्रोजेक्ट कार्य।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई कें अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4 इग्नू शिक्षा प्रदान करने हेतु कौन –कौन से साधन प्रदान करता है?

....

5 इग्नू में कुलपति व कुलसचिव का क्या कार्य है?

....

6. राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की मुख्य विशेषता क्या है?

....

11.6 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

अनेक राज्यों के द्वारा अपने यहां मुक्त विश्वविद्यालयों की शीघ्रातिशीघ्र स्थापना करने की अपेक्षा करने का यही प्रमुख कारण है। राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों से अपेक्षित

प्रमुख कार्य निम्नवत है–

1. राज्य की जनता की विशिष्ट मांगों के अनुरूप दूरस्थ शिक्षा के कार्यक्रमों को अभिकल्पित करना एवं विकसित करना।
2. देश में उच्च शिक्षा की सुविधाओं विशेषकर कामकाजी व्यक्तियों, महिलाओं तथा दुर्गम व निर्जन क्षेत्रों में रहने वाले व्यक्तियों के लिये शिक्षा का फैलाव करने के लिये, इग्नू एवं राज्यों के अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों से सहयोग करना।
3. राज्य के आर्थिक विकास के लिये आवश्यक तकनीकी तथा व्यावसायिक मानव शक्ति की मॉग को पूरा करने के लिये शिक्षा तथा प्रशिक्षण के विभिन्न कार्यक्रम अभिकल्पित करना तथा विकसित करना।
4. शिक्षा तथा प्रशिक्षण में लागत–प्रभावकता को सुनिश्चित करने के लिये कार्यक्रमों, सेवाओं, तकनीकी तथा अन्य संसाधनों की सहभागिता के लिये तंत्रिकी व अन्य व्यवस्थाओं के द्वारा प्रणाली बनाना।

राज्यों के द्वारा नये मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के समय इसकी आवश्यकता, उद्देश्य, शैक्षिक कार्यक्रम, निर्देशन प्रविधियों, प्रशासनिक तंत्र एवं वित्तीय संसाधनों की उपलब्धता सम्बंधी विभिन्न व्यवस्थाओं पर विचार करना समोचित होता है।

केन्द्र द्वारा स्थापित इग्नू के अतिरिक्त कुल तेरह राज्यों के द्वारा भी अपने–अपन राज्यो में मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित किये जा चुके हैं। अपने–अपने राज्यों में मुक्त विश्वविद्यालय स्थापित करने वाले ये तेरह राज्य आन्ध्र प्रदेश, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश, तमिलनाड. छत्तीसगढ़, उत्तरांचल तथा असम है।

भारत में स्थापित कुल चौदह मुक्त विश्वविद्यालयों के स्थापना क्रमवार नाम निम्नवत है–

1.	डॉ0 वी0आर0 अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय, हैदराबाद	1982
2	इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	1985
3	वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय, कोटा	1987
4	नालंदा मुक्त विश्वविद्यालय, पटना	1987
5	यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय,नासिक	1989
6	मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल	1992

7	डा0 बाबासाहिब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय,अहमदाबाद	1994
8	कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय,मैसूर	1996
9	नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय,कोलकाता	1997
10	उ0प्र0राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय,इलाहाबाद	1999
11	तमिलनाडू मुक्त विश्वविद्यालय,चेन्नई	2003
12	पं0सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय,बिलासपुर	2005
13	उत्तरांचल राज्य मुक्त विश्वविद्यालय,हल्द्वानी	2006
14	कृष्णकांत हैण्डीक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय,गवाहाटी	2006

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

7– राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थान क्यों हुई?

....

11.7 राज्य मुक्त विश्वविद्यालयों का संक्षिप्त परिचय

1. डा0वी0आर0 अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय हैदराबाद

भारत के इस प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1982 में आन्ध्र प्रदेश सरकार के द्वारा मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम प्रणाली को बढ़ावा देने के लिये की गयी थी। इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय हैदराबाद में स्थित है। स्थापना के समय इसका नाम आन्ध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया था जिसे बाद में परिवर्तित करके भारतीय संविधान के निर्माता डा0 भीमराव अम्बेडकर के सम्मान में डा0वी0आर0अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय कर दिया गया है। निर्देशन की बहु–संचार, जिसमें मुद्रित पाठों को डाक द्वारा भेजना, सम्पर्क शिक्षण व समुपदेशन कार्यक्रम, श्रव्य–दष्य कार्यक्रम तथा ग्रीष्म शाला आदि सम्मिलित है, के माध्यम से उच्च शिक्षा प्रदान करने की लचीली व कम लागत वाली दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को देश में प्रारम्भ करने का श्रेय इसी मुक्त विश्वविद्यालय को जाता है। सम्प्रति यह विश्वविद्यालय बीस प्रकार के शैक्षिक कार्यक्रमों को अपने 23 क्षेत्रीय कार्यशालाओं एवं 144 से अधिक अध्ययन केन्द्रो के माध्यम से संचालित कर रहा है।

2. वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कोटा

वर्धमान मुक्त विश्वविद्यालय के नाम से सम्बोधित किये जाने वाले कोटा मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना राजस्थान सरकार के द्वारा सन् 1987 में उच्च स्तर पर मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देने के लिये की गयी थी। यद्यपि राजस्थान भारत का ऐसा दूसरा राज्य था जिसने अपने यहां राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की, परन्तु यह भारत का तीसरा मुक्त विश्वविद्यालय था। भारत का दूसरा मुक्त विश्वविद्यालय सन् 1985 में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में केन्द्र सरकार के द्वारा नई दिल्ली में खोला जा चुका था। बाद में कोटा मुक्त विश्वविद्यालय का नाम बदलकर वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कर दिया गया है। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय राजस्थान के कोटा शहर में स्थित है।

3. नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय पटना

बिहार सरकार के द्वारा भी दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिये सन् 1987 में अपने राज्य में एक मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी जिसका नाम नालन्दा के उपर नालन्दा मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया। इस मुक्त विश्वविद्यालय मुक्त अधिगम शिक्षण प्रणाली के माध्यम से उपलब्ध करा रहा है।

4. यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय नासिक

वर्ष 1989 में महाराष्ट्र राज्य के द्वारा मुक्त विश्वविद्यालय खोला गया जिसका नाम प्रसिद्ध राजनेता श्री यशवन्तराव चव्हाण के नाम पर यशवन्तराव चव्हाण महाराष्ट्र मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय नासिक में बनाया गया है, तथा यह विश्वविद्यालय अपने आठ से अधिक क्षेत्रीय केन्द्रों तथा 1450 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से लगभग 60 शैक्षिक कार्यक्रम चला रहा है।

5. मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय भोपाल

राज्य में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से उच्च शिक्षा का प्रचार–प्रसार करने के लिये मध्य प्रदेश विधायिका के द्वारा मध्य प्रदेश में एक मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1991 में की गयी जिसका नाम इतिहास प्रसिद्ध राजा भोज की स्मषति में मध्य प्रदेश भोज (मुक्त) विश्वविद्यालय रखा गया। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल के रेड क्रास भवन में स्थित हैं। अपने 9 क्षेत्रीय केन्द्रों तथा लगभग 1013 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से यह मुक्त विश्वविद्यालय 30 शैक्षणिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है।

6. डॉ0 बाबा साहिब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय अहमदाबाद

डॉ0 बाबासाहिब अम्बेडकर मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1994 में गुजरात सरकार के द्वारा राज्य में उच्च शिक्षा स्तर पर दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम प्रणाली को प्रवर्तित करने के लिये गुजरात राज्य के मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में की गयी।

इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय अहमदाबाद में स्थित है। अपने दो क्षेत्रीय केन्द्रों तथा लगभग 70 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से बाबा साहिब अम्बेडकर विश्वविद्यालय शिक्षार्थियों को दूर शिक्षा प्रणाली से शिक्षा प्रदान करने के लिये 11 शैक्षिक कार्यक्रमों का संचालन कर रहा है।

7. कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय मैसूर

राज्य स्तर पर दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम प्रणाली का विकास करने के लिये कर्नाटक सरकार के द्वारा वर्ष 1996 में एक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय खोला गया जिसका नाम कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया है। इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय मैसूर के मानस गंगोत्री में स्थित है। सम्प्रति यह विश्वविद्यालय मुक्त अधिगम व दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से लगभग 29 कार्यक्रम संचालित कर रहा है। इस मुक्त विश्वविद्यालय के द्वारा अब तक 6 खेत्राय कार्यालय एवं 65 से अधिक अध्ययन केन्द्र खोले जा चुके हैं।

8. नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय कोलकाता

पश्चिमी बंगाल सरकार के द्वारा अपने राज्य में दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम प्रणाली को उच्च शिक्षा स्तर पर प्रवर्तित करने के लिये नेताजी सुभाष मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 1997 में राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में की गयी। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय पश्चिमी बंगाल की राजधानी कोलकाता में बनाया गया है एवं सम्प्रति यह विश्वविद्यालय अपने लगभग 47 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से शिक्षार्थियों के लिये उच्च शिक्षा स्तर के मात्र छह शैक्षिक कार्यक्रम संचालित कर रहा है।

9. उ0प्र0राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा अपने राज्य में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के लिये वर्ष 1999 में एक मुक्त विश्वविद्यालय खोला गया जिसका नाम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, राजनेता, विचारक तथा हिन्दी के अनन्य पुजारी राजर्षि पुरूषोत्तम दास टण्डन के सम्मान में उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया है। इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय प्रदेश की शैक्षिक राजधानी इलाहाबाद में स्थित है। एवं इसने अपनी शैक्षिक यात्रा का श्रीगणेश 20 कार्यक्रमों को प्रारम्भ करके सत्र 1999–2000 में किया। सम्प्रति इस विश्वविद्यालय के द्वारा सामान्य, व्यावसायिक व संव्यावसायिक प्रकृति के लगभग 50 शैक्षिक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इस विश्वविद्यालय के द्वारा अब तक 100 से अधिक अध्ययन केन्द्र बनाये जा चुके हैं।

10. तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय, चेन्नई

तमिलनाडु मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना वर्ष 2002 में तमिलनाडु सरकार के द्वारा अपने राज्य में दूरस्थ शिक्षा व मुक्त अधिगम प्रणाली के माध्यम से उच्च शिक्षा की सुविधाओं को विस्तष्त करने की दषष्टि से की गयी। इस विश्वविद्यालय का मुख्यालय चेन्नई में स्थित है एवं यह विश्वविद्यालय अपने दस अध्ययन केन्द्रों की सहायता से 15 कार्यक्रम चला रहा है।

11. पं0 सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय

छत्तीसगढ़ राज्य में दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम को प्रोत्साहित करने के लिये पण्डित सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना छत्तीसगढ़ शासन के द्वारा वर्ष 2005 में की गयी है। इस विश्वविद्यालय का नाम छत्तीसगढ़ के गांधी के रूप में विख्यात तथा छत्तीसगढ़ राज्य निर्माण के प्रथम कल्पनाकार पण्डित सुन्दरलाल शर्मा की स्मृति को सजीव रखने के लिये पं0 सुन्दरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया है। इस मुक्त विश्वविद्यालय का मुख्यालय विलासपुर में है। शैक्षिक सत्र 2005–06 से यह विश्वविद्यालय अपने 108 अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से 34 कार्यक्रम प्रारम्भ करने जा रहा है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय कहां स्थित हैं?

   ....

2. यशवन्त राव चव्हाण मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना कब हुई?

   ....

3. भोज विश्वविद्यालय में कुल कितने अध्ययन केन्द्र है?

   ....

4. कर्नाटक मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना के कारण क्या है?

   ....

11.8 सारांश

इस इकाई में हमने देश के मुख्य राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के संगठनात्मक ढॉचा, प्रवेश प्रक्रिया, मूल्यांकन प्रक्रिया एवं छात्र सहायता सेवाओं के विषय में अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त राज्यों के विभिन्न मुक्त विश्वविद्यालयों के विषय में भी जानकारी प्राप्त की। यह इकाई आपको ज्ञानप्रद लगी होगी।

11.9 अभ्यास के प्रश्न

1. देश में मुक्त विश्वविद्यालयों के खोले जानें के पीछे क्या उद्देश्य था ? इन्दिरा

गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के स्वरुप का वर्णन कीजिये।

11.10 बोध प्रश्नों के आदर्श उत्तर

1. उच्च शिक्षा के प्रचार प्रसार एवं रुझान हेतु।
2. 1970 में भारत सरकार द्वारा आयोजित संगोष्ठी में विचार विमर्श किया गया।
3. 1969 में ब्रिटेन के मिल्टन किन्स् में विश्व का प्रथम मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
4. देश भर में स्वतन्त्र अध्ययन, स्वरुचि पर आधारित पाठ्यक्रमों का उच्चशिक्षा हेतु संचालन करना।
5. स्वशिक्षण सामग्री, कम्प्यूटर सुविधा, पुस्तकालय सुविधा, शैक्षिक समुदेशन, टेली कान्फ्रेन्सिगं।
6. प्रबन्ध बोर्ड, विद्वत परिषद, नियोजन बोर्ड, वित्त समिति, दूरस्थ शिक्षा परिषद के क्रिया कलापों का संचालन कुलपति करता है। कुलसचिव विभिन्न निकायों को आवश्यक सूचना उपलब्ण कराने का दायित्व निभाता है।
7. राज्य में उच्च शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु।
8. कोटा में।
9. सन् 1989 में।
10. 1015 से अधिक अध्ययन केन्द्र।
11. राज्य स्तर पर दूरस्थ शिक्षा एवं मुक्त अधिगम प्रणाली के विकास हेतु।

11.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

शर्मा आर० ए० (1996) : दूरवर्ती शिक्षा, मेरठः सूर्या पब्लिकेशन,

Garg & others (2006): Open and Distance Education in Global Enviroment, New Delhi, Viva Books,

Keegan, D. (1990) : Foundation of Distance Education, London : Rotledge,

Borah S. (1987) : Distance Education, Delhi : Amar Prakashan.

इकाई–12 दूर अध्येता

संरचना–

12.1 प्रस्तावना

12.2 उद्देश्य

12.3 दूर अध्येताओं के लक्षण

12.4 दूर अध्येता के अन्य मुख्य लक्षण

12.5 दूर अध्येताओं की समस्यायें

12.6 दूर अध्येता की अपेक्षायें

12.7 सारांश

12.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

दूरस्थ शिक्षा के सम्बाहक अध्येता होते है। दूरस्थ शिक्षा में भी दूर अध्येतता का महत्व औपचारिक शिक्षा में अध्येता जैसा ही होता हैं। दूरस्थ शिक्षा 150 वर्षों से अधिक पुरानी है। पिछले चार दशकों के खोजपूर्ण अनुभवों से ज्ञात हुआ है कि दूर अध येता जो उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों तथा कार्यक्रमों का लाभ उठाते हैं वे परिपक्व होने के कारण अपनी आवश्यकताओं उद्देश्यों एवं लक्ष्यों को समझते है अतः वे अपनी शिक्षा तथा व्यासाय के बारे में सुविचरित निर्णय लेने में स्वयं सक्षम होते हैं। दूसरे शब्दों में दूर–अध्येता स्वतंत्र होते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि उन्होनें किसी दूर शिक्षण संस्थान द्वारा चलाये गये किसी विशेष कार्यक्रम वाले पाठ्यक्रम को क्यों चुना है? यह स्वतंत्रता उस आवश्यक स्वतंत्रता से भिन्न होती है जिसके द्वारा एक दूर–अध्येता सफल रूप से किसी शिक्षा कार्यक्रम }ारा किसी बाहरी सहायता के ज्ञानार्जन कर पाता है।

दूरस्थ शिक्षण संस्था और दूरस्थ शिक्षकों को अपने उपयोगार्थ अध्येताओं के विशेष लक्षणों का ज्ञान होन आवश्यक है क्योंकि वे स्वयं अध्ययन करते हैं उनकी प्रतिबद्धतायें अनेक प्रकार की होती हैं, और उन्हें अपनी अधिगम प्रक्रिया में संस्थागत सहायता की बहुत आवश्यकता पड़ती है। दूरस्थ शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में अथवा उसे सरल बनाने की भूमिका में भली–भांति सफल होते हैं, यदि वे अपने शैक्षिक कार्यक्रमों की शिक्षण के सुदृढ़ सिद्धान्तों, शिक्षण–वातावरण संस्था में उपलब्ध श्रोतों तथा अध्येताओं की संस्था से सहायता की अपेक्षाओं के अनुसार योजना बनायें तथा उसे क्रियान्वित करे। इस इकाई में हम भारत में दूर–अध्येताओं के संदर्भ में कुछ समस्याओं पर चर्चा करने का प्रयास करेंगे।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- दूर अध्येताओं की विशेषतओं का वर्णन कर सकेंगे।
- उनकी समस्याओं की विवेचना कर सकेंगे।
- दूर अध्येताओं हेतु उपयुक्त सहयोग का वर्णन कर सकेगें।

12.3 दूर अध्येताओं के लक्षण

दूर अध्येताओं का सर्वविदित सामान्य लक्षण यह है कि वे परिपक्व, एकल अध्येता होते हैं। शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक एकाकीपन के कारण उन्हें दूसरों से शैक्षिक तथा संवेगात्मक सहयोग की अपेक्षा रहती है। प्रायः यह सहयोग दूर–शिक्षण संस्था अथवा अध्येता के घरेलू वातावरण से प्राप्त होता है। एकाकीपन सामान्यतः सभी दूर अध्येताओं में समान है परन्तु इसके अतिरिक्त बहुत से अन्य कारक हैं जो उन्हें विषम रूप प्रदान करते हैं। हम कुछ विशेषताओं का का वर्णन आगामी परिच्छेदों में करेंगे।

आयु / रुचियों एवं आवष्यकताओं में विविधता

दूर अध्येताओं की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता उनकी आयु होती है। यद्यपि वे सब परिपक्व होते है तथापि परिपक्वता की सीमा रेखा 18 से 80 वर्ष तक या उससे अधिक भी हो सकती है। शिक्षा का सुस्पष्ट महत्व इसके लचीलेपन में दिखायी देता है जो सभी उम्र के अध्येताओं शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुकूल ढल जाती है। परन्तु इस लचीलेपन को निश्चित व्यावहारिक तरीकों के रूप में समझना और उपयोग में लाना चाहिये। शैक्षणिक योजनाकारों के समक्ष अध्येताओं के बीच विभिन्न आयु वर्गों के कारण गम्भीर शैक्षिक समस्यायें इसलिये उत्पन्न हो सकती है कि आयु सम्बंधी भिन्नताओं के अतिरिक्त उनके सीखने की विधियों में भी अंतर है। आयु का कारक विषयवस्तु के चयन, कठिनता के स्तर, मूल्यांकन योजना इत्यादि को प्रभावित करता है। आयु भेद के कारण छात्र सहायता सेवाओं का भी आयोजन प्रभावित होता है। छात्र सहायता विषयों के सम्बंध में आगे चलकर चर्चा करेंगे। कार्यभार एवं अध्ययन –अध्यापन कार्य नीतियों पर निर्णय लेते समय आयु पर भी विचार किया जाना चाहिये।

लैगिक विभेदकता

दूर अध्येताओं को समझने और आवश्यक सहायता देने में लिंग दूसरा महत्वपूर्ण कारक है। यहां हमारा अभिप्राय यह है कि लाभ वंचित वर्ग के रूप में प्रायः सभी महिलायें समान रूप से तथा सामाजिक, आर्थिक तथा शैक्षिक क्षेत्रों में पिछड़ी महिलायें विशेष रूप से कठिनाया अनुभव करती है। प्रायः लैंगिक असमानताओं की उपेक्षा कर दी जाती है अथवा महिलाओं में उच्च स्तरीय महिलाओं से सम्बंधित प्रश्नों को ही लैगिक समस्या के रूप में उभारा जाता है। यह तथ्य कि ग्रामीण क्षेत्रों, नगरीय झोपड़–पट्टियों और जनजातीय क्षेत्रों की महिलायें और लड़कियां देश की अशिक्षित जनसंख्या का प्रमुख

भाग होती है। यह उजागर करता है कि भारत में लैंगिक समस्याओं पर नीति निर्माताओं और संस्थागत नेताओं द्वारा पर्याप्त रूप से उचित ध्यान नहीं दिया जाता है। यद्यपि महिलाओं के हर वर्ग के प्रति नकारात्मक पूर्वाग्रह विद्यमान है तथापि नगरीय मध्यवर्गीय और उच्च वर्ग की महिलायें, ग्रामीण क्षेत्रों, नगरीय झोपड़ पट्टी और असंगठित क्षेत्रों की कार्यरत महिलाओं की अपेक्षा अधिक प्रगतिशील होती है। उपेक्षित वर्गों की महिलाओं को अनेक असुविधाओं और भेदभाव से ग्रस्त रहना पड़ता है अतः दूर शिक्षा संस्थाओं को अनिवार्यतः उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं को अधिक ध्यान देते हुये पूरा करना चाहिये। दूर शिक्षण कार्यक्र ें को विकसित करते समय प्रारम्भ में ही महिलाओं से सम्बंधित मुद्दो पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है।

सामाजिक स्तर में विविधता

भारत जैसे देश में दूर अध्येताओं की विषमता के अन्तर्गत सामाजिक असमानता में वर्ग और जाति के दोनों रूप आ जाते हैं। जाति उत्क्रम भारत मे विलक्षण है। यद्यपि इसका ऐतिहासिक और सामाजिक महत्व है, फिर भी भारत में जाति–प्रथा ने शिक्षा के लोकतांत्रीकरण और लोगों में लोकतांत्रिक, वैज्ञानिक, पंथनिरपेक्ष और समतावादी विश्व दृष्टि विकसित करने में एक नकारात्मक भूमिका अदा की है। लोगों की शैक्षिक बाधाओं को हटाने के उददेश्य की पूर्ति के लिये दूर अधिगम को पहले सामाजिक बाधाओं को तोड़ना होगा। कुछ विशेष व्यावसायों और उनसे जुड़ी कुशलताओं के बारे में पारस्परिक सोच दूसरे व्यवसायों और शैक्षिक कार्यक्रमों को चुनने में आड़े नहीं आनी चाहिये। उदाहरण के लिये चमड़े, लोहे, सोने आदि का काम करने वालों को कभी भी महसूस नहीं होना चाहिये कि अपने व्यवसाय को बदल नहीं सकते या अपनी पसंद के दूसरे अधिगम कार्यक्रमों को चुन नहीं सकते। सामाजिक पूर्वाग्रह प्रायः समाज के सुविधावंचित वर्गो जैसे कि महिलायें, पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जातियों और जनजातियों के सदस्य, धार्मिक अल्पसंख्यकों और अपंग लोगों की शैक्षिक अभिरूचियों और अधिगम सक्षमताओं के विरूद्ध कार्य करते हैं।

आर्थिक स्तर में विविधता–

आमतौर पर सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, और शैक्षिक स्तर साथ–साथ चलते हैं। भारत में भी यद्यपि सामान्यता यह सत्य है पर कुछ अपवाद भी हैं। यहां ऐसे उदाहरण उपलब्ध हैं कि अच्छे सामाजिक स्तर पर उच्च शैक्षिक समर्थता वाले लोग भी कमजोर आर्थिक स्तर के कारण अपनी शैक्षिक समर्थता को साकार नहीं कर पाते। फीस के विभेदी ढांचे और संस्थाओं की आर्थिक सहायता नीतियों में अध्येता के आर्थिक स्तर पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये। साधारणतया ग्रामीण और सामाजिक रूप से पिछड़े लोगों के पास अपनी शिक्षा के लिये भुगतान करने के लिये र्प्याप्त धन नही होता। यह पहलू उनकी उच्च व्यावसायपरक और रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों तक पहुॅच के लिये निर्णायक होता है। निर्धन विद्यार्थी और बेरोजगार व्यक्ति मुश्किल से उसका भुगतान कर पाते हैं, स्वाभाविक रूप से दूर शिक्षा संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत ऐसे पाठ्यक्रम

इन व्यक्तियों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये होते हैं जो पहले से ही आर्थिक रूप से सम्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सूक्ष्म अभिजात्य या सम्भ्रांत वर्गवाद को उचित नीति निर्धारण तथा छात्रवृत्ति आदि से संतुलित करने की आवश्यकता है ताकि आर्थिक रूप गरीब परन्तु रोजगारपरक पाठ्यक्रमों में प्रवेश के इच्छुक अध्येताओं को भी अवसर सुलभ हो।

शैक्षिक स्तर में विविधता

शैक्षिक स्तर से हमारा तात्पर्य उस शैक्षिक वातावरण से है जो किसी परिवार या समुदाय में उपलब्ध होता है। भारत में आज भी ऐसे परिवारों, समुदायों और जातियों का दिखायी पड़ना असामान्य बात नहीं है जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हुये भी शैक्षिक रूप से अग्रणी है या इन परिवारों और समुदायों के सदस्यों को आवश्यक आर्थिक सहायता प्राप्त हो जाये तो आसानी से अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। भारत वर्ष में प्रथम पीढ़ी के अधिकांश अध्येताओं में शैक्षिक निर्देशन के लिये आवश्यक आत्मविश्वास और अच्छे संस्कारों की कमी दिखाई देती। विशेषकर जब वे दूर शिक्षा को अपनाते हैं। इस प्रसंग में आर्थिक रूप से उच्च स्तर का होना अध्ययन में अधिक सहायक सिद्ध होता। अतः परिवारों, समुदायों और क्षेत्रों का शैक्षिक परिदृश्य दूर शिक्षकों के लिये एक महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम विषयक प्रसंग बन जाता है।

भौगोलिक स्थिति में विविधता

भारत वर्ष एक ऐसा राष्ट्र है जो की मानसून प्रदेश होते हुये भी पर्वत पठार एवं भूदान में बटा है, इसके अतिरिक्त इसकी 80 प्रतिशत जनसंख्या गॉव में बसती है। नगर–ग्राम विभाजन एक ऐसा प्रमुख मुद्दा है जिससे शिक्षा के अवसरों तथा उनके माध्यम अध्येताओं की अधिगम निष्पत्तियों का निर्धारण होता है। शहरी अध्येता हमेशा आसानी से आवश्यक जानकारी प्राप्त करके लाभान्वित होते हैं। वे शिक्षा संस्थाओं से पे अधिक अच्छी तरह परिचित होने के अतिरिक्त उत्तम शैक्षिक अन्तःक्रिया कर सकने के लिये प्रायः समकक्ष समूह बना लेते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के दूर–अध्येताओं को दूर–शिक्षा के बारे में पाठ्यक्रमो/कार्यक्रमों की सूचना तक मिल पाना कठिन हो जाता है। जब से वे अध्ययन केन्द्र की सहायता सेवायें करना चाहते हैं। तो उन्हें यात्रा, समय आदि की कठिनाइयां झेलनी पड़ती है। इसके अतिरिक्त उन्हें अस्थायी रूप से शहरों मे आना लगता है जो स्वयं एक भारी विकषर्ण का कारण जाता है। भारत के अधिकतर ग्रामो मे लड़कों और डाक व्यवस्था की कमी हैं यद्यपि दूरदर्शन और दूरभाष कुछ सीमा तक ग्रामीण क्षेत्रों मे पहुँच गये है। भौगोलिक दूर–दराज के पर्वतीय क्षेत्रों में, अध्येताओं के एक–दूसरे से दूर–दूर होने के कारण उनके लिये विशेष संस्कृति (संचार) माध्यम की आवश्यकता पड़ती है। अनेक पहाड़ी जनजातियों तथा दूर–दराज के स्थान पर विषम् जलवायु की परिस्थितियों में रहने वाले व्यक्यिों को अपने अध्ययन के लिये विशेष सुविधाओं और सहयोग की आवश्यकता पड़ती है। दूर शिक्षा संस्थाओं को दूरस्थ अध्येताओं के भौगोलिक स्थल विशेष ध्यान देते हुये अपने क्रिया–कलाप एवं नीतियों को निर्धारित करना चाहिये।

12.4 दूर अध्येता के अन्य मुख्य लक्षण

ऊपर वर्णित कारकों के साथ–साथ कुछ अन्य महत्वपूर्ण बातों से भी दूरस्थ–अध्येताओं की आवश्यकताओं के बारे में जानकारी मिलती है। इनमें निम्नलिखित विशेष रूप से उल्लेखनीय है–

भाषाई कौशल

द्विभाषी तथा बहुभाषी परिस्थितियों में दूरस्थ अध्येताओं द्वारा इन पाठ्यक्रमों का सफलतापूर्वक लाभ उठाने के लिये भाषायी कुशलतायें अत्यधिक महत्वपूर्ण होती हे। भारत में उच्च स्तर की शिक्षा वाले अधिकतर पाठ्यक्रम अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाये जाते हैं जबकि यह अधिकांश भारतीयों की मातष्भाषा नहीं है। अतः दूरस्थ अध्येताओं को अंग्रेजी–प्रयोग की न्यूनतम, सक्षमता, पाठ्यक्रम को सफल रूप से पूरा करने के लिये आवश्यक होती हे। दूसरी ओर अंग्रेजी को माध्यम के रूप में अपनाते समय पाठ्यक्रम लेखकों के पास पाठ विकसित करने की उचित दक्षता तथा लेखन कौशल होना चाहिये। यदि सम्बंद्ध संस्थायें पाठ्यक्रमों को मातष्भाषाओं (अर्थात् हिन्दी, तेलगू, तमिल, बंगाली, मराठी एवं अन्य भारतीय भाषायें) के माध्यम से पढ़ाने का निर्णय लेती है तो उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा की इन भाषओं में भी अंग्रेजी माध्यम से पढने वालो के समतुल्य ज्ञान तथा सूचना सामग्री का पर्याप्त भण्डार उलब्ध है। यहां मुख्य समस्या समुचित स्तर पर पाठ्यक्रम तैयार करके प्रत्येक भाषा में अतिरिक्त मानक पाठ्य–सामग्री तैयार करने की है। भारत के सामान्य शिक्षाविदों तथा विशेषकर दूरस्थ शिक्षाविदों को इस चुनौती का सामना करना होगा।

अकादमिक परम्परायें

सुदष्ढ़ मौखिक परम्परा वाले समाजों में, जिनमें शिक्षकों को अधिक सम्मान किया जाता है। वहां विद्यार्थी यह अपेक्षा रखते हैं कि पठन–पाठन सामग्री से स्वयं ज्ञानार्जन की बजाये शिक्षकों द्वारा अध्यापन अधिक उपयुक्त होगा। भारत अपनी गुरू–शिष्य परम्परा के लिये सुविख्यात है और यह परम्परा आज भी परिसर केन्द्रित शिक्षण संस्थाओं तथा शास्त्रीय संगीत, नष्त्य, चित्रकारी और मूर्तिकला जैसी ललित कलाओं में विद्यमान है। दूरस्थ अध्येताओं के समक्ष अचानक एक भिन्न अध्ययन–अध्यापन परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है, जिसमें स्वयं शिक्षा प्राप्त करने की जिम्मेदारी, सीखने वाले पर पड़ जाती है। पढ़ाये जाने के बजाय खुद पढने के इस संक्रमण काल में दूरस्थ अध्येता को एक सांस्कषतिक सदमा पहुँचता है। यह सदमा तब और गहन हो जाता है जब उन्हें बिना पूर्व तैयारी के प्रौद्योगिकी–आधारित अथवा डिजिटल–आधारित दूरस्थ शिक्षा दी जाती है। इन समस्याओं में से कुछ के बारे में दूरस्थ शिक्षाविद पहले ही ध्यान दे चुके हैं। वर्ष 1998 में एशियाई मुक्त विश्वविद्यालय संघ द्वारा हांगकांग में आयोजित वार्षिक सम्मेलन का विचारणीय विषय 'एशियाई अध्येता का

पीछा करते रहो। ओटो पीटर्स ने एशियाई दूर शिक्षण से जुड़े कई सैद्धान्तिक एवं शैक्षिक प्रश्न उठाते हुये एशियाई अध्येताओं के विषय में अनुचिन्तन किया है। जब विकासशील देशों के दूर–शिक्षाविद् इस विषय पर गम्भीरता के साथ विचार करेंगे तो इससे चाहे तात्कालिक समाधान प्राप्त न हो सके पर दूर अध्येताओं से सबंधित अनेक वर्तमान प्रसंगों की दिशा निर्धारित हो सकेगी।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. दूर अध्येताओं के क्या विशेष गुण होते है।

....

2. दूर अध्येता होने के प्रमुख भौगोलिक कारक क्या है।

....

3. दूर अध्येता का शैक्षिक स्तर कैसा होता है।

....

12.5 दूर अध्येताओं की समस्यायें

पूर्व चर्चित विवरण के आधार पर आप सुगमता से समझ चुके हैं होंगे कि दूर अध्येताओं के विविध एवं जटिल समूह–वष्न्द की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकना कितना चुनौतीपूर्ण का है। अपनी रचना मात्र के कारण, दूर अध्येता समूहों की अध्ययन सम्बंधी समस्याओं का समरूपी एवं सरल समाधान खोजना दुष्कर हो जाता है। उनकी समस्याओं का हल खोजते हुये अध्येताओं की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये लचीली, व्यावहारिक एवं समुचित क्रियान्वयन, कार्यनीति पर चिंतन करना होगा। आइये देखें कि सामान्यतः दूर–अध्येताओं को किस प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है।

कामनवैल्थ ऑफ लर्निंग द्वारा रचित दूर मुक्त अधिगम की अनुदेश–पुस्तिका 1997 कामनवेल्थ आफ लर्निंग मैनुअल ऑन डिस्टैन्स ओपन लर्निंग 1997 में दूरस्थ अध्येताओं के समक्ष आने वाली निम्नलिखित समस्याओं का उल्लेख किया गया है।

- दूर अध्यापक एवं दूर अध्येता से दूरी
- अध्ययन एवं अध्ययन स्थल की व्यवस्था।
- अध्ययन हेतु पर्याप्त समय निकालना।
- कार्य, अध्ययन और परिवार में संतुलन बैठाना।
- अभिप्रेरण का अभाव।

- संसाधनों की कमी।
- अध्ययन कुशलताओं का अभाव।

अध्येताओं के समक्ष आने वाली समस्याओं के समाधान तथा उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं का ध्यान रखने के लिये विद्यार्थी शिक्षण के विभिन्न स्तरों पर उपबोधन अनुशिक्षण और प्रशासनिक समर्थन आदि की अनुशंसा की गयी है जैसे प्रवेश पूर्व स्तर, अध्ययन की प्रारम्भ अवस्था, अध्ययन के दौरान अध्ययन समाप्त कर लेने के बाद का स्तर, इन विशेष परिस्थितियों तथा संदर्भों को ध्यान में रखकर ही क्रियान्वयन के लिये निश्चित कार्यनीतियां बनायी जानी चाहिये।

विद्यार्थी क्यों सीख नहीं पाते? प्रश्न का उत्तर देते हुये गिब्स तथा अन्य ने सामान्य रूप से दी जाने वाली निम्नलिखित व्याख्याओं प्रर प्रश्न चिन्ह लगाया है–

- विद्यार्थियों में आवश्यक अध्ययन कौशलों की कमी होती है।
- विद्यार्थी विभिन्न प्रकार के होते हैं, और उनमें कुछ की अध्ययन–उपागम क्षमतायें सीमित होती है।
- विद्यार्थी अपने लिये अध्ययन–उपागम का चयन करते हैं और कुल विद्यार्थी अप्रभावी अथवा अनुपयुक्त उपागम चुन लेते हैं।
- विद्यार्थी एक अध्येता के रूप में अपने सुसंस्कार स्वयं विकसित करते हैं और दूसरों की अपेक्षा कुछ के कम विकसित रह जाते हैं।
- पाठ्यक्रम के कुछ पहलू, विद्यार्थी के ज्ञानार्जन में बाधक बन जाते हैं।

दूर–अध्येताओं की विशेषताओं, तथा उनके समक्ष आने वाली समस्याओं को कठिनाइयों के विषय में सरल सामान्यीकरण नहीं किये जा सकते जिनमें आयु, शैक्षिक पृष्ठभूमि, अभिरूचि, अध्ययन या अधिगम कौशल आदि में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है तथापि, दूर–अध्येताओं की शैक्षिक समस्याओं को हल करने के लिये दूर–शिक्षकों, उपबोधकों और शिक्षण संस्थाओं के सकारात्मक हस्तक्षेप का निश्चित रूप से लाभ उठाया जा सकता है। दूर–अध्येताओं की कुछ अन्य समस्याओं का समाधान उनके अपने रहन–सहन तथा कामकाजी वातावरण में ही खोजा जा सकता है। शिक्षक उपबोधकों द्वारा विद्यार्थियों की अध्ययन विषयक आदतों के बारे में कुछ दिशा–निर्देश और सुझाव दिये जा सकते हैं। अधिकतर, अपने अध्ययनकाल एंव सर्वाधिक उपयुक्त स्थान आदि की व्यवस्था का दायित्व विद्यार्थी का अपना निजी मामला है। कामकाजी अध्येताओं के लिये हमेशा घर पर रहते हुये अध्ययन कर पाना सरल नहीं होता। कार्य दिवसों में वे अपने मुद्रित पाठों को यात्रा करते समय अथवा अपने कार्य स्थल पर अवकाश काल में पढ़ सकते हैं। फिर भी, इस प्रकार की व्यवस्था का संमजन कर पाना उनके व्यावसायिक अथवा घरेलू प्रतिबद्धता पर निर्भर करेगा। अध्ययन के लिये समय निकाल पाने का प्रत्यक्ष संबंध उनकी अभिप्रेरणा से जुड़ा होता।

अपनी पढ़ाई व काम में संतुलन करना भी चुनौतीपूर्ण काम है। हमें ज्ञात है कि दूर अध्येता के लिये सफलतापूर्वक अपना अध्ययन पूरा कर पाना कितना दुष्कर कार्य

होता है। परन्तु उचित योजना एवं अध्यवसाय द्वारा अपनी सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं। प्राथमिकतायें ठीक तरह निर्धारित करनी चाहिये। एक निश्चित तिथि में आपको अपने दत्तकार्य प्रस्तुत करने हैं। ऐसे अवसर पर आप अपने दत्तकार्य को स्थगित करने वाले कार्यो को टालें। कभी कभी ऐसा विलम्ब आपकी पढ़ाई पूरी करने में एक वर्ष का विलम्ब बन जाता है।

दूर अधिगम प्रक्रिया में एकाकीपन और उचाट मन की भावना पैदा होना एक आम बात है, हर बार विषय वस्तु को समझ सकना अथवा दत्त कार्य का उत्तर दे पाने की कठिनाई हतोत्साहित कर सकती है अथवा आपके ही कुछ परिवाजन आपकी पढ़ाई के बारे में भी आक्षेप करते हैं। जब आपके ऊपर अपने दत्तकार्य के साथ–साथ अन्य काम का भारी दबाव हो, ऐसी सभी परिस्थितियों में अच्छा यही होगा कि आप इस प्रकार के कार्यो एवं उलझनों को अनसुना कर दें। परन्तु वास्तविक जीवन में सच्चाई यह है कि यदि कोई ऐसा सुझाव देता है हमें हतोत्साहित करे तो हम प्रतिक्रिया करते हैं और कई बार काफी प्रबल प्रतिक्रिया कर अनुभव द्वारा हम ऐसी परिस्थितियो को झेलना सीखते जाते हैं और अपनी पढ़ाई के प्रति अस्वस्थ नहीं रहते।

दूर शिक्षण संस्थायें विशेषकर दूर शिक्षाविद और शैक्षिक उपबोधक अपने अध येताओं की विषयक अनेक समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि संस्थायें दूर अधिगम की विलक्षण विशेषताओं को कितना महत्वपूर्ण समझती हैं तथा अध्येताओं के समक्ष आने वाली कठिनाइयों का पूर्वानुमान लगाकर यथोचित शैक्षिक एवं आधार सेवाओं का आयोजन किस प्रकार करती है। दूर–अध्येताओं की सफल–असफलता एक बड़ी सीमा तक उनको अध्ययन में सहायता एवं सुविधा देने के लिये की समझदारी की मात्रा, उत्तरदायित्व की भावना एवं तत्परता पर निर्भर करती है। संस्था गुणवत्ता पर ध्यान देने से अध्येताओं की अभिरूचि तथा पाठ्यचर्या पाठ्यविवरण पाठय वितरण, मूल्यांकन और विभिन्न प्रकार की विद्यार्थी सहायता सेवाओं गतिविधियों पर प्रभाव पड़ता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4. दूर अध्येताओं की कौन समस्या प्रमुख है।

....

5. दूर अध्येता अपना पूरा समय शिक्षण को क्यों नही दे पाते है।

....

6. दूर अध्येताओं में अध्ययन कौशलों का अभाव क्यों पाया जाता है।

....

12.6 दूर अध्येता की अपेक्षायें

दूर अध्येता अपनी समस्याओं से जूझते है और अपेक्षा रखते है –

- **दूर शिक्षकों की अभिप्रेरणा, स्नेह एवं लगाव की भावना–**

हमें अध्येताओं को दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों/पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिये नामांकन कराने के लिये निश्चित रूप से अभिप्रेरणा देनी चाहिये। यदि उनमें यह अभिप्रेरणा नहीं होगी तो वे अध्ययन के पक्ष में निर्णय नही लेगे, क्योंकि उन्हें अपनी मेहनत की कमाई पाठ्यक्रम शुल्क के रूप में व्यय करनी पड़ती है। परन्तु अपने अध्ययन में सफल होने के लिये इस प्रकार की अभिप्रेरणा ही पर्याप्त नहीं होती। उन्हें एक भिन्न प्रकार की अभिप्रेरणा की आवश्यकता पड़ती है। दत्त कार्य के प्रत्युत्तर तैयार करने और पाठ्यक्रम की विभिन्न आपेक्षित आवश्यकताओं को पूरा करते रहने की अभिप्रेरणा। इसी अभिप्रेरणा से उन्हें कठिनाइयों पर विजय पाने का वांछित विश्वास, अभिरूचियो को बनाये रखते हुये पढ़ाई अधूरी न छोड़ने को बल मिलेगा। अध्ययन के प्रथम सत्र, समेस्टर या वर्ष की अवधि में ही अध्येता द्वारा पढ़ाई बीच में छोड़ देने का सर्वाधिक खतरा होता है, अध्येताओं को अध्ययन सम्बन्धी अथवा व्यक्तिगत प्रकार की कठिनाइयों के समय, पढ़ाई छोड़ देने का विचार त्यागने में शिक्षकों, अनुशिक्षकों अथवा उपबोधकों द्वारा दी गयी अभिप्रेरणा ही काम आती है। प्रारम्भिक अभिप्रेरणा प्रभावी ढंग से देना तभी संभव हो सकता है जबकि संस्थाओं को, अध्येताओं को समर्थन देने की विधि तथा उनमें तादातम्य की भावना विकसित करने का ज्ञान हो। अध्येता को अनुभूति हो कि इस संस्थान को मेरी चिन्ता है। गम्भीर मुसीबत के समय मुझे इसकी सहायता मिल सकती है। इस प्रकार के अपनेपन की भावना का निर्माण विद्यार्थी और संस्था के बीच प्रारम्भ से ही अर्थात् पाठ्यक्रम सम्बंधी विज्ञापन से, प्रवेश प्राप्ति का पत्र भेजते समय, अध्ययन सामग्री का पहला प्रेषण भेजने से लेकर उपाधि प्राप्त करने तक ही नहीं बल्कि बाद में भी चलता रहना चाहिये। संस्था तथा अध्येताओं के बीच निरन्तर अन्तःक्रियाओं द्वारा ज्ञानार्जन के लिये अपनत्व की भावना, पारस्परिक विश्वास, सकारात्मक वातावरण का सृजन होगा।

- **उपयुक्त कार्य दक्षताओं का विकास**

दूरस्थ अध्येताओं की अभिरूचि एवं अभिप्रेरणा का विकास करने तथा उसे बनाये रखना सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष संस्था की वह कार्य दक्षता है जिसके द्वारा वह अपनी संक्रियाओं संभार तंत्र को चलाती है। अध्ययन हेतु अध्येताओं को अभिप्रेरित करेन के लिये संस्था प्रतिभा की भूमिका निर्णायक होती है। प्रवेश से पूर्व विज्ञापन द्वारा सही और यथा पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों की सूचना तथा प्रवेश पूर्व उपबोधन प्राप्त होने से अध्येतागण अध्ययन कार्यनीति के लिये निर्णय ले सकते है। समय से प्रवेश करना पठन सामग्री, दत्त कार्य प्रस्तुति, उपबोधन, और अनुशिक्षण के निश्चित कार्यक्रमों की

सूचना और उनका क्रियान्वयन अध्येताओं में विश्वास उत्पन्न करता है और उन्हें अपना पाठ्यक्रम पूरा करने की प्रेरणा देता है भले ही पाठ्यक्रम कठिन हो। पाठ्यक्रम चाहे कितने भी अच्छे और शैक्षिक उपयोगी हों ढीले प्रशासन से होने वाली अव्यवस्था के कारण अध्येताओं में प्रेरणा का ह्रास होने लगता है। उदाहरण के लिये यदि अध्येताओं को सामग्री समय से प्राप्त न हो तो कुछ दत्त कार्य सारिणी के अनुसार प्रस्तुत करने में घोर कठिनाइ होगी, वे उपबोधन सत्र के लिये तैयारी नहीं कर सकंगे। इन तथा और ऐसी अन्य कठिनाइयों के रहते, अंतिम परीक्षा में परिणाम पर कुप्रभाव पड़ेगा।

- **दूर अध्यापकों द्वारा उचित मूल्यांकन**

इसी तरह अध्येताओं द्वारा प्रस्तुत दत्तकार्य प्रत्युत्तर को आवश्यक रूप से मूल्यांकन कर टिप्पणी देने के बाद समय से लौटाया जाना चाहिये। दत्तकार्य का उद्देश्य उन्हें समय पर प्रदान करते हुये शिक्षित करना होता है। परन्तु प्रायः या तो विद्यार्थी दत्त सामग्री के प्रत्युत्तर प्रस्तुत करते हैं, अथवा अनुशिक्षक–उपबोधक उनका मूल्यांकन कर समय पर नहीं ऐसे गम्भीरता रहित उपागम से विद्यार्थियों के ज्ञानार्जन पर दुष्प्रभाव पड़ेगा तथा दत्तकार्य देने का उद्देश्य ही समाप्त हो जायेगा।

एक अन्य महत्वपूर्ण क्रियाकलाप जो दूर शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, वह शिक्षण एवं उपबोधन सत्रों का आयोजन है। अध्ययन सामग्री चाहे जितनी भी गुणकारी हो दूर अध्येता सदा अपने शिक्षकों एवं सहपाठियों के साथ आमने–सामने मिल बैठने की आदत का अनुभव करते हैं। अनुशिक्षण एवं उपबोधन सत्रों के माध्यम से ही ऐसी बैठकें सम्भव होती है। ये बैठके ही एक मात्र अवसर हैं, जिनमें बैठाकर अध्येता अपने अनुशिक्षकों उपबोध सहपाठियों के साथ स्वतंत्रतापूर्वक अन्तःक्रियायें करते है। वे अन्तःक्रियायें केवल पाठ्यक्रम के बारे में ही नहीं होती बल्कि अध्यन व्यवस्था सम्बंधी मुद्दें पर भी होती है जो उनकी अथवा व्यावसायिक प्रतिबद्धता में आड़े आते हैं। अतः उपबोधन और अनुशिक्षण सत्र बहु विचार कर आयोजित किये जाने चाहिये ताकि अध्येताओं को शैक्षिक एवं संवेगात्मक सहायता प्राप्त हो सके। अधिकांशतः उपबोधकों की योग्यता तथा अध्येताओं के प्रति दृष्टिकोण दूरस्थ शिक्षा में अध्येताओं की निरति अथवा विरति को निर्धारित करते हैं। अध्येता प्राप्त सकारात्मक अनुभव से उसे अपना अध्ययन जारी रखने में सहायता मिलती है नाकारात्मक अनुभव से अध्ययन के प्रति उसमें विरति पैदा हो जाती है।

अंत में सत्रांत परीक्षा की तैयारी दूर–अध्येता के लिये वह अंतिम बड़ी चुनौती होती है। अतः परिणाम पर दूर शिक्षा की सफलता अथवा असफलता का निर्णय होता है। समय पर संचालन, उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन और आंकलन परीक्षा फल की घोषणा, प्रमाण–पत्र प्राप्त होने से गंम्भीर और सक्रिय अध्येताओं को अत्यंत संतोष मिलता है, एवं प्रशासनिक सक्षमता से अध्येताओं को आगे अध्ययन और व्यवसाय सम्बंधी निर्णय लेने में सहायता मिलती है।

• दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं द्वारा उचित मार्गदर्शन

आम तौर से दूर अध्येताओं में दूर शिक्षा के प्रति विश्वास एवं सहजता का अनुभव है। निश्चित रुप से उच्च विद्यालयों अथवा वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों से आये नये नये अध्येता किसी भी कारण से दूर शिक्षा में प्रवेश लेते हैं तो वे अपने समाजीकरण तथा विद्यालय परिसर में प्राप्त होने वाली प्रसन्नता की कमी अनुभव करते है। महिलायें, युवा गर्षहिणियां, बेरोजगार युवक अत्यंत सुविधा वंचित परिवारों से आने वाले प्रथम पीढ़ी शिक्षार्थी अंग विकलांग विद्यार्थी और सेवा से अवकाश प्राप्त व्यक्ति प्राप्त व्यक्ति प्रायः अनेक कठिनाइयां व संवेगात्मक अभिघात अनुभव करते हैं तथा मामूली सी असुविधा के आते ही पढ़ाई छोड़ दिये जाने की सम्भावना बनी रहती है। यदि हम दूरशिक्षा के छात्रो द्वारा कार्य निष्पादन न करने अथवा उनमें अभिरूचि न होने के कारणों का विश्लेषण करें तो ज्ञात होगा कि छात्रों में अरूचि पैदान करने वाले अधिकांश कारक संस्थाओं से सम्बंधित होते हैं। यदि संस्था चाहे तो इनका निराकरण आसानी से सम्भव है।

• दूरस्थ अध्यापक द्वारा उचित प्रतिक्रिया

भारत में दूर–अध्येताओं को जिस सर्वसामान्य समस्या से जूझना होता है, वह है उनके द्वारा पूछे गये प्रश्नों के बारे में उपयुक्त अनुक्रिया का न मिलना। संस्थाओं की ओर से प्रत्युत्तर का न मिलना, अनुपयुक्त प्रेषण–व्यवस्था का परिणाम हो सकता है। यह विद्यार्थियों के लिये बहुत मंहगा पड़ जाता है, और कोई भी प्रारम्भिक नकारात्मक अनुभव उनके उपर संस्था के प्रति अपनी अध्ययन योजना के प्रति भी नकारात्मक छाप छोड़ जाता है। यदि संस्थाये छात्रों को अध्ययन सामग्री भेजते समय पर्याप्त सावधानी बरतें तो इस प्रकार का नकारात्मक प्रभाव आसानी से टाला जा सकता है।

• प्रयोगात्मक कार्य हेतु उचित मार्गदर्शन

सामग्री प्रेषण में चाहें कोई भी समस्या न हो पर विद्यार्थियों को अपने दत्तकार्य का उत्तर देने में विशेषकर प्रथम दत्तकार्य के लिये समस्या उठ सकती है। ऐसे समय उन्हें आवश्यक मार्ग–दर्शन अपने अनुशिक्षकों, उपबोधकों अथवा विश्वस्त सलाहकारों से मिल सकता है, बशर्ते कि उनमें पारस्परिक सम्पर्क स्थापित हो सके। अध्ययन केन्द्रों पर आयोजित सम्पर्क एवं उपबोधन सत्रों के माध्यम से विद्यार्थीगण एवं शिक्षक–उपबोधकों एवं सह–पाठियों के बीच मुलाकात होना सम्भव हो सकता है। परन्तु तब भी सम्भव है कि कुछ विद्यार्थी अध्ययन केन्द्र की अवस्थिति, यात्रा में पूरी की जाने वाली दूरी, समय, धनराशि और अन्य बाधाओं के कारण सम्पर्क सूत्र में न पहुॅच सके। यदि वे सत्र में उपस्थित हो भी जाते हैं तब भी अध्ययन केन्द्र का कुप्रबंध और अनुशिक्षक–उपबोधको तथा अध्ययन केन्द्र के कार्मिकों के पास सीमित समय में से अध्ययन समस्याओं के समाधान का समय ही नहीं निकल पाता। ऐसी परिस्थितियों में यह समाधान सम्भव हो सकता है कि छात्रों की एक नियत संख्या को एक विशेष अनुशिक्षक अथवा उपबोधक के साथ लगा दिया जाये। उनके बीच पत्राचार,

दूरभाष अथवा व्यक्तिगत यात्रा द्वारा आपसी अन्योन्य क्रियायें की जा सकती है।

- **छात्र सहायता सेवाओं का उचित गुणवत्ता सुनिश्चित करना**

अध्येतयाओं की उपुर्यक्त सभी सम्भव समस्याओं का समाधान करने की कुंजी, गुणवत्ता आश्वासन है। परन्तु गुणवत्ता आश्वासन सुगमतापूर्वक संभव नहीं होता। जब तक कि हम दूर शिक्षा की सभी गतिविधियों में गुणवत्ता का ध्यान रखने वाले संस्थागत उपयो को न अपनायें दूर शिक्षा में कुछ भी कम महत्वपूर्ण अथवा अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता। संस्था के अन्तर्गत प्रत्येक कार्य का प्रभाव अन्य सभी गतिविधियों पर पड़ता है। गुणवत्ता युक्त अध्ययन सामग्री के निर्माण आवश्वासन मात्र इस बात से नहीं मिल सकता है कि इसके निर्माण में व्याख्याताओं, प्रवाचकों प्रोफेसरों को लगाया गया है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि पाठ्यक्रम लेखन के लिये शिक्षा विशेषज्ञ संस्था के अंदर से है अथवा बाहर से बल्कि इस बात का महत्व है, कि उचित प्रकार शिक्षाविदों की पहचान की जाये तथा उत्कष्ट लेखन कौशल और उच्च स्तरीय योग्यता शिक्षाविदों से दूर शिक्षण सामग्री काविकास करवाया जाये। यहां सहकर्मियों के बीच लोकतंत्र और समता के भाव से कम नहीं चलेगा। पाठ्यचर्या विकास जैसे शिक्षक मामलों में गुणवत्ता आश्वासन तभी संभव हो सकता जब कुछ ऐसे विद्वान हो जो अच्छी और बुरी सामग्री में अंत कर सकते हैं, और पाठ्यक्रम अथवा कार्यक्रम की कमियों को सुधार सकें। यह गुणवत्ता नियंत्रण और गुणवत्ता आश्वासन का केवल एक पहलू है यदि हम दूर अध येताओ की कठिनाइयों को न्यनूतम स्तर पर लाना चाहते हैं।तो हमें इस प्रकार की कार्यनीति दूर शिक्षण की प्रत्येक गतिविधि में अपनानी होगी।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

7. परामर्श सत्रों के आयोजन में क्या कठिनाई होती है।

....

8. दूर अध्येता प्रयोगात्मक कार्य ठीक से क्यों नही कर पाते है।

....

9. अध्ययन केन्द्रों को दूर अध्येताओं को कौन सी सुविधाये प्रदान करनी चाहिये।

....

12.7 सारांश

दूर अध्येताओं के अभिलक्षणों के अन्तर्गत हमने उनकी आयु, लिंग, सामाजिक स्तर, आर्थिक स्तर, शैक्षिक स्तर, भौगोलिक स्थिति, भाषायी कुशलताओं, अध्ययन परम्पराओं और आवश्यकताओं का विवेचन किया जो दूर अध्ययन को प्रभावित करती

है। दूर अध्येताओं के समक्ष आने वाली सामान्य समस्यायें एकलता में अध्ययन अभिप्रेरणा की कमी, अनुपयुक्त अध्ययन कौशल, अध्ययन तथा अन्य प्रतिबद्धताओं के बीच तालमेल बैठाने में कठिनाई, पाठ्यक्रम का कमजोर अभिकल्पन, संस्था की ओर से अपर्याप्त समर्थन सेवाएं इत्यादि। हमने जिन संस्थागत प्रबंधों के विषय में चर्चा की है वे हैं – विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करना प्रवेश पूर्व उपबोधन सेवायें, समय पर सामग्री प्रेषण का ध्यान रखने वाली सक्षम संक्रियायें और कार्यनीतियॉं। दत्त कार्यों को संभालना अनुशिक्षण एवं उपबोधन सत्रों का संयोजन और मूल अभिकल्प, उसके विकास तथा शैक्षिक कार्यक्रमों के संचालन में ठोस शिक्षण सिद्धान्तों का व्यवहार। इस इकाई में उठाये गये कुछ प्रसंगों पर अगली इकाइयों में भी प्रकाश डाला जायेगा।

12.8 बोध प्रश्नो के उत्तर

1. अधिक आयु, विविध रुचि, विविध भौगोलिक, शैक्षिक स्तर में विविधता।
2. सभी दूर दराज के स्थानों से सम्बन्धित होते है।
3. अलग अलग।
4. अध्यापक से दूरी।
5. अपने घरेलू समस्याओं के कारण
6. अध्यापकों द्वारा उचित मार्गदर्शन न मिलने के कारण
7. दूर अध्यापको एवं दूर अध्येता दोनों की सुविधा का ध्यान रखना।
8. उचित प्रतिक्रिया का न मिलना।
9. उचित मार्गदर्शन, अभिप्रेरण, उचित सुविधा प्रदान किया ताना चाहिये।

12.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Gibbbs (1982) : Why students don't learn ? Teaching at a distance; Spring.

Garg & others (2006) : Open and Distance Education in Global Enviroment, New Delhi : Viva Books,

Keegan, D. (1990) : Foundation of Distance Education, London.: Rotledge,

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

शर्मा, आर० ए० (1996) : दूरवर्ती शिक्षा, मेरठ सूर्या पब्लिकेशन,

। । सरस्वती नः सुभगा मयस्करत् । ।

Uttar Pradesh Rajarshi Tandon
Open University

MAED-107

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड

4

दूरस्थ शिक्षा के समक्ष चुनौतियां

इकाई- 13 दूर शिक्षक के समक्ष चुनौतियां	209
इकाई- 14 दूर शिक्षा की समस्यायें	221
इकाई- 15 दूर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया	231
इकाई- 16 दूर शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान	251

परामर्श-समिति

प्रो0 नागेश्वर राव	**कुलपति - अध्यक्ष**
डॉ0 हरीशचन्द्र जायसवाल	वरिष्ठ परामर्शदाता - कार्यक्रम संयोजक
श्री एम0 एल0 कनौजिया	कुलसचिव - सचिव

विशेषज्ञ समिति

प्रो0 एस0पी0 गुप्ता	निदेशक, शिक्षा विद्या शाखा, उ0प्र0रा0ट0मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 राम शकल पाण्डेय	पूर्व आचार्य,शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद
प्रो0 हरिकेश सिंह	आचार्य, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

परिमापक

प्रो0 पी0 के0 साहू	विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सम्पादक

डॉ0 धनंजय यादव	वरिष्ठ प्रवक्ता शिक्षाशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

लेखक

डॉ0 सुषमा पाण्डेय	वरिष्ठ प्रवक्ता दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर, विश्वविद्यालय गोरखपुर

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफी (चक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इन्द्रिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के अनुमति से पुनः मुद्रित। उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की ओर से विनय कुमार, कुलसचिव द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित वर्ष - 2023.

मुद्रक - के0 सी0 प्रिटिंग एण्ड एलाइड वर्क्स, पंचवटी, मथुरा - 281003.

MAED - 107 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा

खण्ड 1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा और विषय क्षेत्र

इकाई 1 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का प्रारूप एवं आवश्यकता

इकाई 2 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का ऐतिहासिक विकास

इकाई 3 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का नियोजन

इकाई 4 मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रमुख कारक

खण्ड 2. छात्र सहायता सेवायें

इकाई 5 स्व अधिगम सामग्री

इकाई 6 अधिन्यास

इकाई 7 परामर्श सत्र

इकाई 8 सूचना एवं सम्प्रेषण प्रौद्योगिकी

खण्ड 3. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा का संगठनात्मक स्वरूप

इकाई 9 दूरस्थ शिक्षा परिषद

इकाई 10 एन0आई0ओ0एस0

इकाई 11 मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई 12 दूर अध्येता

खण्ड 4. दूरस्थ शिक्षा में मूल्यांकन

इकाई 13 दूर शिक्षक के समक्ष चुनौतियां

इकाई 14 दूर शिक्षा की समस्यायें

इकाई 15 दूर-शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया

इकाई 16 दूर शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान

खण्ड-परिचय- 4 दूरस्थ शिक्षा के समक्ष चुनौतियाँ

शिक्षा व्यवस्था की प्रभावकारिता शिक्षक के क्रियाकलापों तथा भूमिका पर निर्भर करती है। दूर शिक्षकों को नियमित करना शिक्षण में सम्मिलित होने वाले समस्त क्रियाकलापों के अतिरिक्त कई अन्य दायित्वों का भी निर्वहन करना पड़ता है। दूर अध्यापक एवं दूर अध्येता में दूर संचार माध्यमों एवं दत्त कार्यों, परियोयजना कार्य को ये ही द्विमार्गी सम्बन्ध स्थापित करता है। इसमें व्यक्तिगत सम्पर्क का अवसर बहुत कम मिलता है दूर शिक्षक को विभिन्न नामों से जाना जाता है। शिक्षकों के दायित्वों को देखते हुए उन्हें विभिन्न वर्गों में विभक्त कर सकते हैं मुक्त एवं दूर शिक्षा में दूर शिक्षक का कार्य क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। इकाई-13 में दूर शिक्षा शिक्षा व्यवस्था के प्रशासन, समन्वय, प्रचार प्रसार के कार्य से जुड़े पहलुओं पर चर्चा की गई है।

इकाई-14 दूर शिक्षा की समस्याओं पर विस्तार से विचार किया गया है इन समस्याओं के कारण दूर शिक्षा की प्रभावशीलता एवं गुणात्मकता घटती है। मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनेक समस्यायें हैं और इन समस्याओं पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। जिससे कि इसकी संख्यात्मक वृद्धि से गुणात्मकता भी बढ़े क्योंकि मुक्त एवं दूरस्थ भविष्य की शिक्षा व्यवस्था है।

इकाई-15 में शैक्षिक सम्प्राप्ति का मापन करने के लिये प्रयुक्त परीक्षणों एवं परीक्षा सम्बन्धी प्रत्ययों की चर्चा की गई है। दूरस्थ शिक्षण के मुक्त अधिगम के क्षेत्र में भी उन्हीं उपकरणों का प्रयोग कियाय जाता है।

इकाई-16 में अनुसंधान की अवधारणा, प्रकृति आवश्यकता की चर्चा की गई हैं इसके अन्तर्गत यह भी देखा गया है कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान के कौन कौन से क्षेत्र है। और इसमें गुणवत्ता कैसे सुनिश्चित की जा सकती है।

वास्तव में प्रत्येक शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका अहम होती है। यद्यपि औपचारिक शिक्षा में तो शिक्षक की भूमिका अहम होती है और शिक्षक का प्रभाव बहुत अधिक होता है। किन्तु दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में भी परामर्शदाता, मूल्यांकनकर्ता आदि विविध रूपों में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

इकाई–13 दूर शिक्षक के समक्ष चुनौतियाँ

संरचना

13.1 प्रस्तावना

13.2 उद्देश्य

13.3 दूर शिक्षक की अवधारण एवं प्रकार

13.4 पूर्ण अध्ययन केन्द्र समप्वय व परामर्शदाता

13.5 पूर्ण कालिक दूर शिक्षकों के समक्ष चुनौतियां

13.6 शैक्षिक उपबोधकों के समक्ष चुनौतियां

13.7 अध्ययन केन्द्र समन्वयक परामर्शदाता के समस्त चुनौतियां

13.8 सारांश

13.9 अभ्यास कार्य

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

13.1 प्रस्तावना

किसी भी प्रकार की शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका अहम होती है और औपचारिक शिक्षा में तो शिक्षक का प्रभाव बहुत अधिक होता है और शिक्षा व्यवस्था की प्रभावकारिता भी शिक्षक के योग्यता एवं क्रियाकलापों तथा भूमिका पर निर्भर कर जाती है ठीक इसी प्रकार दूर अध्येताओं को भी शिक्षक की सुविधा मिलती है और इन शिक्षकों को दूर शिक्षक कहा जाता है। दूर शिक्षकों को नियमित कक्षा शिक्षण में सम्मिलित होने वाले समस्त क्रियाकलापों के अतिरिक्त कई अन्य दायित्व भी निर्वहन करना पड़ता है। इस इकाई में दूर शिक्षक के समक्ष उपस्थित चुनौतियों के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगें।

13.2 उद्देश्य

» इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेंगे कि :–

» दूर शिक्षक की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेंगे।

» दूर शिक्षक के प्रकार को स्पष्ट कर सकेंगे।

» दूर शिक्षक उत्तरदायित्वों की विवेचना कर सकेंगे।

» दूर शिक्षक की विभिन्न चुनौतियों को विश्लेषण कर सकेंगे।

13.3 दूर शिक्षक की अवधारणा एवं प्रकार

दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से भिन्न है और इसी कारण इसमें अध्यापक एवं अध्येता के प्रकार्यों में भी भिन्नता रहती है। दूर शिक्षा में अध्येताओं को अध्यापक सम्बन्धी सुविधा प्रदान करने वाला उसकी अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को सुलझाने वाला उसे अध्ययन हेतु मार्ग दर्शन देने वाला दूर शिक्षक कहलाता है। दूरस्थ शिक्षा में अध्यापक की भूमिका का निर्वहन करने वाले को दूर शिक्षक इस लिये कहा जाता है क्योंकि उसके एवं अध्येता के मध्य दूरी रहती है और अध्यापक दूर रहकर ही दत्त कार्यों, परियोजना कार्यों के माध्यम तथा दूर संचार माध्यमों से ही दूर अध्येताओं से सम्पर्क स्थापित करता है। दूर अध्यापक एवं दूर अध्येता में दूर संचार माध्यमों एवं दत्त कार्यों, परियोजना कार्य के माध्यम में ही द्विमार्गी सम्बन्ध स्थापित करता है। दूर शिक्षक एवं दूर अध्येता में सामाजिक अन्तः क्रिया की बहुत कम सम्भावना होती है क्योंकि इन्हे व्यक्तिगत सम्पर्क का अवसर बहुत कम मिलता है। परन्तु अप्रत्यक्ष रहते हुए भी दूर अध्यापक दूर अध्येताओं को विविध सुविधायें प्रदान करते है जैसे कि पाठ्यक्रम निर्माण शोध पाठ्यक्रम का प्रस्तुती करण, पाठ्यक्रम का मूल्यांकन आदि कार्य इसमें सम्मिलित होते है।

दूर शिक्षक के प्रकार

विश्व के विभिन्न भागों में कार्य रत शिक्षकों के लिए अलग–अलग शब्द प्रयुक्त किये जाते है इनके लिए ट्यूटर, ट्यूटर काउन्सलर एसोसिएट ट्यूटर, वशिष्ट ट्यूटर मार्कर, मेन्टर्स, स्टॉफ टयूटर, टेलिफोन टूयटर आदि। दूर शिक्षकों का दूसरा समूह उन शिक्षकों का है जो कि नीति योजनाकार शोधकर्ता पाठ्यक्रम निर्माता, शैक्षिक शिल्प विज्ञानी लेखक, सम्पादक प्रस्तुतकर्ता, कार्यक्रम एवं पाठ्यक्रम समन्वयक, पाठ्यक्रम निर्माता, मीडिया प्रीड्यूसर मूल्यांकनकर्ता आदि। इसका अर्थ यह है कि दूर शिक्षकों की भूमिका स्थाई होती है और कुछ के पास विशेष दायित्व होता है। कुछ इन कार्यो के साथ तो जुड़े पर उनके परामर्श एवं टिप्पणियां गम्भीरता के साथ स्वीकार होते है। इस आधार पर सम्पूर्ण शिक्षकों के दायित्वों को देखतें हुए इन्हें इन वर्गो में विभक्त कर सकते है।

1. पूर्ण कालिक :– इस वर्ग में वे शिक्षक आते है जो कि मुक्त शिक्षा व्यवस्था में नियमित रूप से नियुक्त होते हैं। ये शिक्षक विभिन्न क्षेत्रों में विषय विशेषज्ञ होते हैं।

ये विविध क्रियाकलाप करते है ये कार्यक्रम का संकल्पन करते है और यह सुनिश्चित करते है कि कोर्स भली–भांति आरम्भ हो सकें। पूर्ण कालिक शिक्षक वर्ग कोर्स के निर्माण का उद्देशीयकरण, नियोजन निर्माण प्रस्तुतीकरण से लेकर मूल्यांकन तक विभिन्न भूमिकायें अदा करते है। वे रूपरेखा से लेख मूल्यांकनकर्ता समन्वय, संशोधन आदि भी करते हैं। विशेषज्ञ समिति की बैठकों कोर्स टीम की क्रियायों तथा फोर्स सम्पादकों आदि की बैठको का समन्वय भी वे ही करते हैं। इसीलिए पूर्णकालिक संकाय की भूमिका बहुद्देशीय होती है और बहुआयामी उत्तरदायित्व का निर्वहन करते है। इग्नू में प्रोफेसर, रीडर लेक्चरर, संयुक्त निदेशक, उपनिदेशक, सहायक निदेशक, क्षेत्रीय निदेशक, सहायक क्षेत्रीय निदेशक जैसे अनेक पदों पर नियमित पूर्णकालिक स्टॉफ है।

पूर्णकालिक संकाय विश्वविद्यालय को भविष्य को आकर देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इनके निष्ठा एवं सम्पूर्ण की आवश्यकता होती है और लगातार स्थानान्तरण से पदनाम बदलने से कार्य भी बदल जाता है।

2. अंश कालिक संकाय :– विशिष्ट कार्यों के लिए आवश्यकतानुसार दूरस्थ एवं मुक्त शिक्षा में कुछ अंशकालिक शिक्षक वर्ग रखे जाते है। ये संकाय नियोजन तैयारी तथा कार्यक्रम के लागू होने में पूर्ण कालिक संकाय को सहयोग देते है। वे विशेष शर्तों और दशाओं के आधार पर समाहित धनराशि पर नियुक्ति होते है। इनके उत्तरदायित्व सीमित होते है। कार्य की प्रकृति के आधार पर इन्हें अंशकालिक कहा जाता है। परामर्शदाता के अतिरिक्ति अन्य व्यक्ति विश्वविद्यालय द्वारा स्थापित अध्ययन कार्यक्रम केन्द्रों से जुड़े होते है। ये विभिन्न अध्येताओं के सम्मुख विश्वविद्यालय का प्रतिनधित्व करते है ये विश्वविद्यालय के नितियों एवं कार्यक्रमों से परिचित होते है।

(अ) शैक्षिक उपबोधक का दायित्व :– शैक्षिक उपबोधक दूर अध्येता के सन्दर्भ में विश्वविद्यालय की धुरी होता और ये इस बात पर निर्भर करता है कि वह विषय सामाग्री एवं विश्वविद्यालय सम्बन्धी पठन सामाग्री और सार्थक सूचनाओं की कितनी जानकारी रखता है। यह उपबोधन सत्र लिखित सम्प्रेषण तथा दत्त कार्य पर दो जाने वाली टिप्पणी के माध्यम से अध्येताओं तक संदेश पहुंचाने वाला वही उचित व्यक्ति है। यह विश्वविद्यालय के सम्पर्क मे रहता है। तथा क्षेत्रीय केन्द्रो के माध्यम से विश्वविद्यालय में नवीनतम विकास एवं गतिविधियों की समस्त जानकारियां उसे प्रदान की जाती है। यह विश्वविद्यालय को भी दूर अध्येता के सन्दर्भ में प्रतिपुष्टि देता है।

» यह सुस्थापित संस्थाओं जैसे कालेजों और विश्वविद्यालय के अनुभवी शिक्षक होते है। शैक्षिक उपबोधक के चयन के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रक्रिया निर्धारित है। जिससे विश्वविद्यालय उपलब्ध जनसंस्थान से सम्बन्ध उपयुक्त और बेहतर चुनाव

हो सकें। इनकों परामर्श सत्रों के अनुसार परिश्रमिक दिया जाना है।

शैक्षिक उपबोधक के प्रमुख कार्य :–

» सूचना दाता के रूप में कार्य करना।

» सलाहकार के रूप में कार्य करना।

» काउन्सिलग या उपबोधन।

» शिक्षा देने के लिए जनसंचार साधनो का प्रयोग।

» दत्तकार्य का आकलन व मूल्यांकन

उपबोधकों को तीन मुख्य स्तरों पर सम्प्रेषण देना पड़ता है।

» शैक्षिक सम्प्रेषण

» व्यक्तिगत सम्प्रेषण

» पूरक सम्प्रेषण

शैक्षिक उपबोधक का उत्तरदायित्व :– अध्येता की शैक्षिक प्रगति उपबोधक पर निर्भर है। शैक्षिक उपबोधक के प्रयासों से दूर अध्येता में अलग पड़े हाने की भावना समप्त हो जायेगी। वह अध्येताओं की आवश्यकताओं का पता लगाकार सम्पर्क सूत्रों, दतकार्य मूल्यांकन आदि के माध्यम से अध्येता की शैक्षिक प्रगति के विषय जानकारी देता है।

दूर शिक्षा में शैक्षिक उपबोधक के प्रमुख कार्य है।

» इाकईयों में प्रवीणता प्राप्त करने में अध्येता की सहायता करना।

» अध्येता के अध्ययन कौशलों का विकास।

» सामूहिक क्रियाओं द्वारा ज्ञान विस्तार

» शैक्षिक प्रगति हेतु प्रोत्साहन।

» आत्म निर्भरत व आत्मविश्वास का विकास।

» मूल अध्ययन कौशलों में सुधार के लिए ध्यान खींचना।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. दूर शिक्षक किस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था से सम्बन्धित है?

....

2. पूर्णकालिक संकाय की क्या आवश्यकता होती है।

....

3. पूर्णकालिक संकाय कौन–कौन से कार्य करते है?

....

4. अंशकालिक संकाय दूर शिक्षा व्यवस्था में क्यों रखे जाते है।

....

5. शैक्षिक उपबोधनों का कार्य क्या–क्या हैं?

....

13.4 अध्ययन केन्द्र सम्न्वयक एवं परामर्शदाता

सभी स्तर के मुक्त एवं दूरस्थ संस्थान सम्पूर्ण देश भर में अध्ययन केन्द्रों के माध्यम से अपने विशाल जाल तंत्र है। ये केन्द्र मुख्यालय से सभी दूर दराज के क्षेत्रों को जोड़े रहते है। ये अध्ययन केन्द्र सभी अध्येताओं को मुख्ख्यालय के दिशा निर्देशों एवं सुविधाओं को प्रदान करते हैं। ये अध्ययन केन्द्र अनेक मुक्त विश्वविद्यालय एवं विद्यालयों के कार्यक्रमों को संचालित करने में सहायता करते है। इस केन्द्र का मुखिया समन्वयक होता है। समन्वयक मुख्यालय एवं अध्येताओं को जोड़ने का कार्य करता है। यह अध्ययन केन्द्र के शैक्षिक प्रशासनिक एवं आर्थिक क्रियाओं को देखता है। यह अंशकालिक संकाय होता है। यह दूर अध्येताओं को सूचना प्रदान करने से लेकर उनके अधिगम समबन्धी समस्याओं को भी दूर करने का कार्य करता है। समन्वयक का कार्य है :–

अ प्राथमिक कार्य

» विद्यार्थी सहायता सेवाओं का प्रबन्धन

» पुस्तकालय सुविधा की व्यवस्था

» अधिगम सामाग्री का रखरखाव एवं देख–रेख

» दत्तकार्यों का परिवीक्षण

» पूछ–ताछ एवं मुखाभिमुख सूचना देने का कार्य

» क्षेत्रीय केन्द्रों, मुख्यालय, उपबोधक, दूर अध्येता तथा अन्य संस्थाओं से आदान–प्रदान

» केन्द्र के गैर शैक्षिक कर्मचारियों का पर्यवेक्षण

द्वितीय कार्य

» लेखा एवं वित्तीय कार्य

» सेवाओं का विपणन

» आवेदन पत्रों का विक्रय

» प्रचार और विज्ञापन की व्यवस्था

» अध्ययन केन्द्र के लिए कर्मचारी की व्यवस्था

» परीक्षा केन्द्र द्वारा वांछित शैक्षिक स्टाफ

परामर्शदाता :– ये मुख्य रूप से अध्ययन केन्द्रों से जुड़े होते है तथा पूर्णकालिक एवं अंशकालिक होते हैं। इनके कार्य हैं :–

» परामर्श प्रदान करना

» दिशा निर्देश प्रदान करना

» आवश्यक सूचनायें प्रदान करना।

» अध्येताओं की अधिगन सम्बन्धी समस्यायें सुलझाना।

» दत्त कार्य करने हेतु दिशा निर्देश देना व मूल्यांकन करना

» परियोजना कार्य हेतु आवश्यक दिशा निर्देश देना।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

6. परामर्शदाता की नियुक्ति क्यों आवश्यक है?

....

7. अध्ययन कैन्द्र पर समन्वयक की नियुक्ति **क्यों** की जाती है?

....

13.5 पूर्णकालिक दूर शिक्षकों के समक्ष चुनौतियां

दूर शिक्षक मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा माध्यम को **सजीव** करता है। परन्तु प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उनके समक्ष अनेक समस्याये एवं **चुनौतियां** है। पूर्णकालिक दूर शिक्षक निम्न चुनौतियां के झेलते है।

दूर अध्येता सम्बन्धी

1. **दूर अध्येताओं की वास्तविक आवश्यकताओं को जानना :–** दूर शिक्षक को अपने से दूर अध्येता की आवश्यकता को वास्तविक रूप में समझाना कठिन होता है। सभी अध्येता विविध भाग, आयु रूचि आवश्यकता को लिए रहते है इसके आतिरिक्त इन अध्येताओं को जानकर उनके अनुकूल पाठ्यक्रम निर्धारण कर सम्प्रेषण विधियों का संयोजन करना इसके अतिरिक्त यह भी अध्येता से सम्बन्धी समस्याओं को भी समझने व सुविधा प्रदान करने की चुनौती रहती है।
2. अध्येता को दूर होने के कारण उनकी आवश्यकता को अप्रत्यक्ष रूप से समझ कर उसके अनुकूल सुविधा देना।
3. दूर अध्येताओं के लिए उचित जानकारी को सही समय पर प्रेषित करना।
4. दूर अध्येताओं को संतुष्ट करना।
5. दूर अध्येताओं के लिए उचित सम्प्रेषण माध्यम का चुनाव करना।
6. आवश्यकतानुसार पाठ्यवस्तु का निर्माण करना।

मुक्त शिक्षण संस्थान सम्बन्धी :– मुक्त शिक्षण संस्थान में कार्यरत होते हुए उनके समक्ष चुनौती होती है :–

1. मुक्त शिक्षण संस्थानों के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों के प्रति सही समझ पैदा करना क्योंकि अधिकांशतः दूर शिक्षक नियमित माध्यम से शिक्षण प्राप्त करते है। अतः दूर शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण का विकास कठिन होता है।
2. संस्थानों के क्रियाकलापों की पूरी जानकारी रखना क्योंकि इस प्रकार के संस्थान के क्रियाकलाप बहुत **जटिल** होते है। और विकेन्द्रीकृत प्रशासन के कार्य का दायरा काफी बड़ा होता है अतः अधिकांश पूर्णकालिक शिक्षक अपने कार्यक्षेत्र से बाहर की जानकारी नही रख पाते।
3. इन शिक्षकों के क्रियाकलाप व भूमिका बदलती रहती है कभी ये पाठ्यक्रम निर्धारण, कभी निर्माण, कभी प्रशासनिक कार्यो में संलिप्त होते है और इस प्रकार के विविध भूमिका के निर्वाहन से उन्हे बार–बार स्थायित्व नही मिल पाता और उनके समझ चुनौती बनी रहती है।
4. मुक्त शिक्षा संस्थान लगातार नये पाठ्यक्रमों एवं अध्येताओं को विविध सुविधा प्रदान करने का लक्ष्य रखते है जिससे कि अध्यापक, अत्याधिक दबाव में इन लक्ष्यों को पूरा करने में लगे रहते है।

5. संस्थान द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने हेतु सुविधाओं के प्रचार–प्रसार हेतु लगातार अन्य संस्थानों के साथ सम्पर्क बनाये रखने का दबाव रहता है।

6. संस्थान द्वारा संचालित विविध अध्ययन केन्द्रों व क्षेत्रीय केन्द्रो के साथ सम्पर्क बनाये रखने की चुनौती बनी रहती है।

7. संस्थान के विविध विभाग होते है और सभी अपने–अपने कार्य करते है परन्तु सभी विभागों में कार्यरत शिक्षकों को समन्वयक बनाकर चलना पड़ता है क्योंकि सभी के समवेत दायित्व ही लक्ष्य निर्धारण कर पाते हैं।

8. पूर्णकालिक शिक्षकों को अंशकालिक शिक्षकों को भी आवश्यक दिशानिर्देश देना पड़ता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

6. मुक्त शिक्षण संस्थानों में पूर्ण कालिक शिक्षकों के दायित्व क्यों बदलते है?

....

7. पूर्ण कालिक शिक्षक क्या–क्या कार्य करते है?

....

13.6 शैक्षिक उपबोधक शिक्षकों के समक्ष चुनौतियॉं

शैक्षिक उपबोधक विश्वविद्यालयों एवं डिग्री कालेजो तथा विद्यालयों के नियमित शिक्षक रखे जाते है। इन शैक्षिक उपबोधकों को भी कई चुनौतियां झेलनी पड़ती है उसे हम इस प्रकार देख सकते है।

» मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की अवधारणा को ठीक प्रकार से समझना।

» मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के ढंग एवं आवश्यकताओं को सही तरीके से समझ पाना।

» दूर अध्येताओं को मुक्त शिक्षा संस्थानों द्वारा प्राप्त सूचनाओं को सही तरीके से प्रदान करना।

» दूर अध्येताओं की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझकर उसके अनुकुल सहयोग करना।

» मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के लक्ष्यों के प्रति उचित दृष्टिकोण उत्पन्न करना।

- » दूर अध्येताओं में उचित अध्ययन कौशलो के विकास में सहयोग देना।
- » दूर अध्येता और अध्यापक में दूरी होने के कारण उनमे आत्म विश्वास की कमी हो जाती है। अतः शैक्षिक उपबोधक का यह दायित्व निभाना पड़ता है कि वह अध्येता को आत्मविश्वासी कैसे बनाये।
- » दूर अध्येता के लिए समस्या उत्पन्न होने पर सलाहकार एवं उपबोधक के रूप में कार्य करना।
- » दूर अध्येता के लिए प्रभावी सम्प्रेषण करना।
- » परामर्श देने हेतु जन संचार साधनों का उचित प्रयोग करने की योग्यता विकसित करना।
- » दूर अध्येता की व्यक्तिगत समस्याओं को भी समझने व सुलझाने की योग्यता का विकास करना।
- » दूर अध्येता को जिस सूचना की आवश्यकता हो उसको सही–सही प्रदान करना।
- » दूर अध्येता एवं मुक्त शिक्षण संस्थान के मध्य कड़ी के रूप में कार्य करना।
- » नियमित शिक्षण से हटकर उपबोधन प्रदान करना।
- » दूर अध्येता द्वारा दिये जाने वाले दत्त कार्य को समय पर जांचने एवं उचित टिप्पणी प्रदान करना।
- » परियोजना कार्य एवं शोध कार्य हेतु दूर अध्येता को आवश्यक दिशा निर्देशन प्रदान करना।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

8. शैक्षिक उपबोधक को कौन प्रस्तावित करता है?

....

9. अध्येता के अध्ययन सम्बन्धी समस्याओं को कौन दूर करता है।

....

10. मुक्त शिक्षण संस्थान एवं दूर अध्येता के बीच जीवंत कड़ी कौन होता है।

....

13.7 अध्ययन केन्द्र समन्वयक के समक्ष चुनौतियाँ

आप ऊपर परामर्शदाता के समक्ष उपस्थित चुनौतियों के विषय में जानकारी प्राप्त कर चुके है। अब यह भी जाना जाये कि मुक्त शिक्षण संस्थानों द्वारा स्थापित अध्ययन केन्द्रो में कार्यरत समन्वयकों के समक्ष कौन–कौन सी समस्यों उपस्थित होती है–

» सम्पूर्ण अध्ययन केन्द्रों को व्यवस्थित रूप में संचालित करना।

» अध्ययन केन्द्रो में दूर अध्येताओं के लिए सुविधाओं का विकास करना।

अध्ययन केन्द्रों को बराबर मुख्यालय से जोड़कर रखना जिससे केन्द्र को समय पर भौतिक एवं वित्तीय संस्थान मिलते रहें।

» अध्ययन केन्द्रो से दूर अध्येताओं को समय पर उचित सूचनायें सही समय पर पहुंचाने के लिए समन्वयक को काफी मेहनत करनी पड़ती है।

» परामर्श कक्षाओं का संचालन करवाना तथा परामर्शदाताओं की व्यवस्था करना।

» दत्त कार्यों को जंचवाना उन्हें मुख्यालय भिजवाना।

» कार्यशालाओं का आयोजन करवाना और इसके लिए परामर्शदाताओं की व्यवस्था करना।

» समय पर परीक्षायें आयोजित करवाना और मुख्य केन्द्र को सहयोग देना।

» दूर अध्येताओं को सभी आवश्यक सहयोग प्रदान करना।

» मुख्यालय को प्रतिपुष्टि प्रदान करना जिससे कि क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्र सम्बन्धी नीतियों में बदलाव हो।

» क्षेत्रीय केन्द्रों एवं मुख्यालय की सभी सम्बन्धित सूचनाओं को समय से प्रदान करना एवं प्राप्त करना।

» गैर शैक्षिक कर्मचारियों का चयन व आवश्यक सहयोग प्राप्त करना।

» मुख्यालय के लिए अन्य अतिरिक्त कार्य जैसे आवेदन पत्रों का विक्रय समय से करवाना।

» मुख्यालय की नयी योजना का प्रचार प्रसारण करवाना।

केन्द्र समन्यवक का दायित्व गुरूवर है। वह क्षेत्र विशेष में संस्थान विशेष के पाठ्यक्रमों के प्रचार प्रसार के लिए उत्तरदायित्व को सम्भालता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

11. दत्त कार्यों को जांचने से अध्येता को क्या लाभ मिलता है?

....

12. परामर्शदाताओं को अध्ययन केन्द्र आने की सूचना कौन देता है।

....

13. मुख्यालय को समन्वयक क्या मदद करता है?

....

13.8 सारांश

मुक्त एवं दूर शिक्षा में दूर शिक्षक का कार्य बृहदत्तर है। दूर शिक्षा इस शिक्षा व्यवस्था के प्रशासन समन्वय, संगठन, प्रचार प्रसार, सहयोग सेवाओं के व्यवस्था का कार्य से जुड़े होते है। यह सम्पूर्ण मुक्त एवं दूर शिक्षा के नींव से लेकर शाखाओं तक जुड़े रहते है।

13.9 अभ्यास कार्य

दूर शिक्षक की अवधारण पर प्रकाश डालते हुये उनके समक्ष उपस्थित चुनौतियों को इंगित कीजियें।

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. मुक्त एवं दूर शिक्षा।
2. विभिन्न क्षेत्रों के विषय विशेषज्ञ एवं कार्यक्रमों का प्रबन्धन व संचालन हेतु।
3. कोर्स का निर्माण, नियोजन, मूल्यांकन, समन्वयक, संयोजन।
4. पूर्णकालिक संकाय का सहयोग एवं तत्कालीन कार्य।
5. अध्येता को सहयोग, प्रोत्साहन, समस्या समाधान, परामर्श, कौशल सुधार।
6. दूर अध्येताओं को विषय सम्बन्धी सहयोग देने हेतु।
7. अध्ययन केन्द्रो के संचालन हेतु।

8. समन्वयक द्वारा मुख्यालय।
9. परामर्शदाता।
10. शैक्षिक उपबोधक।
11. प्रतिपुष्टि।
12. केन्द्र समन्वयक।
13. कार्यक्रमों का प्रचार–प्रसार, आवेदन का विक्रय, परीक्षा संचालन, उपबोधक कार्यक्रम, संचालन, सूचनाओं का आदान–प्रदान करना।

13.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Holmberq Borje (1986) : Growth and Structure of Distance Education, London : Groon Heln

Keeqan D.J. (1986) : The Foundation of distance education Distance Education, London : Croom Heln

Anand, S.P. (1979) : University without Walls, New Delhi: Vikas Publishing House.

Sahoo, P.K. (1994) : Open Learning System, New Delhi : Uppal Publishing House,

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन।

शर्मा, आर. ए. (1996) : दूरवर्ती शिक्षा मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन

इकाई 14 दूर शिक्षा की समस्यायें

संरचना

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 दूर शिक्षा की समस्यायें

14.3.1 दूर शिक्षा मेकं अध्येता की समस्यायें

14.3.2 दूर शिक्षा में दूर अध्यापक की समसयायें

14.3.3 दूर शिक्षा में दूर अध्याय की समस्यायें

14.4 दूर शिक्षा में प्रबन्धक की समस्यायें

14.5 दूर शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण का अभाव

14.5.1 पृथकता की समस्या

14.5.2 स्वशिक्षा सामग्री के गुणात्मकता की समस्या

14.6 छात्र सहयोग सेवाओं से सम्बन्धित समस्यायें

14.6.1 जन संचार माध्यमों की सुविधा से सम्बान्धित समस्या

14.6.2 पूर्णकालिक संकाय की नियुक्ति न होने से समस्या

14.7 सारांश

14.8 अभ्यास के प्रश्न

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

दूर शिक्षा विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय एवं औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के विकल्प के रूप में विकसित हो रही है परन्तु इसकी अपनी अनेक समस्यायें है जिस पर विचार किया जाना आवश्यक है क्योंकि इन समस्याओं के कारण दूर शिक्षा की प्रभावशीलता एवं गुणात्मकता घटती है। आइयें इस इकाई में हम बिन्दुवार इन समस्याओं की चर्चा करेंगें।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगें

» दूर शिक्षा में उपस्थित समस्याओं को इंगित कर सकेंगें।

» दूर शिक्षा में उपस्थित समस्याओं को सूचीबद्ध कर सकेंगें।

14.3 दूर शिक्षा की समस्यायें

दूर शिक्षा परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से सम्पूर्ण रूप में भिन्न है। यह सम्पूर्ण व्यवस्था विविध जनसंचार माध्यम एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग पर निर्भर है। इसी प्रकार से इस शिक्षा के उद्देश्य संगठन लक्ष्य स्वरूप, अध्यापक एवं अध्येता की प्रकृति एवं विशेषतायें भी औपचारिक शिक्षा से भिन्न होती है, और इसी प्रकार इसकी अपनी अलग समस्यायें भी होती है। जो समस्यायें है वे हैं :--

1. अध्येता सम्बन्धी समस्यायें
2. दूर अध्यापकों की समस्यायें
3. दूर शिक्षा के प्रति समाज का अपरिपक्त दृष्टिकोण
4. जनसंचार माध्यमों के सुविधा की समस्या
5. पृथकता की समस्या
6. दूर शिक्षा की संगठन एंव प्रबन्धन सम्बन्धी समस्या
7. छात्र सहयोग सेवाओं से सम्बन्धित समस्यायें
8. स्वशिक्षण समाग्री के गुणात्मकता की समस्या

14.3.1 अध्येता सम्बन्धी समस्यायें दूर

शिक्षा भी अध्येता केन्द्रित होती है। परन्तु औपचारिक शिक्षा से अलग दूर शिक्षा में अध्यापक एवं अध्येता के अध्येता होती है। इन अध्येताओं की प्रकृति इनकों विशेषतायें सम्पूर्ण दूर शिक्षा व्यवसाी के समक्ष समस्यायें उत्पन्न करते है जैसे कि:–

» दूर अध्येता अधिकांशतः पूर्व में औपचारिक शिक्षा से जुड़े होने के कारण दूर शिक्षा व्यवस्था के विषय में पूरी जानकारी नहीं रख पाते है।

» अध्येता दूर शिक्षा के विद्यार्थी होने के बाद भी वे दूर शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोंण नहीं रखते हैं।

» कई अध्ययनों से यह निष्कर्ष भी निकला है कि वे औपचारिक शिक्षा से मुक्त एवं

दूर शिक्षा को कमतर मानते है।

» दूर अध्येता औपचारिक शिक्षा व्यवस्था की अधिक आदत होने के कारण स्व शिक्षण व स्व अधिगम जैसे कार्यो को भी पूर्ण सजगता से नही निभातें हैं।

» दूर अध्येता मुख्यालय से दूर होने के कारण समस्त जानकारी समय से नही प्राप्त करने से दुविधा की स्थिति में रहते हैं।

» दूर अध्येता दत्त कार्यों एवं परियोजना कार्यों को स्वंय अपने आप करने तथा अपनी गति से करने के कारण उदासीनता प्रदर्शित करते है।

» अधिकांशतः अध्ययन सम्बन्धों समस्या उत्पन्न होने के बाद भी परामर्श कक्षाओं में आना नही चाहते है।

» स्वगति में अध्ययन करने के कारण अध्ययन में रूचि नही प्रदर्शित करते हैं।

» दूर अध्येता अपने दत कार्य, पवरियोजना कार्य इत्यादि को भी समय पर नही जमा करते है।

» व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में भी कार्यशाला इत्यिादी की उपस्थिति भी दबाववश करवानी पड़ती है।

14.3.2 दूर शिक्षक सम्बन्धी समस्यायें

दूर शिक्षा की कई समस्यायें दूर शिक्षकों के कारण है जैसे कि :—

» दूर शिक्षक दूर शिक्षा के लक्ष्य, विशेषतायें प्रकृति एवं उद्देश्यों के प्रति सही जानकारी नही रखते हैं।

» अधिकांशतः दूर शिक्षकों में दूर शिक्षा व्यवस्था के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव पाया जाता है वे दूर अध्येता की प्रकृति से भी अनभिज्ञ रहते हैं।

» दूर शिक्षक इस शिक्षा व्यवस्था के प्रति पूर्ण लगाव का अनुभव नही कर पाते हैं क्योंकि अध्येताओं की दूरी उन्हे शिक्षा से जुड़ाव नही उत्पन्न कर पाती है।

» अध्येताओं की दूरी होने के कारण इनकी आवश्यकताओं एवं उनकी समस्याओं के प्रति जागरूक रहना कठिन होता है।

» दूर अध्यापकों को पूरी तरह की प्रशिक्षण नही मिल पाने के कारण यह अध्येताओं को भी उचित जानकारी देने में असमर्थ हो जाते है।

» सीमित समय एवं संसाधनों के कारण ये दूर अध्येताओं को पूरा सहयोग नही कर पाते हैं।

» पूर्णकालिक नियुक्ति न होने के कारण अधिकतर संकाय अपने नियमित विभागों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक सजग रहते हैं।

» दूर शिक्षकों के लिए विशेषकर शैक्षिक उपबोधकों के लिए मुख्यालय पृथक शिक्षण समाग्रियां या जानकारी नही भेजता जिसके कारण उन्हें अधिकतर अपने शिक्षण (परामर्श) कार्य हेतु उपयुक्त पाठ्यक्रम की जानकारी नही हो पाती है।

» दूर शिक्षकों को अधिकांशतः परामर्श के तरीकों एवं दूर अध्येताओं की वास्तविक समस्याओं की जानकारी नही हो पाती है। दूर अध्यापकों के पास आवश्यक कौशलों का आभाव रहता है।

» दूर अध्यापक मुख्यालय से आवश्यक तकनीकी तथा प्रशासनिक सहयोग से वंचित रहते है।

» वेट्स 1998 यूरो 1994 टेलर पाकर 2001 के अनुसार दूर शिक्षकों पर अत्यधिक संचालित पाठ्यक्रमों का भार रहता है। और इससे वे अपने परिश्रमिक के बारे में ही सोचते है।

» दूर शिक्षा की प्रकृति से दूर शिक्षक परिचित नही होते है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. दूर शिक्षा के अध्येताओं को क्या समस्या होती है?

....

2. दूर शिक्षक किन समस्याओं से जूझते हैं?

....

14.4 मुक्त एवं दूर शिक्षा में प्रबन्धन से सम्बन्धित समस्या

मुक्त एवं दूर शिक्षा का संगठन आम औपचारिक शिक्षा व्यवस्था से अलग प्रकार का होता है। इसका कार्यक्षेत्र विस्तृत एवं व्यापक होता है। इसका सम्पूर्ण संगठन एवं प्रशासन विकेन्द्रीकृत होता है। मुख्यालय अपने सम्पूर्ण पाठ्यक्रमों के संचालन हेतु अपने क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्रों पर निर्भर रहते है। मुक्त विश्वविद्यालय एवं मुक्त विद्यालय अपने सम्पूर्ण क्षेत्रों को क्षेत्रीय केन्द्रों में बांटकर उनके अधिकार क्षेत्र में अनेक अध्ययन

केन्द्रों को रख देते है। ये अध्ययन केन्द्र इन क्षेत्रीय केन्द्रों की देख–रेख मे कार्य करते है और इनसे ये सूचनाओं का आदान–प्रदान करते है परन्तु सम्बन्धों के इतने बड़े जाल के बन जाने से ढीलापन आ जाता है।

» अधिकांश सूचनायें समय से प्रेषित नही होती है।

» सूचनाओं का स्पष्टीकरण भी बाधित हो जाता है।

» अध्ययन केन्द्रों एवं क्षेत्रीय केन्द्रों के क्रियाकलापों का पर्यवेक्षण नही हो पाता है।

» पाठ्यक्रमों का संचालन तो नोटिस या सूचना से प्रारम्भ हो जाता है परन्तु स्व शिक्षण सामाग्री का निर्माण व प्रेषण सही तरीके से नही हो पाता है।

» अत्याधिक प्रकार के पाठ्यक्रम चलाये जाने से उनकी गुणात्मकता एवं उपयोगिता को बरकरार रखना कठिन हो जाता है।

» क्षेत्रीय स्तर पर प्रबन्धन पूर्णतया अशंकालिक विभाग द्वारा संचालित होता है अतः पूर्ण रूचि एवं संलग्नता का अभाव पाया जाता है।

» क्षेत्रीय केन्द्रों एवं अध्ययन केन्द्रों की समस्याओं का निस्तारण समय पर नही हो पाता है।

» छात्र सहायता सेवाओं के प्रबन्धन में भी समस्या आती है।

» अधिकांशतः प्रबन्धन में स्थानीय समस्याओं की उपेक्षा हो जाती है।

» दूर शिक्षा में केन्द्रीय प्रबन्धन में क्षेत्रीय एवं अध्ययन केन्द्रों की सहभागिता नही होती है।

» परामर्श कक्षाओं, कार्यशालाओं का संचालन, परीक्षा संचालन जैस क्रियाकलाप भी मुख्यालय द्वारा पर्यवेक्षित नही किये जाते इससे गुणात्मकता को बनाये रखना कठिन होता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

3. क्षेत्रीय स्तर पर दूर शिक्षण संस्थानों के क्रियाकलापों को कौन संचालित करता है?

....

4. दूर शिक्षण संस्थानों का प्रशासन कैसा होता है?

....

5. दूर शिक्षण संस्थानों में पर्यवेक्षण क्यों कठिन होता है?

....

6. अध्ययन केन्द्र की देख–रेख कौन करता है।

....

14.5 दूर शिक्षा के प्रति उचित दृष्टिकोण का अभाव :–

मुक्त एवं दूर शिक्षा के प्रति एक सबसे बड़ी समस्या इसके प्रति उचित समझ की कमी है। भारत की अधिकांश जनसंख्या गांवों में बसती है जहां पर औपचारिक शिक्षा के प्रति भी जागरूकता की पर्याप्त कमी पायी जाती है फिर मुक्त एवं दूर शिक्षा के प्रति समझ की कल्पना और भी कठिन हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सच यही है कि लोग औपचारिक व नियमित शिक्षा को अधिक महत्व देते है। अत्याधिक जागरूक लोग ही मुक्त एवं दूर शिक्षा को चुनते है जिनकों यह समझ आता है कि मुक्त एवं दूर शिक्षा से प्राप्त शिक्षा का नियमित शिक्षा के बराबर ही महत्व है।

आज भी यह सत्य है कि मुक्त एवं दूरस्य शिक्षा का प्रचार प्रसार हो रहा है परन्तु इसके प्रति विकल्प जैसा दृष्टिकोण इसकी लोकप्रियता के मध्य रोड़ा है। अत्यधिक प्रचार प्रसार के बाद भी यह अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक लोकप्रिय नही हो पा रही है।

14.5.1 पृथकता की समस्या

दूरस्य शिक्षा में अध्येता को शिक्षा विद्यालय से दूर रहकर अपने घर पर ही दी जाती है। और अध्येता अपनी रूचि के पाठ्यक्रम चयन कर स्वगति से अध्ययन करने हेतु स्वतंत्र होता है। इसके अतिरिक्त अपनी घरेलू जिम्मेदारी के साथ सामाजिक प्रतिबद्धतायें होती है। अतः वह अकेलेपन को झेलने को मजबूर होते है। पृथकता की समस्या दो प्रकार की होती है :–

1. **अपने अन्य सहपाठियों से पृथकता**– दूर अध्येता अपने नियमित कक्षाओं के अभाव के कारण अपने सहपाठियों से दूर रहते है इससे उसे अभिप्रेरण, प्रतियोगिता अपने सहपाठियों से सहयोग नही मिल पाता। मिलजुलकर सीखने के लाभ से भी वे वंचित रह जाते है और उनकी अपनी शैक्षिक समस्याओं को लेकर अकेले पड़ जाते है।

2. **अध्यापकों से पृथकता** – दूर शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता अध्यापक एवं अध्येता के मध्य दूरी है। नियमित शिक्षा का यह घनात्मक पक्ष है जबकि मुक्त एवं दूर शिक्षा में इस कमी को दूर करने हेतु परामर्श कक्षाओं का आयोजन एवं दत्त कार्य प्रदान किये जाते है, जिससे कि अल्प काल के लिए ही अध्येता एवं अध्यापक के मध्य द्विमार्गी सम्प्रेषण हो सकें। इसके अतिरिक्त यह भी प्रयास किया जाता है कि स्वशिक्षण सामाग्री की संरचना सुस्पष्ट, विचारपूर्ण तथा उद्देश्यपरक हो। शिक्षक दत्त कार्यों एवं परियोजना कार्य में उपयुक्त टिप्पणी देकर द्विमार्गी सम्प्रेषण को जन्म देता है। शिक्षा का एक बहुत बड़ा उद्देश्य व्यक्तित्व का सम्पूर्ण निर्माण है जो कि बिना अध्यापक के कठिन होता है।

- » अध्यापक से दूरी अध्येता की नियमित समस्याओं को भयावह बना देती है।
- » अध्यापक से दूर रहने से अध्येता अपने अध्ययन की समस्याओं को सुलझाने में असमर्थता का अनुभव करता है।
- » अध्येता को तत्काल प्रतिपुष्टि व प्रेरणा नही मिल पाती है।

14.5.2 स्वशिक्षण सामाग्री के गुणात्मकता की समस्या

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था पूर्णतया स्व शिक्षण सामाग्री के उत्पादकता एवं गुणात्मकता पर निर्भर करती है। स्व शिक्षण सामाग्री ही मुक्त एवं दूर शिक्षा का जीवंत पक्ष है। यह दूर शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के लिए सहयोग के रूप में प्रदान की जाती है। यह व्यवस्यात्मक एवं बोधगम्य होती है तथा सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु को अपने मे समेटे रहती है। परन्तु अधिकांशतः अध्ययनों से यह निकल कर आया है कि स्वशिक्षण समाग्री सम्पूर्ण मानकों को पूरा नही करती है यह भी अध्ययन के परिणाम रहे कि अधिकतर स्वशिक्षण सामाग्री को भाषा क्लिष्ट हो जाती है या स्थानीय आवश्यकता को देखकर भाषा माध्यम नही चुना गया। इसके भाषा में अनुवाद करने पर विषय सामाग्री की बोधगम्यता, सरसता एवं रोचकता समाप्त हो गयी।

- » इसके अतिरिक्त अधिकाशतः स्वशिक्षण सामाग्री दूर अध्येता को समय पर नही मिलती है।
- » स्वशिक्षण सामाग्री कभी–कभी तैयार भी नही रहती है और पाठ्यक्र को संचालित करने का फैसला ले लिया जाता है और दूर अध्येता दूरे सत्र पाठ्यवस्तु का अभाव झेलते रहते है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

7. स्वशिक्षण सामाग्री नीरस कब हो जाती है?

....

8. अध्यापक से दूरी से अध्येता को क्या समस्या होती है?

....

9. पाठ्यक्रमों की गुणात्मकता कब समाप्त हो जाती है?

....

14.6 छात्र सहयोग सेवाओं से सम्बन्धित समस्यायें

मुक्त एवं दूर शिक्षा व्यवस्था अध्येताओं को अनेक सहयोग सेवायें प्रदान करती है जिसमें कि सम्पर्क कार्यक्रमों का आयोजन सूचना सेवायें इत्यादि है। परन्तु अधिकांशतः यह देखा जाता है कि सम्पर्क कार्यक्रमों के आयोजन मे पूर्ण गुणात्मकता एवं उपयोगिता प्रदर्शित नही हो पाती है। सम्पर्क कार्यक्रमों के आयोजन के लिए अध येताओं की सुविधा एवं ध्यान केन्द्रित किया जाता है परन्तु दूर अध्यापकों की सुविधायें उपेक्षित है और दोनों की सुविधा को देखकर सम्पर्क कार्यक्रमों का अयोजन एक दुरूह कार्य बन जाता है।

» सम्पर्क कार्यक्रम अधिकांशतः कक्षा शिक्षण का स्वरूप ले लेते है। क्योंकि अध यापक एव अध्येता दोनों ही सम्पर्क कार्यक्रमों के स्वरूप से अनभिज्ञ रह जाते हैं।

» सम्पर्क कार्यक्रम के लिए दूर अध्येता पहले से तैयार होकर समस्या लेकर नही आते हैं वे निर्धारित अवधि में ही सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु को केवल अध्यापक से शिक्षण कर देने की आशा करते है।

» दूर अध्यापक को दूर अध्येता की इस प्रवृत्ति से दबाव में आकर सम्पूर्ण विषय सामाग्री का शिक्षण करना पड़ता है।

» दूर अध्यापकों मे प्रायः सम्पर्क कक्षाओं के लिए उदासीनता प्रदर्शित होती है क्योंकि नियमित सम्पर्क न होने के कारण दूर अध्येताओं से नियमित विद्यार्थियों की तरह लगाव नहीं हो पाता है।

» अधिकांशतः सम्पर्क कक्षाओं के आयोजन में पूर्व स्वशिक्षण सामाग्री प्रेषित नही की जाती है। स्वशिक्षण सामाग्री के अभाव में अध्यापक एवं अध्येता दोनों ही सम्पर्क कक्षाओं के उद्देश्यों को पूरा नही कर पाते हैं।

» दूर अध्येता सम्पर्क कक्षाओं का पूरा लाभ लेने मे उदासिनता प्रदर्शित करते है जिससे कि इसका प्रभाव उनके दत्त कार्य परियोजना कार्य एवं अन्य व्यावहारिक एवं प्रायोगिक कार्यों में परिलक्षित होता है।

14.6.1 जनसंचार माध्यमों की सुविधा से सम्बन्धित समस्यायें

सम्पूर्ण दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था की रीढ़ जनसंचार माध्यम एवं सूचना प्रौद्योगिकी है। इसकी सबसे बड़ी दुविधा यह है कि भारत की अधिकांश जनसंख्या अभी सभी संचार माध्यमों के उचित प्रयोग से अनभिज्ञ है। ग्रामीण क्षेत्रों में टी0वी0, कम्प्यूटर जैसे

माध्यमों की भी कमी है। और अधिकतर अध्येता कम्प्यूटर एवं इण्टरनेट का उपयोग करना नही जानते है। इसीलिए वे जनसंचार माध्यमों से उचित रूप में लभान्वित नही होते है। जनसंचार माध्यमों के प्रयोग की प्रवृत्ति का अभाव भी इसका एक प्रमुख कारण है।

14.6.2 पूर्णकालिक संकाय की नियुक्ति न होने से समस्या

दूर शिक्षा व्यवस्था का विकेन्द्रीकृत संगठन पूर्णतया दूर दराज में स्थित क्षेत्रीय केन्द्रों व अध्ययन केन्द्रो पर ही निर्भर है। परन्तु इन स्थानों में अधिकांशतः पूणकालिक संकायों की नियुक्ति नही की गयी है। अध्ययन केन्द्रों को अत्याधिक कार्य दबाव को झेलना पड़ता है। अधिकांश शिक्षक, तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी अंशकालिक है जबकि अध्ययन केन्द्रों पर कागजी कार्य सूचना प्रेषण, सम्पर्क कार्यक्रम, परीक्षा संचालन दत्तकार्यों को जंचवाने, कार्यशालाओं के आयोजन आदि का गुरूतर दायित्व रहता है। जिसके कारण काफी कम मानदेय पर काफी अधिक श्रम करना पड़ता है इसका एक कारण यह है कि बड़े केन्द्रों पर निर्धारित मानक से अधिक मानव श्रम नही रखा जाता है। बड़े अध्ययन केन्द्र हमेशा दबाव झेलते है और इससे अन्य सभी सम्बन्धित कार्यों की गुणावत्ता प्रभावित होती है।

14.7 सारांश

मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनेक समस्यायें है और इन समस्याओं पर ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है जिससे कि इसकी संख्यात्मक वृद्धि से गुणात्मकता भी बढ़े। क्योंकि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा भविष्य की शिक्षा व्यवस्था है।

14.8 अभ्यास के प्रश्न

» मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा की कौन कौन सी समस्यायें है इस पर विस्तार से चर्चा कीजियें।

14.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. अध्यापक से दूरी, मुख्यालय से दूरी, समय से सूचना न मिलना।
2. दूर शिक्षा के विषय में अपरिपक्व ज्ञान, अत्याधिक कार्य भार, दूर अध्येताओं की अनदेखी समस्यायें, मुख्यालय से दूरी।
3. क्षेत्रीय निदेशक
4. विकेन्द्रीकृत

5. मुख्यालय से अत्याधिक दूरी, अत्याधिक विस्तार एवं व्यापकता।
6. केन्द्र समन्वयक।
7. अनुवाद करने व भाषा की क्लिष्टता पर।
8. तत्काल समस्या समाधान नही हो पाती, प्रतिपुष्टि का अभाव, प्रेरणा का अभाव
9. उपयोगिता न होने पर, अत्याधिक पाठ्यक्रम एक साथ संचालित करने पर।

10.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन

शर्मा आर0 ए0 (1996) : दूरवर्ती शिक्षा, मेरठ, सूर्या पब्लिकेशन,

Garg & others (2006): Open and Distance Education in Global Enviroment, New Delhi : Viva Books,

Keegan D. (1990) : Foundation of Distance Education, London : Rotledge,

इकाई–15 दूर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 शिक्षा में मूल्यांकन

1.4 शैक्षिक कार्यक्रम में मूल्यांकन की भूमिका

1.5 दूर शिक्षा में मूल्यांकन कार्यक्रम

1.6 दूर शिक्षा में परीक्षणों के प्रकार

1.7 निबन्धत्म एवं वस्तुनिष्ट परीक्षण

1.8 साराशं

1.9 अभ्यास कार्य

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

शैक्षिक प्रक्रिया में मूल्यांकन का विशेष महत्व है। मूल्यांकन एक शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसमें योजना या कार्यप्रणाली की प्रभावशीलता को जानने का प्रमुख साधन मूल्यांकन ही होता है। शिक्षा को मानवीय कौशलों अभिप्रेरणा, ज्ञान एवं इसी तरह के अन्य अनेक विकास के रूप में मानव हित में किया गया निवेश माना जाता है। दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा में एक नवाचार है, और इसीलिये दूरस्थ शिक्षा में भी मूल्यांकन प्रदत्त कार्य, प्रयोजना, प्रयोगशाला आधारित कार्य तत्काल जॉच प्रस्तुतीकरण एवं प्रदर्शन, सत्रांत परीक्षा आदि पर आधारित विद्यार्थी उपलब्धि का सतत निर्माणात्मक एवं सत्रान्त संलित मूल्याकन से सम्बन्धित होता है। इस इकाई में हम दूर शिक्षा में मूल्यांकन के विषय में विस्तार से पढ़ेंगे।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात् आप इस योग्य हो जायेंगे कि–

- दूर शिक्षा में मूल्यांकन तथा दूर शिक्षा में मूल्यांकन की अवधारणा को समझ सकेंगे।

- मूल्यांकन की भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे।
- मूल्यांकन की प्रविधियों को वर्णित कर सकेंगे।

15.3 शिक्षा में मूल्यांकन

प्राचीन काल में शैक्षिक मूल्यांकन छात्र निष्पत्ति की जॉच तक ही सीमित था। अब शिक्षा में मूल्यांकन की आवश्यकता बदल चुकी है। औपचारिक शिक्षा में परीक्षाओं का प्रयोग का सबसे प्राचीन प्रमाण 2000 ईसा पूर्व चीन में मिलता है। भारत में प्रचलित वर्तमान परीक्षा प्रणाली ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली की देन है जो लार्ड मैकाले ने सन् 1835 में प्रारम्भ की थी। वास्तव में शैक्षिक मूल्यांकन एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा अधिगम परिस्थितियों तथा सीखने के अनुभवों के लिये प्रयुक्त की जाने वाली सभी विधियों एवं प्रविधियों की उपादेयता की जॉच की जाती है तथा छात्र निष्पत्तियों के आधार पर यह पता लागया जाता है कि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो सकी है।

जेम्स एम0ली0 के अनुसार

"मूल्यांकन विद्यालय कक्षा तथा स्वयं के द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के सम्बंध में छात्रों की प्रगति की जॉच है। मूल्यांकन का प्रमुख प्रयोजन छात्रों को सीखने की प्रक्रिया को अग्रसर एवं निर्देशित करना है। इस प्रकार मूल्यांकन नकारात्मक नहीं अपितु एक सकारात्मक प्रक्रिया है।

शैक्षिक मूल्यांकन के अन्तर्गत शिक्षक यह निश्चित करता है कि उसकी शिक्षण व्यवस्था तथा शिक्षण अधिगम को आगे बढ़ाने की क्रियायें कितनी सफल रही है। शैक्षिक मूल्यांकन के तीन प्रमुख कार्य होते हैं–

- शैक्षिक कार्यक्रम या अधिगम प्रणाली का मूल्यांकन।
- अधिगम या निष्पति का मापन करना।
- अधिगम उद्देश्यों के साथ व्यवस्था करना।

मापन, मूल्यांकन एवं परीक्षण

बहुधा हम यह देखते है कि इन तीनों शब्दों का प्रयोग समानार्थी होते हैं। परन्तु इन तीनों में मूलभूत अन्तर है जैसे कि– मापन के अन्तर्गत व्यक्तियों या वस्तुओं में उपस्थित किसी गुण तथा विशेषता का वर्णन करना निहित होता हे। गुण या विशेषता गुणात्मक एवं मात्रात्मक हो सकती है। मापन करने में तीन बातें निहित होती है–

1. व्यक्तियों वस्तुओं या अन्य का समूह में होना।
2. अंको (शब्दों,अक्षरो, प्रतीकों) के किसी समूह का होना।

3. अंक (शब्द अथवा अक्षर) प्रदान करने के लिये किन्हीं नियमों का होना।

मापन मूल्यांकन प्रक्रिया का ही एक अंग होता है। मूल्यांकन मापन की अपेक्षा एक व्यापक पद है, किन्तु मापन मूल्यांकन प्रक्रिया में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त मापन एक परिमाणात्मक प्रक्रिया है, जबकि मूल्यांकन गुणात्मक प्रक्रिया है। परीक्षण मापन का एक साधन होता है परीक्षण अनेक प्रकार के होते हैं, जिनके द्वारा किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के किसी विशेषता का मापन किया जा सकता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. मूल्यांकन की प्रचीन पद्धति कैसी थी ?

....

2. भारत में वर्तमान परीक्षा प्रणाली किस की देन है ?

....

3. मूल्यांकन से आप क्या समझतें है ?

....

15.4 शैक्षिक कार्यक्रमों में मूल्यांकन की भूमिका

शिक्षा में मूल्यांकन की परम्परा अति प्राचीन है उपर आप पढ़ चुके हैं कि मूल्यांकन की भूमिका सीमित थी मूल्यांकन की नवीन अवधारणा ने शिक्षा के क्षेत्र में इसकी भूमिका को अधिक व्यापक बना दिया है, अब शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया को शिक्षा के तीन प्रमुख तत्वों में से एक तत्व या भाग माना जाता है। अब शैक्षिक प्रशासक एवं नीतिनिर्धारण भी मापन व मूल्यांकन के परिणामों का उपयोग शैक्षिक प्रशासन की व्यवस्था तथा नीति निर्धारण में करते हैं। उचित शैक्षिक निर्णय लेने के लिये मापन एवं मूल्यांकन का प्रयोग न केवल परम्परागत शिक्षा प्रणाली में वरन् मुक्त अधिगम तथा दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में भी अत्यन्त आवश्यक है। दूरस्थ शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन के महत्व एवं उपयोग का कारण है–

- मापन एवं मूल्याकन से दूरस्थ शिक्षा तथा मुक्त अधिगम प्रणाली के उद्देश्यों तथा छात्रों की आवश्यकतायें स्पष्ट होती हैं।
- मापन एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त मुद्रित

स्व–अनुदेशन सामग्री की प्रभावशीलता व उपादेयता का ज्ञान होता है।

- मापन एवं मूल्यांकन की प्रक्रिया से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त बहु संचार मांध्यमों की शैक्षिक प्रभावशीलता ज्ञात होती है।
- मापन तथा मूल्यांकन की प्रक्रिया से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में शिक्षार्थियों को दी जाने वाली परामर्श सेवा में सुधार आता है।
- मापन एवं मूल्यांकन की सहायता से पाठ लेखकों व सम्पादकों को स्व–अधिगम सामग्री की कमी ज्ञात हो जाती है, जिससे कि उनमे सुधार कर सकते हैं।
- मापन एवं मूल्यांकन प्रणाली के आधार पर दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों के पाठ्यक्रम, अनुदेशन विधियों, अधिगम सामग्री सहायक सामग्री आदि में सुधार किया जा सकता है।
- इनके आधार पर ही दूरस्थ शिक्षार्थियों को उचित एवं तर्कपूर्ण ढंग से शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन प्रदान किया जा सकता है।
- मापन एवं मूल्यांकन से दूरस्थ अध्येताओं की रूचियों, अभिरूचियों, कुशलताओं, योग्यताओं, दृष्टिकोणों एवं व्यवहार की जॉच का ज्ञान सम्भव है।

दूरस्थ शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन के उद्देश्य

दूरस्थ शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्यों को हम इन रूपों में देख सकते हैं–

- दूरस्थ अध्येताओं की वृद्धि एवं विकास में सहायता करना।
- दूरस्थ अध्येताओं द्वारा अर्जित उपलब्धियों ज्ञान बोध एवं कौशलों को जॉचना।
- दूर अध्येता की वृद्धि एवं विकास में आये अवरोधों को जानना ।
- दूर अध्येता की व्यक्तिगत भिन्नताओं की जानकारी देना।
- दूर अध्येता की कमियां जानकर स्व अधिगम को अभिप्रेरित करना।
- दूर अध्येता में प्रयुक्त स्व–अनुदेशन शिक्षण सामग्री की प्रभावशीलता को ज्ञात करना।
- दूर अध्येता में प्रयुक्त किये जा रहे पाठ्यक्रम में सुधार लाना।
- दूर अध्येताओं को उपयोगी अनुदेशन विधियों व अन्य सामग्री की उपादेयता को जॉच करना।

- दूर शिक्षा के शैक्षिक परामर्शदाताओं की प्रभावशीलता को जानना।
- दूर शिक्षा के शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्देशन के लिय आधार तैयार करना।
- दूर शिक्षा हेतु प्रवेशार्थियों को प्रवेश हेतु चयन करना।
- दूर अध्येता को उपलब्धि के आधार पर वर्गीकृत करना।
- दूर अध्येता को कक्षा उन्नति का व रोजगार हेतु योग्यता विकसित करना।
- शैक्षिक मानकों का निर्धारण।

मापन एवं मूल्यांकन के कार्य

रार्बट मेगर के अनुसार अधिगम प्रणाली या शैक्षिक कार्यक्रम के मूल्यांकन के अन्तर्गत शिक्षक को नियोजन, शिक्षण विधियों, प्रविधियों, अनुदेशन तथा अन्य शिक्षण सामग्री की उपयोगिता का मूल्यांकन करना होता है, जिससे उनमें सुधार तथा विकास के लिये शिक्षक को प्रोत्साहन मिलता है। डब्लू0जी0फिडले नामक विद्वान ने 1963 में शिक्षा के क्षेत्र में मापन के कार्यों को निम्नांकित तीन अन्तः सम्बंधित भागों में बांटा है–

- Ø शैक्षिक कार्य
- Ø प्रशाासनिक कार्य
- Ø निदेशन कार्य

1. मापन मूल्यांकन के शैक्षिक कार्य

शिक्षा में मूल्यांकन की परम्परा अति प्राचीन है। अब मूल्यांकन की नवीन अवधारणा ने शिक्षा के क्षेत्र में इसकी भूमिका को अधिक व्यापक एवं महत्वपूर्ण बना दिया है। मूल्यांकन की प्रक्रिया द्वारा दूर अध्येताओं को प्रतिपुष्टि, अभिप्रेरण, अति–अधिगम कराने व उन्नति प्रदान करने हेतु की जाती है। शिक्षा के तीन भाग शैक्षिक उद्देश्य, अधिगम अनुभव एवं मूल्यांकन प्रक्रिया। प्रत्येक तत्व अन्य दो तत्वों के साथ लाभार्थी तथा लाभकारी के रूपों में दूहरी भूमिका को निर्वहन करता है। किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम की प्रभावशीलता इस बात पर निर्भर करती है कि इसके तीनों तत्वों के मध्य दुहरी भूमिका कितने प्रभावशाली ढंग से सम्पन्न होती है।

2. मापन एवं मूल्यांकन के प्रशासनिक कार्य

इसके अन्तर्गत गुणवत्ता नियंत्रण करना, अनुसंधान करना, वर्गीकरण व व्यवस्थापना करना, चयन करना, प्रमाणन करना इत्यादि कार्य आते हैं। सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता को नियंत्रित करने का कार्य मापन एवं मूल्यांकन के द्वारा होता हैं। विभिन्न प्रकार के अनुसंधानों में उद्देश्यों की पूर्ति हेतु मापन एवं मूल्यांकन का

सहारा लिया जाता है। मापन के द्वारा ही अध्येताओं को योग्यता के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रमों के चयन व अध्ययन का प्रमाणयन भी मूल्यांकन से ही सम्भव है।

3. मापन एवं मूल्यांकन के निर्देशन कार्य

मापन एवं मूल्यांकन व्यक्ति विशेष की रूचियों अभिवृत्तियों उपलब्धि दृष्टिकोण तथा समस्याओं के आधार पर अन्य समूह से अलग करता है। यह निदान चयन तथा श्रेणी करण की प्रक्रिया हेतु प्रयुक्त होता है। इसके आधार पर ही अन्ततः निर्देशन प्रदान किया जाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

4. मापन एवं मूल्यांकन में क्या अन्तर है?

....

5. मापन एवं मूल्यांकन के कोई उद्देश्य बताइये?

....

6. मापन एवं मूल्यांकन के शैक्षिक उद्देश्य क्या है?

....

15.5 दूर शिक्षा में मूल्यांकन कार्यक्रम

ऊपर आप मापन मूल्यांकन के उद्देश्य एवं प्रकारो को जान चुके है यह आप समझ गये होंगे कि शैक्षिक मूल्यांकन वस्तुतः शिक्षा की एक परम आवश्यक सतत एवं व्यापक प्रक्रिया है। सत्र की समाप्ति एवं आरम्भ मूल्यांकन से होता है। परम्परागत परीक्षाओं के द्वारा सामान्यतया ज्ञानात्मक उद्देश्यों का ही मापन किया जाता है। परन्तु वास्तव में यह ज्ञानात्मक भावात्मक एवं क्रियात्मक तीनो प्रकार के उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बंध में प्रदत्तों का संकलन करती है। इसके द्वारा शिक्षार्थियों को समय–समय पर उसकी प्रगति का ज्ञान दिया जाता है।

अतः दूरस्थ शिक्षा के किसी कार्यक्रम के लिये ऐसे मूल्यांकन कार्यक्रम का निर्माण करना अत्यन्त आवश्यक है जिसकी सहायता से शिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रगति

को समय–समय पर ठीक ढंग से ज्ञात किया जा सके एवं जिसके परिणामों को प्रतिपुष्टि के लिये सफलतापूर्वक प्रयुक्त किया जा सके। दूरस्थ शिक्षा संस्था के किसी भी अच्छे तथा व्यापक शैक्षिक मूल्यांकन कार्यक्रम के अन्तर्गत तीन बातें अवश्य सम्मिलित रहनी चाहिये–

1. सत्रांन्त मूल्यांकन
2. सतत् मूल्यांकन
3. प्रतिपुष्टि मूल्यांकन

1. सत्रांत मूल्यांकन

सत्रांत मूल्यांकन का वास्तव में सम्बंधित शैक्षिक कार्यक्रम/ पाठ्यक्रम में प्रदान किये जा रहे अनुदेशन के तात्कालिक उद्देश्यों के साथ–साथ शिक्षा के समग्र उद्देश्यों से भी सम्बंध रखता है। सत्रांत मूल्यांकन के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् है–

1. अनुदेशन तथा निर्देशन के लिये आवश्यक सूचनाये प्राप्त करना।
2. वाह्य मानदण्डों के सापेक्ष शिक्षार्थियों की उपलब्धि का मूल्यांकन करना।
3. शिक्षार्थियों के अगिधम करने के सतत् प्रयासों को प्रोत्साहन देना।
4. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों में अनुदेशन अधिगम के प्रयासों को प्रोत्साहित करना।

निःसन्देह सत्रांत मूल्यांकन एक अत्यन्त आवश्यक एवं महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं के द्वारा नियोजित किये जाने वाले किसी अच्छे सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम में निम्न विशेषतायें होनी चाहिये–

1. सत्रांत मूल्यांकन का कार्य सहभागिता के आधार पर किया जाना चाहिये। किसी भी अच्छे सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम में अध्यापकों व छात्रों तथा अभिभावकों का पूर्ण सहयोग तथा समर्थन होना चाहिये।
2. सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम को सुयोग्य व्यक्तियों की सहायता से तर्कसंगत आध ाार पर सुनियोजित ढंग से तैयार किया जाना चाहिये।
3. शैक्षिक कार्यक्रम के क्या उद्देश्य है तथा उनकी प्राप्ति का अभिनिर्धारण किस प्रकार से सम्भव हो सकता है इस बात पर समुचित ढंग से विचार करने के उपरान्त ही सत्रांत मूल्यांकन के कार्यक्रम की योजना बनानी चाहिये।
4. सत्रांत मूल्यांकन कार्यक्रम का नियोजन तथा निष्पादन शैक्षिक कार्यक्रम में सहभागी, प्रशिक्षित तथा अनुभवी व्यक्तियों की सहायता से कराना चाहिये।

5. सत्रांत मूल्यांकन में शिक्षार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों का शैक्षिक दृष्टि से उचित ढंग से उपयोग करना चाहिये। केवल परिक्षायें लेना, अंकों को प्राप्त करना, संचयी अभिलेख बनाना जैसे कार्य मूल्यांकन के लिये पर्याप्त नहीं है।

6. सत्रांत मूल्यांकन पूर्णरूपेण संतुलित होना चाहिये। सत्रांत मूल्यांकन न तो इतना अधिक विस्तृत होना चाहिये कि वह सत्र के अधिकांश समय तथा उपलब्ध संसाधनों को निगल जाये जिसकी वजह से अनुदेशन अधिगम के प्रमुख कार्य के लिये उचित मात्रा में समय तथा संसाधन उपलब्ध न हो सके और न ही इतना अधिक सीमित होना चाहिये कि उसके आयोजन का उद्‌देश्य ही नष्ट हो जाये।

सतत् मूल्यांकन

किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम का उद्‌देश्य अपने शिक्षार्थियों को यथासम्भव सर्वोत्तम परिस्थितियां उपलब्ध कराकर उनको सर्वोत्तम शैक्षिक प्रगति करने के लिये प्रोत्साहित करना होता हैं। अतः इसके लिये आवश्यक है कि समय–समय पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रगति का आंकलन होता रहे जिससे कार्यक्रम की सफलता तथा शिक्षार्थियों के अधिगम का ज्ञान होता रहे। इसके लिये सत्र के दौरान समय–समय पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक निष्पति का मापन व मूल्यांकन करना होता है। निःसन्देह अध यापकगण व परामर्शदातागण समय–समय पर मापन व मूल्याकन के विभिन्न उपकरणों का औपचारिक अथवा अनौपचारिक ढंग से प्रयोग करके अपने शिक्षार्थियों के द्वारा किये गये अधिगम का अभिनिर्धारण करते रहते हैं। अध्यापक व परामर्शदाता न केवल शिक्षार्थियों के व्यवहार का मात्रात्मक मापन करते हैं वरन् उसका गुणात्मक मापन भी करते हैं। निःसन्देह केवल मात्रात्मक मापन की सहायता से किये जा रहे मूल्यांकन को अपने–आप में परिपूर्ण तथा वैध अभिनिर्धारण करते रहते हैं। अध्यापक व परामर्शदाता न केवल शिक्षार्थियों के व्यवहार का मात्रात्मक मापन के लिये लिखित, प्रयोगात्मक व मौखिक परीक्षणों का उपयोग किया जाता है जबकि गुणात्मक मापन के लिये अवलोकन, स्वसूचना, साक्षात्कार, मापनी, प्रक्षेपण जैसी विभिन्न तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। आजकल कुछ संस्थाओं के द्वारा कम्पयूटर संजाल का प्रयोग करके दूरस्थ शिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रगति के अभिनिर्धारण को समय व स्थान की दृष्टि से सर्वव्यापी स्वरूप दिया जाने लगा है। दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त किये जाने वाली विभिन्न मापन तकनीके तथा उपकरण आगे सारणी में प्रस्तुत किये गये हैं।

दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण अथवा अनुदेशन कार्य को सरल, सुगम, व्यवस्थित तथा द्विमार्गी बनाने के लिये प्रायः नियत कार्य या अधिन्यासों का प्रावधान

किया जाता है। नियत कार्य या अधिन्यास वस्तुतः एक संक्षिप्त परीक्षण होता है, जिसे छात्र मनचाही जगह पर देते हैं एवं इसके उत्तरों को देते समय वे किसी भी प्रकार की अध्ययन सामग्री का उपयोग करने के लिये स्वतंत्र होते है। यही कारण है कि नियत कार्य को खुली पुस्तक परीक्षा का एक प्रकार भी कहा जा सकता है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि नियतकार्य कुछ प्रश्नों को यादृच्छिक समूह मात्र है अथवा यह 100 अंकों की अपेक्षा 20 या 25 का होता है। निःसन्देह नियत कार्य या अधिन्यास प्रायः अध यापक निर्मित परीक्षण होता है, जिसका मानकीकरण नहीं किया जाता है, फिर भी इसका निर्माण पूर्णरूपेण औपचारिक ढंग से किया जाता हैं। किसी अच्छे नियत कार्य या अधिन्यास निर्माण में अग्रांकित पदों का अनुसरण किया जाता है–

1. **नियत कार्य की योजना बनाना–**

1.पाठ्यवस्तु इकाइयों व उनके उद्देश्यो का निर्धारण करना–

मापन की विभिन्न तकनीकें तथा उपकरण

क्रम	तकनीक	उपकरण
1	परीक्षण करना	1. निबन्धात्मक प़रीक्षण 2. वस्तुनिष्ट परीक्षण 3. मौखिक परीक्षण 4. प्रयोगात्मक परीक्षण 5. मांग पर परीक्षण 6. आन लाइन परीक्षण
2	अवलोकन करना	1. मापनी 2. चेक लिस्ट 3. संचयी अभिलेख 4. एनेकडोटल आलेख 5. सहभागिता चार्ट
3	समाजमिति	1. सोशियोग्राम 2. समाजमिति गुणांक 3. समाजमिति तालिका

4	स्वसूचना देना	1. प्रश्नावली 2. अभिवृत्ति मापनी 3. अभिरूचि मापनी
5	प्रक्षेपण करना	1. मसिलक्ष्य प्रत्यक्षीकरण 2. चित्र व्याख्या 3. वाक्य पूर्ति
6	साक्षात्कार करना	1. संरचित साक्षात्कार 2. असंरचित साक्षात्कार

2. पाठ्यवस्तु इकाईयो व उनके उद्देश्यों को उचित भार देना।
3. विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की संख्या का निर्धारण करना।
4. प्रश्नों की रचना करने व प्रकृति के सम्बंध में अन्य आवश्यक निर्णय लेना।

2. नियत कार्य की रचना करना

क. प्रश्नों की वास्तविक रचना करना।

ख. प्रश्नों का सम्पादन करना।

ग. परीक्षार्थी के लिये निर्देश तैयार करना।

घ. नियत कार्य या अधिन्यास का सम्पादन करना।

3. प्रस्तावित अधिन्यास सम्पादन करना

क. परिसीमन में प्रश्नानुसार विश्लेषण करना।

ख. नियत कार्य या अधिन्यास सम्मिलित प्रश्नों की आलोचना करना।

ग. प्रश्नों की भाषा शैली या पाठ्यवस्तु में सुधार करना।

घ. निर्देशों की भाषा–शैली में सुधार करना।

अनुदेशक व अध्यापक अपने अनुदेशन शिक्षण कार्य के दौरान भी विभिन्न प्रकार की मापन तथा मूल्यांकन प्राविधियों का उपयोग करता है। सामान्यतः अध्यापक व अनुदेशकगण मौखिक प्रश्नों की सहायता से यह कार्य करते है। प्रश्नों की सहायता से ही परामर्शदाता शिक्षार्थियों के ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग, कौशल आदि की जानकारी प्राप्त करके अपने शिक्षण/परामर्श कार्य की सफलता का अनुमान लगाते हैं तथा तदनुसार अपनी शिक्षण परामर्श योजना में सुधार करते है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में

परामर्श सत्रों व सम्पर्क कार्यक्रमों में शैक्षिक परामर्शदाताओं को दिन–प्रतिदिन अनुदेशन के दौरान पूछे गये मौखिक प्रश्न ठीक ढंग से शिक्षार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करने चाहिये जिससे वांछित परिणाम प्राप्त हो सकें तथा अनुदेशन प्रक्रिया सहजता के साथ अगे बढ़ सके।

15.6 दूरस्थ शिक्षा में परीक्षणों के प्रकार

शिक्षार्थियों की शैक्षिक सम्प्राप्ति व अन्य योग्यताओं का मापन के करने के लिए प्रायः परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रयुक्त किये जाने वाले परीक्षाणों को कई आधार पर विभिन्न वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसे उपयोगिता के आधार पर परीक्षणों को निम्नांकित तीन भागों में बांटा जा सकता है–

1. अर्हता परीक्षण
2. नैदानिक परीक्षण
3. निदानात्मक परीक्षण

परीक्षणों को उनके निर्माण की विधि के आधार पर निम्नांकित दो भागों में बांआ जा सकता है–

1. अध्यायपक निर्मित परीक्षण
2. प्रमाणीकृत परीक्षण

परीक्षण में प्रयुक्त प्रश्नों व उनके उत्तरों के अंकन की प्रकृति के आधार पर परीक्षणों को निम्नलिखित तीन भागों में बांटा जा सकता है

1. निबन्धात्मक परीक्षण
2. लघु उत्तर परीक्षण
3. वस्तुनिष्ठ परीक्षण

परीक्षणों में प्रयुक्त प्रश्नों तथा उनके उत्तरों की अभिव्यक्ति के माध्यम के आधार पर परीक्षणों को

निम्न भागों में बांटा जा सकता है–

1. मौखिक परीक्षण
2. लिखित परीक्षण
3. प्रयोगात्मक परीक्षण

परीक्षण के विभिन्न प्रश्नों में समस्याओं के प्रस्तुतिकरण के माध्यम के आधार पर परीक्षणों का

निम्नलिखित दो भागों में बांटा जा सकता है :–

1. शाब्दिक परीक्षण
2. अशाब्दिक परीक्षण

परीक्षणों के ये विभिन्न प्रकार परस्पर एक दूसरे से सम्बन्धित व अति–आच्छादित रहते हैं एवं कोई भी एक परीक्षण इनमें से कई प्रकार संज्ञा की संज्ञा से सम्बोधित किया जा सकता है। इन विविध प्रकार के परीक्षणों की संक्षिप्त चर्चा आगे की जा रही है।

- **अर्हता परीक्षण**

अर्हता परीक्षण से तात्पर्य किसी कार्यक्रम/पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए न्यूनतम आवश्यक ज्ञान, बोध, कौशल तथा अनुप्रयोग आदि का मापन करने वाले परीक्षणों से है। क्योंकि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के अनेक पाठ्यक्रमों/कार्यक्रमों में प्रवेश के लिए औपचारिक शिक्षा प्रमाणपत्रों की अनिवार्यता नही होती है। इसलिए इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु न्यूनतम और शैक्षिक स्तर के सुनिश्चयन के लिए प्रवेश से पूर्व प्रवेशार्थियों से अर्हता परीक्षण उत्तीर्ण करने की अपेक्षा की जाती है। अर्हता परीक्षणों की प्रकृति एवं इसमें सम्मिलित प्रश्न मूलतः सामान्य सम्प्राप्ति परीक्षण के समान होते हैं।

सम्प्राप्ति परीक्षणों से तात्पर्य उन परीक्षणों से है जो छात्रों के ज्ञान, बोध, कौशल व अनुप्रयोग आदि क्षेत्रों में अर्जित योग्यता का मापन करते है। विभिन्न विषयों में छात्रों ने क्या सीखा है, इसका मापन करने के लिए प्रायः सम्प्राप्ति परीक्षणों का ही प्रयोग किया जाता है। अतः कहा जा सकताह है कि किसी निश्चित समयावधि में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के द्वारा किसी एक या अनेक विषयों में शिक्षार्थी के ज्ञान अवबोध व कौशल आदि में हुए परिवर्तन का मापन करने वाले उपकरणों को सम्प्राप्ति परीक्षण कहते हैं। सम्प्राप्ति परीक्षण प्रायः शिक्षण व अनुदेशन के उद्देश्यों पर आधारित होते हैं तथा इनके प्रयोग से इन उद्देश्यों की प्राप्ति के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त होती है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में सम्प्राति परीक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् हैं–

1. दूरस्थ शिक्षार्थियों के शैक्षिक स्तर को जानना।
2. दूरस्थ शिक्षार्थियों को अध्ययन के लिए प्रेरित करना।
3. दूरस्थ शिक्षण अधिगम व्यवस्था में सुधार लाना।
4. दूरस्थ शिक्षार्थियों को शैक्षिक मार्गदर्शन व परामर्श देने में सहायता करना।
5. दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के लिए शिक्षार्थियों का चयन करना।

6. दूरस्थ शिक्षार्थियों के वर्गीकरण व प्रोन्नति में सहायता करना।
7. दूरस्थ शिक्षा की अनुदेशन सामग्री व प्राविधियों का मूल्यांकन करना।
8. दूरस्थ शिक्षा संस्थाओं के स्तर का निमार्ण करना।

निदानात्मक परीक्षण

निदानात्मक परीक्षण वस्तुतः सम्प्राप्ति परीक्षणों का ही एक विशिष्ट रूप है। परन्तु निदानात्मक परीक्षण का उद्देश्य सम्प्राप्ति परीक्षण से अधिक व्यापक व विस्तृत होता है। सम्प्राप्ति परीक्षण किसी विशेष विषय में अथवा विषयों के समूह में शिक्षार्थियों के द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि का मापन करते हैं जबकि निदानात्मक परीक्षण उस अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल आदि की विशिष्टता तथा ज्ञान--प्राप्ति में आ रही बाधाओं को ज्ञात करने का प्रयास करते हैं। निदानात्मक परीक्षण से प्राप्त सूचनाओं के विस्तृत विश्लेषण से शिक्षार्थियों की कमजोरियों का पता चल जाता है जिसमें उनकी अधिगम प्रक्रिया में तथा अध्यापकों की शिक्षण विधि में परिवर्तन लाकर उनके लिए उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था की जा सकती है। अतः कहा जा सकता है कि निदानात्मक परीक्षण एक प्रकार के सम्प्राति परीक्षण ही है, परन्तु इनका उद्देश्य सम्प्राप्ति परीक्षण से भिन्न तथा अधिक व्यापक होता है। यह विषय--विशेष में शिक्षार्थियों की कठिनाई, कमियां या कमजोरियों को ज्ञात करता है जिसमें उन्हें दूर करने के लिए समुचित प्रयास किये जा सकें। निदानात्मक परीक्षणों के परिणाम प्रायः पूर्ण प्राप्तांक के रूप में न होकर पाठ्यवस्तु के विभिन्न पक्षों पर अंश प्राप्तांकों के रूप में होते हैं।

अध्यापक निर्मित परीक्षण

अध्यापक निर्मित परीक्षण वे परीक्षण हैं जिन्हें अध्यापक/शैक्षिक परामर्शदाता स्थानीय आवश्यकता व उद्देश्यों की पूर्ति हेतु बना लेते हैं इन परीक्षणों की रचना अत्यन्त सरल व सहज ढंग से की जाती है। अध्यापकगण प्रायः अपने अनुभवों, स्थानीय परिस्थितियों तथा छात्रों के उपलब्धि स्तर को ध्यान में रखकर इनका निर्माण कर लेते हैं। अतः अध्यापक निर्मित परीक्षण प्रायः प्रश्नों का एक ऐसा समूह होता है जिसे अध यापकगण स्वविवेक से शिक्षार्थियों की सम्प्राप्ति का मापन करने के तात्कालिक उद्देश्य से तैयार करते है।

प्रमापीकृत परीक्षण

प्रमापीकृत परीक्षण वे परीक्षण होते हैं जिनमें सम्मिलित पदों या प्रश्नों का चयन उनकी मनोमितीय विशेषताओं से सम्बन्धित अनुभाविक प्रमाणों के आधार पर किया गया हो, जिनके प्रशासन व अंकन की विधि स्पष्ट व पूर्ण निश्चित हो, जिनकी विश्वसनीयता व वैधता सुनिश्चित की गई हो तथा जिनके प्राप्तांकों की व्याख्या के लिए मानक

विकसित किए गए हों। ये परीक्षण व्यापक जनसंख्या की उपलब्धि का सटीक ढंग से मापन करने तथा उसकी व्याख्या करने के लिए सफलतापूर्वक उपयोग में लाये जा सकते हैं।

निबन्धात्मक परीक्षण

निबन्धात्मक परीक्षण से अभिप्राय ऐसे परीक्षण से है जिसमें परीक्षार्थी प्रश्न का दीर्घ उत्तर निबन्धरूप में प्रस्तुत करता है। इन परीक्षाणों से एक ओर जहां परीक्षार्थियों के बौद्धिक ज्ञान का पता चलता है, वहीं उनकी उच्च स्तरीय मानसिक योग्यताओं जैसे तर्क शक्ति, अभिव्यक्ति क्षमता, स्वतंत्र चिन्तन, आलोचनात्मक शक्ति, लेखन कला आदि का भी मूल्यांकन हो जाता है। निबन्धात्मक परीक्षण प्रायः अध्यापक निर्मित होते है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण

वस्तुनिष्ठ परीक्षण से अभिप्राय ऐसे परीक्षण से है जिनमें सम्मिलित प्रत्येक प्रश्न का एक एवं केवल एक ही सही उत्तर होता है। यदि परीक्षार्थी उस उत्तर को देता है तो उसे प्रश्न पर पूर्ण अंक मिलते हैं तथा यदि वह उस उत्तर को नहीं दे पाता है तो वह शून्य अंक प्राप्त करता है। स्पष्ट है कि वस्तुनिष्ठता से तात्पग्र अंकन की वस्तुनिष्ठता से है। वस्तुनिष्ठ प्रश्न प्रायः शैक्षिक उद्देश्यों पर आधारित होते हैं। इनकी सहायता से उच्च मानसिक योग्यताओं का मापन प्रायः कठिन होता हैं वैसे तो वस्तुनिष्ठ परीक्षण आध्यापक निर्मित भी हो सकते हैं तथा प्रमापी भी हो सकते हैं। परन्तु प्रायः वस्तुनिष्ठ परीक्षणों को प्रमापीकरण प्रक्रिया का अनुसरण करके तैयार किया जाता है।

स्पष्ट है कि परीक्षणों की सहायता से शिक्षार्थियों की विभिन्न योग्यताओं तथा गुणों आदि का मापन किया जाता है। शैक्षिक सन्दर्भ में परीक्षणों के द्वारा शिक्षार्थियों के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक व्यवहार के विभिन्न पक्षों का मापन करने को अधिक महत्व दिया जाता है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में अध्ययकेन्द्र पर कार्यरत परामर्शदातागण विभिन्न प्रकार के परीक्षणों का प्रयोग करके समय–समय पर शिक्षार्थियों की शैक्षिक प्रगति का मापन कर सकता है।

प्रश्न :–

7. प्रमापीकृत परीक्षण के गुण बताइये?

   ....

8. निबन्धात्मक परीक्षण किसे कहते है?

   ....

9. निदानात्मक परीक्षणों का क्या उपयोग होता है?

   ....

15.7 निबन्धात्मक एवं वस्तुनिष्ठ परीक्षण

निबन्धात्मक प्रश्नों के पक्ष में जो तर्क दिये जाते हैं, उनमें सबसे प्रमुख तर्क है कि निबन्धात्मक परीक्षण छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का सर्वोत्तम ढंग से मापन करते हैं। छात्रों को पहले से तैयार व रटे–रटायें उत्तर नहीं देने होते हैं, बल्कि उन्हें उत्तर देने के लिए अपने विषय का अच्छा ज्ञान व बोध होना चाहिए, जिससे वे विभिन्न तथ्यों तथा सिद्धान्तों को एक दूसरें से सम्बन्धित कर सकें तथा इन विचारो को लिखित अभिव्यक्ति आवश्कतानुसार करने में सफल हो सकें। इसके अतिरिक्त निबन्धात्मक परीक्षणों पर छात्रों के द्वारा दिये गये उत्तर उनकी विचार प्रक्रियाओं तथा अभिव्यक्ति की प्रकृति तथा गुणवत्ता का ज्ञान भी प्रदान करते हैं। आलोचनात्मक चिन्तन, सृजनशीलता अभिव्यक्ति क्षमता, ज्ञान का तार्किक संश्लेषण, मूल्यांकन क्षमता आदि अनेक योग्यताओं का मापन वस्तुतः निबन्धात्मक परीक्षण के द्वारा ही किया जाना सम्भव हो सकता है।

निबन्धात्मक प्रश्नों के प्रकार

1. **वर्णनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों छात्रों से किसी घटना, वस्तु, प्रक्रिया सिद्धान्त, परिभाषा सूत्र आदि का वर्णन करने के लिए कहा जाता है। सर्वाधिक सरल प्रकार के निबन्धात्मक प्रश्न होते हैं।

2. **व्याख्यात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों को किसी सम्बन्ध या कारण व प्रभाव की तार्किक व्याख्या करने के लिए कहा जाता है। छात्र र्तक देकर अपने द्वारा प्रस्तुत पक्ष को स्पष्ट करते हैं।

3. **विवेचनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में छात्रों द्वारा किसी स्थिति के पक्ष तथा विपक्ष मे तर्क देते हुए एक निष्कर्ष पर पहुंचा जाता है। शिक्षार्थीगण उस स्थिति के पक्षा तथा विपक्ष दोनों पर अपने विचार प्रस्तुत करने के उपरान्त पक्ष या विपक्ष में से किसी एक का **समर्थन करते हैं।**

4. **उदाहरणार्थ प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों से **अपेक्षा की जाती** है कि वे विभिन्न उदाहरणों तथा दृष्टांतों की सहायता से अपनी बात को अच्छी तरह से प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट करें।

5. **तुलनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किन्हीं दो प्रत्ययों वस्तुओं, विचारों, सिद्धान्तों आदि में समानता व असमानता तथा गुण व दोषों के आधार पर तुलना करनी होती है।

6. **आलोचनात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किसी विचार या पक्ष की आलोचना करनी होती है, जिससे उसकी शुद्धता, सत्यता, दृढ़ता

आदि का मूल्यांकन हो सकें।

7. **विश्लेषणात्मक प्रश्न** :– इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को किसी तथ्य के विभिन्न पक्षों को विश्लेषण द्वारा स्पष्ट करते हुए उन सभी का वर्णन करते हुए उनमें निहित परस्पर सम्बन्ध को स्पष्ट करना होता है।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण

वस्तुनिष्ठ परीक्षण का व्यापक प्रयोग बीसवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ, इसलिये इन्हें नवीन प्रकार की परीक्षा भी कहा जाता है। ये परीक्षण तकनीकी दृष्टि से निबन्धात्मक परीक्षण की अपेक्षा न केवल वस्तुनिष्ट होते हैं वरन् अधिक विश्वसनीय तथा वैध भी होते हैं। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न का एक निश्चित सही उत्तर होता है तथा परीक्षार्थी से उसी उत्तर की अपेक्षा की जाती है। अतः किसी वस्तुनिष्ठ प्रश्न पर किसी छात्र द्वारा दिया गया उत्तर या तो सही होता है अथवा गलत होता है। सही होने पर परीक्षार्थी को पूर्ण अंक प्राप्त होते हैं, जबकि गलत होने पर कोई अंक प्राप्त नहीं होता है। प्रश्नों के उत्तर की इस प्रवृत्ति की वजह से वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन करते समय परीक्षक को किसी प्रकार की स्वतंत्रता अथवा व्यक्तिगत निर्णय लेने की छूट नहीं होती है, चाहे कोई भी व्यक्ति ऐसे प्रश्नों का अंकन करे किसी परीक्षार्थी द्वारा प्राप्त अंक वही रहते हैं।

वस्तुनिष्ठ परीक्षण के लाभ

जैसा कि चर्चा की जा चुकी है, वस्तुनिष्ठ परीक्षण एक नवीन प्रकार के परीक्षण है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में किये जाने वाले शैक्षिक मापन व मूल्यांकन के क्षेत्र में इनका प्रयोग दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों के प्रमुख लाभ निम्नवत् लिखे जा सकते हैं–

1. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों में प्रश्नों की संख्या अधिक होती है, जिनके कारण इनमे सम्पूर्ण पाठ्यवस्तु तथा शिक्षण उद्देश्यों का उचित प्रतिनिधित्व होता है।
2. वस्तुनिष्ठ परीक्षणें में प्रश्न स्पष्ट होते हैं, जिससे परीक्षार्थी को उत्तर देने में तथा परीक्षक को अंकन करने में सुगमता होती है।
3. वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन अधिक सरलता व शीघ्रता के साथ तथा त्रुटि रहित ढंग से करना सम्भव होता है।
4. वस्तुनिष्ठ परीक्षण निबंधात्मक परीक्षणों की तुलना में अधिक विश्वसनीय तथा वैध होते हैं।
5. वस्तुनिष्ठ परीक्षण में सम्मिलित प्रश्नों की रचना भलीभांति ढंग से करने पर इनकी सहायता से उच्च मानसिक योग्यताओं का मापन भी किया जा

सकता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के प्रकार

वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्नों को दो मुख्य प्रकारों आपूर्ति प्रकार के प्रश्न तथा चयन प्रकार के प्रश्न में विभक्त किया जा सकता है। बहुविकल्पात्मक प्रश्न, सत्यासत्य प्रश्न, मिलान प्रश्न, तथा वर्गीकरण प्रश्न चयन प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। इन सभी प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों को कुछ दिये गये उत्तरों में सही उत्तर का चयन करना होता है। प्रत्यास्मरण प्रश्न तथा रिक्त स्थान पूर्ति को आपूर्ति प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न कहा जाता है। उनमें छात्रों को अपनी स्मृति के आधार पर कुछ लिखकर उत्तर देना होता है। वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के इन दोनो प्रकारों एवं इनके विभिन्न उप प्रकारों का संक्षिप्त वर्णन आगे प्रस्तुत किया गया है।

आपूर्ति प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में परीक्षार्थी को उत्तर की पूर्ति करनी होती है। इनमें या तो कोई प्रश्न सीधे–सीधे पूछा जाता है तथा विद्यार्थियों को इसका उत्तर अपने ज्ञान का स्मरण करके देना होता है अथवा कोई अपूर्ण वाक्य दिया जाता है तथा शिक्षार्थियों को अपने ज्ञान के आधार पर इस वाक्य को पूर्ण करना होता है। अतः पूर्ति प्रश्न के अन्तर्गत शिक्षार्थियों को प्रश्न का उत्तर स्वयं अपनी ओर से देना होता है। यदि शिक्षार्थियों को सम्बंधित तथ्य ज्ञात होता है तो वे प्रश्न का सही उत्तर दे पाते हैं अन्यथा वे प्रश्न का सही उत्तर देने में असमर्थ रहते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों में मुख्यतः शिक्षार्थियों की प्रत्यास्मरण करने की योग्यता का मापन होता है इसलिये आपूर्ति प्रश्नों को प्रत्यास्मरण प्रकार के वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी कहते हैं। प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर आपूर्ति प्रष्नों को दो भागों में सामान्य प्रत्यास्मरण प्रश्न तथा रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न में बांटा जा सकता है।

सरल प्रत्यास्मरण प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों से सीधे–सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। प्रश्न का स्वरूप इस प्रकार होता है, कि उनका उत्तर अत्यन्त संक्षिप्त तथा विशिष्ट होता है। शिक्षार्थियों को प्रश्नों के उत्तर के रूप में केवल एक शब्द, अंक, नाम अथवा वाक्यांश आदि ही लिखना होता है।

रिक्त स्थान पूर्ति प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों को अपूर्ण कथन अथवा वाक्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। शिक्षार्थियों को अपने ज्ञान के आधार पर इन वाक्यों की पूर्ति करनी होती है। रिक्त स्थान की पूर्ति करने के लिये साधारणतया एक शब्द, नाम, अंक अथवा वाक्यांश पर्याप्त

होता है।

आपूर्ति प्रश्नों की मुख्य विशेषतायें इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर अनुमान से देना सम्भव नहीं होता है। आपूर्ति प्रश्नों की रचना करते समय निम्न सावधानियां रखनी चाहिये।

1. प्रश्न ऐसे होने चाहिये, जिनका केवल एक ही सही उत्तर हो।
2. प्रश्नों तथा वाक्यों की भाषा सरल तथा स्पष्ट होनी चाहिये।
3. परीक्षण में आपूर्ति प्रश्नों की संख्या कुल प्रश्नों के लगभग 10 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये।
4. सामान्य प्रत्यास्मरण प्रकार के प्रत्येक प्रश्न में केवल एक ही तथ्य को पूछना चाहिये।
5. रिक्त स्थान पूर्ति के प्रत्येक प्रश्न में केवल एक ही रिक्तस्थान की पूति करायी जानी चाहिये।
6. सही उत्तर के लिये प्रश्न की भाषा अथवा व्याकरण से कोई संकेत नहीं मिलना चाहिये।

चयन प्रश्न

चयन प्रकार के प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के अनेक सम्भावित उत्तर दिये जाते हैं तथा शिक्षार्थियों से सही उत्तर का चयन करने के लिये कहा जाता है। इस प्रकार के प्रश्नों से शिक्षार्थियों की पहचान करने की योग्यता का मापन होता है इसलिये इन्हे अभिज्ञान प्रश्न अथवा पहचान प्रश्न भी कहते है। परन्तु इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थी अनुमान से भी प्रश्न का उत्तर दे सकता है। प्रश्नों की प्रकृति के आधार पर चयन प्रश्न को चार भागों सत्यासत्य प्रश्न, बहुविकल्पीय प्रश्न, मिलान प्रश्न तथा वर्गीकरण प्रश्न में बांटा जा सकता है।

सत्यासत्य प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में कुछ कथन दिये जाते हैं। इनमें से कुछ कथन सत्य होते हैं तथा कुछ कथन असत्य होते हैं। शिक्षार्थियों को यह देखना होता है कि कौन सा कथन सत्य है, तथा कौन सा असत्य है। इस प्रकार से शिक्षार्थी प्रत्येक कथन के संदर्भ में सत्य अथवा असत्य के रूप में दिये गये दो विकल्प में से किसी एक विकल्प का चयन करता है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में एक ही प्रश्न के दो से अधिक उत्तर दिये जाते हैं। इनमें

से केवल एक ही उत्तर सही होता है तथा शेष उत्तर गलत होते है। शिक्षार्थियों को दिये गये उत्तर में से ही उत्तर का चयन करना होता है। दिये गये उत्तरों की संख्या 3, 4 या 5 कुछ भी हो सकती है।

मिलान प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में प्रत्येक प्रश्न के दो भाग होते हैं, जिन्हे दो अलग–अलग स्तम्भों में लिखा जाता है। प्रश्न के एक भाग की विभिन्न प्रविष्टियों का प्रश्न के दूसरे भाग की प्रविष्टियों से मिलान करना होता है। परन्तु दूसरे स्तम्भ में लिखे भागों को पहले स्तम्भ में लिखे भागों के क्रम में नहीं लिखा जाता है। छात्रों को पहले स्तम्भ में लिखी प्रविष्टियों के लिये दूसरें स्तम्भ से ही प्रवृष्टि को छांटना होता है। प्रायः दूसरे स्तम्भ की प्रवृष्टियों की संख्या प्रथम स्तम्भ की प्रवृष्टियों से एक दो अधिक होती है।

वर्गीकरण प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्नों में शिक्षार्थियों के सम्मुख शबदों का एक ऐसा समुह प्रस्तुत किया जाता है, जिसमें एक को छोड़कर शेष सभी शब्द एक ही प्रकार की वस्तुओं अथवा क्रियाओं से सम्बन्धित होते है।कहने का अभिप्राय यह है कि दिये गये प्रत्येक शब्द समूह में केवल एक ही असंगत शब्द समूह होता है। शिक्षार्थियों को उस असंगत शब्द का चयन करके इंगित करना होता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

10. बहुविकल्पी प्रश्न क्या है।

....

11. आलोचनात्म प्रश्न किसे कहतें है।

....

12. विश्लेषणात्मक प्रश्न की विशेषता बताइये।

....

15.8 सारांश

प्रस्तुत इकाई में शैक्षिक सम्प्राप्ति का मापन करने के लिये प्रयुक्त किये जाने वाले परीक्षणों एवं परीक्षा से सम्बन्धित कुछ अन्य प्रत्ययों की चर्चा की जा रही है। यहॉ

यह इंगित करना उचित ही होगा कि दूरस्थ शिक्षा में मुक्त अधिगम के क्षेत्र में भी ठीक उन्ही उपकरणों का प्रयोग किया जाता है जो परम्परागत शिक्षा प्रणाली में प्रयुक्त किया जाता है। यह इकाई आपकों सरस लगी होगी।

15.9 अभ्यास कार्य

1. दूर शिक्षा में मूल्यांकन की आवश्यकता को स्पष्ट करते हुये उद्‌देश्यों एवं महत्व पर प्रकाश डालियें।

2. दूर शिक्षा में परीक्षण के विभिन्न प्रकारों पर संक्षेप में प्रकाश डालियें।

15.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. छात्र के निष्पत्ति की जॉच की जाती थी।
2. लार्ड मैकाले।
3. शैक्षिक कार्यक्रम अधिगम प्रणाली एवं निष्पत्ति की जॉच।
4. मापन गुण विशेषता का वर्णन है।
5. वृद्धि एवं विकास, कौशल की की जॉच, अधिगम का अभिप्रेरण, प्रभावशीलता को ज्ञात करना।
6. प्रतिपुष्टि, अभिप्रेरण, उन्नति प्रदान करने हेतु प्रक्रिया।
7. प्रश्नों का चयन मनोमितीय विशेषताओं से सम्बन्धित अनुभाविक प्रमाणों के आधार पर किया जाता है।
8. जिसके उत्तर दीर्घ हो।
9. अध्येता के अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि की विशिष्टता तथा ज्ञान–प्राप्ति में आ रही बाधाओं को ज्ञात करने हेतु निदानात्मक परीक्षण किया जाता है।
10. जिनके उत्तर को उनेक विकल्पों में से ढूढना हो।
11. जिसके उत्तर में किसी विचार या पक्ष की आलोचना करनी हो।
12. यह अध्येता के विश्लेषण क्षमता को उभारते है।

15.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Holmberq, B. (1986) : Growth and Structure of Distance Education, London: Groon Heln

Keeqan D.J. (1986) : The Foundation of distance education Distance Education, Croom Heln

इकाई 16 दूर शिक्षा में अनुसंधान

संरचना

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 अनुसंधान का अर्थ एवं विशेषतायें

16.4 शिक्षा अनुसंधान का अर्थ एवं विशेषतायें

16.5 दूर शिक्षा में अनुसंधान की आवश्यकता

16.6 दूर शिक्षा में अनुसंधान के विविध मुद्दे

16.7 दूर शिक्षा में अनुसंधान से लाभ

16.8 सारांश

16.9 अभ्यास के प्रश्न

16.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

आधुनिक युग में हमारे आर्थिक और सामाजिक जीवन में अनुसंधान का विशेष महतव है समाज और राष्ट्र की प्रगति को अनुसंधान के परिणामों द्वारा पहचाना जा रहा है। क्योंकि समाज और राष्ट्र की मूल समस्याओं का समाधान शोध कार्यों द्वारा किया जाता है। ठीक इसी प्रकार अनुसंधान का शिक्षा प्रक्रिया में भी बहुत महत्व है क्योंकि यह सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया के सभी पक्षों का स्वरुप बदल देता है। दूर शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुसंधान की आवश्यकता है जिसमें कि इसके विभिन्न पक्षों का गुणात्मक सुधार हो सकें। इस इकाई में हम दूर शिक्षा में अनुसंधान के विषय में विस्तार से पढ़ेगें।

16.2 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के पश्चात आप इस योग्य हो जायेगे कि–

» दूर शिक्षा में अनुसंधान की अवधारणा को स्पष्ट कर सकेगें।

» अनुसंधान की प्रकृति एवं विशेषताओं की विवेचना कर सकेगें।

» दूर शिक्षा में अनुसंधान की आवश्यकता का वर्णन कर सकेगें।

16.3 अनुसंधान का अर्थ एवं विशेषतायें

अनुसंधान किसी विषय क्षेत्र को सम्बन्धित समस्या का सर्वागीण विश्लेषण हैं। वास्तव में अनुसंधान वह प्रक्रिया है जिसमें प्रदत्तों के विश्लेषण के आधार पर किसी समस्या के विश्वसनीय समाधान को ज्ञात किया जाता है। आप जानते है कि यह एक व्यक्तिगत एवं सुनियोजित प्रक्रिया है जिसके द्वारा मानवीय ज्ञान में वृद्धि की जाती है और मानव जीवन को सुगम तथा भावी बनाया जाता है।

वास्तव में इसमें नवीन तथ्यों की खोज की जाती है तथा नवीन सत्यों का प्रविपादन किया जाता है। अनुसंधान में कार्यों द्वारा प्रचीन प्रत्ययों तथा तथ्यों का नवीन अर्थापन किया जाता है। अंग्रेजी में अनुसंधान को "रिसर्च" कहा जाता है व दो शब्द से मिलकर बना है **रि+सर्च** "रि" का अंग्रजी में अर्थ है बार–बार तथा "सर्च" शब्द का अर्थ है "खोजना"। अंग्रजी का यह शब्द अनुसंधान की प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है जिसमें शोधार्थी पूर्व किसी तथ्य को बार–बार देखता है जिसके सम्बन्ध में प्रदत्तों को एकत्रित्र करता है तथा उनके आधार पर उसके सम्बन्ध में निष्कर्ष निकालता है।

अनुसंधान की परिभाषायें

जार्ज जे मुले के अनुसार–

"शैक्षिक समस्याओं के समाधान के लिए व्यवस्थित रूप में बौद्धिक ढंग से वैज्ञानिक विधि के प्रयोग तथा अर्थापन को 'अनुसंधान' कहते हैं। इसके विपरीत यदि किसी व्यवस्थित अध्ययन के द्वारा शिक्षा में विकास किया जाय तो उसे शैक्षिक अनुसंधान कहते है।"

मेकग्रेथ तथा वाटसन ने 'अनुसंधान' की एक व्यापक परिभाषा दी है :–

"अनुसंधान एक प्रक्रिया है, जिसमें खोज प्रविधि का प्रयोग किया जाता है, जिसके निष्कर्षों की उपयोगिता हो, ज्ञान वृद्धि की जाय, प्रगति के लिए प्रोत्साहित करे, समाज के लिए सहायक हो तथा मनुष्य को अधिक प्रभावशाली बना सकें। समाज तथा मनुष्य अपनी समस्याओं को प्रभावशाली ढंग से हल कर सकें।"

जॉन0डब्लू0बैस्ट के अनुसार :–

"अनुसंधान अधिक औपचारिक, व्यवस्थित, तथा गहन प्रक्रिया है जिसमे वैज्ञानिक विधि विश्लेषण को प्रयुक्त किया जाता है। अनुसंधान में व्यवस्थित स्वरूप को सम्मिलित किया जाता है जिसके फलरूप निष्कर्ष निकाले जाते है और उनका औपचारिक आलेख तैयार किया जाता है।"

डब्लू0 एस0 मुनरो के अनुसार :–

"अनुसंधान की परिभाषा समस्या के अध्ययन विधि के रूप में की जा सकती

है जिसके समाधान आंशिक तथा पूर्ण रूप में तथ्यों एवं प्रदत्तों पर आधारित होते है। शोध कार्यों में तथ्य–कथनों, विचारों, ऐतिहासिक तथ्यों, आलेखों पर आधारित होते है, प्रदत्त प्रयोगों तथा परीक्षाओं की सहायता से एकत्रित किये जाते है। शैक्षिक अनुसंधानों का अन्तिम उद्देश्य यह होता है कि सिद्धान्तों की शैक्षिक क्षेत्र में क्या उपयोगिता है। प्रदत्तों का संकलन तथा व्यवसाि शोध कार्य नहीं है। अपितु एक प्राथमिक आवश्यकता है।''

'रेडमेन एवं मोरी के अनुसार :–

''नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए व्यवस्थित प्रयास ही अनुसंधान है।''

पी0एम0कुक0 के अनुसार :–

''अनुसंधान किसी समस्या के प्रति ईमानदारी, एवं व्यापक रूप में समझदारी के साथ की गई खोज है, जिसमें तथ्यों, सिद्धान्तों तथा अर्थों की जानकारी की जाती है। अनुसंधान की उपलब्धि तथा निष्कर्ष प्रामाणिक तथा पुष्टियोग्य होते हैं जिससे ज्ञान में वृद्धि होती है।''

अनुसंधान की सामान्य विशेषतायें

अनुसंधान की परिभाषाओं से अधोलिखित विशेषाताओं का उल्लेख किया जा सकता है :–

1. अनुसंधान की प्रक्रिया से नवीन ज्ञान की वृद्धि एवं विकास किया जाता है।
2. इसमें सामान्य नियमों तथा सिद्धान्तों के प्रतिपादन पर बल दिया जाता है।
3. अनुसंधान की प्रक्रिया वैज्ञानिक, व्यवस्थित तथा सुनियोजित होती है।
4. इसमें विश्वसनीय तथा वैध प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है।
5. यह तार्किक तथा वस्तुनिष्ठ प्रक्रिया है।
6. अनुसंधान की प्रक्रिया में प्रदत्तों के आधार पर परिकल्पनाओं की पुष्टि की जाती है।
7. इसमें व्यक्तिगत पक्षों, भावनाओं तथा विचारों (रूचियों) को महत्व नही दिया जाता है। इन प्रभावों के लिए सावधानी रखी जाती है।
8. शोध–कार्य में गुणात्मक तथा परिमाणात्मक प्रदत्तों की व्यवस्था की जाती है और उनका विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले जाते हैं।
9. शोध–कार्य में धैर्य रखना होता है तथा इसमें शीघ्रता नही की जा सकती है।
10. प्रत्येक शोध–कार्य की अपनी विधि तथा प्रविधियां होती है **जो** शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती है।

11. शोध–कार्य का आलेख सावधानीपूर्वक तैयार किया जाता है तथा शोध प्रबन्ध तैयार किया जाता है।

12. प्रत्येक शोध–कार्य से निष्कर्ष निकाले जाते है और सामान्यीकरण का प्रतिपादन किया जाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

1. अनुसंधान को अंग्रेजी में क्या कहते है इसका क्या अभिप्रेतार्य है?

   ....

2. अनुंसंधान की एक परिभाषा बताइये।

   ....

16.4 शिक्षा अनुसंधान का अर्थ एवं परिभाषा

शिक्षा का मुख्य लक्ष्य बालकों के व्यवहार मे विकास एवं परिवर्तन करना है अनुसंधान तथा शिक्षण क्रियाओं द्वारा इन लक्ष्यों की प्राप्ति की जाती है। शिक्षण की समस्याओं तथा बालकों के व्यवहार के विकास सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन करने वाली प्रक्रिया को शिक्षा अनुसंधान कहते है। इस प्रकार शिक्षा अनुसंधान के प्रमुख मानदण्ड अधोलिखित हैं :–

– शिक्षा के क्षेत्र में नवीन 'तथ्यों' की खोज नवीन सिद्धान्तों तथा सत्यों का प्रतिपादन करना अर्थात् नवीन ज्ञान की वृद्धि करना।

– नवीन ज्ञान की शिक्षा के क्षेत्र में व्यावहारिक उपयोगिता होनी, चाहिए, जिससे शिक्षण अभ्यास में सुधार तथा विकास करके प्रभावशाली बना सकें।

– शिक्षा अनुसंधान की समस्या क्षेत्र–शिक्षण या बालक विकास होना चाहिए।

– शिक्षा अनुसंधान की समस्या का स्वरूप इस प्रकार हो जिसका प्रत्यक्षीकरण किया जा सकें तभी उसकी उपयोगिता हो सकती है।

शिक्षा–अनुसंधान की अनेकों परिभाषायें उपलब्ध हैं परन्तु यहां पर कुछ महत्वपूर्ण तथा व्यापक परिभाषाओं का उल्लेख किया गया हैं–

एफ0एल0 मिटनी के अनुसार–

"शिक्षा–अनुसंधान का उद्देश्य शिक्षा की समस्याओं का समाधान करके उनमें योगदान करना है जिसमे वैज्ञानिक विधि, दार्शनिक विधि तथा चिन्तन का प्रयोग किया जाता है। वैज्ञानिक स्तर पर विशिष्ट अनुभवों का मूल्यांकन और व्यवस्था की जाती है। इसके अन्तर्गत परिकल्पनाओं का प्रतिपादन किया जाता है। इनकी पुष्टि से सिद्धान्तों का प्रतिपादन होता है, इसमें निगमन चिन्तन किया जाता है। दार्शनिक शोध विधि में व्यापक सामान्यीकरण किये जाते है जिसमें सत्य एवं मूल्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है।"

भिटनी ने अपनी इस परिभाषा में दो प्रकार के शिक्षा अनुसंधानों का उल्लेख किया है–वैज्ञानिक तथा दार्शनिक। वैज्ञानिक शोधकार्यो से नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जाता है और दार्शनिक शोध–कार्यों से नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है।"

मोनरों के अनुसार :–

"शिक्षा अनुसंधान का अन्तिम लक्ष्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना और शिक्षा के क्षेत्र में नवीन प्रक्रियाओं का विकास करना।"

मोनरों ने 'शिक्षा अनुसंधान' में नवीन सिद्धान्तों के प्रतिपादन के साथ उनकी उपयोगिता को भी महत्व दिया। शोध निष्कार्षों की व्यावहारिक उपयोगिता 'शिक्षा अनुसंधान' का प्रमुख मानदण्ड माना जाता है।

डब्लू0एम0 टैवर्स के अनुसार शिक्षा अनुसंधान की परिभाषा :–

"शिक्षा अनुसधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार विज्ञान का विकास करती है।"

शिक्षा अनुसंधानों का अन्तिम लक्ष्य शिक्षण सिद्धान्तों तथा अधिनियमों का प्रतिपादन करना और शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाना है।

- **शिक्षा अनुसंधान के उद्देश्य**

शिक्षा अनुसंधान की समस्याओं में विविधता अधिक है इसलिए इसके प्रमुख चार उद्देयश होते हैं :

1. सैद्धांनिक उद्देश्य, 2. तथ्यात्मक उद्देश्य, 3. सत्यात्मक उद्देश्य तथा 4. व्यावहारिक उद्देश्य, इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

(1) सैद्धान्तिक उद्देश्य :– शिक्षा अनुसंधान में वैज्ञानिक शोध कार्यों द्वारा नये

सिद्धान्तों तथा नये नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। इस प्रकार के शोध–कार्य व्याख्यात्मक होते है। इनके अन्तर्गत चरों के सह–सम्बन्धों की व्याख्या की जाती है। इस प्रकार के शोध कार्यों से प्राथमिक रूप से नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है। जिनका उपयोग शिक्षा की प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में किया जाता है।

(2) तथ्यात्मक उद्देश्य :– शिक्षा के अन्तर्गत ऐतिहासिक शोध–कार्यों द्वारा नये तथ्यों की खोज की जाती हैं इनके आधार पर वर्तमान को समझने में सहायता मिलती है। इन उद्देश्यों की प्रकृति वर्णनात्मक होती है, क्योंकि तथ्यों की खोज करके, उसका अथवा घटनाओं का वर्णन किया जाता है। नवीन तथ्यों की खोज शिक्षा–प्रक्रिया के विकास तथा सुधार में सहायक होती है।

(3) सत्यात्मक उद्देश्य :– दार्शनिक 'शोध' कार्यों द्वारा नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है। इनकी प्राप्ति अन्तिम प्रश्नों के उत्तरों से की जाती है। दार्शनिक शोध–कार्यों द्वारा शिक्षा के उद्दश्यों, सिद्धान्तों तथा शिक्षण विधियों तथा पाठ्यक्रम की रचना की जाती है। शिक्षा प्रक्रिया के अनुभवों का चिन्तन बौद्धिक स्तर पर किया जाता है जिससे नवीन सत्यों तथा मूल्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है।

(4) व्यावहारिक उद्देश्य :– शिक्षा अनुसंधान के निष्कर्षों का व्यावहारिक प्रयोग होना चाहिये, परन्तु कुछ शोध–कार्यों मे केवल उपयोगिता को ही महत्व दिया जाता है, ज्ञान के क्षेत्र से योगदान नही होता है। इन्हे विकासात्मक अनुसंधान भी कहते है। क्रियात्मक अनुसंधान से शिक्षा की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास किया जाता है अर्थात् इनका उद्देश्य व्यावहारिक होता है। स्थानीय समस्या के समाधान से भी इस उद्देश्य की प्राप्ति की जाती है।

- **शिक्षा–अनुसंधान का वर्गीकरण**

शिक्षा–अनुसंधान के उद्देश्यों से यह स्पष्ट है कि शैक्षिक अनुसंधानों का वर्गीकरण कई प्रकार से किया जा सकता है। प्रमुख वर्गीकरण के मानदण्ड अधोलिखित हैं :–

> Ø **योगदान की दृष्टि से :–** शोध–कार्यों के योगदान की दृष्टि से शैक्षिक–अनुसंधानों को दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं–

(1) मौलिक अनुसंधान :– इन शोध–कार्यों द्वारा नवीन ज्ञान की वृद्धि की जाती है– नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन नवीन तथ्यों की खोज, नवीन सत्यों का प्रतिस्थापन होता है। मौलिक अनुसंधानों से ज्ञान क्षेत्र में वृद्धि की जाती है। इन्हें उद्देश्यों की दृष्टि से तीन वर्गों में बांटा जा सकता है–

(अ) प्रयोगात्मक शोध–कार्यों से नवीन सिद्धान्तों तथा नियमों का प्रतिपादन किया जाता है। सर्वेक्षण–शोध भी इसी प्रकार का योगदान करते है।

(ब) ऐतिहासिक शोध कार्यों से नवीन तथ्यों की खोज की जाती है, जिनमें अतीत का अध्ययन किया जाता है और उनके आधार पर वर्तमान को समझने का प्रयास किया

जाता है।

(ब) दार्शनिक शोध कार्यों से नवीन सत्यों एवं मूल्यों का प्रतिस्थापन किया जाता है। शिक्षा का सैद्धान्तिक दार्शनिक–अनुसंधानों से विकसित किया जा सकता है।

(2) क्रियात्मक अनुसंधान :– इस प्रकार के शोध कार्यों से स्थानीय समस्याओं का अध्ययन किया जाता है, जिससे शिक्षण की प्रक्रिया में सुधार तथा विकास किया जाता है। इनसे ज्ञान–वृद्धि नही की जाती है। इन्हें प्रयोगात्मक अनुसंधान भी कहते है।

Ø **शोध–उपागम की दृष्टि से :–** शोध–कार्यों में तथ्यों का अध्ययन करने के लिए दो उपागमों का प्रयोग किया जाता है– **अनुदैर्ध्य उपागम तथा** कटाव–उपागम।

(1) अनुर्दर्ध्य–उपागम :– यह शब्द वनस्पति विज्ञान से लिया गया है जब किसी पौध का अध्ययन बीज बोने से लेकर फल आने तक किया जाता है तब उसे अनुर्दर्ध्य–उपागम कहा जाता है। ऐतिहासिक, इकाई तथा उत्पति सम्बन्धी अनुसंधान विधियों में इसी उपागम का प्रयोग किया जाता है।

(2) कटाव–उपागम :– यह शब्द भी वनस्पति विज्ञान का है। जब किसी पौधे के तने, पत्ती या जड़ तथा अन्य किसी अंग के स्वरूप का अध्ययन करना होता है तब किसी पौधे के उस अंग का कटाव करके अध्ययन कर लिये जाते हैं। तब उसे कठाव–उपागम की संज्ञा दी जाती है। इसमें समय का महत्व नही होता है। प्रयोगात्मक, तथा सर्वेक्षण विधियों में इस उपागम का प्रयोग किया जाता है।

- **शिक्षा–अनुसंधान के कार्य**

शिक्षा अनुसंधान के अधोलिखित प्रमुख कार्य होते हैं–

1. शिक्षा अनुसंधान का प्रमुख कार्य शिक्षा की प्रक्रिया में सुधान तथा विकास करना है। यह कार्य ज्ञान के प्रसार से किया जाता है।
2. शिक्षा की प्रक्रिया के विकास के लिए आन्तरिक सोपान नवीन में वृद्धि करना तथा वर्तमान ज्ञान में सुधार करना है।

   शैक्षिक विकास का सम्बन्ध शिक्षा के विभिन्न पक्षों में होता है–

   (अ) शिक्षा के विशिष्ट क्षेत्र में ज्ञान में वृद्धि करना, उसमें सुधार करना तथा प्रसार करना है।

   (ब) शिक्षा की समस्याओं का समाधान करना, छात्रों के अधिगम में विकास करना। शिक्षण की प्रभावशाली प्रविधियों का विकास करना।

   (स) शिक्षा प्रशासन तथा शिक्षा प्रणाली में अनुसंधान प्रक्रिया द्वारा सुधार तथा विकास करना। शैक्षिक अनुसंधान प्रक्रिया द्वारा शिक्षा के सिद्धान्तों तथा अभ्यास

में योगदान करना है। शिक्षा शास्त्रियों को शैक्षिक प्रक्रिया के विकास हेतु नवीन प्रविधियों के प्रयोग मे 'शिक्षा–अनुसंधान' सहायता करती है।

शिक्षा–अनुसंधान की विशेषतायें

शिक्षा अनुसंधान की अधोलिखित विशेषतायें होती है–

1. शोध–कार्य का मुख्य आधार शिक्षा दर्शन होता है। शिक्षा वैज्ञानिक प्रक्रिया भी दर्शन पर आधारित होती है।
2. शिक्षा–अनुसंधान की प्रक्रिया कल्पनाशक्ति तथा अन्तर्दृष्टि पर आधारित होती है।
3. शिक्षा–अनुसंधान में साधारण अन्तःअनुसंधान उपागम का प्रयोग किया जाता है।
4. शिक्षा–अनुसंधान में निगमन तार्किक चिन्तन प्रक्रिया को प्रयोग किया जाता है।
5. शिक्षा–अनुसंधान के निष्कर्षों से शिक्षा–प्रक्रिया को उत्तम तथा प्रभावशाली बनाया जाता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

3. अनुसंधान की शिक्षा मे क्या आवश्यकता होती है?

....

4. शिक्षा अनुसंधान क्या है?

....

5. दूर शिक्षा मे अनुसंधसान की क्या आवश्कता है।

....

6. अच्छे अनसंधान के क्या गुण होते है?

....

16.5 दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की भूमिका :–

दूरस्थ शिक्षा के विषय में आप जानते हैं कि यह एक नवाचार है। यह

परम्परागत शिक्षा व्यवस्था से पूर्णतया भिन्न है इसलिए मानव में इसके प्रचार–प्रसार में यह तथ्य भी ध्यातव्य है कि यह वास्तविक रूप में शिक्षा के उद्देश्यों को कैसे पूरा करेगी। अनुसंधान सर्वदा ही किसी भी व्यवस्था को नित नयी नवीन मार्गदर्शन देते है और यह व्यवस्था में नया आयाम देते है। दूर शिक्षा में भी अनुसंधान की भूमिका हो कि प्राप्त निष्कर्षों एवं परिणामों से :–

- » दूरस्थ शिक्षा के नियोजन को नया स्वरूप मिले और प्रभावकारी नियोजन सुनिश्चित हो सकें।
- » दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान इसको पुर्नसगंठित करने के लिए आवश्यक है।
- » इसके द्वारा दूर शिक्षा को समय–समय पर पाठ्यक्रम के संचालन, सम्पादन निर्माण में गुणवत्ता सुनिश्ति किया जा सकता है।
- » दूरस्थ शिक्षा को स्वशिक्षण सामाग्री की उपयोगिता एवं गुणवत्ता सुनिश्चित करने में आसानी होगी।
- » यह दूरस्थ शिक्षा के संगठन व्यवस्था को प्रभावकारी बनाने में सहायक होगें।
- » इसके द्वारा दूरस्थ शिक्षा में आवश्यक सम्प्रेषण प्रणाली सुनिश्चित की जा सकती है।
- » पूर्व की इकाई में हम दूर अध्येताओं की समस्याओं के विषय में पढ़ चुकें है। अनुसंधान हमें इन समस्याओं के सही उपाय सुझाने का प्रयास करते हैं।
- » अनुसंधान के निष्कर्ष दूर संचार माध्यमों के उपयोग के स्तर को बताने के साथ इनके प्रयोग हेतु उपायों को भी प्रदर्शित करते है।

दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान हेतु आवश्यक क्षेत्र

दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान कई स्तरों पर किये जा सकते हैं जो कि इसके विविध पक्षों से सम्बन्धित है और उन स्तरी को हम विभाजित कर सकते हैं।

1. **प्रशासनिक स्तर**
   - (1.) मातृ संस्था का प्रशासन
   - (2.) अध्ययन एवं क्षेत्रीय केन्द्रों का प्रशासन
2. **दूरस्थ शिक्षक स्तर**
   - (1.) मातृ संस्था मे कार्यरत शिक्षक
   - (2.) समन्वयूक / परार्शदाता
3. **दूरस्थ अध्येता स्तर**
   - (1.) शिक्षण क्रियायें
   - (2.) परामर्श क्रियायें
   - (3.) मूल्यांकन क्रियायें
   - (4.) प्रयोगात्मक कार्य

16.6 दूर शिक्षा में अनुसंधान के विविध मुद्दे

दूर शिक्षा में अनुसंधान हेतु अनेक मुद्दे भी है जैसे कि–

प्रशासनिक स्तर पर

» दूर शिक्षा के प्रोन्नति एवं विकास हेतु आवश्यक अभिवृत्ति।

» दूर शिक्षा में सम्पूर्ण गुणवत्ता प्रबन्धन हेतु की समस्या।

» अध्ययन केन्द्रों में शिक्षण अधिगम वातावरण निर्माण हेतु आवश्यक चुनौतियाँ

» दूर शिक्षा के विकास हेतु प्रशासकों के अभिवृत्ति एवं जागरूकता सम्बन्धी समस्यायें।

» मातृ संस्था एवं अध्ययन केन्द्रों में सम्बन्ध स्थापन की समस्या।

» अध्ययन केन्द्रों में भौतिक संसाधनों की आपूर्ति की समस्यायें।

» अध्ययन केन्द्रों को सम्पूर्ण सहयोग की समस्या।

» अध्ययन केन्द्रों की निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण की समस्या।

» परामर्श सत्रों के गुणवत्तापूर्ण प्रबन्धन को सुनिश्चित करने की समस्या।

» पाठ्यक्रम निर्माण एवं विकास की समस्या।

» दूर अध्येताओं से सम्प्रेषण की समस्या।

शिक्षक स्तर पर

अनुसंधान हेतु मुद्दे हैं–

» दूर अधिगम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अभाव।

» दूर अध्येताओं के प्रति कम लगाव, कम सम्बन्ध व कम अभिप्रेषण की समस्या

» दूर अध्येताओं को शिक्षण हेतु उचित माध्यम का अभाव।

» संचार एवं तकनीकी मध्यमों द्वारा शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति।

» दूर अध्येताओं के साथ उचित सम्प्रेषण का अभाव।

» दूर अध्येताओं के लिए स्व अधिगम सामग्री के निर्माण के प्रति लगाव।

» दूरस्थ माध्यम द्वारा शिक्षण हेतु कौशल सम्बन्धी समस्या।

» परामर्श सत्रों के आयोजन को सम्बन्धित समस्यायें।

» दत्त कार्यों को उचित मूल्यांकन हेतु **कौशल**

» दूर अध्येताओं को प्रतिपुष्टि से सम्बन्धित समस्या।

दूर अध्येता के स्तर पर

दूर अध्येता से सम्बन्धित अनुसंधान के मुद्दे होगें।

» मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा के प्रति नकारात्मक/सकारात्मक दृष्टिकोण।

» मुक्त शिक्षा के प्रति रूचि एवं अभिप्रेषण।

» दूर शिक्षा के छात्र सहायता सेवाओं के प्रति दृष्टिकोण।

» परामर्शदाताओं से सहयोग की समस्या।

» सम्प्रेषण सम्बन्धी समस्या।

» सवशिक्षण सामग्री के प्रयोग से सम्बन्धित समस्या।

» दत्त कार्यों को करने, प्रस्तुत करने के प्रति अभिवृत्ति।

» आधुनिक संचार माध्यमों को प्रयोग करने हेतु दक्षता की समस्या।

» मुद्रित स्वशिक्षण सामग्री के प्रति उचित दृष्टिकोण।

» पूरक शिक्षण सामग्री एकत्र करने के प्रति दृष्टिकोण।

» प्रयोगात्मक कार्यों से सम्बन्धित समस्या।

» मूल्यांकन व्यवस्था के प्रति दृष्टिकोण।

» अध्ययन केन्द्रों के दी गयी सुविधा।

» दूर शिक्षा प्राप्त करने मे लगने वाले खर्च से सम्बन्धित दृष्टिकोण।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये। :–

7. मातृसंस्था किसे कहते है?

....

8. दूर अध्येता की कौन–कौन से समस्यायें अनुसंधान का विषय हो सकती है?

....

9. दूर अध्यापक की कौन सी समस्याओं पर शोध किया जा सकता है?

....

10. दूर अध्यापक की कौन सी समस्याओं पर शोध किया जा सकता है?

....

11. दूर अध्ययन केन्द्रों को कौन सी समस्यायें प्रभावित करती है?

....

16.7 दूर शिक्षा में अनुसंधान से लाभ

दूर शिक्षा में अनुसंधान के विभिन्न मुद्दों के विषय में हम पूर्व में पढ़ चुके है। अब ये देखना चाहिये कि इन विषयों पर अनुसंधान से दूर शिक्षा व्यवस्था कैसे लाभाविन्त होगी।

- **प्रबन्धन स्तर**

अनुसंधानों से प्रबन्धन स्तर पर निम्न परिवर्तन होंगे–

» भारतीय आवश्यकताओं एवं परिप्रेक्ष्य में दूरस्य शिक्षा व्यवस्था को पुनसंगठन करना।

» दूर शिक्षा कार्यक्रम की उद्देश्य एवं समस्याओं को दूर करना सम्भव होगा।

» मातृसंस्था एवं अध्ययन केन्द्रों के मध्य समन्वय स्थापित हो पायेगा।

» निरीक्षण एवं पर्यवेक्षण तंत्र की स्थापना हो सकेगी।

» अध्ययन केन्द्रों में उपयोगी माननीय एवं भौतिक संसाधन की व्यवस्था सुनिश्चित होगी।

- **पाठ्यक्रम विकास**

दूर शिक्षा में पाठ्यक्रम की गुणवत्ता एवं विकास सुनिश्चित किया जा सकेगा।

» शिक्षण अधिगण प्रक्रिया का पुर्नसंगठन हो पायेगा।

» पाठ्यक्रम में शारीरिक, सामाजिक, संज्ञानात्मक, सर्वेगात्मक तथा अध्यात्मिक पक्षौं का समावेशन सुनिश्चित होगा।

» अध्येता आवश्यकता के अनुसार विविध प्रकार के पाठ्यक्रमों का निर्माण एवं विकास हेतु आवश्यक सहयोग।

- **सम्प्रेषण सामग्री**

अनुसंधान से सम्प्रेषण प्रक्रिया पर यह प्रभाव पड़ेगा।

» स्वशिक्षण सामग्री के पुर्निमाण एवं विकास को **सुनिश्चित करना**।

» दत्त कार्यों के स्तर एवं प्रकार को सुनिश्चित किया जाना।

» अध्येता के अनुसार आधुनिक संचार माध्यमों के प्रभावी उपयोग हेतु प्रबन्ध सुनिश्चित करना।

» उपबांधकों एवं अध्येताओं के लिए दूर संचार माध्यमों के प्रभावी प्रयोग हेतु **प्रशिक्षण की व्यवस्था**।

- **सम्प्रेषण प्रक्रिया**

दूर शिक्षा में अनुसंधान से सम्प्रेषण **प्रक्रिया** पर यह प्रभाव पड़ेगा–

» दूर अध्येता एवं उपबोधक/दूर अध्यापक के साथ सहयोगात्मक रवैया अपनायें जाने हेतु रणनीति तैयार हो सकेंगे।

» प्रभावी सम्प्रेषण सत्रों के आयोजन हेतु मार्गदर्शन मिलेगी।

» उपयोगी पाठ्यवस्तु के निर्माण एवं सम्प्रेषण का आधर मिलेगा।

» उपबोधकों के शिक्षण तकनीकी को सम्बन्धित किया जा सकेगा।

» विद्यार्थी सहयोग सेवाओं को तंत्र की प्रभावकारिता सुनिश्चित हो सकेगी।

» अध्येताओं को प्रभावी प्रतिदृष्टि प्रदान की जा सकेगी।

» स्वशिक्षण सामग्री के उचित प्रयोग की विधा अध्येताओं में विकसित की जा सके।

• **परीक्षण प्रक्रिया** :– दूर शिक्षा में अनुसंधान –

» दूर शिक्षा में मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी बना पायेगें।

» अध्येता उपयोग के अनुकुल मूल्यांकत सुनिश्चित किया जा सकेगा।

» सतत आंकलन एवं मूल्यांकन का आधार तैयार होगा।

» मूल्यांकन तंत्र में गुणवत्त सुनिश्चित की सकेगी।

दूर शिक्षा में अनुसंधान की अति आवश्यकता है मुक्त विश्वविद्यालय इसके विभिन्न पक्षों में अनुसंधान हेतु अनुदान प्रदान करते है। परन्तु इस क्षेत्र मे और ध्यान दिय जाने की आवश्यकता है।

बोध प्रश्न–

टिप्पणी–क– नीचे दिये गये रिक्त स्थान में अपने उत्तर लिखिये।

ख– इकाई के अन्त में दिये गये उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिये।

12. अनुसंधान से सम्प्रेषण प्रक्रिया को क्या लाभ होगा।

....

13. परीक्षा प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए?

....

14. सम्प्रेषण सामग्री मे कौन से गुण होने चाहिये?

....

16.8 सारांश

इस इकाई में अपने अनुसंधान की अवधारणा प्रकृति एवं आवश्यकता को पढ़ा इसके साथ यह भी देखा कि मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान के कौन–कौन से क्षेत्र है और अनुसंधान इसमें गुणवत्ता एवं प्रभाव कारिता कैसे सुनिश्चित करेगा। आशा है यह इकाई आपको रोचक लगी होगी।

16.9 अभ्यास के प्रश्न

1. मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा में अनुसंधान की क्या भमिका होगी और इसमे अनुसंधान के क्षेत्र बताइये।
2. मुक्त एवं दरस्थ शिक्षा में अनुसधान से क्या लाभ होगें। वर्णन कीजिए।

16.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. रिसर्च रि का अर्थ है बार–बार, सर्च का अर्थ है खोजना।
2. अनुसंधान नये तथ्यों व नवीन ज्ञान एवं वास्तविक परिस्थियों की खोज है।
3. अनुसंधान शिक्षा के प्रत्येक पक्ष को समस्या को उभार कर गुणवत्तापूर्ण प्रबन्धन सुनिश्चित कर सकता है।
4. शिक्षा में अनुसंधान।
5. नवीनता, उपयोगित, मौलिकता, तथ्यपूर्ण, तार्किकता।
6. दूर शिक्षा के प्रत्येक पक्ष की समस्याओं को दूर करने हेतु सम्भावनाओं को उभारने हेतु।
7. उपयोगिता, नवीनता, तार्किकता, निश्चित प्रारूप में, विषयानुरूप मुख्य संस्था जैसे इग्नू राजर्षि खण्डन मुक्त विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश।
9. उदासीनता, दूर शिक्षा के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण, अभिप्रणा की कमी, सम्प्रेषण की समस्या, परामर्शदाता से सहयोग की समस्या।
10. उदासीनता, अभिप्रेषण, कौशल, सम्प्रेषण सुविधा, एवं अधिगम सामाग्री, का शिक्षण, परामर्शसत्रों का आयोजन।
11. भौतिक एवं मानवीय संसाधन को उपलब्ध कराने की समस्या परामर्श सत्रों, दत्त कार्यों को जचंवाना, प्रयोगात्मक कार्यों का संयोजन।
12. प्रभावी, उपयोगी एवं अध्येता केन्द्रित सम्प्रेषण प्रक्रिया का व्यवस्था पर।
13. स्वच्छ, सतत्, उपयोगी अध्येता उपयोगी व्यापक परीक्षा प्रक्रिया होनी चाहियें।
14. प्रभावी, संचार माध्यमों के द्वारा सरल अध्येता उपयोगी विविधता होनी चाहियें।

16.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

गुप्ता एवं गुप्ता (2009) : मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन

शर्मा आर0 ए0 (1996) : दूरवर्ती शिक्षा, मेरठः सूर्या पब्लिकेशन,

Garg & others (2006) : Open and Distance Education in Global Enviroment, New Delhi : Viva Books.

Keegan D. (1990) : Foundation of Distance Education, London: Rotledge.